# हिन्दुत्व के स्वर

डॉ० कैलाशचन्द्र

हिन्दू संस्कृति प्रतिष्ठान

# हिन्दुत्व के स्वरःसत्य के दर्पण में

डॉ. कैलाशचन्द्र

सांस्कृतिक गौरव संस्थान

सहयोग राशि : रु. 75.00

## डॉ. कैलाशचन्द्र

दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. करके महान् भाषाविद् और भारतविद् आचार्य रघुवीर के संपर्क में आये और तभी से 'हिंदू संस्कृति का एशिया के देशों में प्रसार' विषय में गहरी रुचि लेने लगे। 1967 में डॉ. लोकेशचन्द्र के नेतृत्व में शिष्टमण्डल में इन्होंने रूस, मंगोलिया तथा साईबीरिया के बौद्ध क्षेत्रों की यात्रा की। 1978 में पी.एच. डी. ;चैण्क्द्ध की उपाधि प्राप्त की। 1981 में अमरीका गये जहां अनेक विश्वविद्यालयों में तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकारियों के क्लब में भाषण दिये। अमरीका में बसे हिन्दुओं में हिन्दुत्व के प्रचार के निमित्त डेढ़ वर्ष वहां रहे। डॉ. कैलाश 'भारत–मंगोल सांस्कृतिक सम्बन्धों का इतिहास' विषय पर अनुसन्धान के निमित्त दो वर्ष के लिये न्ब्ै में रहे।

## दो शब्द

पाकिस्तान बन जाने के उपरान्त भी भारत में हिन्दू हितों की अवहेलना हो रही है। यदि इसी प्रकार हिन्दुओं का □ास होता रहा तो कुछ ही वर्षों में हिन्दू समाज अपने ही देश में द्वितीय श्रेणी का अल्पमत नागरिक बन कर रह जायेगा। बढ़ता हुआ मुस्लिम उग्रवाद, स्थान–स्थान पर मिनी पाकिस्तानों का निर्माण, कश्मीर की भांति कुछ अन्य क्षेत्रों में भी हिन्दुओं को सताया जाना, बढ़ रहे ईसाई षड्यन्त्र, सरकारी तन्त्र में अराष्ट्रीय तत्वों का अधिकाधिक प्रवेश, सैनिक और अर्द्धसैनिक बलों में विद्रोहियों की घुसपैठ, सीमाओं पर हिन्दू जनसंख्या का घटते जाना राष्ट्र के संकटमय भविष्य की ओर संकेत कर रहे हैं। केवल एक ही आशा की किरण है–देश की जनसंख्या के 80 प्रतिशत के लगभग, हिन्दुओं में क्रमशः आती जा रही जागृति। यदि यह विशाल हिन्दू समाज सचमुच जागृत हो, विरोधी शक्तियों की कूटनीति को समझ सके, राष्ट्र–रक्षा की उत्कट इच्छा दृढ़ संकल्प का रूप ले ले, राष्ट्र को विघटित करने वाली शक्तियों का उचित उत्तर देने की ठान ले तो क्या मजाल कि कोई इस प्रकार भारत में अशांति पैदा कर सके या पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसियां भारत में पांव जमाने में सफल हो जायें और हिन्दू समाज को जाति–पांति के नारों से विभाजित कर सकें।

आज तो भारत–भक्ति को सांप्रदायिकता कह कर दुत्कारा जाता है। हिन्दू धर्म, जो भारत की आत्मा है, भारत की एकता का आधार है, उसे कमजोर किया जाता है। बच्चों में धर्म के प्रति वितृष्णा उत्पन्न की जा रही है। भारत को एकता के सूत्र में बांधने वाले दूसरे सूत्र राष्ट्रभाषा हिन्दी और भारत की प्राचीन काल से चर्चा में आई पुण्यभाषा संस्कृत को समाप्त किया जा रहा है।

ऐसी अवस्था में हिन्दू–हृदयों में जो वेदना होती है, हिन्दू समाज की जो टीस है, वही टीस समय–समय पर समाचारपत्रों में छपने के लिये भेजी जाती रही उन लेखों और पत्रों के रूप में।

उन्हीं लेखों, पत्रों आदि को संकलित रूप में पुस्तकाकार प्रकाशित करने का अनेक संवेदनशील मित्रों का आग्रह ही **'हिन्दुत्व के स्वर' : सत्य के दर्पण में,** को आप तक पहुंचाने में प्रेरक उपकरण रहा है। अतः यह संकलन भी उन्हीं संवेदनशील हिन्दू–हृदयों को ही समर्पित है, इस निवेदन के साथ कि प्रयत्नों की पराकाष्ठा द्वारा हम इस वेदना को सर्वसाधारण हिन्दू–मानस की संवेदना और प्रेरणा बना सकें और सदियों से सोया और सुलाया जाता हुआ यह राष्ट्र अंगड़ाई ले, सिंह–गर्जना करता हुआ उठ खड़ा हो।

– **कैलाशचन्द**

## प्राक्कथन

भारतीय संस्कृति और इतिहास के मर्मज्ञ डॉ. कैलाश चन्द्र जी ने इस पुस्तक में अध्ययन की गहराई और अनुभव की परिपक्ता से छोटे–छोटे भावपूर्ण और सत्य से भरपूर लेख लिखे हैं। ये मात्र काल्पनिक लेख नहीं हैं, किन्तु अंधों की भी आँखें खोल देने में समर्थ हैं। लेखों को कई वर्गों में वगीकृत किया जा सकता है, जैसे भाषा (संस्कृत/हिन्दी), संस्कृति, इतिहास, भारतीयता, नेताओं की सिद्धांतविहीनता, राष्ट्रवाद, इस्लामी कट्टरता, ईसाई मिशनरियों के षड्यंत्र आदि। हमारे शास्त्रों में लिखा गया है :–

सत्यं ब्रूयात् प्रिग्रं ब्रूयात्, न ब्रयात् सत्यमप्रियम्

यद्यपि शास्त्रों के कथन पर टीका–टिप्पणी करना एक प्रकार की अशिष्टता ही है। किन्तु ऐसा लगता है कि सत्य कभी प्रिय नहीं होता कदाचित सदा कटु होता है। विगत 800 वर्षों के हिन्दुस्थान के इतिहास के पन्नों से यह अनुभूति होती है। यह अभिकथन डॉ. कैलाश चन्द्र जी के लघु लेखों से पुष्ट होता प्रतीत होता है। विद्वान् लेखक ने निष्पक्ष भाव से इन लेखों में भारतीय राजनीति के विख्यात्/कुख्यात राजनेताओं के चरित्र और आचरण इन दोनों का खुलासा इस ढंग से किया है कि जैसे लेखक स्वंय उनके साथ रहे हों ओर आपबीती लिख रहे हों। कुछ लेखों में जो तथ्य आए हैं, वे चौंकाने वाले हैं, 'हिन्दूवादियों का ऐतिहासिक दायित्व' लेख में लेखक ने मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद का एक संदेश उद्धृत किया है जो कश्मीर के मुसलमानों को भड़काने और शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में आजाद देश बनाने के लिए था :–

''मैं आपको एक छोटा सा पैगाम देता हूँ, यदि आप उसे गौर से समझेंगे तो आपको दृष्टि मिलेगी। वह यह कि जब तक मुल्क को एक काबिल और मुस्तैद रहनुमा न मिले, मुल्क अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकता। आपको कुदरत ने शेख मोहम्मद अब्दुल्ला दिया है। आप उस पर और उसके साथियों पर एतकाद रखें। उनका साथ दें अगर उनकी रहनुमाई पर इसतकलाल (धैर्य) से कारबंद रहेंगे तो वह वक्त करीब है कि आप उनके कयादत (नेतृत्व) में आज़ादी हासिल कर लेंगे। कामयाबी आपको तलाश नहीं करनी पड़ेगी, बल्कि कामयाबी आपकी तलाश में होगी ओर आपके कदम चूमेगी।'

'असम मुस्लिम उग्रवाद की चपेट में' लेख में लिखा गया है कि ''बंगलादेश के चट्टगांव जिले में हिन्दू–बौद्ध जनसंख्या 98 प्रतिशत थी, किन्तु हिन्दू समाज की बेसमझी तथा कांग्रेसी नेताओं की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के फलस्वरुप उक्त जिला भारत के बजाए बंगलादेश में चला गया।''

इसी प्रकार 'सेक्युलरवाद का अभिशाप' लेख में लेखक ने बताया है कि मो. अली जिन्ना यह तर्क दिया करते थे कि ''पाकिस्तान का जन्म तो तभी हो गया था जब पहला हिन्दू मुसलमान बना।''

'हिन्दू नेतृत्व के हाथ में यदि भारत की सत्ता आई होती....' लेख में इतिहास के समालोचक डॉ. कैलाश चन्द्र ने लिखा है कि ''स्थिति यह हो चली है कि मुस्लिम विद्वान् मौलाना वहीदुददीन ''भारत में मुस्लिम प्रधानमंत्री होना चाहिए'', यह मांग कर रहे हैं।

'इण्डोनेशिया में हिन्दू धर्म', 'विश्व में भारत–भारती', 'मंगोलिया में भारतीय संस्कृति', आदि लेख उच्च कोटि के और बहुमूल्य सूचनाओं के भण्डार हैं।

डॉ. कैलाश चन्द्र ने अपना पूरा जीवन भारतीय संस्कृतिनिष्ठ रहकर देश और समाज का हित सामने रखते हुए व्यतीत किया है। ऐसे विद्वान् चिंतक और लेखक के लेखों का संग्रह पुस्तक रूप में प्रकाशित करके सांस्कृतिक गौरव संस्थान के हम कार्यकर्तागण गौरव का अनुभव करते हैं। विश्वास है कि देश की भावी पीढ़िया इस पुस्तक में दिए गए रहस्यों से कुछ सीखेंगी ओर देश के वर्तमान कण्टकाकीर्ण मार्ग को कण्टकों से रहित करने में समर्थ होंगी।

(डॉ. महेश चन्द्र)
महामंत्री
सांस्कृतिक गौरव संस्थान

तिथि – मार्गशीर्ष पूर्णिमा सं 2065 वि. दिनांक 12 दिसम्बर 2008 ई.

# भूमिका

संवेदनशीलता किसी भी जाति की जीवन्तता का प्रमाण होती है। जो जाति जितनी संवेदनशील होगी, उसके शरीर, मन, प्राण, आत्मा, मस्तिष्क, हृदय पर होने वाले आक्रमण, प्रहार उसे उतना ही व्यथित, उद्वेलित करेंगे। संवेदनशीलता के अभाव में निरन्तर होने वाले आघात, अपमान, चुभन भी उसे प्रभावित नहीं कर पाते और जाति निद्रित, मूर्छित, पतित अवस्था में वर्षों, दशाब्दियों, शताब्दियों तक बिना करवट लिए पड़ी रहती है।

किन्तु यदि नियति ने उस जाति के भाग्य में उसे जीवित रखने का विधान लिखा हुआ है तो उसे जगाने, खड़ा करने, चलाने और विश्व के राष्ट्रों की दौड़ में सम्मिलित कराने योग्य बनाने के लिए कुछ संवेदनशील अन्तःकरण, कुछ प्रबुद्ध मस्तिष्क, कुछ कर्मशील प्रकृति के व्यक्तित्व अपने हृदय की हूक को अपनी वाणी में, लेखनी में उतार कर जब उसे झकझोरते हैं तो राष्ट्र–प्राण पुनः स्पन्दित होने लगते हैं। ऐसी ही एक हूक के **'हिन्दुत्व के स्वर': सत्य के दर्पण में'** अपनी पूरी शक्ति से वर्षों से समाचारपत्रों में प्रकाशित लेखों, पत्रों द्वारा हुंकारित होते रहे हैं। उन हुंकारों का एक ही स्थान पर समावेश करने के प्रयास ने ही इस कृति को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया है। लेखक डॉ. कैलाशचन्द्र जी अन्तर्बाह्य रूप से प्रखर हिन्दुत्व के आजीवन पोषक, प्रेरक, उद्‌गाता और पुरस्कर्ता रहे हैं। उनके इस प्रयास का प्रेरक भाव भी यही है कि उनकी संवेदना व्यक्ति की संवेदना न रह कर समष्टि की संवेदना का रूप लेकर प्राणों में और प्राणों से गूंजने वाला स्थायीभाव बन सके ताकि सिंह के समान अंगड़ाई ले उठ खड़ी हुई राष्ट्र–शक्ति से निकलने वाली सिंह–गर्जना, हुंकार सम्पूर्ण राष्ट्र–द्रोहियों को भस्मसात् कर सके।

**–हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका तदा।**

**– चिरंजीव शास्त्री**

# विषय सूची


| | |
|---|---|
| कश्मीर के हिंदुओं की सुध लो | 10 |
| भारत के इस्लामीकरण की चतुस्सूत्री योजना | 13 |
| हिन्दूवादियों का ऐतिहासिक दायित्व | 16 |
| वह उत्कटता वह समझौते | 19 |
| उपलब्धियों अथवा विफलताओं का पर्व | 22 |
| जापान में संस्कृत परम्परा | 24 |
| असली शहीदी दिवस | 26 |
| असम– मुस्लिम उग्रवाद की चपेट में | 28 |
| कभी बाबर के पुरखें भी हिन्दू संस्कृति के पुजारी थे | 29 |
| सैक्यूलरवाद का अभिशाप | 31 |
| भारत के पाकपरस्त प्रधानमंत्री | 34 |
| इण्डोनेशिया में हिन्दू धर्म | 37 |
| सावरकर मंत्र ही तारणहार | 40 |
| हिन्दू नेतृत्व के हाथ में यदि भारत की सत्ता आयी होती | 43 |
| जवाहर लाल नेहरू : एक समीक्षा | 45 |
| विश्व में भारत भारती | 47 |
| रूस के भारतभक्त बारानिकोव | 49 |
| भारत हथियाने की चतुस्सूत्री योजना | 52 |
| मंगोलिया में भारतीय संस्कृति | 55 |
| नेपाल कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) की असलियत | 59 |
| जम्मू वासियों का संघर्ष भारत की अखण्डता के लिये हैं | 62 |
| पत्रावली | 63 |
| परिशिष्ट | 100 |
| बर्बर बाबर | 104 |

# कश्मीर के हिंदुओं की सुध लो

कश्मीर में हिन्दू मरते हैं और देश के हिन्दू सोते हैं। वास्तव में कश्मीर के हिन्दुओं पर जो आपत्तियां आईं उनका दायित्व केवल हम 90 करोड़ हिन्दुओं पर ही है। कौन नहीं जानता कि इस्लाम का सन्देश काफिरों को मारना ही है। जब–जब मुस्लिम समाज में मजहबी जनून भड़काया गया तब–तब उन्होंने गैरमुस्लिमों का नरसंहार करके गाजी बनने की मजहबी आकांक्षा पूरी की। भारत का पिछले एक हजार वर्षों का इतिहास नरसंहार की ऐसी हजारों घटनाओं से भरा पड़ा है। तो भी भारत के विराट हिन्दू समाज ने कश्मीर के हिन्दुओं को मजहबी जनून के दानवी पंजों में असहाय छोड़ दिया। कश्मीर में हिन्दू त्रस्त रहे, किन्तु भारत भर के हिन्दू मस्त रहे। 1947 से पूर्व महाराजा हरिसिंह के हिन्दू राज्य में जम्मू–कश्मीर में शान्ति थी। हिन्दू हों या मुसलमान सब चैन का जीवन व्यतीत कर रहे थे, किन्तु भारत स्वतन्त्र होते ही कश्मीर पर पाकिस्तानी दबाब बढ़ने लगा। पाकिस्तान ने सीमाप्रान्त के पठानों को सैनिक सहायता देकर कश्मीर पर आक्रमण कर दिया, किन्तु हिन्दू भारत कश्मीर की सहायता के लिये आगे न आया। हजारों हिन्दू मारे जाने लगे, किन्तु भारत सरकार बहाने करती रही। महाराजा हरिसिंह ने जम्मू–कश्मीर का विलय भारत में कर दिया तो भी कांग्रेस सरकार ने जम्मू–कश्मीर को शेख अब्दुल्ला के मुस्लिम शासन में पिसते रहने पर विवश कर दिया।

कश्मीर में मुस्लिम कट्टरवाद भड़काने के लिये मस्जिदों में (उत्तर प्रदेश से) मौलवी बुलाये गये। हजारों मदरसें खोले गये जहां कश्मीरी मुस्लिम लड़कों को जिहाद की शिक्षा देकर भारत के प्रति विद्रोह के लिये भड़काया जाता रहा। इन मदरसों के लिये धन भारत सरकार देती रही। कश्मीर की स्थिति बिगड़ती गई, हिन्दुओं पर आक्रमण होने लगे। 1986 की फरवरी में 20 दिनों तक हत्याओं और आगजनी का नंगा नाच चला।

1986 फरवरी की मार–काट से कश्मीर का समस्त हिन्दू समाज भय से कांप उठा। कुछ लोग अपने घरों और कारोबार को छोड़कर अपने बच्चों की जान बचाने के लिये दिल्ली के निकट बहादुरगढ़ में आकर शरणार्थी बन गये, कुछ अन्यत्र चले गये। किन्तु हिन्दू समाज में कोई चिन्ता दिखाई नहीं दी।

1989 तक बीसियों उग्रवादी गुट पाकिस्तान जाकर हथियारों का प्रशिक्षण लेकर घाटी में निजामें मुस्तफा (इस्लामी राज) कायम करने के लिये निहत्थे, निर्दोष, हिन्दु पुरुषों, महिलाओं और बच्चों पर ए.के.47 जैसे मारक अस्त्रों से अपना शौर्य दिखाने लगे। इस मुस्लिम जिहाद में कई देशों के सूरमा उनका साथ देने के लिये घाटी में आ गये। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अरब, सूडान, और उत्तर प्रदेश आदि से भी ये मुजाहिद हिन्दुओं के खून से हाथ रंगने के लिये कश्मीर में आ धमके। शायद हिन्दू समाज की उदासीनता के कारण ही उग्रवादियों के हौसले दुगुने हो गये। कश्मीरी हिन्दुओं को घाटी छोड़कर भाग जाने के अलटीमेटम (चेतावनी) दिये जाने लगे, पोस्टर और इश्तहार लगाये जाने लगे।

**इस्लाम हमारा मकसद है कुरान हमारा दस्तूर। जिहाद हमारा रास्ता हैं।**
**WAR TILL VICTORY.**

फिर 19 जनवरी 1990 का वह भयानक दिन आया जब समूची कश्मीर घाटी इस्लामी जिहाद के नारों से गूंज उठी। मस्जिदों से लाउडस्पीकरों पर उग्रवादी नेता मुस्लिम जनता को सड़कों पर

निकल आने का आह्वान करने लगे। सबको जिहाद के लिये और निजामे मुस्तफा (इस्लामी राज) स्थापित करने के लिये जंग छेड़ने के लिये पुकारने लगे। उनके नारे थे–

**कश्मीर में अगर रहना होगा**

**अल्लाहो अकबर कहना होगा**

**एक और गन्दा नारा था, ''हिन्दुओं चले जाओ, किन्तु औरतों को छोड़ जाओं'' ''मुसलमानों जागो, काफिरो! भागो, जिहाद आ रहा है।''**

मार्च 1990 तक 500 कश्मीरी हिन्दू बड़ी निर्दयता से मारे जा चुके थे। किसी को घर में, किसी को दुकान पर या उसके कार्यालय में घुसकर। एक घर में उग्रवादी घुसे, मां ने जवान लड़की को, बिस्तर में लपेट कर छुपा दिया। किन्तु घर को आग लगा दी गई। जले कपड़ों में लड़की जान बचाकर भागी, किन्तु नीचे खड़े मुजाहिदों ने पकड़ लिया और क्या–क्या दुर्गति की जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। 14–04–90 को सौरा नगर में मेडिकल इंस्टीटयूट की एक नर्स श्रीमती सरला भट को पकड़ कर सामूहिक बलात्कार करके मार डाला गया। श्रीमती सरला भट का शव श्रीनगर के लाल बाजार क्षेत्र की सड़क पर अर्द्धनग्न स्थिति में पड़ा पाया गया। उसका दोष मात्र इतना था कि उसे मेडिकल इंस्टीच्यूट में उग्रवादी गतिविधियों की जानकारी हो गई थी।

जीवन बीमा निगम के तीन अधिकारियों श्री पी. शेखर, श्री वी.एस. तिवारी तथा श्री तापू को अगवा करके एक घर में बन्धक बना लिया गया और उस घर

को आग लगा दी गई। तीनों हिन्दू नौजवान रस्सियों में जकड़े हुए जीवित ही आग में भून डाले गये।

मजहबी जोश में ये मुजाहिद जहाँ चाहा ए.के. राईफलों से लोगों को भूनने लगे। बन्धक बनाए गये हिन्दुओं को तड़पा–तड़पा कर मारने का पाशविक आनन्द लेने लगे। नग्न शरीर को जलती सिग्रेटों से जला–जला कर तड़फाया जाता रहा। ऐसी घटनाएं सामने आईं कि हिन्दू को पकड़ कर, बांध कर उसकी आंखें निकाली जातीं। किसी की जिह्वा काट दी जाती। शरीर को आरे से चीरकर टुकड़े–टुकड़े करके सड़कों पर फेंका गया। महिलाओं के स्तन काटकर आरे से चीर दिया गया। महिलाओं की छाती और जंघाओं पर गरम लोहे से पाकिस्तान जिन्दाबाद लिखकर तड़फने के लिये छोड़ दिया जाता। 27–02–90 को नवीन सप्रू को दिन दहाड़े श्रीनगर की सड़क पर गोली मार कर लाश के चारों ओर नाचने लगे और अपनी विजय की प्रसन्नता में खांड के बताशों की बखेर करने लगे।

कश्मीरी हिन्दुओं की दारुण व्यथा बहुत दर्दनाक है। नारकीय अत्याचारों की लम्बी कहानी और अपने ही करोड़ों भाइयों की उपेक्षा, अकर्मण्यता, अमानवीयता, अराष्ट्रीयता बल्कि देश–बन्धु–द्रोह, धर्म–द्रोह और राष्ट्र–द्रोह जैसे पापों का कच्चा चिट्ठा है। कितनी लज्जा की बात है कि अपने ही परिवार के हमारे धर्म–बन्धु हमारे देश के शत्रुओं के हाथों सताये जायें, मारे जायें, हमारी बहनों का अपहरण हो, उनसे बलात्कार किया जाये, और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें, जबकि हम अपने देश में 80 प्रतिशत से अधिक हैं। धिक्कार है हमारे यौवन को। क्या यही राष्ट्रीयता है? क्या यही भारत की भक्ति है कि भारतमां के पुत्र–पुत्रियां मारी जाती हों, भारतमां रोती हो और हम गुलछर्रे उड़ाएं, आनन्द का जीवन व्यतीत करें? यदि एक प्रतिशत हिन्दू भी अपने भाइयों की सहायता के लिये संघर्ष के लिये तैयार हो जायें तो किसी की क्या मजाल कि हमारे किसी भाई की ओर टेढ़ी नजर से कोई देख भी ले। कश्मीरी हिन्दुओं को हिन्दू होने के कारण ही मारा गया। बहनों को हिन्दू होने के कारण ही अपमानित होना पड़ा। और हम हैं कि गूंगे–बहरे और लंगड़े बन बैठे हैं। यदि दिल्ली के हिन्दू ही यह ठान लें कि हम अपने धर्म–बन्धुओं की रक्षा करेंगे तो आप देखेंगे कि हिन्दू को ये दिन नहीं देखने पडेंगे। दिल्ली के ही एक प्रतिशत हिन्दू भी प्राण–पण से हिन्दू–रक्षा और देश–रक्षा के लिये जुट जाएं तो कुछ ही दिनों मे यह समस्या ठीक हो जाये, किन्तु हम तो इतना भी करने को तैयार नहीं हुए। अब भी समय है कि लोग आगे आएं और अपने कश्मीरी भाइयों की सुध लें। क्योंकि राजनीतिक चक्र पूरी तरह से हमारे विरुद्ध हो चुका है। भारत में

कांग्रेस की, सोनिया की सरकार से हमें कोई आशा नहीं है। कश्मीर में उन लोगों का राज है जिनको घुट्टी में ही भारत–विरोध और हिन्दू–द्वेष पिलाया गया है। वे लोग मक्कारी और चालाकी से कैसे ही वक्तव्य दें, किन्तु समझ लो कि उन की जिह्वा पर मधु चाहे हो, उनके हृदय में हलाहल विष भरा पड़ा है। ''**मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हालाहलं विषम्।**'' उन का सारा जीवन भारत–विरोध में ही बीता है। उन्हीं में से एक डॉ. फारूख ने 1974 में नियन्त्रण रेखा पार करके मीरपुर में प्लेबिसाईट फ्रंट के सम्मेलन में भाग लिया और भारत–विरोधी भाषण दिये। वह जे.के.एल.एफ. के अध्यक्ष अमानुल्ला और मकबूल बट जैसे देशद्रोहियों के साथ मिलकर काम करता रहा। 07–02–91 को टाइम्स आफ इण्डिया में फारूख की स्वीकारोक्ति छपी।''

" "I directed my partymen to lie low, go across the border, get training in arms, do anything but do not get cought by Jagmohan."

अर्थात् फारूख ने अपने लोगों को चुपचाप पाकिस्तान जाकर शस्त्रों का प्रशिक्षण लेने के लिये कहा और उन्हें चेताया कि कुछ भी करो (आतंकवाद) किन्तु जगमोहन द्वारा पकड़े जाने से बचते रहो। फारूख ने अपने राज्यकाल में कश्मीर की सरकारी सेवाओं में अपने लोग (उग्रवादी) भर दिये। सरकारी बस सेवाओं में आवश्यकता से चार गुणा लोगों की भरती कर ली ताकि उसकी यह असामाजिक फौज वेतन सरकार से ले, किन्तु काम दूसरा ही करे। उग्रवादी नेताओं के 'मुजाहिद मंजिल' से किये एक दूरभाष से सारे कर्मचारी भारतविरोधी जलूसों में भाग लेने के लिये दौड़े आते थे। हस्पतालों में उग्रवादी घुसेड़ दिये गये। यहां तक कि न्यायालयों में भी ऐसी ही स्थिति बना दी गई। फारूख ने 70 ऐसे दुर्दान्त उग्रवादियों को बन्दीगृह से मुक्त करा दिया जिनके विरुद्ध न्यायालय ने कठोर शब्दों में जेलों में रखने के आदेश दिये थे।

अब जबकि केन्द्र सरकार पूरी तरह ऐसे ही लोगों को उठा रही है, भारत के प्रधानमंत्री घोषणा कर रहें हैं कि सारा राष्ट्र उन के साथ है, यदि हिन्दू नहीं जागे तो पता नहीं ये लोग क्या–क्या गुल अभी और खिलायेंगे। इन लोगों ने ही स्वायत्तता प्राप्त करने के लिये दांव–पेच चालू कर दिये हैं। पाकिस्तान चले गये कश्मीरी मुसलमानों को फिर से कश्मीर में बसाने की बृहत योजना है। उग्रवादियों को सशस्त्र बलों में भरती करके ऐसा खेल खेला जा रहा है कि विद्रोह को दबाने की केन्द्र की शक्ति ही समाप्त कर दी जाये। ऐसे में केवल सजग हिन्दू समाज ही देश को बचा सकता है। आपको सांप्रदायिक, फिरकापरस्त कहा जायेगा, किन्तु न भूलो कि केवल फिरकापरस्त और कम्यूनल हिन्दू ही अब देश को बचा सकेंगे। हिन्दुओं को घोर सांप्रदायिक बनना होगा, क्योंकि आज देशभक्ति को ही सांप्रदायिकता कहा जा रहा है। पाकिस्तान का मुंह तोड़ने की बात करें तो आप सांप्रदायिक हो जाते हैं। समान नागरिक संहिता की बात करें या पाकिस्तानी एवं बंगलादेशी घुसपैठियों को निकालने की बात करें तो फिरकापरस्ती का आरोप लग जाता है। वास्तव में हिन्दू सांप्रदायिकता ही राष्ट्रीयता है। इंग्लैड के पूर्व प्रधानमंत्री श्री रेम्जे मैक्डोनल्ड ने श्री मजूमदार की एक पुस्तक के प्राक्कथन में निम्न शब्द लिखे जो बताते हैं कि भारत तो हिन्दुओं के लिये एक मंदिर के समान है। भारत की पूजा उनके लिये मां भगवती की पूजा है। भारत उनका धर्म है।

The Hindu at any rate from his tradition and his religion regards India... sovereignty- as the outword embodiment, as the templenay even as the goddess mother of his spiritual culture. India and Hinduism are organically related as body and soul. He made India the symbol of his culture. He filleds it with his soul. In his consciousness it was his greater self.

अब सभी हिन्दुओं के लिये एक ही सन्देश है–''कश्मीर के हिन्दुओं की सुध लो,'' सबके लिये एक ही कार्यक्रम है–''कश्मीर–रक्षा के लिए कमर कसो।'' सभी हिन्दू संस्थाएं, चाहे वे राजनैतिक हों, चाहे धार्मिक और चाहे सामाजिक, आर्यसमाज, सनातनधर्म सभाएं, सभी मंदिर, जैन समाज, ब्राह्मण समाज, क्षत्रिय समाज, अग्रवाल समाज, वाल्मीकि समाज, रविदासी, गुजराती समाज, पंजाबी समाज सभी वर्ग जोरदार आवाज खड़ी करें, सरकार को चेतायें, कहें कि कश्मीरी हिन्दुओं

की सुध लो और देशद्रोही तत्वों का मूलोच्छेदन करो। सभी प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को इस आशय के पत्र लिखें, शिष्टमंडल जाकर मिलें। संसद–सदस्यों को इस विषय में प्रेरित करें, सभाएं करें, जलूस निकालें, हिन्दू युवक इस राष्ट्रीय कार्य में आगे आएं और कहें कि बस बहुत हो चुका, अब हम हिन्दुओं पर अत्याचार सहन नहीं करेंगे। हिन्दू का समवेत स्वर राष्ट्र में ऐसी ऊर्जा का सृजन करेगा कि शत्रु दहल जायेगा, भारत शक्तिशाली बनेगा, स्वर्ग में हमारे पुरखों की आत्मा प्रसन्न होगी, भारत की जय होगी।

## भारत के इस्लामीकरण की चतुस्सूत्री योजना

चीन के पश्चात् भारत ही संसार का सबसे बड़ा देश है। चीन की भांति भारत भी अतिप्राचीन राष्ट्र है। हमारी एक अखण्ड सांस्कृतिक परम्परा रही है। एक उज्ज्वल संस्कृति, जो विश्ववन्दनीय रही। कभी संसार भर में भारत की कीर्ति व्याप्त थी। यहां तक कि अनेक असभ्य देश हिन्दू संस्कृति का पुण्य–पीयूष पीकर सभ्यता और आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हुए। यह तथ्य उन देशों के इतिहास में ही देखने को मिलता है। तिब्बत, खोतान, कम्बोडिया आदि देशों के इतिहास, यहां तक कि जापान जैसे सुदूर देश का इतिहास साक्षी है कि भारतीय धर्म और साहित्य–संपदा से जापान आदि उन देशों में साहित्य, कला और दार्शनिक चिन्तन के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक अभ्युदय का युग आरम्भ हो गया।

आज भारत पिछड़े राष्ट्रों की श्रेणी में आता है। क्योंकि जिस संस्कृति को जगद्वन्दनीय समझा जाता था, जिस संस्कृति के कारण भारत महान बना, जो संस्कृति भारत की आत्मा थी, उसी संस्कृति को आधुनिक भारत छोड़ता जा रहा है। मानों अपनी प्राचीन संस्कृति को छोड़ना ही आधुनिकता हो। अपनी संस्कृति पिछड़ेपन का ही प्रतीक बन गयी, जिसका परिणाम है कि लोग अपनी भाषा से ही विमुख होते जा रहे हैं, अपने गौरवपूर्ण इतिहास को भुलाने पर तुले हैं। जिन भारतीय आचार्यों की अनेक देशों में पूजा होती है उनका नाम तक हमारे बच्चों को पता नहीं। देववाणी संस्कृत के अध्ययन और अनुसंधान का भारत में लोप होता जा रहा है, जबकि चीन, जापान, कोरिया, मंगोलिया, थाईलैण्ड, जर्मनी, इन्डोनेशिया और कम्बोडिया आदि विश्व के बहुत से देशों में संस्कृत के प्रति श्रद्धा और पूजा का भाव है। अमरीका, इंग्लैण्ड, जर्मनी और जापान जैसे देशों में विश्वविद्यालयों में संस्कृत का अध्ययन चलता है। वास्तव में हम अपने आप से ही विमुख होते जा रहे हैं। **हमें अपने और पराये में भेद का बोध नहीं रहा।** यही अवस्था भारत सरकार के कार्यकलापों से भी प्रकट होती है।

1947 में भारत के मुसलमानों के लिये भारत की पवित्र धरती पर अलग पाकिस्तान बनाना हमारे नेताओं ने स्वीकार कर लिया। जो काम पिछले एक सहस्र वर्षों में मोहम्मद गजनवी, मोहम्मद गौरी, खिलजी और तुगलक सुल्तान नहीं कर पाये थे, बाबर और औरंगजेबी अत्याचारी भी न कर पाये थे, तैमूर और नादिरशाह के क्रूर कर्म न कर पाये थे, वह जिन्नाह ने हमारे कायर तथा देशाभिमान–शून्य नेताओं के सहयोग से बिना लड़े ही कर लिया। भारत का बहुत बड़ा भूभाग ऐसा क्षेत्र बनाया गया जहाँ भारतमां के पुत्र हिन्दुओं का दमन किया गया। पाकिस्तान एक ऐसा देश बन गया जिसका एकमात्र आधार भारत के प्रति शत्रुता, एकमात्र लक्ष्य हिन्दू जाति का नाश और एकमात्र कार्यक्रम हिन्दू समाज का संहार हो गया।

जिन गांधीवादी कांग्रेसी नेताओं के कारण पाकिस्तान का निर्माण हुआ वे इतने से ही संतुष्ट नहीं हुए। देश–विभाजन के द्वारा मुसलमानों के लिये पाकिस्तान रूपी होमलैण्ड देने के उपरान्त भी इन्होंने हिन्दुओं के लिये शेष बचे भारत को हिन्दू राष्ट्र नहीं बनने दिया, बल्कि आग्रहपूर्वक हिन्दुओं

के हिन्दुस्थान में भी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति चालू रखी है। उन्होंने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि भारत में मुसलमानों को विशेषाधिकार प्राप्त हों, मुसलमानों की जनसंख्या में अभिवृद्धि तीव्र गति से हो। भारत के शासन में अधिकाधिक मुसलमलमानों को लाया जाये और भारत का धन अधिकाधिक मुस्लिम समाज की जेबों में पहुंचाया जाये।

हिन्दुओं के लिये तो कानून बना दिया कि हिन्दू एक विवाह ही करें। यदि किसी को दूसरा विवाह करना है तो वह मुसलमान बने। किन्तु मुसलमानों के लिये कानून में 4 विवाह करने की छूट दी गई और हिन्दुओं को परिवार–नियोजन के पाठ पढ़ाये गये। इस प्रकार हिन्दुओं को नारा दिया गया ''हम दो हमारे दो––जबकि मुसलमान अधिक विवाह करके 20–20 बच्चों का परिवार बनाने लगे।

भारत में मुस्लिम जनसंख्या बढ़ाने के लिये पाकिस्तान और बंगलादेश से घुसपैठ करके लाखों–करोड़ों मुसलमान भारत में बस गये जो भारत सरकार की मूक स्वीकृति का लाभ उठा कर तस्करी तथा दूसरे आपराधिक कार्यों में लगे हैं, पाक गुप्तचर एजेंसी के लिये भारत–विरोधी षडयन्त्रों में लिप्त हैं, जहाँ–तहाँ मिनी पाकिस्तान बना रहे हैं, सरकारी भूमियों पर अवैध कब्जा जमा रहे हैं, अवैध मस्जिदें और ईदगाहें बना रहे हैं। इस पाकिस्तानी और बंगलादेशी घुसपैठ के विरुद्ध यदि भारत की राष्ट्रभक्त जनता आवाज उठाती है तो उसे साम्प्रदायिक कहकर सख्ती से दबा दिया जाता है। पाकिस्तान या बंगलादेश में हिन्दुओं पर हो रहे दमन एवं अत्याचार से बच कर जो हिन्दू अपनी भारतमाता की गोदी में आकर शरण लेना चाहें और भारत में आ बसें तो उन्हें येन केन प्रकारेण वापिस जाने पर विवश किया जाता है। 1971 में भारत–पाक–युद्ध के समय पूर्वी पाकिस्तान (बंगलादेश) में जब हजारों हिन्दुओं की निमर्म हत्यायें की जाने लगीं, हिन्दू बहू–बेटियों को गुंडे उठाने लगे तो लगभग एक करोड़ हिन्दू बंगलादेश से भारत में आ गये। भारत सीमा में प्रवेश करते हुए हजारों हिन्दू भारतीय सैनिकों की गोली का भी शिकार बने, हजारों बरसाती नदी पार करने में असमर्थ रहकर डूबने पर विवश हुए। किन्तु भारत सरकार ने युद्ध–समाप्ति के उपरान्त सबको वापिस बंगलादेश भेज दिया, किसी को भारत में रहने नहीं दिया गया। इसी प्रकार 1971 की लड़ाई के उपरान्त पाकिस्तान के हिन्दू बहुल जिले थर पारकर, नगर पारकर जहाँ भारत का अधिकार हो गया था, भारत को विजय दिलाने के लिये वहाँ के हिन्दुओं ने भारत की सेना की सहायता की थी और भारत का अधिकार हो जाने पर जश्न मनाया था, किन्तु शिमला समझौता के अधीन भारत सरकार ने उन जिलों को पाकिस्तान को लौटा दिया तो वहां के हिन्दू पाकिस्तान अब उन्हें पूरा–पूरा दण्ड देगा–यह सोचकर अपने घरबार छोड़कर अपने प्राणों की रक्षा के लिये तथा भारत मां की गोद में रहने की लालसा के कारण भारत में आकर बसने के लिये लालायित हो गये तो भारत सरकार ने पूरी कठोरता और निर्दयतापूर्वक उन्हें पाकिस्तानी दरिन्दों के आगे फेंक डाला।

1947 में जब मुस्लिम–बहुल क्षेत्रों को मिलाकर पाकिस्तान के रूप में मुस्लिम होमलैण्ड दिया जा रहा था तो चिट्टगांव पर्वतीय जिला के लोग आश्वस्त थे कि वे भारत में रहेंगे क्योंकि इस जिले में मुस्लिम जनसंख्या मात्र 2 प्रतिशत ही थी। शेष 98 प्रतिशत हिन्दू–बौद्ध जनसंख्या थी। 15 अगस्त 1947 को उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता का समारोह हर्षोल्लास से मनाया, किन्तु अगले दिन उन्हें पता चला कि उन्हें तो पाकिस्तान में डाल दिया गया है। उन्होंने इस निर्णय का विरोध किया, किन्तु स्वतंत्र भारत की नेहरू सरकार ने उनकी गुहार न सुनी। हिन्दूबहुल जिलों को पाकिस्तान के चंगुल में जाने से रोकने के लिये कोई प्रयास न किया और वहां की हिन्दू–बौद्ध जनता पाकिस्तानी दमनचक्र का शिकार होने लगी। उन्होंने अपने धर्म और जातीय सम्मान की रक्षा के लिये सशस्त्र संघर्ष का मार्ग अपना लिया, किन्तु पाकिस्तानी सेना के नृशंस अत्याचारों का मुकाबला प्राणपण से करते रहे। अनेक परिवार अपनी बहू–बेटियों को गुण्डों से बचाने के लिये भारत में आकर शरण लेने लगे। किन्तु भारत सरकार उन चकमा शरणार्थियों को भी बंगलादेश जाने के लिये विवश कर रही है जबकि बंगलादेशी मुसलमान हमारी सरकार के प्रिय पात्र बने हैं। उन्हें भूमि आवंटित की गई। उन्हें मतदान का अधिकार दिया गया। यहां तक कि उनके अनेक नेता विधानसभा–सदस्य बने, उनके नेता मंत्री तक बने। उनके हितों की रक्षक श्रीमती अनवरा तैमूर तो असम की मुख्यमंत्री तक

बन गयीं। इस प्रकार पड़ोस के मुस्लिम देशों से घुसपैठ द्वारा भारत में मुस्लिम प्रतिशत बढ़ाया जा रहा है।

धर्मान्तरण द्वारा भारत के कई क्षेत्रों में हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की योजनायें भी चलाई जा रही हैं। सन् 1980–81 में ऐसी ही एक योजना तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले के मीनाक्षीपुरम् में चलाई गई। जहां सुवर्ण तथा हरिजन हिन्दू समुदायों में फूट डालकर हरिजन वर्ग के हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया गया। इस षडयन्त्र में तमिलनाडु एवं श्रीलंका के मुस्लिम नेताओं ने मिलकर काम किया। पिछले दशक में ऐसे समाचार प्राप्त हुए कि जाने–माने तस्कर हाजी मस्तान ने करोड़ों रुपये खर्च करके निर्धन परिवारों की भोली–भाली हिन्दू लड़कियों को भगा कर मुस्लिम क्षेत्रों में लाकर, मुस्लिम युवकों के साथ निकाह करा दिया। हिन्दू लड़कियां भगाने का कार्य बहुत व्यापक रूप में चल रहा है, किन्तु हिन्दू जागृत न होने के कारण इस ओर ध्यान ही नहीं देते। या जिन परिवारों की लड़कियां भगाई जाती हैं वे अपमान के डर से किसी को बताते ही नहीं।

इस प्रकार भारत को मुस्लिम बहुल देश बनाने के उपाय निरन्तर किये जा रहे हैं। मुल्लों–मौलवियों का कार्यक्रम है:–

1. Production अधिक बच्चे पैदा करो।
2. Infiltration घुसपैठ द्वारा मुस्लिम जनसंख्या बढ़ाओ।
3. Conversion हिन्दुओं का धर्म बदल कर मुसलमान बनाओ।
4. Abduction हिन्दू लड़कियों को भगाओ ताकि उनके गर्भ से मुस्लिम सन्तान उत्पन्न हो।

# हिन्दूवादियों का ऐतिहासिक दायित्व

11 अप्रैल को लोकसभा में देवेगौड़ा सरकार के विश्वास प्रस्ताव पर लम्बी चर्चा हुई। सभी राजनैतिक दलों के नेताओं ने अपने–अपने दलों की वैचारिक श्रेष्ठता प्रदर्शित करने तथा भारत की राष्ट्रीय समस्याओं को अपनी–अपनी दृष्टि से उजागर करने का प्रयास किया। कांग्रेस, जनता दल और सात्यवादी दलों ने भारत को (हिन्दू) साम्प्रदायिक शक्तियों से बचाने के लिए सम्मिलित प्रयास करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। पाकिस्तान से मैत्री संबन्ध स्थापित करने के लिये शिखर वार्ता के अवसर पर कांग्रेस अध्यक्ष श्री केसरी द्वारा देवेगौड़ा सरकार से ''समर्थन वापिस लेने के अपराध'' पर भी रोष प्रकट किया गया। ऐसा लगा जैसे 6 दिसम्बर 92 को बाबरी ढांचा ध्वस्त किये जाने की घटना को सारी संसद राष्ट्रीय अपराध मानती है। श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी को साम्प्रदायिकता रूपी राष्ट्रीय अपराध से यह कह कर मुक्त कर दिया गया कि उन्होंने कहा था कि ढाँचा गिराने वालों को ढूँढा जाये और पकड़ा जाये। मुस्लिम लीग के नेता श्री (बनातवाला) भी हिन्दू सांप्रदायिक शक्तियों के विरुद्ध ऐसे भड़के मानों कोई पाकिस्तान का प्रतिनिधि दहाड़ रहा हो। घर में हम दूरदर्शन पर लोकसभा की कार्यवाही देख रहे थे। बच्चे भी देख रहे थे। एक बच्चा श्री बनातवाला को दहाड़ते हुए देखकर बोला कि क्या पाकिस्तान के लोग भी हमारी पार्लियामेंट में होते हैं? मैंने समझाने का यत्न किया कि बेटा! यह तो मुस्लिम लीग का नेता है, तो वह बच्चा और भी अधिक परेशान होकर कहने लगा कि मुस्लिम लीग ने ही तो पाकिस्तान बनाया था तो अब यह नेता भारत में कैसे? किन्तु बालक की बात है तो वह अधिक महत्व की है। भारत में पाकिस्तान द्वारा घोषित ओर अघोषित युद्ध छेड़ा हुआ है। कश्मीर ही क्या, भारत भर में पाक–समर्थक लोग आतंकवाद और विस्फोट में लगे हैं, किन्तु उनकी ओर अंगुली उठाना साम्प्रदायिकता बन जाती है। भारत के प्रति शत्राुता में लगे लोगों के कुकृत्यों को उजागर करना मानो राष्ट्रद्रोह है और राष्ट्रद्रोह के इस लांछन से मुक्त रहने के लिये संसद में सबसे बड़े विरोधी दल (भारतीय जनता पार्टी) को भी सेक्यूलर होने की घोषणा करनी पड़ती है। बाबरी ढाँचा ध्वस्त किये जाने की निन्दा करनी होती है, उन्हें यह बताना होता है कि बाबरी ढांचा ध्वस्त किया जाना गलत था। उन्हें आश्वासन दिलाना पड़ता है कि काशी और मथुरा के जिन मंदिरों को मुगल बादशाहों ने तोड़ा, उन हिन्दू मंदिरों के उद्धार का प्रश्न उनके एजेन्डे में नहीं है। भारत की संसद में भारतमां की पीड़ा का प्रदर्शन क्यों नहीं किया गया। प्रतिदिन भारतमां के पुत्रों को यमलोक पहुँचाने में जिन समुदायों का हाथ है उनके प्रति क्रोध और उनका विरोध क्यों नहीं हुआ? फारूख अब्दुला ने आत्मसमर्पण करने वाले उग्रवादियों को अर्द्धसैनिक बलों में भरती कर लिया जिससे उनकी मारक शक्ति कई गुणा बढ़ गयी, इसका विरोध करने का साहस किसी ने नहीं दिखाया। भारतमां के शरीर पर हजार वर्षों से जो जख्म हुए हैं, उनकी टीस क्यों सुनाई नहीं दी? भारत में आकर नरसंहार करने वाले गजनबी, गौरी, बाबर, तैमूर या नादिरशाहों की लीक पर जो अब भी चलना चाहते हैं उनके इरादों से राष्ट्र को सावधान क्यों नहीं किया गया? जो तत्व पाकिस्तान के एजेंट बन भारत की सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं, उनका मूलोच्छेद करने का संकल्प क्यों नहीं सुनाई दिया? कितने ही सांसदों ने अपने विरोधी नेताओं पर तीखे प्रहार करने में शौर्य दिखाया, किन्तु भारत में बसे भारतविरोधी षडयन्त्रों में लिप्त ऐसे तत्वों के विरुद्ध मुंह खोलने से प्रायः कतराते रहे या डरे रहे।

आज भारत को क्या हो गया है? क्यों भारत की अन्तरात्मा मुखरित नहीं हो पाती? क्यों भारत की आत्मा दबाई जा रही है? इसके बीज हमें कांग्रेस की गाँधी–नेहरूवादी परम्परा में मिलेंगे। गांधी जी अपने जीवन में प्रखर देशभक्त नेताओं का विरोध करते रहे। वीर सावरकर जी ने जहाँ

'1857 का स्वातन्त्रय समर' नामक क्रान्तिकारी ग्रन्थ की रचना की वहीं गांधी जी ने हिन्द स्वराज नामक एक भ्रामक सी पुस्तक लिखी जो देशभक्त युवकों को अंग्रेजी सत्ता से लड़ने से विरत करती है। 1914 के प्रथम विश्वयुद्ध के समय उन्होंने अंग्रेजी सत्ता के लिये युवकों को अंग्रेजी फौज में भरती होकर अंग्रेजी साम्राज्य के शत्रुओं का संहार करने के लिये बन्दूकें हाथ में लेने के लिए प्रेरित किया।

गांधी जी ने सरदार भगत सिंह को फांसी न दिये जाने के आन्दोलन का साथ न देकर भगतसिंह को फांसी देने में ही अंग्रेज सरकार की सहायता की, जिसके अभिलेख श्री नूरानी ने अपनी पुस्तक The Trial of Bhagat Singh (दी ट्रायल ऑफ भगतसिंह) में दे दिये हैं।

गांधी जी ने देशभक्त सुभाषचन्द्र बोस को कांग्रेस से ही निकल जाने पर विवश कर दिया। निजाम हैदराबाद का अलग मुस्लिम राज्य बना रहे इसी बात के वे पक्षपाती रहे, और कश्मीर पाकिस्तान में जाये, यदि ऐसा न हो तो कश्मीर में शेख अब्दुल्ला द्वारा मुस्लिम शासन हो, यही उनके प्रयास रहे। नवम्बर 1947 को उनका वक्तव्य छपा—'कश्मीर में शेख अब्दुल्ला बड़ी वीरता से लड़ रहे हैं, उनकी वीरता की मैंने सदा प्रशंसा की है।'

11 नवम्बर 1947 को उन्होंने कहा, ''शेख अब्दुल्ला कश्मीर के सच्चे मालिक हैं। वहां का हर हिन्दू, सिख, पारसी और ईसाई उनके साथ है।''

24 नवम्बर 47 को उन्होंने कहा, ''शेख अब्दुल्ला वहाँ का सच्चा महाराजा है। हजारों मुसलमान उन पर जान देते हैं। उनको 'शेरे कश्मीर' कहते हैं। वह निकम्मा है यह कहना अच्छा नहीं लगता। वह कहता है—मै मुसलमान हूं, परन्तु वह कैसा मुसलमान है कि हिन्दू, मुसलमान, सिख सबको साथ लेकर बैठता है।''

22 नवम्बर 1947 को कहा था, 'आज कश्मीर की भूमि पर हिन्दू धर्म और इस्लाम की परीक्षा है। यदि दोनों ठीक ढंग से एक ही मार्ग पर चले तो कोई उनका सम्मान नहीं छीन सकेगा। इस अंधियारे में कश्मीर को प्रकाश दिखाने वाला एक तारा 'अब्दुल्ला' है।

जवाहर लाल नेहरू तो शेख अब्दुल्ला के हाथों कश्मीर को गिरवी रखने पर तुले हुए थे। नेहरू जी ने कश्मीर के विषय में जितना नुकसान देश को पहुँचाया है उस पर पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है, किन्तु अभी बहुत कुछ जनता के सामने आना बाकी है।

भारत का भाग्य जिन्होंने बिगाड़ा उनमें मौ. आजाद भी कम नहीं हैं। मौलाना ने कश्मीर के मुसलमानों को भड़काने और शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में कश्मीर को आजाद कराने के लिये कश्मीरियों को दिये गये एक संदेश में कहा था—

''मैं आपको एक छोटा सा पैगाम देता हूँ, यदि आप उसे गौर से समझेंगे तो आपको दृष्टि मिलेगी। वह यह कि जब तक मुल्क को एक काबिल और मुस्तैद रहनुमा न मिले, मुल्क अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकता। आपको कुदरत ने शेख मोहम्मद अब्दुल्ला दिया है। आप उस पर और उसके साथियों पर एतकाद रखें। उनका साथ दें। अगर उनकी रहनुमाई पर इसतकलाल (धैर्य) से कारबंद रहेंगे तो वह वक्त करीब है कि आप उनके कयादत (नेतृत्व) में आजादी हासिल कर लेंगे। कामयाबी आपको तलाश नहीं करनी पड़ेगी, बल्कि कामयाबी आपकी तलाश में होगी और आपके कदम चूमेगी।''

कश्मीरी मुसलमानों के नाम मौलाना आजाद का यह संदेश कश्मीरी मुसलमानों को 'आजादी' के लिये, अलग मुस्लिम देश के लिये था तो भी मौ. आजाद, जो अरब देश में अरब माता की कोख से जन्मे, जिनके पुरखा बाबर के साथ भारत में आये थे, जो मौलाना साहेब ''पान इस्लाम'' के लिये जीवन भर कार्यरत रहे, ऐसे विदेशी रक्त को स्वतंत्र भारत के सिर पर लाद दिया गया।

कौन नहीं जानता कि डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को कश्मीर की जेल में मरने दिया गया। क्या उनके मारे जाने के षडयन्त्र के लिये मौलाना कश्मीर जा कर शेख अब्दुल्ला से साँठ—गाँठ करके नहीं आया था? किन्तु भारतमां के कोटि—कोटि पुत्र नेहरू—गांधीवाद की अफीम खाकर हिन्दू—मुस्लिम—एकता के झांसे में आ गये। जबकि अंग्रेज जाने पर विवश हो चुके थे, मुसलमान परेशान थे कि हम, जिनका 700 वर्ष भारत पर निरंकुश साम्राज्य रहा, वे अब भारत स्वतन्त्र हो जाने

पर 75 प्रतिशत हिन्दूबहुल जनसंख्या के अधीन रहने को बाध्य हो जायेंगे और वे हिन्दुओं की जनसंख्या–बल से डरते थे। भारत में फैले बड़े–बड़े हिन्दू राज्य तथा अन्य छोटी–बड़ी देशी रियासतें थीं। उनके पास शस्त्रों के भण्डार और सेनाएं थी, जबकि एक निजाम हैदराबाद के अतिरिक्त कुछ छोटे–छोटे मुस्लिम राज्य थे। इन मुस्लिम राज्यों के चारों ओर हिन्दू विपुल संख्या में विद्यमान थे। यदि हिन्दू कुछ भी न करते, केवल नेहरू–गांधी के धोखे में आकर भारत को हिन्दू–मुस्लिम आधार पर विभाजित न होने देते, तो भी अपने आप संपूर्ण अखण्ड भारत एक हिन्दूबहुल राष्ट्र होता और राष्ट्र में हिन्दू वर्चस्व होता। आवश्यकता है हिन्दू जाति में वीर सावरकरों तथा डा. हेडगेवारों की जो दृढ़तापूर्वक नेहरू–गांधीवाद के छलावे को चकनाचूर कर दें। फिर धोखे के बादल छँट जायेंगे। हिन्दू राष्ट्रवाद का सूर्य उदय होगा जो अपनी तेजोमय आभा से मृतप्राय हिन्दू हृदयों में प्रकाश और ऊर्जा का संचार करेगा। वीर सावरकर के अनुयायियों का ऐतिहासिक दायित्व है कि वीर सावरकर के प्रखर हिन्दू राष्ट्रवाद के मंत्र को जन–जन तक पहुंचाएं।

हिन्दू उठें, भारत के भाग्य को बदल दें, हिन्दू समाज प्रखर राष्ट्रवादी नेतृत्व के लिये तरस उठा है।

**उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी,**
**दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।**

## वह उत्कटता, ये समझौते

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जन्म हिन्दूराष्ट्र की रक्षा के लिये हुआ। डा. केशव राव बलिराम हेडगेवार ने भारत के इतिहास का गहन अध्ययन किया था, देश की राजनैतिक परिस्थिति को समझा था। तुर्की के खलीफा के लिये चलाए जा रहे खिलाफत आन्दोलन से वे दुःखी थे। मालाबार के हिन्दू–संहार की पीड़ा उनके रोम–रोम में व्याप्त थी और उसके उपरान्त भारत भर में मुसलमानों द्वारा जो हिन्दू–विरोधी दंगे भड़काए गये उसे देख कर हिन्दू जाति में शक्ति का संचार करने हेतु उन्होंने हिन्दुओं का संगठन करने के लिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का निर्माण 1925 में किया।

डा. हेडगेवार के इस कार्य में हिन्दू महासभा के नेता डा. मुञ्जे तथा वीर सावरकर के बड़े भ्राता बाबाराव सावरकर भी सहायक बन गये। डा. हेडगेवार के विचार, जो छपे भी हैं, वे इस प्रकार थे–

''इंग्लैण्ड अंग्रेजों का, फ्रांस फ्रांसीसियों का, जर्मनी जर्मनों का देश है। इस बात को उपुर्युक्त देशों के निवासी सहर्ष घोषित करते हैं, किन्तु इस अभागे ''हिन्दुस्थान'' के स्वामी हिन्दू स्वयं अपने को इस देश का अधिकारी कहने का साहस नहीं करते। ऐसे विपरित भाव हममें क्यों पैदा हो गये हैं।

हिन्दुस्थान की परिभाषा पुरातन काल से असंदिग्ध रूप से चली आई है। किन्तु हिन्दुओं का हिन्दुस्थान कहते ही आज के हमारे नेतागण चौंक उठते हैं।

भारतवर्ष, भरतखण्ड, आर्यावर्त, हिन्दुस्थान आदि नामों के द्वारा एक ही अर्थ प्रकट होते हुये भी उस अर्थ की कल्पना मात्र से ही हम हड़बड़ा जाते हैं। किसी जकड़े हुये तोते जैसी हमारी अवस्था हो रही है। भंवर में फंसे गोते खा रहे हैं। जो लोग हमारी संस्कृति को नष्ट–भ्रष्ट करने पर तुले हुये हैं उन्हें गले लगाने के लिये मरे जा रहे हैं। यह सारा परिणाम है हमारी मानसिक दासता का, दुर्बलता का।

दूसरों से सहायता की आशा करना, भीख माँगना निरी दुर्बलता का चिन्ह है। इसलिये निर्भयता के साथ यह घोषणा करो कि ''हिन्दुस्थान हिन्दुओं का'' ही है।

संघनिर्माता डा. हेडगेवार घोषणापूर्वक कहा करते थे कि हिन्दुस्थान हिन्दुओं का है। डा. हेडगेवार के 1940 में स्वर्ग सिधारने के उपरान्त भी संघ में वीर सावरकर द्वारा लिखी हिन्दुत्व तथा वीर सावरकर की अन्य पुस्तकें ही प्रचलित थीं। संघ में जो सामूहिक गीत चलते थे वे उत्कट राष्ट्र–भक्ति से ओतप्रोत हिन्दूवादी और मुस्लिम आक्रान्ताओं से लोहा लेने वाले राष्ट्रवीरों महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी सरीखे महापुरुषों की वीर–गाथाओं पर आधारित होते थे। उन गीतों में वीर हकीकत राय, बन्दा बैरागी तथा गुरु गोविन्द सिंह के पुत्रों के बलिदान का वर्णन होता था, जो दीवार में चुनवा दिये गये क्योंकि उन्होंने हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान बनना स्वीकार न किया।

1940 के दशक में श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा लिखी कविता–**'हिन्दू तन मन, हिन्दू जीवन, रग रग हिन्दू मेरा परिचय'** संघ के स्वयंसेवकों में बहुत लोकप्रिय हुआ करती थी। जिसके कुछ अंश निम्नलिखित हैं–

**हिन्दू तन मन, हिन्दू जीवन, रग रग हिन्दू मेरा परिचय।**
**मैं वीरपुत्र मेरी जननी के जगती में जौहर अपार।**
**अकबर के पुत्रों से पूछो क्या याद उन्हें मीना बाजार।।**
**क्या याद उन्हें चित्तौड़ दुर्ग में जलने वाली आग प्रखर।**
**जब हाय सहस्रों माताएं तिल तिल जल कर हो गईं अमर।।**

**यह बुझने वाली आग नहीं रग रग में इसे समाये हूं।**
**यदि कभी अचानक फूट पड़े विप्लव लेकर तो क्या विस्मय?**
**हिन्दू तन मन, हिन्दू जीवन, रग रग हिन्दू मेरा परिचय।**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में उत्कृष्ट एवं आक्रामक हिन्दुत्व की भावना के कारण 1946—47 में पाकिस्तान के निर्माण के समय जो भीषण हिन्दू—मुस्लिम दंगे हुए, उनमें संघ के स्वयंसेवको ने हिन्दूजाति का कवच बन कर बड़े शौर्य के साथ मुस्लिम लीगी गुंड़ों के आक्रमणों से हिन्दू समाज की रक्षा की। सिंध में, पंजाब में, कश्मीर तथा अन्यत्र भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के कारनामे हिन्दू इतिहास का गौरवमय पृष्ठ बन सकते हैं यदि उन्हें संकलित किया जा सके।

किन्तु स्वतन्त्रता—प्राप्ति के उपरान्त भारत का शासन मुस्लिमपरस्त गांधी—नेहरूवादी कांग्रेसी नेताओं के हाथों में आ गया। जो पाकिस्तानी गुंड़ों को शत्रु न मानकर, पाकिस्तानी गुंडों से भारतमां के पुत्रों की रक्षा करने वाले संघ के स्वयंसेवकों को अपना विरोधी मानते थे। नेहरू जी ने प्रधानमंत्री बनने के तुरन्त बाद ही संघ को कुचलने की योजना बनानी चाही। उन्होंने अक्तूबर 1947 में ही भारत के सभी प्रान्तों के मुख्यमंत्रियों के नाम इस आशय के पत्र लिखे, किन्तु उन दिनों संघ की शक्ति इतना विराट रूप धारण कर चुकी थी कि प्रान्तों की सरकारों

ने नेहरू जी के सुझावों का अनुमोदन नहीं किया। किन्तु गांधी हत्या एक ऐसा बहाना नेहरूवादियों के हाथ में आ गया जिस का लाभ उठाकर संघ का दमन करने का कुचक्र चलाया गया। संघ के कार्यकर्ताओं पर आपत्तियों के पहाड़ ही टूट पड़े। हजारों घर बरबाद हो गये। हजारों भूखों मरने लगे। इन हिन्दुत्वनिष्ठ देशभक्तों की कमर तोड़ने को नेहरू ने अपनी सफलता माना।

संघ पर लगा प्रतिबन्ध हटाया गया, किन्तु परम राष्ट्रभक्त स्वयंसेवकों के लिये सरकारी नौकरियां वर्जित कर दी गई, भारत की विचित्र दशा थी कि भारत स्वतन्त्र हो जाने पर भी अंग्रेजों को तो वायुसेना, नौसेना, थलसेना में, न्यायालयों में ऊँचे—ऊँचे पद दिये गये, एंग्लो इंडियन समूह के लोगों को छाती से लगाये रखा गया, मुस्लिमलीगियों के लिये भी सरकारी सेवाएं खुली थीं, जबकि उन की भारत के प्रति निष्ठा सन्देहास्पद थी, किन्तु भारत के लिये प्राणार्पण कर देने की भावना से ओतप्रोत स्वयंसेवकों को न सेना में और न ही अन्य सेवाओं में प्रवेश की अनुमति थी। सामान्य क्लर्क या चपरासी भी यदि संघ से संबंधित होता तो उसे भारत के लिये खतरनाक समझा जाता था। कांग्रेस के शासन में हिन्दूवादी समाज इतना आतंकित कर दिया गया जो कभी विदेशी शासन के समय भी नहीं किया गया था।

स्थिति ऐसी हो गयी कि धीरे—धीरे हिन्दुत्व एक गाली बना दिया गया। सैक्युलरिज्म का फैशन सा हो गया। विद्यालयों, महाविद्यालयों में धर्म—निरपेक्षता के नाम से भारत के मूल तत्व हिन्दुत्व को ही सबसे अधिक राष्ट्रघातक अतः घृणित वस्तु के रूप में पढ़ाया जाने लगा। पाकिस्तानपरस्त तत्वों को छाती से लगाना उसी नीति का प्रतिफल है। **विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।**

भारत में मुस्लिम कट्टरवाद बढ़ता जा रहा है। भारत का ही मुस्लिमबहुल भाग पाकिस्तान अलग मुस्लिम राष्ट्र बन कर भारत के विरुद्ध अघोषित युद्ध छेड़े हुए है। कश्मीर में हिन्दुओं को मार—मार कर घाटी से बाहर भाग जाने पर विवश कर दिया गया। पंजाब में पाकिस्तानी पडयन्त्रों के कारण 10 वर्ष आतंक और उग्रवाद का दौर रहा। पाकिस्तान से शस्त्र लाये जाते रहे और जगह—जगह हिन्दुओं को मारा जाता रहा। गुजरात में व्यापक रूप से दंगे होते रहे। उत्तर प्रदेश के मेरठ, मुरादाबाद तथा अन्य नगरों में हिन्दू—मुस्लिम—दंगों में लोगों का सुख—चैन समाप्त हो गया। मुम्बई को उसी समाज ने बम विस्फोटों से उड़ाने का प्रयत्न किया। सारे देश के हिन्दू किसी हिन्दू—निष्ठ मंत्र के लिये लालायित हो गये।

## अति उदारता अति घातक

टायनबी ने कहा था—"सभ्यता जब अति सभ्य हो जाती है, तब कोई न कोई बर्बरता आ कर उसे निगल जाती है।" और मुस्लिम मानस के इसी अड़ियलपन, अनुदारता और असंहिष्णुता की भावनाओं को देखते हुए जार्ज बर्नाड शा ने लिखा था—प्ज पे जवव इंक जव इम जवव हववकण (बहुत बुरा होता है बहुत भला भी होना) वैद्य गुरुदत जी प्रख्यात उपान्यासकार ही नहीं अपितु एक श्रेष्ठ चिन्तक भी थे। वे अक्सर कहा करते थे—"हिन्दु समाज के पतन के दो कारण हैं। एक तो भाग्यवाद और दूसरा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना।

इतिहास का स्पष्ट संदेश है कि अत्युदारता ही हमारे राष्ट्रनायकों की विजयों को सदा पराजयों में परिणत करती रही है। पृथ्वीराज की आखें न जातीं, भारत परतन्त्र न होता, यदि उस ने तरावड़ी के मैदान के पहले युद्ध में मुहम्मद गौरी को क्षमा करने के स्थान पर उसका सिर उड़ा दिया होता, और मुस्लिम आक्रान्ताओं के समान ही उस सिर को भाले पर रख वह अपनी सेनाओं को गजनी तक ले गया होता। इतिहास इस बात को चीख—चीख कर कह रहा है कि पाकिस्तान के विषैले दांत आज हमें इस प्रकार न डस रहे होते यदि हमने ताशकन्द में उन टूटे दांतों को फिर से उसी के मुख में न लगा दिया होता, और फिर दोबारा शिमला में उस पराजित, हतगौरव मेमने को फिर से भेड़िया बनने का अवसर न दिया होता। उदारता के इस अतिरेक को चेतावनी देते हुए ही राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा था—

**विष खींचना है तो उखाड़ विषदन्त फेंको**
**वृक—व्याघ्र—भीति से मही को मुक्त कर दो।**
**अथवा अजा के छागलों को ही बनाओ व्याघ्र,**
**दांतों में कराल कालकूट विष भर दो।**

**डाकुओं से भीख**

समझ में नहीं आता कि गांधी से लेकर हमारे वर्तमान नेताओं तक सभी 'भिक्षां देहि' की भाषा बोलने के आदी क्यों हो गये हैं? हमारे तोड़े गये मंदिरों में कुछ को, केवल तीन को वापिस करने की मांग भी इतनी दीनता से, सकुचाते हुए, झिझकते हुए, डरते—डरते करना तो बस वैसा ही है जैसे किसी की सौ कमरों वाली हवेली पर जबर्दस्ती कब्जा जमाये बैठे डाकू से हवेली के मालिक का यह प्रार्थना करना कि "भैया"! कम से कम एक कमरा तो मेरे रहने के लिए भी दे ही दो, इतनी दया तो मेरे परिवार पर करो ही।"

**'अधिकार मांगना नहीं किसी से लेकिन**
**करे याचना वह जिस में कुछ शक्ति नहीं हो।'**

उदारता, अहिंसा, दया, क्षमा जैसे भावों का प्रचार करने वाले सम्राट अशोक को भी अपने आदेशों के अन्त में लिखना पड़ा था कि इन भावनाओं का अनादर करने वालों को दण्ड देने के लिये अशोक की 5 लाख सेना सदैव तैयार रहेगी। यह वह शक्ति ही थी, जिसके कारण अशोक के भेजे हर प्रचारक को विश्व के हर देश में आदर मिला, उसकी बात को सुना, सराहा, और माना भी गया।

अतिशान्तिप्रिय देश भारत पर चीनी आक्रमण होने पर गांधीभक्त दिनकर को भी विवश होकर लिखना पड़ा था

**'जागो जागो, जागो!**
**गांधी की रक्षा करने को गांधी से भागो!**

समय आ गया है कि भगवान श्रीकृष्ण के शब्दों में दुर्योधन को स्पष्ट कह दिया जाए—

**दातुमर्हसि मद्वाक्याद्राज्यार्धं धृतराष्ट्रज!**
**अन्यथा सागरान्तां गां हरिष्यान्ति हि पाण्डवाः!**

हे धृतराष्ट6261 के बेटे! मेरे कहने से आधा राज्य दे दो। नहीं तो पाण्डव सागरों तक की सारी पृथ्वी को छीन लेंगे।

## उपलब्धियों अथवा विफलताओं का पर्व?

किसी भी राष्ट्र के लिये स्वतन्त्र62तादिवस या गणतन्त्रदिवस राष्ट्रीय उल्लास एवं उत्सव का अवसर हुआ करता है। यह अवसर राष्ट्र की विजय के लिये किये गये वीरो के पराक्रमों पर गौरव प्रकट करने का दिन तथा राष्ट्र की उपलब्धियों पर आनंद मनाने का समय होता है और भविष्य की उपलब्धियों के लिये संकल्प का दिवस होता है।

संसार का प्राचीन राष्ट्र भारत, जिसकी कीर्ति–पताका चीन, जापान, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया के सुविशाल मन्दिरों में आज भी फहरा रही है, वहां की साहित्य–संपदा आज भी जिसका बखान कर रही है, जिस भारत की सांस्कृतिक धरोहर को बल्ख, बुखारा, ताशकन्द, समरकन्द और खोतान के खण्डहरों में यूरोप, अमरीका और जापान के विद्वान पिछले 150 वर्षों से खोज कर प्रकाशित करते रहे हैं, जिस भारत के आचार्य अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, तिब्बत, मंगोलिया आदि देशों में देववाणी संस्कृत और हिन्दू संस्कृति का प्रचार कर धर्म–विजय से भारत को 'जगद्गुरु' का महनीय पद दिलाते रहे, वह भारत 1000 वर्षों की दासता से मुक्त हो कर भी राष्ट्रीय–गौरवशून्य दिखाई दे रहा है और संकल्पहीन सा बना है।

15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, किन्तु वह भारत की विजय थी या अंग्रेजों की विवशता? क्या हमने पराक्रमपूर्वक अंग्रेज शत्रु को पराजित कर देश को स्वतन्त्र किया था। या अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाए रखने में अक्षम होने के कारण जैसे चाहा भारत को खण्डित करके अपनी पसन्द के नेताओं के हाथ में भारत की सत्ता को सौंपा था?

स्वतन्त्रता के लिये भारत की तड़प का खोखलापन तो इसी बात से उजागर हो जाता है कि हमने उसी अंग्रेज शासक लार्ड माउंट बैटन को भारत का गवर्नर जनरल बनाया जो भारत को अंग्रेजी दासता के चंगुल में जकड़े हुए था। स्वतन्त्र होकर भी हमने अंग्रेज के अधीन रहना क्यों पसन्द किया जबकि पाकिस्तान ने अंग्रेज को नहीं बल्कि अपने नेता मुहम्मद अली जिन्नाह को पाकिस्तान का गवर्नर जनरल बनाया। इतना ही नहीं, स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पश्चात् भी भारत की थल सेना, नौ सेना, और वायु सेना के प्रमुख सेनापति अंग्रेज ही रहे। कई वर्षों तक हमारी वायु सेना और नौ सेना के प्रमुख अंग्रेज बनाये रखे गये। किसी देशाभिमानी के लिये यह लज्जाजनक बात है कि जिन शत्रुओं ने हमारी मातृभूमि को गुलाम
बनाए रखा, जिन्होंने भारत के स्वतन्त्रता–सेनानियों को फांसी पर लटकाया, जिन्होंने भारत के महान राष्ट्रभक्त नेताओं, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक आदि को वर्षों जेल की काल–कोठरी में बन्द रखा, जिन्होंने भारतमां के श्रेष्ठ सपूतों वीर सावरकर, भाई परमानन्द को काले पानी की नारकीय जेलों में बैलों के स्थान पर कोल्हू में जोता, स्वतन्त्र होने के उपरान्त भी उन दुष्ट शत्रुओं को हमने न केवल आदरणीय स्थान दिया बल्कि राष्ट्र और अपनी सेनाओं तक को उनके अधीन रखना पसन्द किया।

स्वतन्त्रता–संग्राम के कालखण्ड में अंग्रेजों ने भारत की राजनीति में कई ऐसे नेताओं को प्रविष्ट और प्रतिष्ठित किया जो ऊपर से तो भारत की स्वतन्त्रता के पक्षधर थे किन्तु अन्दर से अंग्रेजों के हित साधने में लगे रहते थे, जो शत्रुओं को मार भगाने के राष्ट्रीय संकल्प को कमजोर करने और भ्रमित करने में लगे रहते थे, जो अहिंसा का राग अलाप कर देशभक्तों को क्रान्तिकारियों के आन्दोलन में सम्मिलित होने से हटाते रहे। इसी कारण अंग्रेजों ने जब देखा कि अब भारत को और अधिक गुलाम नहीं रख सकते तो ऐसे हाथों में सत्ता सौंपने का सफल प्रयत्न किया जो उनकी ही पसन्द के लोग थे।

यदि स्वतन्त्र होने पर भारत की सत्ता वीर सावरकर या सुभाष चन्द्र बोस जैसे तेजस्वी राष्ट्रभक्तों के हाथ में आई होती तो क्या 1947 में पाकिस्तान कश्मीर पर आक्रमण करने का दुस्साहस करता? क्या कश्मीर में पाकिस्तानी आक्रमणकारियों को जब भारत की वीर सेनाएं खदेड़ बाहर कर रही थीं तो जवाहर लाल नेहरु की भाँति युद्ध–विराम की घोषणा करके कश्मीर के एक बड़े भूभाग को पाकिस्तानी दरिन्दों के हाथों में रहने दिया जाता। स्वतन्त्र भारत की बागडोर ऐसे नेताओं के हाथों में आ गयी जिन्होंने स्वतन्त्रता और परतन्त्रता के भेद को ही धूमिल कर दिया, जो अपनी भाँति पूरे देश को अंग्रेजियत के रंग में रंगने का उपक्रम करते रहे। भारत में राष्ट्रभाषा का चलन समाप्त करने के लिए प्रयास किये गये। स्वतन्त्रता–आन्दोलन में जिस राष्ट्रगान को गा–गा कर नवयुवक राष्ट्रदेवता की बलिवेदी पर चढ़ने की प्रेरणा लिया करते थे, उस 'वन्देमातरम्' गीत को राष्ट्रगान की पदवी से हटा कर अंग्रेजों की पसन्द का गीत ''जन गण मन अधिनायक'' जो अंग्रेज सम्राट् की स्तुति में 1911 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा जॉर्ज पंचम के स्वागत में गाया गया था, भारत का राष्ट्रगान मान लिया गया। हमारे नेताओं के राष्ट्राभिमान का अनुमान इस बात से ही लग सकता है कि हमारी नौ सेना का ध्वज वही सेंट जोर्ज का क्रॉस है जो ब्रिटिश नौ सेना का ध्वज है। हमें विचार करना चाहिये कि भारत की नौ सेना का ध्वज ऐसा क्यों हो जिस का अर्थ यह निकले कि भारत अंग्रेजी साम्राज्य का ही भाग है। क्रास तो ईसाई चिन्ह है। वह भारत का ध्वज कैसे हो सकता है, किन्तु देशवासियों को मूर्ख बनाया जा रहा है और राष्ट्रसम्मान पर आघात किया जा रहा है।

भारत की राजधानी में इंडिया गेट पर 'वीर जवान ज्योति' रखी गयी है, जहां हम गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर वीरगति को प्राप्त हुए वीरों की स्मृति में अभिवादन करते हैं। प्रश्न उठता है किन वीरों की स्मृति में? इंडिया गेट की दीवार पर प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजी साम्राज्य के पक्ष में जो भारतीय जवान मारे गये उनके नाम लिखे हुए हैं। अंग्रेजों ने प्रथम विश्वयुद्ध की विजय के स्मारक के रूप में ही इंडिया गेट बनाया। स्वतन्त्र देश के सेनापति तथा प्रधानमन्त्री यदि अंग्रेजी सेना के शहीदों को प्रणाम करें तो क्या यह राष्ट्रीय सम्मान के अनुकूल है? वास्तव में शहीदी स्मारक तो ऐसे स्थान पर बनाया जाना चाहिये था जहां विदेशी सत्ता से लड़ते हुए भारत के वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी। जहां चन्द्रशेखर आजाद शहीद हुए या जहां भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव को फांसी दी गई या जहां बन्दा वीर वैरागी और श्री गुरु तेग बहादुर शहीद हुए ऐसे चान्दनी चौक में शहीदी स्मारक होना चाहिये था। किन्तु कांग्रेस को तो जन्म ही अंग्रेजों के हित के लिये अंग्रेज अधिकारी ए.ओ. ह्यूम ने दिया था। अपने जन्मदाता की भावना के अनुरूप ही कांग्रेसी नेताओं ने इंडिया गेट को ही शहीदी स्मारक बना डाला।

राष्ट्रपति भवन की वाटिका को मुगल गार्डन नाम देना, नई दिल्ली के प्रमुख मार्गों के नाम औरंगजब रोड, बाबर रोड, तुगलक रोड, विलिंगडन क्रेसेंट रोड रखना इसी बात के द्योतक हैं कि भारत के स्वतन्त्र होने के उपरान्त भी भारतीयों को मानसिक गुलामी में इतना डुबो दिया जाये कि भारत की आत्मा कभी स्वतन्त्र न हो सके, भारत अपनी अस्मिता ही भुला बैठे। आवश्यकता है कि 26 जनवरी के अवसर पर भारतमाता के प्रबुद्ध पुत्र आत्मसम्मानशून्य और भारतीयता से विमुख शासन–तन्त्र के जाल से मुक्त होकर विशुद्ध राष्ट्रवाद पर आधारित शासन–तन्त्र का निर्माण करके अपने राष्ट्र को अजेय, शक्तिसंपन्न और वैभवसंपन्न बना कर विश्व में गौरवास्पद पद प्राप्त कराने की चेष्टा करें। संसार के अनेक देश भारत की ओर आशाभरी दृष्टि से निहार रहे हैं। मॉरीशस, ग्वाना, सूरिनाम, त्रिनिदाद, फिजी ही नहीं, थाई देश कम्बोदिया, लाओस से लेकर मंगोलिया, कोरिया आदि देशों के करोड़ों बौद्ध जन, जो शताब्दियों से भारत की पुण्यभूमि और पुण्यभाषा संस्कृत के प्रति श्रद्धा रखते हुए भारत की तीर्थ–यात्रा के लिये लालायित रहते हैं, वे सब भारत की कीर्ति में ही आनन्दित होते हैं।

विधि ने भारत को विशेष दायित्व दिया है। संसार सदा से भारत को अध्यात्म, एवं ज्ञान के भण्डार के रूप में जानता रहा है। आओ, गणतन्त्र दिवस पर हम फिर भारत को इतना समर्थ बनाने का संकल्प लें कि भारतीय संस्कृति के आलोक से संसार को भी आलोकित कर दें। तभी हम

भारत शब्द को भी सार्थक करेंगे क्योंकि भारत का अर्थ है भा (प्रकाश) में रत। यही भारत का सन्देश रहा है। **तमसो मा ज्योतिर्गमय।**

## जापान में संस्कृत परम्परा

जापान देश में पिछली चौदह शताब्दियों से संस्कृत–अध्ययन की अखण्ड परम्परा चली आ रही है। प्रो. हाजी–मे–नाका–मुरा के अनुसार तो भारत को छोड़कर संसार में सबसे अधिक संस्कृत का अध्ययन–अध्यापन जापान में ही होता रहा है और एक बड़ी संख्या में वहां के विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते रहे हैं। भारत के विश्वविद्यालयों में भारतीय दर्शन का विभाग सन् 1917 में चालू हुआ, जबकि जापान के टोकियो विश्वविद्यालय में यह विभाग सन् 1904 में ही आरम्भ हो चुका था।

पिछली शताब्दी में यूरोप के अनेक विद्वान काल–कवलित हुए संस्कृत वाङ्मय की खोज में लग गये। इंग्लैंड के सर विलियम जोन्स, फ्रांस के प्रो. सिल्वांलेवी, जर्मन विद्वान मैक्सम्यूलर, हंगरी के चोमाखोरेशी, हालैण्ड के प्रो. एच. कर्ण और प्रो. सेदेस आदि विद्वानों ने भारत, तिब्बत, चीन, इण्डोनेशिया आदि की संस्कृत पाण्डुलिपियों तथा संस्कृत से अनूदित ग्रन्थों की खोज की। सहस्रशः ऐसे ग्रन्थों का पता चला जो विदेशी आक्रमणों के कारण भारत में नष्ट हो चुके थे। इन संस्कृत एवं संस्कृत से अनूदित ग्रन्थों का उद्धार और सम्पादन संस्कृत जगत् के लिये एक बड़ी चुनौती रही है। इस दिशा में जितना भी कार्य हुआ है उसका अधिकांश श्रेय यूरोप के संस्कृत विद्वानों को ही जाता है। दुर्भाग्य से भारत अभी इस क्षेत्र में बहुत पीछे है। मध्य पूर्वी एशिया में हजारों संस्कृत ग्रन्थ और ग्रन्थों के खण्ड संग्रहालयों में, पुस्तकालयों में अथवा भूमि के नीचे सोये पड़े हैं और उनमें सोया पड़ा है भारत के सांस्कृतिक अभ्युदय का इतिहास। अपनी मूक वाणी में वे पुकार रहे हैं 'को माम् उद्धरिष्यति' शायद कोई नूतन कुमरिल भट्ट इस पुकार को सुने।

सन् 1880 में जापान में बर्तानिया के दूतावास के एक अधिकारी अनैस्ट–सेटोअ को जापान की 18वीं शती के महानतम संस्कृत विद्वान ऋषिवर 'जी–उन्–सोंजा' द्वारा लिखे गये एक हजार ग्रन्थों का पता चला। उन्हीं दिनों बर्तानिया में ऋग्वेद का प्रकाशन हुआ था। अनैस्ट–सैटोअ ने जापान में ओसाका द्वीप के गुह्य सरस्वती मंदिर ''को–की–जी' के अध्यक्ष भिक्षु 'काईशिन्' को वेद का सैट दिया और भिक्षु 'काईशिन्' से मुनिवर 'जी–उन–सोंजा' के नब्बे ग्रन्थ प्राप्त किये। संस्कृत के इन नब्बे ग्रन्थों से यूरोप के विद्वानों में 'को–की–जी' के सरस्वती मंदिर और मुनि 'जी–उन–सोंजा' की धूम मच गयी। उन संस्कृत ग्रन्थों में से 'उष्णीय विजया ण
धारिणी', 'वज्रछेदिका' और 'सद्धर्म–पुण्डरीक' का सम्पादन एवं प्रकाशन किया गया। फ्रांस के विख्यात भारतीयविद्याविशेषज्ञ प्रो. सिल्वांलेवी भी जापान में संस्कृत–अध्ययन के इतिहास की खोज करने लगे।

जापान के आचार्य ककुबन (1015–1148ई.) ने बीजाक्षर अ को देवता मानकर (अक्षराणामकारोऽस्मि–गीता) उसे अष्टदल कमल पर आसीन तथा उस कमल को भी वज्र पर आधारित माना है। धर्म को शक्ति का आधार मिले तभी धर्म प्रभावी होगा। 'शिंगोन' अर्थात् सत्यवाक् नाम दिया गया। अनेक मंदिर बनाये गये एवं संस्कृत ग्रन्थों के विनय अवदान सूत्र ग्रन्थों के अनुवाद होने लगे। किन्तु मंत्रों का महत्त्व अर्थों में ही नहीं बल्कि उच्चारणों में भी है और चीनी लिपि उच्चारण के लिये समर्थ नहीं है तो भारत की लिपि का संस्कृत के मंत्र लिखने के लिये प्रयोग किया गया। इस लिपि को सिद्धम् कहा गया। 11वीं शती में ईरानी यात्री अल्बेरूनी ने भी अपने यात्रा–वृत्तान्त में लिखा कि भारत में सिद्धम् लिपि का प्रचार है। कोबोदाईशी स्वयं सिद्धम् के अच्छे लेखक थे। जापान में सिद्धम् लिखना एक कला बन गयी, साधना बन गयी, साधना का मापदण्ड बन गयी। और आज तक यह स्थिति है।

चीन और जापान में 'काञ्जी' लिपि में लिखा जाता है जो कि चित्र लिपि है 'कोबोदाईशी' ने ध्वनियों को प्रकट करने के लिये नयी लिपि का आविष्कार किया जिसे काना कहते हैं। यह लिपि उन्होंने संस्कृत वर्णमाला के आधार पर बनायी।

कोबोदाईशी से भी पहले सन् 593 में राजकुमार 'शोतोकु' ने जापान का राज्यभार सम्भाला। 'शोतोकु' अपने महान् आदर्शों एवं धर्मप्रचार के कारण जापान के अशोक कहलाये। ईसा की छठी शताब्दी में शोतोकु ने जापान का 17 सूत्री संविधान बनाया जो कि भगवान् बुद्ध के **'बहुजनहिताय–बहुजनसुखाय'** सिद्धान्त पर आधारित था। सम्भवतः यह संसार का सबसे पहला संविधान है जो कि जापान के होर्यूजी मन्दिर के संग्रहालय में सुरक्षित है। संविधान के अवसर पर भारत से संस्कृत ग्रन्थ 'उष्णीशविजयाधारिणी' मंगवा कर उसका पाठ किया। यह संस्कृत धारिणी भी 'होर्यूजी' मन्दिर में रखी है। किन्तु वर्ष में एक बार ही दर्शनार्थ बाहर निकाली जाती है। यह ग्रन्थ सम्भवतः संस्कृत की प्राचीनतम पाण्डुलिपि हो। संस्कृत की अधिक प्राचीन पाण्डुलिपियां भारत में नहीं, जापान से मिली हैं। भारत में 10 शताब्दी तक की ही पाण्डुलिपियां हैं।

जबकि जापान में छठी शताब्दी की भी पाण्डुलिपियां मिलती हैं। राजकुमार शोतोकु ताईशी ने 'सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र' 'श्रीमाला देवी सिंह नादसूत्र' और 'विमजकीर्ति निर्देशसूत्र' पर भी भाष्य लिखे।

कुछ वर्षों के पश्चात् जापान सम्राट 'शोमू' ने तोदाईजी के मन्दिर के उद्घाटन के लिये भारतीय आचार्य बोधिसेन को बुलाने के लिये अधिकारियों का एक दल चीन भेजा। इस दल की प्रार्थना को स्वीकार करके भारद्वाज ब्राह्मण आचार्य बोधिसेन ने 13 दिसम्बर सन् 730 ई. को जापान के लिये प्रस्थान किया। इनके साथ वियतनामी भिक्षु फुचिये और चीनी भिक्षु 'ताओ सुआन' भी थे। मार्ग कठिनाइयों से भरा था, किन्तु तांत्रिक आचार्य बोधिसेन के प्रभाव से समुद्र शांत हुआ, यात्रा निर्बाध रही। नारा नगर के तोदाईजी के बड़े मन्दिर का उद्घाटन और बुद्ध की विशाल प्रतिमा की प्राण–प्रतिष्ठा आचार्य बोधिसेन के कर–कमलों द्वारा समपन्न हुई। भगवान बुद्ध की यह प्रतिमा अपने बृहत् आकार के कारण 'दाईबुल्सु'? के नाम से प्रसिद्ध है। दाई अर्थात् बड़ा, बुत्सु? अर्थात् बुद्ध। महान् बुद्ध। आचार्य बोधिसेन का जापान के सांस्कृतिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

जापानी नृत्य तथा संगीत जिसे 'बुंगाकु' तथा 'गगाकु' कहते हैं, भारतीय ही हैं जो कि 1300 वर्ष पूर्व आचार्य बोधिसेन द्वारा जापान में प्रचलित हुआ। अनेक संस्कृत कथाएं भी जापान की निधि बन गयीं। जैसे महाभारत में ऋष्यश्रृंग का राजा लोमपाद की पुत्री शान्ता से परिणय की कथा जापान में बहुत प्रचलित हुई। जापानी काबुकी में 'नरुकामी' का कथानक इसी कथा पर आधारित है।

आधुनिक युग में जापान के विद्वान संस्कृत की बड़ी सेवा कर रहे हैं। उन्होंने संस्कृत के अनेक ऐसे ग्रन्थों का उद्धार किया है जिनके केवल अनुवाद ही चीनी तथा तिब्बती भाषा में मिलते हैं। जापान में शिक्षा का माध्यम जापानी होने के कारण जापानी विद्वानों की संस्कृत सेवा की जानकारी बाहर के देशों में बहुत कम हो पायी। जापान में संस्कृत पुण्यभाषा के रूप में मानी जाती है। मध्ययुग में लड़ाई से पहले योद्धा अपने कपड़ों पर संस्कृत के बीजाक्षर लिखवाकर युद्ध में जाया करते थे। मृतकों की समाधियों पर संस्कृत मंत्र 'ओं आविर हूं खं' और 'ओं स्वाहा' के मंत्र लिखे रहते हैं। जापान के अनेक मन्दिरों में लिखे संस्कृत के मंत्र किस भारतीय को मुग्ध न कर देंगे।

# असली शहीदी दिवस

वसन्त पंचमी परम्परा से शहीदी दिवस के रूप में मनाई जाती है। लोग केसरी पगड़ी पहना करते थे। केसरी रंग देश और धर्म के लिये प्राणों की बाजी लगाने वाले वीरों का स्मरण दिलाता है। उन वीरों की स्मृति में गीत गाये जाते हैं। मुस्लिम आक्रमणकारियों से देश और धर्म की रक्षा के लिये राजपूत वीर केसरिया बाना पहनकर जौहर किया करते थे। सहस्रों राजपूतनियां अपने सत (धर्म) की लाज बचाने के लिये जीवित ही चिताओं में सती हो जाया करती थीं। उन का स्मरण भी केसरी रंग कराता है, राणा प्रताप, वीर शिवाजी और छत्रसाल का स्मरण कराता है, रानी दुर्गावती और रानी झांसी का स्मरण कराता है, उन सहस्रों क्रान्तिकारी वीरों, पं. राम प्रसाद, चन्द्रशेखर आजाद और सरदार भगतसिंह आदि का स्मरण कराता है जो हाथ में गीता, मुख में वन्दे मातरम् का उद्घोष करते हुए राष्ट्रार्थ सहर्ष फांसी के फन्दों को चूम लेते थे।

वसन्त पंचमी के दिन ही धर्मवीर हकीकत राय का बलिदान हुआ था। हकीकत राय ने अपने प्राण दे दिये, किन्तु धर्म न छोड़ा। वीर हकीकत धर्म के लिये शहीद होने वालों का प्रतीक ही बन गये। लाखों हिन्दू पिछले तीन–चार सौ वर्षों से वीर हकीकत के बलिदान से प्रेरणा लेते रहे। वसन्त पंचमी के हुतात्मा दिवस पर वीर हकीकत राय का स्मरण करने का विशेष महत्व इसलिये भी है कि धर्म की रक्षा से राष्ट्ररक्षा होती है। भारत का इतिहास साक्षी है कि जो हिन्दू डर के मारे अपने प्राणों को बचाने के लिये या किसी लोभ से मुसलमान बन गये उन की सन्तानें विदेशी, विधर्मी, मुस्लिम शासकों, गौरी, खिलजी, तुगलक और मुगल आततताइयों की सहायक हो गयीं। यहां तक कि पाकिस्तान के लिये, पश्चिमी पंजाब के नगर–नगर और ग्राम–ग्राम में हिन्दुओं का नरसंहार जिन मुसलमानों ने किया वे उन्हीं हिन्दुओं की सन्तानें थीं जिन्होंने डर के मारे मुसलमान बनना स्वीकार कर लिया था। कलकत्ता और नोआखली में लाखों हिन्दू उन्हीं के द्वारा मारे गये। लाखों हिन्दू बहू–बेटियों का अपहरण तक उन्होंने ही किया।

आज भी जो प्रतिदिन आई.एस.आई. के साथ मिलकर कश्मीर, दिल्ली, उत्तर प्रदेश या मुम्बई में बम विस्फोट किये जा रहे हैं, ट्रेनें उड़ाई जा रही हैं और निर्दोष भारतीयों को मारा जा रहा है, उस के पीछे कौन लोग हैं। पाकिस्तान की गुप्तचर एजेंसी या पाकिस्तानी सेना में भी तो वही लोग हैं जिनके पुरखा कभी औरंगजेब के अत्याचारों से बचने के लिये या कभी कश्मीर के सिकन्दर बुतशिकन और दूसरे बादशाहों के अत्याचारों से डरकर धर्मान्तरण कर बैठे थे। इसी लिये वीर सावरकर कहा करते थे कि धर्मान्तरण तो राष्ट्रान्तरण ही है। धर्म बदलने से आस्थाएं और निष्ठाएं भी बदल जाती हैं। अतः धर्म की रक्षा ही सच्ची राष्ट्र–रक्षा है। यदि वीर हकीकत की भांति कोई भी हिन्दू प्राणों को बचाने के लिये मुसलमान न बना होता तो क्या पाकिस्तान बना होता? क्या आज स्थान–स्थान पर बम–विस्फोट तथा ट्रेनों को उड़ाने की घटनाएं होतीं? हमारा कराची, पेशावर, लाहौर और ढाका सब क्या भारत के आंगन में न होते? भारत की जय के नारे ही सब ओर सुनाई देते? इतना ही नहीं काबुल–कंधार भी भारत का ही होता। भारत संसार की सब से बड़ी शक्ति होता।

हिन्दू जब अपना धर्म छोड़कर विदेशी धर्म अपना लेते हैं तो वे अपने देश के ही शत्रु हो जाते हैं। यही बात नागालैंड, मिजोरम, मेघालय में भी दिखाई देती है। इस के उलट जब विदेशी हिन्दू धर्म अपना लेते हैं तो वे भारतभक्त हो जाते हैं। यह शिक्षा भी हमें इतिहास में से मिलती है। प्राचीन काल में भारत पर शक, हूण और कुशाण बर्बर जातियों के आक्रमण हुए। किन्तु जैसे–जैसे

वे भारतीय संस्कृति में रमते गये, भारतीय भाषा संस्कृत को तथा हिन्दू धर्म को अपनाते गये, वैसे–वैसे वे पूर्ण रूप से भारतीय हो गये। उनकी सन्तानों ने न जाने कैसे–कैसे ईरानी, अफगान और तुर्की आक्रमणकारियों से भारत की रक्षा में योगदान दिया होगा इसका अनुमान लगााना भी कठिन है। **''धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षित।''**

परन्तु आज भारत में सैक्यूलर कहलाने वाले गांधी–नेहरूवादी भारतीयों के द्वारा ही जो धोखा हो रहा है उसकी ओर शायद ही किसी का ध्यान जाता हो। इन लोगों की नीतियों से भारत दुर्बल होता जा रहा है और भारत के बाह्य एवं आन्तरिक शत्रु सबल हो रहे हैं। ये लोग भारतीयों में राष्ट्रीय भाव ही उत्पन्न नहीं होने देना चाहते। सभी जातियां अपने राष्ट्रवीरों का स्मरण करती हैं। देश के लिये बलिदान होने वालों की समाधियों पर मेले लगते हैं। सारा राष्ट्र उन बलिदानों का स्मरण कर राष्ट्र के लिये अपने सर्वस्व को भी न्योछावर करने की प्रेरणा प्राप्त करता है, किन्तु स्वतन्त्र होने के उपरान्त भारत की सत्ता ऐसे हाथों में आ गई जिन्हें मानों प्रखर राष्ट्रभक्ति से चिढ़ ही थी। 30 जनवरी, जिस दिन गांधी जी का वध हुआ था, उस दिन को शहीदी दिवस मान लिया गया। यह भी नहीं सोचा कि गांधी जी का वध तो इस कारण से किया गया था क्योंकि गांधी जी ने मरणव्रत रखकर पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये दिलवाये थे अर्थात् गांधी जी ने भारत के लिये नहीं बल्कि पाकिस्तान के हित–साधन के कारण प्राण दिये। किन्तु जिन सहस्रों क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश साम्राज्य की दासता से भारत को मुक्त करने के लिये सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, कालेपानी की काल कोठरियों में जीवन समाप्त करा दिये और फांसी के फन्दे को गले लगाया उनका तो स्मरण ही समाप्त कर दिया गया।

अंग्रेजों से पूर्व जो विदेशी मुस्लिम आक्रान्ता भारत की पवित्र धरती को पददलित करते रहे, महमूद, गौरी, तैमूर, नादिरशाह भारत में कत्लेआम मचाते रहे, गांव के गांव जला कर राख करते रहे, जगत्प्रसिद्ध देवमन्दिर भूमिसात् करते रहे, नालन्दा, ओइन्तपुरी के विश्वविख्यात विश्वविद्यालय और पुस्तकालय जलाकर राख करते रहे, उन शत्रुओं से लोहा लेने वाले भारत के वीरों को हम भूल जाएं, उन के बलिदानों को भूल जायें जिनके सिरों को काट कर मीनार खड़े किये गये। क्या राणा सांगा को भूल जाएं, महाराजा पृथ्वीराज और संकल्प के धनी महाराणा प्रताप को भूल जायें? क्या उन पुरखों के प्रयासों को स्मरण करने से लज्जा आती है?

इसी कारण हमारा मत है कि वसन्त पंचमी को ही शहीदी दिवस के रूप में राष्ट्र मनाए और सभी बलिदानों का स्मरण कर राष्ट्र–रक्षा के लिये तन–मन– धन से सचेष्ट होने का व्रत लें। वसन्त सारे राष्ट्र को वासन्ती रंग में रंग दे। नये रक्त के संचार के साथ–साथ नवोल्लास और उमंगों के पुष्प राष्ट्र–वाटिका में खिलें। हम अपने श्रद्धासुमन वीर हकीकत और वीर बन्दा वैरागी जैसे हुतात्माओं की स्मृति में अर्पण करें।

**उनको पुष्प चढ़ाने मानों दुनिया भर के फूल हैं खिलते।**
**इसीलिये हर बार है आती नयी वसन्त बहार।।**
**एक नयी शक्ति का कराती वीरों में संचार।।**

# असम–मुस्लिम उग्रवाद की चपेट में

असम में मुस्लिम उग्रवाद अब भयानक रूप में प्रकट होने लगा है–ऐसे समाचार आने लगे हैं। दिल्ली से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स के 2 फरवरी के अंक में गुवाहाटी से श्री दर्शन बलवाली द्वारा प्रेषित समाचार आने वाले भीषण मुस्लिम उग्रवाद की ओर पर्याप्त संकेत दे रहा है।

असम के नलवाडी जिले के होजई नगर में 1993 में विश्व मुस्लिम सम्मेलन हुआ था जिसे भारत सरकार या असम सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया। किन्तु इस सम्मेलन के पश्चात् उस क्षेत्र में मुस्लिम युवकों ने अनेक जत्थों को उग्रवाद के लिए तैयार किया है। अनेक प्रशिक्षण–केन्द्र मुस्लिम युवकों को हथियारों का प्रशिक्षण दे रहे हैं। असम की बरकघाटी के करीमगंज जिले तथा नीलबाग और माराझाट क्षेत्रों से भी मुस्लिम युवकों के जत्थे हथियारों के प्रशिक्षण लेने के लिये बर्मा तथा बंगलादेश की सीमा के अन्दर स्थापित शिवरों में जा रहे हैं। स्मरण रहे कि चट्टागांव जिले में 1947 में मुस्लिम अत्यधिक अल्पसंख्या में थे जबकि बौद्ध और हिन्दू जनसंख्या 98 प्रतिशत थी, किन्तु हिन्दू समाज की बेसमझी तथा कांग्रेसी नेताओं की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का शिकार वहां की बौद्ध–हिन्दू जनता को बनना पड़ा जिन्हें जबरदस्ती भारतमां की गोदी से छीनकर पाकिस्तानी दरिन्दों के आगे फेंक दिया गया क्योंकि चट्टगांव पहाड़ी क्षेत्र को पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिया गया।

कुछ ऐसी ही दारुण कहानी सिल्हट जिले की भी है। सिल्हट जिला असम का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र था, किन्तु पूर्वी बंगाल के मुस्लिमबहुल जिलों से मुस्लिमों को लगातार असम के सिल्हट तथा अन्य क्षेत्रें में बसाया जाता रहा डॉ मुंजे तथा वीर सावरकर जैसे हिन्दू नेताओं ने बार–बार असम सरकार को तथा हिन्दुओं को चेतावनी दी, किन्तु फिर भी पूर्वी बंगाल के मुस्लिम असम में बसते ही रहे। 1947 में सिल्हट जिले में उनकी जनसंख्या 50 प्रतिशत के करीब पहुंच गयी। अंग्रेज सरकार ने निर्णय किया कि सिल्हट जिला भारत में रहे या पाकिस्तान में जाये इसका फैसला रेफ्रैंडम से होगा, किन्तु कांग्रेस ने हिन्दुओं को रेफ्रैंडम का बाईकाट करने के लिए कहा जिसके परिणामस्वरूप रेफ्रैंडम में मुस्लिम जीत गये और आसाम का सिल्हट जिला पाकिस्तान को दे दिया गया। आज उसी सिल्हट जिले में उग्रवादियों के प्रशिक्षण केन्द्र चलाए जा रहे हैं, जहां असम से आये मुस्लिम युवकों को हथियारों से लैस किया जा रहा है ताकि वे संपूर्ण असम में कश्मीर जैसी स्थिति पैदा कर दें।

असम के मुसलमान युवकों के लिए भूटान में ट्रेनिंग कैंप चलाये जा रहे हैं और भारत से लगी ब्रह्मदेश (म्यांमार) की सीमा में भी उन्हें ईसाई नागा उग्रवादी प्रशिक्षण तथा हथियार दे रहे हैं।

समाचार के अनुसार भारत की गुप्तचर एजेंसियों का अनुमान है कि आगामी कालखण्ड में मुस्लिम उग्रवाद नागालैण्ड और मणिपुर आदि क्षेत्रों में फैले उग्रवाद से कई गुणा भयानक होगा। पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई. अब मुस्लिम युवकों को भड़काने और भारत के विरुद्ध सशस्त्र लड़ाई के लिये तैयार करने के लिए असम में बसे मुसलमानों के कट्टरपंथी नेताओं की सेवा ले रही है।

बंगलादेश की सरकार चाहे यह कह रही है कि भारतविरोधी गतिविधियों के लिये बंगलादेश की धरती का प्रयोग नहीं करने दिया जायेगा, किन्तु वास्तविकता इसके उलट है। भारतविरोधी

आतंकवादी नेताओं को सुरक्षित स्थान प्राप्त कराये जा रहे हैं। पुराने चले आ रहे प्राशिक्षण–शिविरों को समाप्त करने की बात तो दूर, नये शिविरों के लिए अड्डे बनाये जा रहे हैं।

भारत के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में मुस्लिम उग्रवाद की जो प्रक्रिया चल रही है उस का प्रभाव न केवल असम एवं पश्चिमी बंगाल पर पड़ेगा बल्कि बिहार और उत्तर प्रदेश भी इस दानवी शक्ति की चपेट से बच न पायेंगे। सब जानते हैं कि पहले ही बिहार के पूर्णिया तथा किशनगंज जिलों में स्थिति कितनी बिगड़ चुकी है।

## कभी बाबर के पुरखे भी हिन्दू संस्कृति के पुजारी थे

6 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में बाबरी ढांचा ध्वस्त होने पर भारत ही नहीं अपितू दूसरे कई मुस्लिम देशों में रोष व्यक्त किया गया जिनमें ईरान, पाकिस्तान, बंगलादेश प्रमुख हैं। भारत सहित इन सभी देशों के मुसलमान बाबर को एक ऐसे महान् इस्लामी विजेता के रूप में देखते हैं जिसने भारत में कई सौ वर्षों तक मुस्लिम राज्य चलते रहने के लिए मार्ग प्रशस्त किया और एक विस्तृत मुगल साम्राज्य की नींव डाली। भारत के इस्लामीकरण में बाबर का विशेष योगदान माना जाता है।

बाबर आज के उजबेकिस्तान के फरगना क्षेत्र का रहने वाला था। वह पिता की ओर से तुर्क था और उसकी माँ की रगों में मंगोल रक्त बहता था। अर्थात् उस में तैमूर जैसी नीचता, नृशंसता थी तो चंगेजखान वाली क्रूरता भी थी। मध्य एशिया के मुस्लिम गणराज्यों में भी बाबर को हीरो माना जाता है। किन्तु यदि 7वीं शताब्दी में मध्य एशिया के बाबर के पुरखे अरब आक्रमणों का शिकार होकर मुस्लिम न बने होते तो क्या वे भारत पर आक्रमण करके हिन्दुओं का नरसंहार करते, देव–मंदिर तोड़ते, मूर्तियों को चूर–चूर करते और तलवार की नोक पर लाखों–लाख हिन्दुओं को इस्लाम की दीक्षा के लिये विवश करते। फिर क्या अयोध्या की पावन भूमि में श्रीरामलला के भव्य, सुविशाल मन्दिर के जीर्णोद्धार की आवश्यकता पड़ती?

**शिव और बुद्ध के पुजारी**

उजबेकिस्तान, फरगना, तजाकिस्तान या अफगानिस्तान सभी स्थानों पर इस्लामी आक्रमणों से पूर्व भारतीय संस्कृति का साम्राज्य हुआ करता था। अफगानिस्तान में तुर्क शाही के राजा शैव मतावलम्बी हुआ करते थे। काबुल शहर, जिस काबुल नदी के किनारे बसा हुआ है पहले उसे संस्कृत साहित्य में कुभा के नाम से ख्याति प्राप्त थी। कुभा नदी के दोनों किनारों पर सैंकड़ों शिवालय हुआ करते थे जिन के अवशेष आज भी वहां के संग्रहालयों में देखने को मिलते हैं। अफगानिस्तान में ही बामियान के स्थान पर भगवान बुद्ध की जगत्प्रसिद्ध विशाल मूर्ति खड़ी थी जिसे धर्मान्ध तालिबानों ने अभी कुछ ही वर्ष पूर्व ध्वस्त कर दिया था। चीन देश में धर्म–प्रचार–हेतु जो संस्कृत के आचार्य गये उनमें सर्वाधिक संख्या काबुल से गये आचार्यों की मिलती है। उद्यान, स्वात, गन्धार और बल्ख सभी संस्कृत विद्या के केन्द्र थे। बल्ख के नव विहार की कीर्ति तो एशिया ही नहीं अपितु अरब व यूरोप तक पहुँची थी।

ताशकन्द 8वीं शताब्दी में अरब आक्रमणों के समक्ष परास्त हुआ। तुर्किस्तान को पुराणों में शूलिक नाम से पुकारा गया है। इस में ताशकन्द, समरकन्द, कोकन्द, काशवाढ़ आदि नगर आते हैं। ताशकन्द के मन्दिरों में भारत से विद्वान चित्र बनाने जाया करते थे। इस्लाम से पूर्व की तुर्की भाषा में संस्कृत शब्द प्रचुर मात्रा में हैं। वहाँ से अनेक संस्कृत ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं जैसे 'स्वर्ण प्रभात सूत्र', 'बुद्ध चरित' के खण्ड और तन्त्र शास्त्र। इन क्षेत्रों में जर्मन, फ्रांसीसी, जापानी तथा हंगरी के विद्वानों ने संस्कृत ग्रन्थों तथा अन्य भारतीय सांस्कृतिक संपदा की खोज की। चीन में भारतीय संस्कृति के संदेशवाहक आचार्य कुमारजीव कूचा के थे तो आचार्य व्रज की मां समरकन्द की थी। समरकन्द में तो 13वीं शताब्दी तक देवमूर्तियों का विक्रय होता रहा। वहाँ की सबसे बड़ी

मस्जिद, जिसे बीबी खानुम मस्जिद कहते हैं, के द्वार पर अभी तक देवी की मूर्ति उत्कीर्ण दिखाई देती है।

**मुस्लिम प्रसार**

सन् 988 में मुस्लिम तुर्क सुबुक्तगीन ने हिन्दू सम्राट जयपाल को हराकर काबुल पर अधिकार कर लिया। फिर क्या था, गजनी, कन्धार आदि पर भी कुछ ही वर्षों में मुस्लिम पताका फहराने लगी। कभी हिन्दुत्व का गढ़ रहे गजनी का मुस्लिम शासक महमूद ई. 999 में भारत पर आक्रमण करता, मंदिरों को लूट कर चकनाचूर करता, सोमनाथ तक जा पहुंचा। जहां से सोने, चांदी, हीरे, जवाहरात से लदे ऊंटों के साथ गजनी लौटा। वहां मस्जिद की सीढ़ियों में हिन्दू मूर्ति रखी ताकि उस देव–प्रतिमा पर पांव रख कर नमाजी ऊपर चढ़ें।

भारतीय संस्कृति से ओत–प्रोत तुर्किस्तान का क्षेत्र इस्लाम धर्म ग्रहण करने के उपरान्त उसी संस्कृति का घातक बन गया जिसे उनके ही पूर्वजों ने बड़ी तपस्या से संजोया था। जिस शूलिक क्षेत्र के लोग भारत को पुण्यभूमि मान, तीर्थयात्रा के लिए आते थे, भारत की पुण्यसलिला गंगा में स्नान कर भारत की माटी मस्तक पर लगाते, भारत के मठों, मंदिरों तथा विद्यालयों में स्वर्ण तथा मणि–माणिकों का दान देकर अपने को कृतकृत्य समझते थे, वही शूलिक क्षेत्र (तुर्किस्तान) काल–गति से धार्मिक लोगों की बजाय क्रूर, नृशंस, अत्याचारी तथा विध्वंसक जंगजुओं को जन्म देने लगा जो जिहाद की तलवार हर उस स्थान पर चलाने लगे जहां–जहां हिन्दू संस्कृति विलसती थी।

# सैक्यूलरवाद का अभिशाप

भारत सरकार पाकिस्तान से मैत्री और भाईचारे के सम्बन्ध स्थापित करने के लिये किसी भी सीमा तक जाने को आतुर है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने दो टूक शब्दों में घोषणा कर दी कि कश्मीर में भारतविरोधी आतंकवाद को वे पूरी सहायता देंगे। अर्थात् पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध जो अघोषित युद्ध छेड़ रखा है, उसे वे पूरी शक्ति से चलायेंगे। पाकिस्तान ने इस घोषणा को कार्यान्वित भी कर दिखाया। कश्मीर में जहां–तहां हत्याकांड और बम–विस्फोट होने लगे। हिन्दू मारे जाने लगे। तो भी केन्द्र सरकार विदेश सचिव स्तर पर भारत–पाक वार्ता में जुटी रही। यदि भारत सरकार में थोड़ा सा भी राष्ट्रीय सम्मान होता तो तुरन्त बातचीत बन्द कर देते। पाकिस्तान के राष्ट्रपति की घोषणाओं तथा पाकिस्तानी नागरिकों और एजेंटों द्वारा किये जाने वाले आतंकवादी कृत्यों पर विरोध प्रकट करते और ईंट का जवाब पत्थर से देते, जैसे इज्रायल करता आ रहा है। किन्तु पाकिस्तान द्वारा इतना सब कुछ किये जाने पर भी भारत मैत्री की गुहार कर रहा है, दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा है, कश्मीर में सत्ता ऐसे लोगों के हाथ में दी जा रही है, जिन्हें पाकिस्तान अपने ही समझता है। डा. फारुख अब्दुल्ला को राष्ट्रीय नेता के रूप में उभारा जा रहा है जिसका सारा जीवन भारत की शत्रुता में बीता है।

लन्दन में विद्यार्थी फारुख भारत के विरुद्ध जहर उगलते रहे। वहां के हाईड पार्क में भारत के विरुद्ध सभाएं करते रहे। फारुख का छोटा भाई तारिक तो, कहते हैं पाकिस्तान उच्चायोग में ही काम करने लगा। सन् 1974 में भारत से एक विमान हाईजैक करके कुछ कश्मीरी लड़के लाहौर ले गये। तब लाहौर हवाई अड्डे पर फारुख जुल्फिकार अली भुट्टो के साथ स्वागत के लिये खड़ा था अनेक पत्र–पत्रिकाओं में इस प्रकार के उसके चित्र छपे। भारत–विरोधी संगठन जे.के.एल.एफ. के अध्यक्ष अमानुल्ला खान के साथ और मकबूल बट्ट (जिसको फांसी दी गई थी) के साथ भी फारुख अब्दुल्ला के चित्र छपे हैं। फारुख अब्दुल्ला उनकी भारतविरोधी गतिविधियों में उनका साथी रहा है। पंजाब में खालिस्तानी उग्रवाद को भड़काने तथा सहायता करने में फारुख अग्रणी रहा। वह अमृतसर दरबार साहब में आकर भिंडरवाला से मिला करता था। कहतें हैं कि उसके कमरे मे भिंडरवाला का चित्र भी लगा रहता था। फारुख पर यह आरोप भी था कि खालिस्तानी उग्रवादियों के कैम्प लगवाने में उसने योगदान किया। कश्मीर में उग्रवाद को फारुख कैसे बढ़ावा देते रहे इसका आंखें खोल देने वाला वर्णन श्री जगमोहन ने अपनी पुस्तक में भी किया है। उसी फारुख अब्दुल्ला को भारत के धर्मनिरपेक्ष कहलाने वाले कर्णधार सिर पर चढ़ाते रहे। परिणाम कश्मीर की देशभक्त हिन्दू जनता को भुगतना पड़ रहा है।

धर्मनिरपेक्षता के दीवाने भारत के नेता सदा भारत के हितों से खिलवाड़ करते रहे। ऐसा लगता है कि धर्म के प्रति निरपेक्षता भारत के प्रति भी निरपेक्षता और उदासीनता का भाव पैदा कर देती है। धर्मनिरपेक्षता और सैक्यूलरवाद का ही परिणाम है कि भारत में 2 करोड़ से अधिक बंगलादेशी मुसलमान अवैध रूप से घुसपैठ करके रह रहे हैं। इन विदेशी मुसलमानों को कई नगरों में सैक्यूलरवादी नेताओं ने मतदाता बना लिया है। दिल्ली में तो इन नेताओं ने उन्हें भूमि के प्लाट भी निर्मूल्य बंटवा दिये अर्थात् उन्हें अवैध रूप से भारत में घुसपैठ करने के उपलक्ष्य में पुरस्कार दिये जा रहे हैं।

यह ऐतिहासिक सत्य है कि धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण भी हो जाता है। आखिर पाकिस्तान के रूप में जो नया राष्ट्र बना दिया गया उसका आधार क्या है? यही कि पिछले हजार वर्षों में मुस्लिम आक्रमणकारियों के अत्याचारों के कारण जो हिन्दू धर्म छोड़कर मुस्लिम बना लिये गये वे कालान्तर में अलग मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान के पक्षधर बन गये। जिन्नाह भी यही तर्क दिया करते थे कि पाकिस्तान का जन्म तो तब हो गया था जब पहला हिन्दू मुसलमान बना (Pakistan was born when the first Hindu was converted into Islam)भारत के जिन क्षेत्रों में हिन्दू धर्म छोड़ कर मुसलमान बने लोगों की संख्या अधिक हो गयी, 1947 में वे क्षेत्र भारत से कट गये, उन्होनें अलग पाकिस्तान बना लिया। इतना ही नहीं, भारत को समाप्त करना ही उनकी राष्ट्रीय नीति बन गयी। भारत में विद्रोह भड़काना, उन विद्रोहियों की सहायता करना पाकिस्तान का कार्यक्रम बन गया। नागा, मणिपुरी, बोड़ो, तथा उल्फा विद्रोहियों को आई.एस.आई. हथियार देने लगी। हथियारों का प्रशिक्षण देने के लिये इन विद्रोहियों की टोलियों को बंगलादेश की सीमाओं में प्रशिक्षण दिया जाने लगा। यह सब कुछ धर्मान्तरण का ही परिणाम है।

धर्मान्तरण के कारण भारत मां के पुत्रों का राष्ट्रान्तरण हो गया और वे भारत मां के पुत्र होने की भावना को तिलाञ्जालि देकर भारत के शत्रु हो गये। इसका उदाहरण आसाम के उन क्षेत्रों में भी देखने को मिलता है जहाँ विदेशी ईसाई पादरियों ने वर्षों प्रचार करके उन्हें ईसाई बना लिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि वे अलग स्वतन्त्र राज्य का सपना देखने लगे। नागालैंड बन गया, फिर मिजोरम भी ईसाईबहुल क्षेत्र बन अलगाव के राग अलापने लगा। लालडेंगा के नेतृत्व में भारत के विरुद्ध सशस्त्र सेनाएं बना लीं। भारतीय सेना की टुकड़ियों पर आक्रमण करने लगे धर्मान्तरण के कारण ही यह विद्रोह मेघालय, मणिपुर और त्रिपुरा में भी फैल गया।

भारत के धर्मान्तरित लोगों ने भारत के विरुद्ध जंग छेड़ दी, किन्तु जो हिन्दू धर्म के प्रति उदासीन हो गये और सैक्यूलर होने में गौरव समझने लगे वे भारत के शत्रुओं के प्रति भी प्रेम भाव रखने लगे। पाकिस्तान का नारा लगाने वालों को गले लगाना ही युगधर्म बन गया। पाकिस्तान से मित्रता करना, चाहे फिर उसके लिये कितना भी मूल्य चुकाना पड़े, वे चुकाने को तैयार रहते हैं। पाकिस्तान और बंगलादेश में हिन्दुओं की चाहे जो भी दुर्दशा हो उन्हें कोई चिन्ता नहीं।

आज कश्मीर की जो समस्या बनी है वह इस सैक्यूलरवाद का ही परिणाम है। पाकिस्तान द्वारा 1947 में ही कश्मीर पर आक्रमण हुआ, किन्तु सैक्यूलर जवाहर लाल चुप रहे। महाराजा हरिसिंह ने कश्मीर भारत में मिला लेने का प्रस्ताव किया तो जनमत संग्रह की शर्त लगा दी। भारत की वीर सेना पाकिस्तानीयों को खदेड़ बाहर करने लगी तो सैक्यूलर नेहरू ने एकतरफा युद्धविराम कर दिया और एक तिहाई कश्मीर पाकिस्तान के अधिकार में ही रहने दिया। जम्मू–कश्मीर पर शेख अब्दुल्ला का मुस्लिमपरक शासन लाद दिया जिससे जम्मू और लद्दाख की हिन्दू–बौद्ध जनता को कष्टों का सामना करना पड़ा। हिन्दू–बौद्ध जनसंख्या कम होने लगी।

वीर सावरकर जी ने 1942 के अपने हिन्दू महासभा के अध्यक्षीय भाषण में चेताया था कि यह सैक्यूलरिज्म की बीमारी पाकपरस्ती ही है। और यह बीमारी छूत की बीमारी की भांति बढ़ रही है, जिससे राष्ट्र की जड़ें खोखली हो रही हैं। भारत, जो संसार भर के लिये वन्दनीय रहा, जिसकी कीर्ति–पताका विश्वभर में फैला करती थी, स्वतन्त्र होने पर जो विश्व का महान और शक्तिशाली राष्ट्र बनने की क्षमता रखता था, उस भारत को सैक्यूलरिज्म की बीमारी ने पिछड़ा और दुर्बल कर दिया। सैक्यूलरिज्म के कारण गान्धी जी ने खिलाफत आन्दोलन चला कर भारत में मुस्लिम कट्टरवाद को बढ़ावा दिया, केरल के धर्मान्ध मुस्लिम मोपलाओं ने हिन्दुओं का कत्ले–आम चालू कर दिया, हजारों हिन्दू बहू–बेटियों को जबरदस्ती भगा कर मुस्लिम बना डाला, जिस के परिणामस्वरूप केरल में कट्टरवादी मुस्लिम लीग 40 वर्षों से सरकार में भागीदार होकर क्या कुछ कर रही है, यह अलग लेख का विषय है।

सैक्यूलरिज्म के कारण ही 1947 में मुस्लिम लीग के डाईरैक्ट एक्शन का प्रतिकार करने से हिन्दुओं को रोका गया और भारत के 75 प्रतिशत हिन्दू 23 प्रतिशत मुस्लिम समाज की धमकी के आगे हार मान गये और अपनी पुण्यभूमि के टुकड़े किये जाने को भी स्वीकार कर लिया।

सैक्यूलरिज्म के कारण आज भी भारत सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर चली हुई है। मुस्लिम समाज को सब उपायों से जनसंख्या बढ़ाने के लिसे प्रोत्साहित किया जाता है। करोड़ों रुपयों की योजनाएं उनके हित–साधन के लिये बनाई जा रही हैं। सब जानते हैं कि भारत में मदरसों द्वारा कट्टरवाद और उग्रवाद फैलाया जा रहा है, किन्तु भारत सरकार राष्ट्रीय कोष से मदरसों को चलाने के लिये धन देती है। अल्पसंख्यकों के उत्थान के लिये हजारों करोड़ रुपये दिये जा रहे हैं। किन्तु दुःख की बात यह है कि पाकिस्तान द्वारा प्रोत्साहित भारतविरोधी उग्रवाद की ओर से कई बार आंखें मीच ली जाती है। भारत–सीमाओं पर मुस्लिम जनसंख्या अत्यधिक बढ़ गई या बढ़ने दी गई, जिस कारण भारत में घुसपैठ, तस्करी तथा शस्त्रास्त्रों की स्मगलिंग सरल बना दी गई। कश्मीर में हिन्दू जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ाने की बजाए और घटने दिया गया। भारत की सेनाओं में तथा गुप्तचर विभाग में भी अनेक पाकपरस्त तत्व घुसने में सफल हो गये हों तो आश्चर्य नहीं। सैक्यूलरिज्म के कारण देशहित में यदि कोई अल्पसंख्यक समुदाय के किसी वर्ग के कर्तृत्व (करतूत) पर अंगुली उठाएं तो उसे यही डर बना रहा है कि उसे कहीं अन्दर न कर दिया जाये। इस कारण देशभक्त जनता मूक बनी हुई है, सब कुछ देखकर भी अनदेखा कर देती है। राष्ट्र दुर्बल होता जा रहा है। राष्ट्र–भक्ति दम तोड़ रही है।

वास्तव में भारत की राष्ट्रीयता और भारत का धर्म अर्थात् हिन्दू धर्म आपस में इतने समरस और घुलमिल हो चुके हैं कि हिन्दू धर्म भारत की राष्ट्रीयता का वाहक हो गया है। इसी कारण सावरकर जी एवं डा. हेडगेवार जी की मान्यता रही कि हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है। इसको यदि ऐसे कहें कि राष्ट्रीयत्व ही हिन्दुत्व है तो हिन्दुत्व पर दिये गये भारत के उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अधिक अनुरूप होगा।राष्ट्रीयता के पर्यायवाची उसी हिन्दुत्व को भुलाने–मिटाने के इन चतुर्दिक् प्रयासों के प्रति हिन्दू मानस को सचेत करना और राष्ट्रद्रोहियों के षड्यन्त्रों से परिचित कराना आज प्रत्येक राष्ट्रभक्त का कर्त्तव्य है।

## भारत के पाकपरस्त प्रधानमंत्री

कुछ समय पूर्व एक समाचारपत्र में भारत के दो ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों का उल्लेख किया गया था जो पाकिस्तान के प्रेम में मतवाले हैं। वे दो नाम हैं स्तम्भ–लेखक श्री कुलदीप नैयर तथा उस समय के विदेशमंत्री श्री गुजराल।

भारत का कैसा भाग्य है कि उसे पाकप्रेमी प्रधानमंत्री शायद अधिक ही मिले। सर्वप्रथम श्री जवाहरलाल नेहरू 18 वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री बने रहे। उन्हें भारत शब्द से ही घृणा थी। संविधान में भारत के लिये इंडिया शब्द पर वे बहुत अड़े रहे। भारत की भाषा, भारत का धर्म और भारतीय वेशभूषा से भी उन्हें एलर्जी हुआ करती थी। धोती को वे असभ्यों का वेश समझते थे। समस्त भारत में स्वतन्त्रता के समय हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा बनाये जाने की मांग थी, किन्तु श्री जवाहरलाल नेहरू ने ऐसे कितने ही उपाय किये कि हिन्दी राष्ट्रभाषा न बन सके। हिन्दी–विरोधी लॉबी को बढ़ावा देते रहे। उनके शिक्षामंत्री मौ. आजाद हिन्दी–विरोधी आन्दोलनों के लिये पैसा बांटते रहे। तमिलनाडु के रामास्वामी नायकर को हिन्दी–विरोध के लिये सहायता करते रहे। 'हिन्दी विकसित नहीं है' यह तर्क दिया गया। 'हिन्दी के स्थान पर हिन्दुस्तानी होनी चाहिये' यह आवाज उठाई गयी। क्षेत्रीय भाषाओं की मांग को बलवती बनाया गया। ऐसे कुछ प्रदेशों को अहिन्दीभाषी प्रदेशों की संज्ञा दी गयी। हिन्दी की उपभाषाओं जैसे राजस्थानी, हिमाचली, डोगरी, मैथिली, बीकानेरी, अवधी आदि की मांगें उठवा कर हिन्दी के पक्ष को दुर्बल बनाना चाहा। ऐसे उल्टे तर्क ढूंढे गये कि राष्ट्रभाषा से भारत विभाजित हो जायेगा (जबकि संसार भर में राष्ट्रीय एकता के लिये राष्ट्रभाषा को आवश्यक माना जाता है)। देश के नेता बाबू राजेन्द्र प्रसाद, श्री टण्डन, और हजारों अन्य महापुरुष सिर पटकते रहे, पर जवाहरलाल जी ने किसी की भी चलने नहीं दी और आज यह दशा है कि जिस इंग्लैंड ने हमारी भारतमाता को गुलामी की जंजीरों में जकड़ा, देशभक्तों को फांसी पर लटकाया, हमारी भाषा को दबाया, उन हजारों मील दूर से आयें अंग्रेजों की भाषा को ही वास्तविक रूप में भारत में राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर विराजमान कर दिया गया है।

नेहरू का पाक–प्रेम तो इतना अधिक था कि वे इस बात से उदासीन रह कि कौन सा क्षेत्र पाकिस्तान में जा रहा है और कौन सा भारत में रहेगा। उनका सोचना था कि क्या फर्क पड़ता है यदि कुछ हजार मील इधर रह गया या उधर चला गया। इसी कारण कितने ही हिन्दूबहुल जिले अनुचित रूप से पाकिस्तान को दे दिये गये। जैसे सिंध के थरपारकर के क्षेत्र, बंगाल का 'खुलना' जिला, हिन्दूबहुल लाहौर, यहां तक कि 98 प्रतिशत हिन्दू–बौद्ध जनसंख्या वाला पर्वतीय जिला चट्‌टगांव।

इतिहास साक्षी है कि हमारे पाक–प्रेमी प्रधानमंत्री भारत को बहुत महंगे पड़े हैं। कश्मीर समस्या, जो भारत के कलेजे का नासूर बनी है, पाक–परस्ती का ही दुष्परिणाम है, नहीं तो क्यों महाराजा हरिसिंह के कश्मीर को भारत में मिलाने के प्रस्ताव को लंगड़ा बना डाला गया? क्यों कश्मीर के भारत में विलय के मार्ग में रुकावटें डाली गयीं? क्यों कश्मीर की पुण्यभूमि को इस प्रकार म्लेच्छों द्वारा पदाक्रान्त करने दिया गया? क्यों कश्मीर में तब लाखों हिन्दुओं को पाकिस्तानियों द्वारा मारे जाने के लिये असहाय छोड़ दिया गया। क्यों भारत की विजयी सेना को पाक–विजित क्षेत्रों को

पुनः जीत कर भारत में मिला लेने से रोक दिया गया? और क्यों आक्रमणरत पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये, मंत्रिमण्डल का विरोध होते हुए भी, दे दिये गये? पाकप्रेमी प्रधानमंत्री का होना भारत के लिये सदा खतरा रहा है।

और अधिक उदाहरण देकर इस विषय को अधिक लम्बा न किया जाये। केवल एक घटना का उल्लेख करते हैं जो अभी तक जनता के सामने नहीं आयी। श्री मोरारजी देसाई उच्चकोटि के गांधीवादी थे। जब वे प्रधानमंत्री बने तो उन्हें भारत की गुप्तचर एजेंसी 'रॉ' की फाईलों से पता चला कि पाकिस्तान में परमाणु बम बनाने की जो तैयारी चल रही है, उसे विफल करने के लिये, और इस हेतु कोहाट में बन रहे कारखाने को ध्वस्त करने के लिये पूर्व प्रधानमंत्री की स्वीकृति से भारत के गुप्तचर पाकिस्तान में सक्रिय हैं। उन्होंने इस कार्य में कुछ पाक नागरिकों का सहयोग प्राप्त कर लिया है। रॉ के पूर्व निदेशक श्री मलिक ने अपने एक लेख में बताया कि मात्र दस हजार डालर में इस योजना का पूरा मानचित्र कोई वैज्ञानिक बेचने के लिये तैयार था, किन्तु गांधीवादी प्रधानमंत्री को रॉ के इस कृत्य पर क्रोध आ गया। दस हजार डालर तो क्या स्वीकार करने थे, मोरारजी ने रॉ की पूरी योजना से ही पाकिस्तान के हाई कमिश्नर को अवगत करा दिया। पाकिस्तान ने तुरन्त भारत के इन सभी साहसी गुप्तचरों को गोली से उड़ा दिया।

पाकिस्तान ने मोरारजी देसाई का कितना आभार प्रकट किया इसका पता इसी से लगता है कि पाकिस्तान की सर्वोत्तम सेवा करने के उपलक्ष्य में मोरारजी भाई को पाकिस्तान का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार निशाने–पाकिस्तान बख्शा गया। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रधानमंत्री के हाथ में बहुत शक्ति होती है और सहस्रों मार्गों से वे पाकिस्तान को लाभान्वित कर सकते हैं जिसका किसी को कानों–कान पता भी न लगे।

भारत जैसा सुविशाल राष्ट्र, जिसकी जड़ें पाताल तक गई हुई हैं, कभी संसार भर में जिसकी कीर्ति फैली थी, जिसके ऋषि–मुनियों और आचार्यों के चरणों में बैठकर विश्व के विद्वानों ने उच्च दार्शनिक ज्ञान प्राप्त किया, जिस देश की धरती को कम्पूचिया लाओस, कोरिया, जापान, चीन, इंडोनेशिया, मंगोलिया, नेपाल, श्रीलंका, मॉरिशस, गुआना, आदि न जाने कितने देशों के लोग पुण्यभूमि मानते हैं, संस्कृत मन्त्रों की पूजा करते हैं, रामायण के प्रेमी श्रद्धालु हैं, जिसकी संस्कृत भाषा के कारण पिछली शताब्दी में एक वैचारिक क्रान्ति आ गयी और जर्मनी, फ्रांस, इटली, इंग्लैंड, हालैण्ड के सैंकड़ों विद्वान संस्कृत के अध्ययन और संस्कृत की खोज में लग गये। उन्हीं विद्वानों को श्रेय जाता है कि भारत में तथा मध्य एशिया के देशों में जो प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर मुस्लिम आक्रमणों के उपरान्त भी बची थी उसे संजोया, उसे पढ़ा और उस ज्ञान को संसार के सम्मुख रखा। उन्होंने ही अशोक के शिलालेख खोजे और पढ़े। उन्होंने ही तुरफान, समरकन्द, खोतान, यारकन्द कूचा आदि सभी क्षेत्रों में दबी पड़ी संस्कृत पाण्डुलिपियां, खण्डित मंदिर, दबी टूटी पड़ी अथवा पूर्ण मूर्तियां खोज निकालीं। उन्हीं विद्वानों के सत्प्रयासों का फल है कि आज हमें हिन्दू बालिद्वीप का ज्ञान हुआ, कम्बुज में स्थित संसार के सबसे बड़े विष्णु मंदिर की खोज हुई, वहां के 9000 संस्कृत शिलालेखों को छापा गया।

वास्तव में भारत का आदर्श प्रधानमंत्री वही होगा जो भारत का पुजारी हो, भारत की पुण्यभाषा संस्कृत का अनुरागी हो, राष्ट्रभाषा को भारत में राजभाषा के पद पर आसीन कराये, जो भारत के उत्थान के लिये कृतसंकल्प हो, जो भारत के शत्रु देशों को धूल चटाने की अदम्य इच्छा रखता हो, अपने इस राष्ट्र को विजयी तथा अजेय बनाकर सांस्कृतिक उत्थान करते हुए परम वैभव को प्राप्त करवाए।

जिसका प्रण हो कि जो आंख भारतमाता की ओर उठेगी वह आंख निकाल दीं जायेगी, जो हाथ भारत की उठेगा वह हाथ काट दिया जायेगा। इन्द्रकुमार गुजराल, देवगौड़ा और मनमोहन सिंह जैसों से क्या यह आशा की जा सकती है? क्या वह भारत में षड्यन्त्ररत लाखों पाकिस्तानियों और बंगलादेशियों को खदेड़ बाहर करने की सोचेंगे या फिर भारत–पाक–मित्रता के बहाने शत्रु की और अधिक घुसपैठ को भारत में बढ़ावा देंगे। हमें डर है कि सियाचिन क्षेत्र में पाकिस्तान को कोई ऐसी सुविधा न दे दी जाये जिससे उस क्षेत्र में पाकिस्तान की सामरिक क्षमता ही बढ़

जाये। हमें डर है कि पाकिस्तान से लगे सीमा–क्षेत्रों में चौकसी कम न कर दी जाये और भारत की सैन्य शक्ति की अभिवृद्धि की ओर दुर्लक्ष्य न हो जाये। गुजराल ने तो प्रधानमंत्री पद से अपने प्रथम भाषण में ही घोषणा कर दी थी कि पड़ोसी देश (पाकिस्तान) को एकतरफा सुविधाएं देने की नीति को वे अपनायेंगे। अर्थात् एकतरफा रूप में भारत का मिसाइल कार्यक्रम ढीला किया जा सकता है। सीमा पर सेना में भी कमी होने का डर है। भारत में उर्दू का बोलबाला तो होगा ही।

गुजराल की तत्कालीन सरकार के पक्ष में इंडियन मुस्लिम लीग के संसद– सदस्य अपने भाषण में इतने भाव–विभोर हो रहे थे मानो कोई मुस्लिम लीग का नेता ही प्रधानमंत्री बन गया हो। बाबरी कमेटी के सुल्तान उबेसी की भी कुछ ऐसी स्थिति थी। वह तो इतने आवेश में आ गये कि चुनौती ही दे डाली। **जिस खेत से दुहर्का को मुयस्सर न हो रोटी, उस खेत के हर गोशाए गन्दम को जला दूँ।** अर्थात् उन्होंने भारत के कोने–कोने में विध्वंसक आग लगाने की चेतावनी तक दे डाली। भारत के करोड़ों लोग दूरदर्शन पर यह सब कुछ देख–सुन रहे थे और शर्मिन्दा हो रहे थे कि भारत की संसद में क्या–क्या गुल खिलाये जा रहे हैं। उस दिन भारत की आत्मा क्रंदन कर उठी होगी।

# इण्डोनेशिया में हिन्दू धर्म

इण्डोनेशिया संसार का सबसे बड़ा द्वीपसमूह है। इसमें लगभग तीन सहस्र छोटे–बड़े द्वीप हैं जिनमें जावा (यवद्वीप) प्रमुख है। बालिद्वीप जावा के पूर्व में स्थित है तथा दो सह□ वर्गमील के क्षेत्र में फैला है। चारों ओर समुद्र से घिरा बालि भारत और इण्डोनेशिया की सांझी हिन्दू संस्कृति को अनुपम धरोहर के रूप में संजोये है।

भारत व इण्डोनेशिया के सांस्कृतिक सम्बन्ध कब प्रारम्भ हुए, यह अनुमान लगाना कठिन है, किन्तु जब से इतिहास ज्ञात है ये सम्बन्ध अविच्छिन्न दिखाई देते हैं। इण्डोनेशिया का प्राचीनतम शिलालेख विशुद्ध संस्कृत में बोर्नियो (कालिमन्थन) से प्राप्त हुआ हैं। यह शिलालेख चौथी शताब्दी में महाराजा मूलवर्मन् के काल में लिखा गया था। तभी से संस्कृत भाषा और संस्कृति का प्रवाह वहां निरन्तर चलता रहा। पन्द्रहवीं शती में इस्लाम के आक्रमण बढ़ जाने से यह क्रम टूट गया। फिर जावा और सुमात्रा आदि द्वीपों से अनेक राजकुमार सुरक्षित स्थान की खोज में बालि चले गये। बालि इण्डोनेशिया के हिन्दुओं का शरणस्थान, एक अजेय दुर्ग बन गया। यही कारण है कि इण्डोनेशिया की इस्लामपूर्व की संस्कृति बालि में यथावत् सुरक्षित है।

जो लोग बालि आये वे अपने साथ महाभारत और रामायण भी लाये। रामायण और महाभारत के कथानकों के आधार पर ही साहित्य रचा गया। इण्डोनेशिया की साहित्यिक भाषा कवि कहलाती है। आठवीं शताब्दी ई. तक के शिलालेख संस्कृत में तथा इसके पश्चात् कवि भाषा में प्राप्त हैं। कवि भाषा में प्रायः संस्कृत के ही शब्द हैं। इसकी लिपि भी भारतीय ही है। कवि में संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद और लिप्यन्तर प्रचुर मात्रा में ताड़पत्रों पर उपलब्ध हैं।

कुछ वर्ष पूर्व बालि के एक संस्कृत विद्वान श्री सिद्धार्थ भारत आये। इन्होनें भारत में रहकर संस्कृत में एम.ए. किया है। उस समय यह बालि से प्राप्त संस्कृत ग्रन्थों का सम्पादन कर रहे थे। सौभाग्यवश मुझे उनके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। ये ग्रन्थ संस्कृत पढ़ाने के उद्देश्य से सोलहवीं शताब्दी में लिखे गये थे। प्रथम ग्रन्थ संस्कृत का सारस्वत व्याकरण था। सारस्वत की विशेषता है कि उसे पढ़ सरलता से व्याकरण में प्रवेश किया जा सकता है। दूसरे ग्रन्थ में इस व्याकरण पर कवि भाषा में टीका थी। संस्कृत भाषा में प्रयुक्त अलंकार और छन्दों पर भी ग्रन्थ थे। एक अन्य ग्रन्थ था ककाविन्–जानकी। इसका अर्थ है जानकीकाव्य। ककाविन्–जानकी में लगभग सौ संस्कृत श्लोक ओर उनकी कवि भाषा में व्याख्या थी। इन ग्रन्थों में एक विशेषता थी कि सरल और सरस ढंग से संस्कृत पढ़ाने के लिये ये बहुत उत्तम हैं। आजकल बालि द्वीप के ही श्री फाल्गुणादि इण्डोनेशिया के महाभारत का अंग्रेजी अनुवाद कर रहे हैं। इस महाभारत के दो पर्व प्रकाशित भी हो चुके हैं। श्री फाल्गुणादि बालि के राज–परिवार से हैं। उन्होनें अपना सारा जीवन हिन्दू धर्म के लिए, हिन्दू धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने के लिए समर्पित कर दिया है।

बालि से प्राप्त संस्कृत और संस्कृत साहित्य पर आधारित कुछ कवि ग्रन्थों के नाम हैं–यक्ष–युधिष्ठिर–संवाद, भारत–युद्ध, स्मरदहन, अर्जुनविवाह, सुतसोम, भुवनकोष आदि। इसी प्रकार के सैंकड़ों ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं जिनमें से अनेक का सम्पादन हो चुका है। बहुत सा सम्पादन–कार्य भारत में हुआ है।

प्राचीन काल से ही इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, कम्पूचिया, जापान, मलेशिया, लाओस आदि देशों में संस्कृत पठन–पाठन–परम्परा रही है। इन देशों में संस्कृत के अध्ययन के लिये बड़े–बड़े

विश्वविद्यालय चलते थे जिनके पुस्तकालयों में संस्कृत की अनन्त पुस्तकें व अनुवाद भरे पड़े थे। आज भी अनेक ऐसी पाण्डुलिपियाँ प्राप्त होती हैं जिनके मूल ग्रन्थ कई शताब्दियों तक मुस्लिम आक्रमण होते रहने के कारण अब भारत से लुप्त हो चुके हैं। इण्डोनेशिया के एक विश्वविद्यालय का उल्लेख चीनी यात्री इत्सिंग के यात्रा वृतान्त में उपलब्ध है। इत्सिंग समुद्री मार्ग से भारत आये थे। भारत आने से पूर्व छः मास तक उन्होंने इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप के विश्वविद्यालय में संस्कृत का अध्ययन किया। इत्सिंग को यह स्थान इतना अच्छा लगा कि अपनी यात्रा पूरी कर वे एक बार फिर सुमात्रा आ गये और शेष जीवन में संस्कृत साहित्य का चीनी भाषा में अनुवाद करते रहे।

संस्कृत बालिद्वीप के जनजीवन में कितनी विद्यमान है इसकी कल्पनामात्र भी हम भारतीयों को नहीं हो पाती। ऐसे शब्द, जो भारत में प्रायः अंग्रेजी भाषा में प्रयोग किये जाते हैं, बालि में संस्कृत से लिये गये हैं। कुछ उदाहरण देखिये–राष्ट्रपति–कपालनगर (अंग्रेजी के हैड आफॅ स्टेट का अनुवाद) राजदूत के लिये दूत, प्रधानमंत्री के लिये प्रधानमंत्री ही, जिलाधीश के लिये भूपति, नागरिक के लिये भूमिपुत्र, अध्यक्ष को सूत्रधार, छात्रावास को आश्रम, नौसेनाध्यक्ष को लक्ष्मण कहते हैं। इसी प्रकार गुरु, पुत्र, पुत्री आदि शब्द प्रचलित हैं।

कुछ नगरों के नाम है–अम्लपुर, स्मरपुर, बन्धनपुर (आजकल देन्पासारः बालि की राजधानी), सिन्धु जकार्ता (जयकृतः कृत का अर्थ नगर है यथा भारत में कालीकृत से कालीकाता कलकत्ता, कोलकाता), जोग्ज्या (अयोध्याकृत का भ्रष्ट उच्चारण) आदि। जकार्ता और जोग्ज्याकार्ता जावाद्वीप में हैं तथा शेष बालि में। देश को नगर कहते हैं तथा ग्राम को देश।

इण्डोनेशिया की विमानसेवा का नाम गरुड़ एयरवेज है। भूतपूर्व राष्ट्रपति सुकर्ण स्वयं को पृथ्वी पर विष्णु का अवतार मानते थे, अतः उनका वाहन गरुड़ कहलाया। इसी से गरुड़ एयरवेज नाम प्रचलित हो गया। यातायात सेवाओं के लिये शब्द हैं–सम्पाती और जटायु (रामायण के पात्र)।

लोगों के नाम प्रायः शुद्ध संस्कृत के रखे जाते हैं यथा रत्ना, रतिदेवी, नीलकान्त, युध्यवर्ण, नारायणपुत्र, उदयन, फाल्गुन, आकाशपुत्र, सुकर्ण, सुव्रत, मन्त्र आदि। पहले बालि की राजधानी सिंहराज थी। यहाँ एक पुस्तकालय का नाम है 'उद्यानाज्ञान–भुवन'।

भारत की भांति बालि में भी रामायण आदिकाव्य है तथा इसके रचयिता आदिकवि वाल्मीकि हैं। योगीश्वरकृत ककाविन संस्कृत के भट्टिकाव्य पर आधारित है। रामायण और महाभारत बालि के जीवन में कई प्रकार से रचे–बसे हैं, चाहे वह अभिनय हो या नृत्य, मूर्तिकला हो या चित्रकला। यहाँ तक कि लोगों के नाम भी रामायण और महाभारत के पात्रों पर रखे जाते हैं। आबालवृद्ध सभी रामायण तथा महाभारत के कथानकों में रुचि लेते हैं। प्रायः मन्दिरों के प्रांगणों में अभिनय चलता रहता हैं। लोग बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ इसे देखने आते हैं। यहाँ पात्रों की पहचान मुकुट से होती है। हनुमान और अर्जुन इनके प्रिय पात्र हैं। अर्जुन के पयार्यवाची अनेक नाम मिलेंगे। वे किसी भी पात्र का नाम अनादर से उच्चारित नहीं करते। सीता को देवीसिन्ता कहते हैं, हनुमान को प्रभु हनुमान।

कठपुतलियों और चर्मपुतलिकाओं द्वारा सुन्दर अभिनय होता है। चमड़े की बनी पुतलियों द्वारा छायाचित्रों के अभिनय को वायांग कहते हैं। इण्डोनेशिया का वायांग विश्वभर में प्रसिद्ध है। कोई भी उत्सव हो, राष्ट्रीय या धार्मिक वायांग प्रायः देखने को मिलेगा। वस्तुतः यह कला भारत से ही गयी। आन्ध्रप्रदेश में आज भी छायाचित्रों द्वारा अभिनय होता है।

लकड़ी से बनी राम, सीता, गरुड़, विष्णु, हनुमान, अर्जुन आदि की सुन्दर प्रतिमाएँ यहाँ के बाजारों में सरलता से मिल जाती हैं। विज्ञापनों में रामायण और महाभारत के पात्रों के चित्र मिलते हैं। डाकघर की मुद्राओं पर रामायण–महाभारत के कथानकों के चित्र मिलेंगे यथा सीतादेवी की अग्नि–परीक्षा, स्वर्णमृगकथा, समुद्रमन्थन, गीतोपदेश आदि।

कुछ समय पूर्व इण्डोनेशिया के एक संसद सदस्य श्री पुण्यात्मज ओका भारत तीर्थयात्रा पर आये। वह बालि–निवासी हैं तथा परिषद हिन्दू धर्म (बालि की एकमात्र हिन्दू संस्था) के अध्यक्ष हैं। इनकी भारत के प्रति अनन्य भक्ति देख हृदय गद्गद हो उठता था। इन्हें गीता लगभग पूरी स्मरण

थी। गीता को सदा हृदय से लगाकर रखते थे और जब भी कोई कष्ट होता तो गीता–पाठ करने लगते थे। इन्हें महाभारत में बहुत रुचि थी। प्रायः महाभारत की कथा सुनाते समय अत्यन्त भावविभोर हो जाते थे। श्री पुण्यात्मज गंगा के पवित्र जल में स्नान कर व कृष्णजन्मस्थान के दर्शन कर पुण्यलाभ करना चाहते थे। जब वे हरिद्वार, मथुरा, वाराणसी आदि की तीर्थयात्रा से लौटे तो बहुत प्रसन्न एवं सन्तुष्ट थे। वाराणसी से लौट कर आने को उनका मन नहीं करता था। उनकी पत्नी की आन्तरिक इच्छा थी कि वह भी भारत–भूमि पर अपने प्राण त्यागे जिससे कि पुनर्जन्म भारत में ही हो।

इण्डोनेशिया के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. सुकर्ण को महाभारत बहुत प्रिय था। विदेशी विद्वान उनके काल को महाभारत काल मानते हैं। परन्तु जब श्री सुहार्त्त राष्ट्रपति बने तो इनके काल को रामायण युग की संज्ञा दी गई। इन्होंने राष्ट्रपति बनते ही अन्तर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव का आयोजन अपने देश में किया। यह उत्सव जावा में 1973 में हुआ जिसमें सभी रामायण देशों–थाईलैण्ड, लाओस, मलेशिया, कम्पूचिया, भारत, बर्मा, नेपाल आदि से विद्वान एवं नाट्यमण्डलियाँ बुलायी गयीं। बहुत उत्साह व सफलतापूर्वक यह महोत्सव सम्पन्न हुआ। दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय रामायण महोत्सव दिसम्बर 1975 में दिल्ली में हुआ। बालि में भारत के चतुर्वर्णों का भी समावेश है। परन्तु यहाँ वर्ण जन्म से नहीं गुणकर्म से निश्चित होता है। छुआछूत तो नाममात्र भी नहीं। व्यक्ति चाहे किसी भी वर्ण का हो उसे पूजा करने और पुजारी बनने का अधिकार है। पुजारी को पुजारी कहते हैं। पुजारी सामान्य पूजा किया करते हैं। विशेष उत्सवों पर पदाण्ड पूजा करते हैं। इस में ब्राह्मण होते हैं तथा संस्कृत और कवि भाषा के विद्वान होते हैं। आज भी पदाण्ड ताड़पत्रों पर संस्कृत की पुस्तकों के अनुवाद तथा रूपान्तर लिखते हैं। ऐसे ग्रन्थों का आरम्भ 'ओं अविघ्नमस्तु' मंगलवाक्य से होता है। ताड़पत्रों पर लिखना कला बन गयी है।

भारत के महामनीषी आचार्य रघुवीर बालि से बहुत प्रेम करते थे। वे सन् 1952 में बालि गये तो अपने साथ 3–4 बालि बच्चों को ले आये जिन्हें उन्होंने प्रेम के साथ पाला और संस्कृत पढ़ाई। वे बालि में आज बड़े–बड़े पदों पर आसीन हैं। बालि में बसे लगभग एक करोड़ 25 लाख हिन्दुओं के अतिरिक्त 1976–77 में जावा आदि अन्य द्वीपों के 90 लाख लोगों ने हिन्दू होने की घोषणा की। 15वीं शती में मुस्लिम आक्रमणों के कारण इण्डोनेशिया के द्वीपों में मुस्लिम शासन स्थापित हुआ तो लाखों लोगों को बलात् मुसलमान बनाया गया। कई राजकुमार तो बालि द्वीप में सुरक्षित स्थानों में जाकर बस गये और लाखों लोग जंगलों आदि में जाकर रहने लगे ताकि वे धर्म–भ्रष्ट होने से बच जायें। समय के साथ वे चाहे अपने सनातन धर्म का दृढ़ता से पालन न कर पाये या उनकी परम्पराएँ क्षीण हो गईं किन्तु वे मुसलमान नहीं बने। समझा यह जाने लगा कि उनका कोई धर्म नहीं है। किन्तु अब जब कि उन्हें शासन के नियम के कारण अपने धर्म की घोषणा करनी पड़ी तो उन 90 लाख लोगों ने हिन्दू होने की घोषणा की। ये लोग सम्भवतः पहले धर्महीन कहलाते थे। धर्म की इस दीक्षा में आचार्य रघुवीर के शिष्यों प्रो. मन्त्र और श्री पूजा का योगदान था। इस घटना के उपरान्त धारे– धीरे और भी कबीलों ने हिन्दू धर्म को स्वीकारा। आचार्य रघुवीर की 25 वर्ष पुरानी तपस्या इतने विशद रूप में फलवती हुई।

बालि की जनता गंगा, गीता, गायत्री के देश भारत को एक पुण्यभूमि, अपने स्वप्नों का स्वर्ग मानती है। भारत और बालि के सम्बध और भी सुदृढ़ हों इसके लिए भारत के संस्कृतिप्रेमियों को अग्रसर होना चाहिये।

# सावरकर–मन्त्र ही तारणहार

वीर सावरकर भारत के राजनैतिक क्षितिज पर एक जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति उदित हुए। 1200 वर्षों के मुस्लिम आक्रान्ताओं के अमानुषिक अत्याचारों से अस्त–व्यस्त, 150 वर्षों के चालाक अंग्रेजों के शासन में अपनी आत्मा को भूलती हुई, हिन्दू जाति जब दिग्भ्रमित और उत्साहहीन हो रही थी, शत्रु से लोहा लेने की वैदिक युग से चली आ रही सहज वृत्ति को जैसे खो बैठी थी, भारत में अंग्रेजी राज की बरकतों की धुन अलापने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग में भेड़ों (काली भेड़ों) की वृद्धि हो रही थी, राष्ट्रवाद की जड़ें कमजोर हो रही थीं, विशुद्ध राष्ट्रवाद, हिन्दू राष्ट्रवाद को समझते हुए भी भारत का हिन्दू नेतृत्व अंग्रेजों द्वारा बनायी गयी 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के बनावटी राष्ट्रीय आन्दोलन में फँसा था, विदेशी विधर्मी मुट्ठी भर अंग्रेजों को मार बाहर कर, भारतमाता को स्वाधीन कर भारत जैसे अति महान, अति प्राचीन राष्ट्र को फिर से ऊँचा मस्तक कर एक अजेय शक्ति–सम्पन्न राष्ट्र के रूप में खड़ा करने का विचार भी जब शायद ही कोई करता हो, ऐसे विकट अवसर पर शस्य–श्यामला वीरसविनी भारतमाता ने एक ऐसे लाल को जन्म दिया जिसने 15 वर्ष की अल्प आयु में ही, जब देशभक्त चाफेकर को फाँसी दी गयी, भारतमाता की स्वाधीनता के लिए प्राण–पण से संघर्ष करने का प्रण ले लिया। 19 वर्ष की आयु में ही नवयुवकों को मातृभूमि के लिए जीवन देने की प्रेरणा देने के लिए 'मित्र मेला' नामक संस्था चालू कर दी, जो आगे चलकर 'अभिनव भारत' के नाम की गुप्त संस्था बनी और भारत के अनेक प्रान्तों में क्रान्तिकारी वीरों को संगठित करने लगी। सावरकर जी की राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत कविताएँ तथा लेख महाराष्ट्र के युवकों में राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए प्राणों की बाजी लगाने के भाव का संचार करने लगे।

अंग्रेजी शासकों के कान खड़े हुए। नवयुवक सावरकर की ओर वे सन्देह और डर से देखने लगे। अवसर मिलते ही नवयुवक सावरकर अंग्रेजी साम्राज्य के गढ़ लन्दन में जा विराजमान हुए, और 'अभिनव भारत' नामक क्रान्तिकारी संस्था का विस्तार इंग्लैण्ड ही नहीं, फ्रांस, जर्मनी, इटली और अमेरिका में बसे भारतीयों में किया जाने लगा। बड़े–बड़े मेधावी और साहसी युवक वीर सावरकर के अनुयायी बन कर क्रान्ति के मार्ग पर चलने लगे। लाला हरदयाल जी जैसे प्रखरबुद्धि, वी.सी. अय्यर जैसे विचारक, मैडम कामा जैसी वीरांगंनाएँ और मदन लाल ढींगरा जैसे राष्ट्र की बलिवेदी पर न्यौछावर होने के लिए आतुर ऐसे सैंकंड़ों देशभक्त सावरकर के नेतृत्व में अभिनव भारत के काम में लग गये। '1857 का स्वातन्त्रय संग्राम' नामक प्रखर देशभक्ति की ज्वाला फैला देने वाली पुस्तक लिखकर तो सावरकर ने एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिखाया। अंग्रेज सरकार घबरायी। पुस्तक छपने से पहले ही जब्त कर ली गई और प्रबन्ध किये गये कि पुस्तक बाहर न आ सके। किन्तु सावरकर के अनुयायी पुस्तक की पाण्डुलिपि को भारत और फ्रांस भेजने में सफल हो गये। भारत में उस पुस्तक की पाण्डुलिपि को सर सिकन्दर हयात खान लाए और प्रमुख क्रान्तिकारी सरदार भगतसिंह ने उसे गुप्त रूप से छपवा कर बाँटने का प्रयास किया। अमरीका में गदर आन्दोलन के जनक लाला हरदयाल ने भी पुनः छपवा कर यूरोप भर में भेजी, और कितनी ही भाषाओं में भी उसके अनुवाद किये गये।

आगे चलकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के जवानों में भारत की आजादी के लिए प्राणों को न्यौछावर कर देने की भावना को जगाने के लिए वीर सावरकर जी की इसी पुस्तक के अंशों को छाप–छाप कर प्रचार करना चालू किया। उन्होंने '1857 के स्वातन्त्रय समर' नामक इसी पुस्तक को तमिल भाषा में अनुवाद करवा कर तमिलभाषियों में तेजस्वी राष्ट्रभक्ति का मंत्र फूँका।

लंदन में वीर सावरकर से प्ररित होकर मदनलाल ढींगरा ने सर कर्जन वायली को गोली से भून डाला और भारत की मुक्ति के लिये अपने प्राणों की बलि चढ़ाने की प्यास बुझाने के लिए अपने को अंग्रेज पुलिस को अर्पण कर दिया, किन्तु मदनलाल ढींगरा ने अपना वक्तव्य, जो सावरकर जी द्वारा ही लिखा गया था, प्रसारित करने का प्रयत्न किया; किन्तु धूर्त अंग्रेजी सरकार ने उसे छीन कर दबा डाला। यह सब होते हुए भी वीर सावरकर की योजना से वह वक्तव्य समाचारपत्रों तक पहुँच ही गया।

मदनलाल ढींगरा का वह वक्तव्य क्या था—एक विस्फोट था, हिन्दू युवकों को इस लड़ाई में कूदने का आह्वान था। राष्ट्र के नाम एक प्रेरक संदेश था। यह वक्तव्य हिन्दू राष्ट्रीयता का दर्शन था। भारत की राष्ट्रीयता हिन्दुत्व ही है, और हिन्दुत्व ही भारत की राष्ट्रीयता है, हिन्दुओं के लिए राष्ट्रभक्ति ही धर्म है, यह सब कुछ इस छोटे से वक्तव्य में ''समाहित'' था। अन्तर्राष्ट्रीय कानून की दृष्टि से हिन्दुओं द्वारा अंग्रेजों को छिपकर मारना भी इस (संग्राम) में उचित है, यह राष्ट्रीय युद्ध है न कि विद्रोह, यह सब इसी छोटे से वक्तव्य में लिख दिया गया—ताकि जर्मनी, फ्रांस, इटली, हालैण्ड आदि देशों का समर्थन अभिनव भारत के इस सशस्त्र अभियान को प्राप्त हो सके। इन सभी उद्देश्यों में वीर सावरकर को सफलता भी मिली। जिसका वर्णन इस छोटे से लेख में करना कठिन होगा।

## DHINGRA'S LAST STATEMENT

### "I AM PROUD TO HAVE THE HONOUR TO LAY DOWN MY HUMBLE LIFE FOR MY COUNTRY"

I admit that the other day I attempted to shed English blood as a humble revenge for the inhuman hangings and deportations of patriotic Indian youths.

In this attempt I have consulted none but my own conscience, I have conspired with none but my own duty.

I believe that a nation held down by foreign bayonets is in a perpetual state of war. Since open battle is rendered impossible to a disarmed my pistol and fired.

As a Hindoo i feel that a wrong to my country is an insult to God. Her cause is the cause of Shri Ram, Her sevice is the service of Shri Krishna. Poor in wealth and intellect, a son like myself has nothing else to offer to the Mother but his own blood, and so I have sacrificed the same on Her altar.

The only lesson required In India at present is to learn how to die and the only way to teach it is by dying ourselves; therefore I die and glory in my Martyrdom.

This war will continue between India and England so long as Hindoo and English races last (if this present unnatural relation does not cease)

My only prayer to God is that I may be reborn of the same Mother and I may redie in the same sacred cause till the cause is successful and she stand free for the good of Humanity and to the glory of God.

(26-05-97)

**वीर सावरकर अंग्रेजों की आँख की किरकिरी बन गये। गुप्तचर सावरकर का पीछा करने लगे। अंग्रेजी साम्राज्य सावरकर में अपना सशक्ततम शत्रु देखने लगा। भारत में सावरकर के अनुयायी पकड़े जाने लगे। कन्हरे फाँसी पर चढ़ा दिये गये। बड़े भाई बाबाराव को बंदी बनाकर काले पानी भेज दिया गया। छोटे भाई नारायण भी आगे चल कर जेल में ठूँस दिये गये। स्वयं सावरकर, अपने सहयोगियों को इस कष्ट की स्थिति में देख बचकर काम करने की रणनीति का अनुसरण नहीं कर पाये। वे स्वयं भी अंग्रेजों की कैद में आ गये।**

वीर सावरकर का जलपोत से कूद कर फ्रांस के तट पर पहुँचना, अन्दमान की काल कोठरी में बैल की नांई कोल्हू चलाना, उसी कालकोठरी में देशभक्ति के काव्य लिखना, हिन्दुत्व का तत्त्व—विवेचन प्रस्तुत करना, हिन्दू युवकों को मुसलमान बना लिये जाने के विरुद्ध संघर्ष करना आदि अनेक रोमांचकारी घटनाओं को यहीं छोड़कर अब हम उनके दर्शन की ओर जाते हैं।

सावरकर का एकमात्र लक्ष्य था पराधीन भारत को विश्व का महानतम राष्ट्र बनाना। भारत को विशुद्ध राष्ट्रवाद की ठोस चट्टान पर खड़ा करना। इसीलिये तो सावरकर ने हिन्दू महासभा के ध्वज को जो रूप दिया उसमें उन्होंने भारत के सनातन धर्म के प्रतीक 'ओम' और, भारत के क्षात्र धर्म के प्रतीक खड्ग के साथ, कुण्डलिनी को भी एकत्र चिन्हित किया। जैसे हठयोग से प्राचीन काल के योगी अपनी कुण्डलिनी जगाकर अनेक सिद्धियाँ प्राप्त करके उच्च कोटि के मनीषी बन जाते थे (या कहें कि वे मानव से अतिमानव बनते थे), उसी प्रकार सावरकर अपने इसी हिन्दू राष्ट्र की आन्तरिक शक्तियों को जगाकर इसे एक सुपर राष्ट्र, विश्वभर का महत्तम राष्ट्र, बना देना चाहते थे। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने राष्ट्र को जो मंत्र दिया
वह था—''राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण''। हिन्दुत्व ही इस राष्ट्र का आधार है। यदि आधार ही अशुद्ध होगा, तो राष्ट्र—मंदिर भी अशुद्ध, विकृत और दुर्बल होगा। हिन्दू हिन्दुत्व पर आधारित राजनीति को ही अपनाएँ और हिन्दू—मुस्लिम एकता, कौमी—एकता ''मानव मात्र ही एकता'' के मोह में फंस कर अपने पथ से दूर न हो जाएँ। मात्र राजनीति के हिन्दूकरण से सभी एकताएँ, सभी प्रकार के मानव—कल्याण अपने—आप हो जायेंगे। ''यह धर्मान्तरण तो राष्ट्रान्तरण है''—यह सच्चाई सभी जने अनुभव करते हुए भी बोलने का साहस नहीं जुटा पाते थे।

हिन्दुत्व के आधार पर हिन्दूमात्र का सैनिकीकरण यदि कर लिया जाये तो हम देखेंगे कि यह पिछड़ा, कमजोर समझा जाने वाला राष्ट्र विश्व की सर्वोच्च शक्ति बन जाये जैसे छोटा सा इस्राईल अपने से सौ गुने मुस्लिम देशों के समूह को नाकों चने चबवा रहा है। हिन्दू समाज ने वीर सावरकर के राष्ट्रोत्थान के इस मंत्र की अवहेलना कर दी, किन्तु छोटे से देश इस्राईल ने सावरकर के इस मंत्र को पूरी तरह ग्रहण कर लिया। 6—7 लाख यहूदियों की जनसंख्या वाला इस्राईल केवल अपने युगों से चले आने वाले यहूदी धर्म के आधार पर अपने राष्ट्र को फिर से खड़ा करने लगा। उसने घोषणा की थी कि इस्राईल संसार भर के यहूदियों का देश है। और प्रत्येक युवक—युवती को सैनिक प्रशिक्षण देकर सारे राष्ट्र को अपने से कई गुना संख्या वाले शत्रु के आक्रमणों का मुकाबला करने के लिये उद्यत कर दिया। बस, फिर क्या था—सावरकरी मंत्र काम कर गया। चकित विश्व ने देखा—नन्हें से नवीन राष्ट्र इस्राईल ने अरब देशों को युद्ध में परास्त कर डाला। छोटे से इस्राईल ने सावरकरी मंत्र को सिद्ध किया और अपने राष्ट्र की कुण्डलिनी जगा कर राष्ट्र को परम विभूतिमान् बना डाला।

यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि भारत ने अपने सर्वश्रेष्ठ नेता को भुला डाला। स्वतन्त्रता मिलते ही नेहरूवादियों ने सावरकर—विचार को मिटा डालने के भरपूर प्रयास किये। भारत की दुर्दशा बढ़ती चली गई। नागालैण्ड बना डाला। भारत— विरोधी ईसाई राज्यों का उदय हुआ। पाकिस्तान बनाने के अपराध—बोध से दबे हुए मुस्लिम संगठन फिर सर उठाने लगे। पाकिस्तानी षड्यन्त्र बढ़ने लगे। हिन्दुओं को विभाजित किया जाने लगा। सशस्त्र विद्रोह खड़े किये गये। सीमाओं पर शत्रु दलों की घुसपैठ इतनी बढ़ गयी कि सीमाएँ असुरक्षित हो गईं। देशभक्तों के अधिकार सीमित कर दिये गये। सन्देहास्पद आस्था वाले समाज के लोग राजकाज के ऊँचे आसनों पर बैठने लगे, और पता नहीं और क्या—क्या हो, यदि अभी भी हिन्दू समाज सावरकर को नहीं अपनाता। एकमात्र ''सावरकर की विचारधारा'' ही देश को, अब इन संकटों से बचा सकती है, इस विपन्न और म्रियमाण जाति का उद्धार कर सकती है। उस महान तेजपुंज को, हिन्दू राष्ट्रवाद के मंत्रद्रष्टा को कृतज्ञ राष्ट्र का शत—शत प्रणाम।

# हिन्दू नेतृत्व के हाथ में यदि भारत की सत्ता आई होती......

देश का दुर्भाग्य ही था कि भारत स्वतंत्र होने पर भी भारत की सत्ता विशुद्ध राष्ट्रवादी हिन्दू नेताओं के हाथ में न आकर मुस्लिमपरस्त जवाहरलाल नेहरू तथा मुस्लिम वर्चस्व के लिये समर्पित मौलाना आजाद जैसे लोगों के हाथ में आ गयी जिन्होने खण्डित स्वत्रंत भारत के कर्णधार बनकर भी राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा मुस्लिम हितों को ही वरीयता दी। इन नेताओं ने जम्मू–कश्मीर राज्य को भारत में मिलाये जाने के मार्ग में अनेक अड़चने डालीं। कश्मीर में भारत–भक्त हिन्दू जनता का पाकिस्तानी लुटेरों द्वारा नरसंहार हो रहा था तो भी महाराजा हरिसिंह के बार–बार अनुरोध करने पर भी सेना को कश्मीर में नहीं जाने दिया जबकि पाकिस्तानी सेनाएं परोक्ष व प्रत्यक्ष रूप से आक्रमण कर रही थीं। महाराजा हरिसिंह द्वारा कश्मीर को भारत में विलय करने के प्रस्ताव पर जनमत की शर्त लगाकर ही विलय स्वीकार किया। भारत की सेना, जो पाकिस्तानियों द्वारा हड़प कर लिये गये क्षेत्रों को मुक्त करा रही थीं, को जवाहरलाल नेहरू ने रोक दिया और जम्मू–कश्मीर का एक विशाल क्षेत्र पाकिस्तान के अधिकार में रहने दिया। ऐसे युद्ध के समय गांधी जी ने पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये दिलवाने के लिए मरणव्रत कर दिया।

यदि भारत का हिन्दू–मुस्लिम के आधार पर विभाजन होने के उपरान्त भारत की सत्ता वीर सावरकर जैसे प्रखर क्रान्तिवीर नेताओं के हाथ में आ गयी होती तो आज भारत विश्व के सबसे अधिक शक्तिशाली राष्ट्रों में होता। विश्वभर में फैले हुए हिन्दू भारत की कीर्ति को बढ़ाने में कितना अधिक योगदान करते शायद इसकी कल्पना भी अब लोग नहीं कर पाते। विश्व के क्षितिज पर कितने ही हिन्दू देशों का उदय हो जाता। मारिशस, गुआना, सूरिनाम और फिजी इन चार देशों में तो हिन्दू बहुसंख्या में थे ही किन्तु युगान्डा, कीनिया, त्रिनिदाद जैसे देशों में भी 30 प्रतिशत से अधिक हिन्दू जनसंख्या होने के कारण और शक्तिशाली हिन्दू राष्ट्र भारत, नेपाल के सहयोग से इन देशों में भी प्रबल हिन्दू शक्ति का प्रभाव राजनिति में परिलक्षित होता। इसके अतिरिक्त थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस, इण्डोनेशिया जैसे देश, जहां रामायण की समृद्ध परम्पराएँ हैं और जहाँ संस्कृत भाषा का विशेष आदर है, हिन्दू–बौद्ध–राष्ट्रसमूह (कामनवैल्थ) में शामिल होता। इसी हिन्दू–बौद्ध–राष्ट्रसमूह में भारतीय संस्कृति के प्रभाव के कारण मंगोलिया, कोरिया, श्रीलंका तथा बर्मा भी सम्मिलित होते, जापान भी सांस्कृतिक आधार पर हिन्दू–बौद्ध–राष्ट्रसमूह में सम्मिलित हो सकता था। चीन, जो कि संसार का सबसे अधिक बौद्ध जनसंख्या वाला देश है, भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार में अग्रणी दिखाई देता।

ऐसी अवस्था में विश्व में जो स्थान ईसाई देशों का या मुस्लिम देशों का है उनसे अधिक भारत का होता। किंतु हाय, अब तो यह दुर्दशा है कि भारतीय संस्कृति की बात करना भी साम्प्रदायिकता है, अपराध है। जो देश भारतीय संस्कृति के पुजारी हैं उनसे दुराव, और जो देश भारत में इस्लाम की जीत देखना चाहते हैं उन देशों से दोस्ती बढ़ाने के प्रयास निरन्तर चल रहे हैं।

1946 के चुनाव के समय हिन्दू महासभा के सर्वोच्च नेता स्वातन्त्रयवीर सावरकरजी ने हिन्दुओं को चेतावनी दी थी कि कांग्रेस को वोट देना अखण्ड पाकिस्तान को वोट देना है और हिन्दू महासभा को वोट देना अखण्ड भारत को वोट देना है। काश यदि उस समय भारत के 75 प्रतिशत हिन्दुओं ने अपने क्रान्तिकारी नेता की बात सुनी होती तो भारत खण्डित न होता बल्कि भारत, महान भारत, विशाल भारत होता। भारतमाता की जय और भारतीय संस्कृति की जय की गूंज विश्व के कोने–कोने में सुनाई देती। किन्तु हिन्दुओं ने मुस्लिमपरस्त गांधीवादियों के हाथ में 75 प्रतिशत हिन्दुओं का भाग्य सौंप दिया जिसका परिणाम है कि भारत भर में पाकिस्तान बनाये जाने के प्रयास हो रहे हैं। भारत को मुस्लिम देश बनाने के लिये मुस्लिम तबलीगी जमायतें तथा

मुस्लिम विश्वविद्यालय अपना कार्य कर ही रहे हैं। इसका रूप तमिलनाडु में मीनाक्षीपुरम् में देखने को मिला जहां पूरे गांव के हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया गया। किन्तु यह एक उदाहरण नहीं तमिलनाडु के ही एकमात्र रामनाथुपुरम् जिले में ऐसे कई प्रयास हुए।

मुस्लिम समाज एक और प्रभावशाली उपाय अपना रहा है, वह यह कि बड़े पैमाने पर हिन्दू लड़कियों को अगवा कर मुसलमानों में बेचा जा रहा है। समाचारपत्रों में कई बार समाचार प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली जैसे नगर में ही सैंकड़ों हिन्दू लड़कियों को प्रतिमास बहकाकर मुस्लिम युवकों से विवाह कराया जा रहा है। 'स्थिति यह हो चली है कि मुस्लिम विद्वान मौलाना वहीदुद्दीन भारत में मुस्लिम प्रधानमंत्री होना चाहिये' यह मांग कर रहे हैं। दूसरी ओर वे मुसलमानों को ऐसे उपाय बता रहे हैं कि कैसे एक दिन भारत का प्रधानमंत्री पद मुसलमानों के हाथ में आ सकता है।

# जवाहरलाल नेहरू : एक समीक्षा

जवाहरलाल नेहरू को हिन्दुत्व से घोर घृणा थी। हिन्दू धर्म के लिये उन्हें कभी आदर नहीं रहा। भारत की सांस्कृतिक धरोहर के लिये ममत्व नहीं रहा। वे स्वंय मानते थे कि शिक्षा से वे अंग्रेज हैं, सभ्यता से मुसलमान हैं और मात्र संयोग ही है कि वे हिन्दू मां की कोख से जन्मे हैं।

हिन्दू–मुस्लिम के आधार पर भारत का विभाजन उन्होंने स्वीकार किया। भारत–भू के विशाल खंड में मुस्लिम राज्य पाकिस्तान बनाने की स्वीकृति दी, जिसका स्वतः अर्थ है कि भारत का शेष भाग हिन्दुओं का है। इस भाग में हिन्दू राज्य ही होना चाहिये था। किन्तु हिन्दू भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने तो संकल्प कर रखा था कि शेष भारत को भी वे हिन्दू भारत नहीं बनने देंगे।

पाकिस्तान बनने के उपरान्त भारत के मुसलमान स्वाभाविक रूप से पाकिस्तान को अपना देश मानते थे। वे भारत छोड़कर पाकिस्तान जाना चाहते थे। अनेक स्थानों पर वे अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे थे, इस कारण अपने घर–बार छोड़कर पाकिस्तान जा रहे थे, किन्तु मौलाना आजाद कुछ और ही खेल खेलना चाहते थे। आजाद साहब सोचते थे कि भारत का एक तिहाई भाग तो मुस्लिम राज्य बन चुका है, किन्तु शेष भारत के मुसलमान यदि भारत में ही रहकर अपनी संख्या–वृद्धि करते रहे तो भारत में भी उनकी हिस्सेदारी बनी रहेगी और धीरे–धीरे भारत को भी इस्लामी प्रभाव में लाया जा सकेगा। अतः उन्होनें गांधी जी और नेहरू साहेब से पूरी कोशिश करवाई कि भारत से मुसलमान पाकिस्तान न जायें। जवाहरलाल नेहरू ने शासन की पूरी शक्ति इस बात के लिये लगा दी। मुसलमानों के जो काफिले पाकिस्तान की ओर प्रस्थान कर चुके थे उन्हें मार्ग में ही रोका गया। उन्हें तरह–तरह के आश्वासन देकर वापिस अपने घरों को लौटाया गया। हरियाणा के लाखों मेव मुसलमान जो पाकिस्तान के लिये कई काफिलों में जा रहे थे, कुछ फिरोजपुर सीमा तक पहुंच चुके थे, सबको वापिस लाया गया। इसी का परिणाम है कि हरियाणा में मेव क्षेत्र आज मिनी पाकिस्तान बना हुआ है। ऐसा ही कितने ही अन्य क्षेत्रों में हुआ।

जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत का प्रधानमंत्री बनते ही भारत की हिन्दू शक्ति को कुचलने के प्रयास चालू कर दिये थे। हिन्दू महासभा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को वे शत्रु मानते थे। श्री सावरकर जी जैसे भारतमाता की स्वतंत्रता के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा देने वाले महान सेनानी को वे अपने मार्ग में सबसे बड़ी बाधा मानते थे। स्वतंत्रता–प्राप्ति के 2 माह पश्चात् ही अक्टूबर 1947 में नेहरू जी ने भारत के सभी प्रान्तों के मुख्यमन्त्रियों को एक परिपत्र भेजा जिसमें कहा गया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। किंतु संघ की शक्ति तथा जन–विरोध से डरकर प्रान्तों के मुख्यमन्त्रियों ने केन्द्र से इस पग को न उठाने के लिये ही सलाह दी।

किन्तु 30 जनवरी 1948 को गांधी–वध की घटना हुई। उसी घटना का भरपूर लाभ उठाकर नेहरू साहब ने हिन्दू संगठनों की कमर तोड़ने का पूरा प्रयास किया। संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया। वीर सावरकर जी तथा संघ के कई हजार कार्यकर्ताओं को जेल में बंद कर दिया गया। कई घरों में कोई कमाने वाला न रहा। हजारों परिवार तबाह हो गये। देश भर में आतंक छा गया। इस प्रकार हिन्दू शक्ति की कमर तोड़कर भावी भारत का ढांचा तैयार किया जाने लगा। भारत से भागकर जो मुसलमान पाकिस्तान जाने की सोच रहे थे, उनका मनोबल बढ़ गया। उनके मन में अपराध–बोध था कि उन्होनें पाकिस्तान बनाने के लिये आन्दोलन किये थे, पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये थे, स्थान–स्थान पर हिन्दू–मुस्लिम दंगों में बढ़–चढ़कर भाग लिया था, अब पाकिस्तान बन जाने के बाद हिन्दुओं के हिन्दुस्थान में वे कैसे सुरक्षित रह सकते हैं जबकि पाकिस्तान में हिन्दुओं पर किये जाने वाले अत्याचारों के समाचार प्रतिदिन अखबारों में आ रहे थे। पहले ही कलकत्ता और नोआखली में हिन्दुओं का नरसंहार को चुका था। नेहरू जी ने हिन्दू महासभा और

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ऐसी कमर तोड़ी तथा इनके विरूद्ध ऐसा अपप्रचार किया कि जैसे संघ—कार्यकर्ता होना ही अपराध है, देशहित के विरुद्ध है। बस फिर क्या था, पाकपरस्त मुसलमानों का साहस बढ़ गया, कुछ समय के लिये उन्होनें गांधी टोपी पहन कर भारत की राजनीति में अपने पांव जमाने चालू कर दिये। स्थिति यहां तक आ गई कि भारत के टुकड़े करने वाली मुस्लिम लीग अपने पूर्व नाम से ही फिर जीवित हो गयी। शहाबुद्दीन जैसे कट्टरवादी नेता धमकियां देने लगे, इमाम अब्दुल्ला बुखारी जैसे कठमुल्लों की ही सब ओर पूछ होने लग गयी। यदि स्वतंत्र होने के उपरान्त देश के प्रधानमंत्री नेहरू की बजाय पटेल बने होते तो भारत का चित्र कुछ और ही होता। भारत स्वतंत्र होने पर ईसाई विदेशी प्रचारक अपना बोरिया बिस्तर बांधने लगे थे, क्योंकि वे समझते थे कि अंग्रेजी राज्य के न रहने पर उनको सरकारी प्रश्रय नहीं मिलेगा, बल्कि स्वतंत्र भारत के हिन्दू यह सहन नहीं करेंगे कि वे हिन्दुओं को ईसाई बनायें। नागा, खासी, मिजोरम आदि क्षेत्रों की जनता में भारतविरोधी भावनाएं फैलाएं। किन्तु श्री जवाहरलाल नेहरू ने इन ईसाई पादरियों को आश्वासन दिया, उनका डर समाप्त किया, उन्हें यथावत् प्रचार करने की प्रेरणा दी। **इतना ही नहीं, यह भी प्रबन्ध किया, कि नागा, खासी, जयन्त्या हिल क्षेत्रों में विदेशी पादरी तो प्रचार कर सकें किन्तु हिन्दू प्रचाारक न जा पाएं** ऐसे नियम बना दिये गये। भारतीयों का वहां प्रवेश वर्जित कर दिया गया। श्री राममनोहर लोहिया जी ने एक सभा में भाषण देते हुए बताया कि किस प्रकार उन्होंने नागा क्षेत्रों में जाना चाहा तो उन्हें पकड़ लिया गया। श्री लोहिया तो अपनी धुन के पक्के थे ही। किसी न किसी प्रकार वे नागा क्षेत्र में पहुंचे। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने देखा कि उन क्षेत्रों में प्राचीन भारतीय संस्कृति जैसी की तैसी 1500 वर्षों से सुरक्षित पड़ी है। स्थान—स्थान पर नगरदेवता और ग्रामदेवताओं को लोग मानते थे। किन्तु विदेशी मिशनरियों ने उनकी संस्कृति छीन ली, उन्हें ईसाई तो बनाया ही, साथ—साथ भारतविरोधी भी बना डाला।

नागा क्षेत्रों में भारतविरोधी गतिविधियां बढ़ती गईं। अनेक भारतविरोधी सशस्त्र सेनाएं बन गईं जो भारतीय सेना के जवानों पर आक्रमण करती रहीं। किन्तु जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय सेना को जवाबी कार्यवाही न करने के आदेश दे रखे थे। नागालैण्ड इसी प्रकार बना। मिजोरम भी पूर्ण ईसाई राज्य हमारे देखते—देखते ही बन गया और फिर मेघालय भी पूर्ण ईसाई राज्य बन गया। इन राज्यों में भारत सरकार से अधिक चर्च की चलती है। चर्च लगातार अपना प्रभाव—क्षेत्र बढ़ा रहा है। मणिपुर भी लगभग ईसाई राज्य ही बन चुका है। मणिपुर के मुख्यमंत्री स्वयं ईसाई है और गुप्तचर विभाग केन्द्र को यह सूचनाएं भेजता रहा है कि कैसे मुख्यमंत्री नागा विद्रोहियों की सहायता करते रहते हैं। असम के इन क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों ने एक संगठन बना लिया है जो अधिक क्षेत्रों में विद्रोह की आग फैला रहा है। विद्रोही सेनाओं का गठन कराया जा रहा है। उन्हें शस्त्रों का प्रशिक्षण दिया जाता है, शस्त्र दिये जाते हैं। यह सब एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र का रूप ले चुका है। असम के उल्फा उग्रवादी, बोडो आतंकवादी, त्रिपुरा के विद्रोही ऐसे कितने ही विद्रोही संगठनों को बर्मा के ईसाई नागा क्षेत्रों में भेज कर या बंगलादेश के चटगांव क्षेत्र में पाकिस्तान की आई.एस.आई. के सहयोग से इन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है। भारतमां के पुत्रों को ही भारत का द्रोही बना कर भारत के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार करने का यह कार्य विराट रूप ले चुका है।

जवाहरलाल नेहरू जी के जन्मदिन 14 नवम्बर को पुरानी स्मृतियां फिर ताजी हो उठती हैं। भारत को जो उनकी देन है, उसका लेखा—जोखा होना ही चाहिए। भारत की भावी संतानों को भारत के वास्तविक इतिहास का ज्ञान हो, यह दायित्व हमें भूलना नहीं चाहिए।

# विश्व में भारत–भारती

यदि यह कहूँ कि भारत–भारती अर्थात भारत की वाणी विश्व के अनेक देशों में प्रचलित थी या अब प्रचलित है तो यह बात भारतवासियों को भी अटपटी लगेगी। परन्तु यह सत्य है कि भारत–भारती भारत से भी अधिक अच्छे रूप में कई देशों में चलती है। दूर क्यों जाएं–इण्डोनेशिया को ही ले लीजिए। नाम में ही पहले इण्डो है। वैसे प्राचीन नाम जो वहाँ के साहित्य में मिलता है वह है–द्वीपान्तर। हाँ, यह संस्कृत का नाम है। इस देश की राजधानी है जयकर्ता (अर्थात जयनगर) कर्ता शब्द का प्रयोग इस देश में नगर का वाची है। जैसे हमारे देश में कालीकाता जो अब कोलकाता कहलाता है या दक्षिण भारत में कालीकट यह भी मूल रूप से कालीकत्ता ही है।

इण्डोनेशिया के जावा द्वीप की प्राचीन राजधानी "जोग्याकर्ता" है। यह अयोध्या शब्द से बिगड़ कर जोग्या कहलाती है। हमारे देश में भी योगी को जोगी, अयुध्या को अजुध्या ही कहा जाता है। अयोध्या नगरी भगवान राम की राजधानी थी, अतः जावा द्वीप की राजधानी का नामकरण अयोध्या किया गया ताकि राम–राज्य की परम्परा चले। अभी तक इण्डोनेशिया के जोग्या नगर में संसार भर की अति श्रेष्ठ रामायण का अभिनय होता है। इण्डोनेशिया को रामायण पर बड़ा गर्व है। अपनी रामायण की संस्कृति की छाप वे विश्व भर में लगाना चाहते हैं। इसीलिए पश्चिमी संसार के केन्द्र न्यूयार्क नगर के केन्द्र मैनहट्टन (Manhattan) में उन्होंने रामायण रेस्टोरेंट (Ramayan Restaurant) खोला। मुझे 1984 में अमेरिका यात्रा के समय रामायण रेस्टोरेंट देखने की लालसा थी, न्यूयार्क मैनहट्टन की दूरभाष पुस्तिका (Telephone Directory) में ढूँढ़ा। पता 1310, American Avenue लिखा था। पर दूरभाष पर आप क्यों बौखला गये। शायद आप भी सच्चे हैं। किन्तु मैं दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में घूम गया और वहाँ की भाषा में अपने आप को भूल गया था या यूँ कहूँ कि भारत–भारती का साक्षात्कार करने लगा था।

यदि आप कम्बुज देश जाएँ, जिसे बिगाड़कर कम्बोडिया कहने लगे हैं, तो आप टेलीफोन नहीं उनकी भाषा में तो दूरशब्द ही पायेंगे। यही स्थिति थाई देश की है। लाओस की भी, पर छोड़ो अभी तो इण्डोनेशिया में हैं। हाँ, बात हो रही थी उस की रामायण संस्कृति की। जब वह देश हालैंड की दासता से स्वतन्त्र हुआ तो उन्होंने पहला काम यह किया कि राजधानी का नाम जो विदेशी था (Batavia) उसे स्वदेशी किया। विजय के उपलक्ष्य में जकारता (जयकर्ता) नाम रखा। राष्ट्रपति सुकर्ण, जिन्हें आप सुकर्णो कहते हैं, रामायण–महाभारत की संस्कृति के बड़े अभिमानी थे। अभिमानी तो महाभारत के समय कर्ण भी थे। कर्ण बड़े पराक्रमी थे, किन्तु उन्होंने युद्ध में धर्म का साथ नहीं दिया बल्कि धर्मराज को छोड़कर दुर्योधन का साथ दिया। डा. सुकर्णो के माता–पिता अपने पुत्र को कर्ण जैसा महाप्रतापी देखना चाहते थे, किन्तु धर्म का साथ देने वाला। इसी कारण उन्होंने कर्ण के नाम से पूर्व "सु" लगाया–सुकर्ण 'अच्छा कर्ण'।

परन्तु अगले राष्ट्रपति थे–सुहार्तो। इन का नाम भी संस्कृत का ही है। उन्होंने राष्ट्रपति बनते ही रामायण का युग लाने का निश्चय किया। 1974 में सितम्बर मास में एक बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन किया गया। इस सम्मेलन में विश्व भर के रामायण देशों को आमन्त्रित किया गया। रामायण के देश, अर्थात् जिन देशों में रामायण की परम्परा है–जैसे थाई देश (थाईलैण्ड) कम्बुजदेश (कम्बोडिया) लवदेश (लाओस) भारत, नेपाल, बर्मा, मलेशिया आदि–वहां रामायण का डाकटिकट निकाला गया। जोग्याकर्ता नगर के हवाई अड्डे पर रामायण के बड़े–बड़े भित्तिचित्र बनाए गए। बहुत बड़ा मंच बनाया गया जिस पर 200 पात्र अभिनय कर सकें और रावण की सेना का भगवान राम की वानर सेना से पूरा युद्ध दिखाया जा सके। राष्ट्रपति ने उद्घाटन किया और बहुत ही वैभव से रामायण समारोह संपन्न हुआ।

परन्तु बात भाषा की चल रही थी। तो इण्डोनेशिया का ध्वज "द्वि–वर्ण" कहलाता है। क्योंकि उस में दो रंग हैं। और उसका संविधान "पंचशीला" कहलाता है। Life Insurance Company भी है परन्तु उसके लिए "जीवाश्रय" शब्द चलता है, लाईफ इन्श्योरेन्स नहीं। वहाँ अखबार चलते हैं

और च्तमे Correspondent भी हैं, परन्तु वार्ताकार कहलाते हैं। Press Club का नाम है ''वेश्मवार्त्ता'' –शुद्ध संस्कृत शब्द (वेश्म–घर)। ऐसे हजारों शब्द हैं और पहले तो सारी भाषा संस्कृतमय ही थी। परन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी में वहाँ के लोग मुस्लिम आक्रमण से परास्त हो गए। बहुत से राजकुमार बाली द्वीप में शरण के लिए चले गए। लाखों जंगलों की ओर चले गए, बहुत से लोगों ने इस्लाम मजहब स्वीकार कर लिया, किन्तु अपनी संस्कृति को, रामायण–महाभारत को नहीं छोड़ा। वैसे तो इस देश में सबसे पुराने शिलालेख केवल संस्कृत में ही प्राप्त हुए, जिससे पता चलता है कि वहाँ विद्वानों की और ऊँचे वर्ग के लोगों की भाषा संस्कृत ही थी। चीन देश के प्रसिद्ध यात्री इत्सिंग, जो 8वीं शती में भारत यात्रा के लिए आये उन्होंने अपने यात्रा–वृत्तान्त में लिखा है कि, भारत पहुँचने से पूर्व वे, इण्डोनेशिया के सुमात्रा के द्वीप में पेलम्बांग नगर में, जहाँ संस्कृत का विश्वविख्यात विश्वविद्यालय था, छः मास तक संस्कृत अध्ययन करके भारत पहुँचे। अपनी यात्रा पूरी करके चीन लौट गए, परन्तु पुनः सुमात्रा द्वीप के इस महान विश्वविद्यालय से आकृष्ट होकर दोबारा आ गए। इसी स्थान पर संस्कृत अध्ययन तथा संस्कृत ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद करते रहे। उन्होंने अनुवाद कार्य के निमित्त तथा चीन के लोगों को संस्कृत का ज्ञान कराने के लिए एक शब्दकोष बनाया–संस्कृत चीनी शब्दकोश। मुझे इस बात का गौरव है कि इस कोष की प्रति के मैंने दर्शन किए हैं। वह प्रति भारत के महान मनीषी, भारत–भारती के अन्यतम विद्वान, विख्यात गवेषक, आचार्य रघुवीर द्वारा उनकी संस्था सरस्वती विहार, नई दिल्ली में चीन से लाई गई थी।

भारत–भारती जो विश्वभारती बन गई थी इसकी कथा लम्बी है किन्तु भारतीय संस्कृति की छाप दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में इतनी गहरी पड़ गई कि यावच्चन्द्रदिवाकरौ भारत–भारती का गौरव–गान संसार भर में होता रहेगा।

(10–1–83)

## रूस के रामभक्त श्री बारानिकोव

रूस के विद्वान रामभक्त श्री बारानिकोव पिछले दिनों दिल्ली आये तो सदा की भांति अपने हिन्दीवादी मित्रों से मिलने की इच्छा प्रकट की। दिल्ली के उनके मित्र भी उनसे बातचीत को लालायित थे, अतः एक गोष्ठी का आयोजन किया गया और श्री बारानिकोव से आग्रह किया गया कि वे 'रूस में आजकल हिन्दी और संस्कृत अध्ययन की दिशा' विषय पर बोलें। वे सदा की भांति हिन्दी में ही बोले और भाषण के अन्त में लोगों के प्रश्नों का उत्तर भी दिया। श्री बारानिकोव ने वह प्रसंग भी सुनाया कि जब लेनिनग्राद (सेंट पीटर्सबर्ग) में उन्होंने समाचारपत्रों में पढ़ा कि अयोध्या में श्रीराम जन्मस्थान पर विशाल राम मन्दिर के निर्माण हेतु भारत के नगर–नगर और ग्राम–ग्राम से रामशिलाएं अयोध्या ले जाई जा रही हैं तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने रामभक्त होने के नाते रूस देश के हिन्दीप्रेमी मित्रों की ओर से एक रामशिला भारत लेकर आने का निश्चय किया। वे भारत आने के लिये लेनिनग्राद से मास्कों आये और सारे नगर में ढूंढ कर एक विशेष ईंट बडे आदर से कपड़े में लपेट कर भारत लाए। वे समझते थे कि इस प्रकार अयोध्या में रामजन्मभूमि में श्रीराम मन्दिर के निर्माण में भारत के सुनहरे भविष्य का निर्माण भी निहित है। श्री बारानिकोव बताने लगे कि चार पीढ़ियों से वे रामभक्त हैं। उनके पूज्य पिता ने रामचरितमानस का रूसी भाषा में पद्यानुवाद किया था। वास्तव में स्टालिन के काल में ही रूस के अनेक विद्वानों ने रामचरितमानस में उदात्त मानवीय मूल्यों का भण्डार पाया। पिता बारानिकोव के रामचरितमानस के अनुवाद की रूस में बड़ी प्रंशसा हुई। यहां तक कि उन्हें रूस की साहित्य–संपदा में इस योगदान के लिए रूस के सर्वोच्च पुरस्कार 'लेनिन शान्ति पदक' से सम्मानित किया गया।

द्वितीय युद्ध के अस्थिरता के काल में पिता बारानिकोव की सुरक्षा के लिये उन्हें लेनिनग्राद से निकाल कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया ताकि वे अपना कार्य अबाध रूप से चालू रख सकें।

श्री बारानिकोव आजकल रूस के नवयुवकों में रामायण का सन्देश पहुंचाने के अपने प्रकल्प में व्यस्त हैं। 150 उत्साही युवक और युवतियों को वे लेनिनग्राद में हिन्दी पढ़ाते हैं और साथ ही उन्हें भारतीय संस्कृति से भी परिचित कराते हैं। उनके लिये हिन्दी मात्र एक भाषा नहीं है बल्कि एक संस्कार–परम्परा है, एक उदात्त जीवन–शैली है, एक जीवनदर्शन है जो हिन्दी के अध्ययन से प्राप्त होता है। आजकल श्री बाराकोनिव 'भारत में संस्कृत की स्थिति' विषय पर एक पुस्तक लिख रहे हैं। वास्तव में रूस में अब साम्यवाद के समाप्त होने पर रूस की मनीषा हिन्दू संस्कृति के शाश्वत एवं उदार मानवीय दर्शन के प्रति उत्सुक है।

1967 में रूस और मंगोलिया की अपनी यात्रा के दौरान लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा. काल्यानोव से मिलने मैं उनके कार्यालय में गया था। डा. काल्यानोव संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हैं। उन्होंने सम्पूर्ण महाभारत का रूसी भाषा में अनुवाद किया है। वे संस्कृत के प्रति समर्पित हैं और उन्होंने ही आग्रह किया कि वार्तालाप संस्कृत में ही हो। वे धाराप्रवाह संस्कृत बोलते थे। घंटा भर हमारी संस्कृत में बातचीत होती रही। संस्कृत के साथ–साथ भारत से भी प्रेम होना स्वाभाविक ही है। भारत एक महान राष्ट्र के रूप में उन्नति करे ऐसी कामना उन्होंने प्रकट की और कहा "**संस्कृतं विना भारतम् अभारतमेव**" मैं उनके इस उद्‌गार से गदगद् हो रहा था। उन्होंने संस्कृत की उन्नति में भारत की उन्नति का रहस्य ही सामने रख दिया। यदि भारतीय संस्कृति और देववाणी संस्कृत ही न रही तो क्या भारत भारत रह जायेगा? संस्कृत और हिन्दू संस्कृति ही तो भारत की आत्मा है। श्री काल्यानोव का यह सन्देश भारत में अपने मित्रों तक पहुंचाऊंगा, ऐसा मैंने निश्चय किया।

रूस और भारत के सम्बन्ध बहुत गहरे और पुरातन हैं, रूसी भाषा का संस्कृत से बहुत साम्य है। हजारों संस्कृत शब्द रूसी भाषा में विराजमान हैं। जैसे भ्रात–ब्रात BRAT, स्नुषा–स्नोखा SNOKHA, देवर–देवर DEVER, ग्रीवा–ग्रीवा GRIVA, माता–मात MAT, रूसी गिनती भी अधिकांश संस्कृत के समान है। जैसे द्वा, त्रि, चतीरे, प्यच, शेस संस्कृत के द्वा, त्रि, चतुः, पञ्च और षट् के समान हैं। प्राचीन रूसी भाषा में संस्कृत की ही भांति सात विभक्तियां थीं एकवचन, द्विवचन

तथा बहुवचन भी संस्कृत के समान ही थे। प्राचीन रूसी भाषा में स्वापिति के लिये सुपति है। भगवान के लिये 'बोग' है। (बोग–भग) और उस का स्त्रीलिंग रूप बोगिनी BOGINI है जो संस्कृत में भगिनी बहन के लिये है।

1615 में रूस की पवित्र नदी वोल्गा के तट पर अस्त्रखान नगर में भारतीय व्यापारियों की पूरी बस्ती रहा करती थी। वहां से पद्मपुराण की एक पाण्डुलिपि भी प्राप्त हुई है, जो अस्त्राखान मे ही लिखी गई थी। सत्रहवीं शताब्दी में बाकू ज्वालामुखी मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध रहा। (हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा के निकट जो ज्वालामुखी मन्दिर है, वह अनुपात में छोटा है) 1716 में रूसी विद्वान बौद्ध मत की ओर आकर्षित हुए क्योंकि उन्होंने साईबेरिया के बौद्ध धर्मावलम्बी प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था। बौद्ध जनता के सामूहिक धार्मिक उत्सव, संस्कृत मन्त्रों की मधुर ध्वनि और मन्दिरों की साज–सज्जा से वे प्रभावित हुए। बौद्ध धर्म, बौद्ध ग्रन्थों और संस्कृत में उनकी गहरी रुचि बढ़ती गयी।

1784 में रूस के राजकुमार श्चेर बतोव ने एक उपन्यास लिखा जिसमें एक दरबारी को भारत में संस्कृत अध्ययन के लिये भेजे जाने का कथानक था। (पाठकों को शायद स्मरण हो कि इंग्लैंड के प्रमुख नाटककार जार्ज बर्नाडशॉ ने भी PIGMALIAN (पिग्मैलियन) नामक नाटक लिखा था जिस का कथानक भी इसी प्रकार एक भाषाविद् का भारत जाकर संस्कृत पढ़ना ही है)। 1787 में एक रूसी संस्कृतज्ञ ने भगवद्गीता का रूसी भाषा में अनुवाद किया जिसका रूस के बुद्धिजीवियों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। 1797 में लेबेदेव LEBEDEV ने सेंट पीटर्सबर्ग में संस्कृत पुस्तकों की छपाई के लिये संस्कृत अक्षरों के टाईप ढालने में सफलता प्राप्त कर ली और रूस में संस्कृत मुद्रण आरम्भ हो गया। राजकुमार श्चेर बोतोव के उपन्यास का रूसियों के मन पर इतना प्रभाव हुआ कि रूस के शिक्षामंत्री काउंट उबारेव ने संस्कृत विद्वान लेन्ज को रूस में संस्कृत का प्रथम प्राध्यापक नियुक्त किया और 1852 से 1875 के मध्य संस्कृत के आज तक के सब से बड़े शब्दकोश का निर्माण करके रूस ने संस्कृत अध्ययन के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। 7000 पृष्ठों का यह संस्कृत–जर्मन कोश सेंट पीटर्सबर्ग से प्रकाशित किया गया। 1856 में मैडम ब्लावात्स्की ने तिब्बत की यात्रा की। संस्कृत से अनूदित विशाल तिब्बती साहित्य और संसार के अत्युच्च हिन्दू–बौद्ध दर्शन से वे इतनी प्रभावित हो गईं कि यूरोप ही नहीं संसार के दूसरे स्मृद्ध देशों में भी भारतीय धर्म पर आधारित थियोसोफिकल सोसाईटी (THEOSOPHICAL SOCIETY) की शाखाएं खोली जाने लगीं। संसार भर के विद्वानों के लिये भारतीय दर्शन आकर्षण का केन्द्र बन गया। लोग शाकाहारी बनने लगे। योग तथा भारत के शास्त्रीय ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे। हिन्दू विचार और हिन्दू जीवन–सारणी अपनाने लगे। 1890 में लैटिन, ग्रीक तथा स्लाव भाषा के विद्यार्थियों के लिये विश्वविद्यालयों में संस्कृत अनिवार्य कर दी गई। इस प्रकार संपूर्ण रूस में संस्कृत अध्ययन व्यापक रूप से स्थापित हो गया।

संस्कृत अध्ययन के पश्चात् अगला पग था अन्यान्य देशों में संस्कृत की खोज। वास्तव में पूरा मध्य एशिया, जो अब इस्लाम धर्मावलम्बी है, पहले बौद्ध था। उजबेकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिक क्षेत्र और तुर्किस्तान में हजारों बौद्ध विहार, स्तूप और लाखों मूर्तियां विद्यमान थीं। लाखों ही संस्कृत पांडुलिपियां थीं। 1894 में काशगढ़ स्थित रूसी काउंसिल जनरल ने प्राध्यापक ओल्डनबर्ग (Prof. Oldanburg) को एक प्राचीन संस्कृत पांडुलिपि भेजी। और बस यहीं से आरम्भ हो गयी मध्य एशिया के विध्वस्त विहारों के नीचे दबे संस्कृत ग्रन्थों के अवशेषों की खोज। इन विहारों और स्तूपों को मुस्लिम आक्रमणकारियों ने जला डाला था या तोड़ दिया था। यहां तक कि बौद्ध विहारों के वृक्षों तक को भी काट डाला गया जिनके ठूंठ खड़े मूक वाणी में उस बर्बरता की दारुण कथा आज भी कह रहे है। मध्य एशिया, तिब्बत, चीन, जापान, कोरिया आदि देशों की प्राचीन संस्कृत धरोहर की खोज ने भारत को एशिया के सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में प्रकट कर दिया। इसी पृष्ठभूमि में टॉलस्टाय एवं प्रो. निकोलाई रोरिख जैसे महात्माओं, विचारकों की परम्परा आरम्भ हुई, जिन के हृदय में भारत बसा था। उनके लिये भारत आत्मा का परिष्कार था, भारत की कोख में अध्यात्म की ज्योति पलती थी, जिसके कारण उस ज्ञान–ज्योति 'भा' में रतत्रभारत को प्रकाश (भा) का पुंज माना

जाता था। प्रो. रोरिख ने अपने जीवन के अच्छे वर्ष हिमालय की हिमाच्छादित पर्वत–श्रृंखलाओं के सान्निध्य में बिताए। अपने गहरे चिन्तन के समय उन्होंने लिखा।

"O' Bharat the beautiful: Let me send thee my heartfelt admiration for all the greatness and ispiration which fill the silent wisdom" प्रो. रोरिख ने भारत की सिंह से उपमा देते हुए लिखा " A lion unfrightened by noises, on a wind not to be captured by net."

रूस के विद्वान रामभक्त प्रो. बारानिकोव के द्वारा रामायण के सन्देया को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास स्तुत्य है। वे रूस की भौतिक उन्नति के साथ–साथ नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति भी चाहते हैं। यह उनकी देशभक्ति है। संस्कृत तथा हिन्दी के अध्ययन और रामायण जैसे ग्रन्थों के कारण उनमें भारतीय संस्कृति से अनुराग उत्पन्न हुआ, भारत से प्रेम उमड़ा। भारत की उन्नति हो, यह उनकी मनोकामना है। हिंदू धर्म जब–जब जहां–जहां फैला वहां–वहां भारत के प्रति श्रद्धा और प्रेम फैला। हिन्दू धर्म का जब–जब पतन और नाश हुआ उसके साथ ही भारत के प्रति विद्वेष भी पैदा हुआ। यह स्थिति भारत में भी और भारत के बाहर भी हर जगह देखने को मिलती है। हिन्दू संस्कृति ही भारत है।

# भारत हथियाने की चतुःसूत्री योजना

**अवैध कब्जे**

मुसलमानों द्वारा भारत भर में चुने हुए क्षेत्रों में भूमियां मोल लेने की योजना कई बार सामने आई। वैसे भी सारे भारत में स्थान–स्थान पर अवैध कब्जे किये जाते हैं। कहीं ईदगाह के नाम पर, कहीं छोटी–छोटी मस्जिदें बना कर, तो कहीं कब्र सी बना कर, धीरे–धीरे उसे बढ़ाया जाता है। जहां जैसे बन पड़े सरकारी भूमियों पर encroachment की जाती है। कुछ प्रदेशों में प्रान्तीय शासन अनुकूल होने के कारण यह कार्यक्रम और भी तेज गति से चलाया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के ग्राम–ग्राम में ऐसे अवैध निर्माण देखने को मिलते हैं, यहां तक कि भारत की राजधानी दिल्ली में ही अनेक मुख्य मार्गो के बीचोंबीच या किनारे पर मस्जिदें बनी हुई है। और कई मोहल्ले मिनी पाकिस्तान बन चुके हैं। वहां हिन्दुओं को जाते हुए भी डर लगता है। दिल्ली में ही ऐसे 40, 50 मोहल्ले हैं जहां से बढ़ती हुई मुस्लिम गतिविधियों के कारण हिन्दू घर–दूकानें उन्हें बेचकर सुरक्षित स्थानों पर बस रहे हैं।

दिल्ली के सभी बड़े–बड़े राष्ट्रीय स्मारकों पर मुस्लिमों का कब्जा होता जा रहा है। वहां मस्जिदें या ईदगाह और मदरसे बना लिये गये हैं। अवैध रूप से नमाज पढ़ी जाती है। मौलवियों ने वहां अपनी रिहायश बना रखी है और मुस्लिम लड़कों में उग्रवाद भरने के लिए मदरसे चला रहे हैं। इस प्रकार करोड़ों ही नहीं, अरबों रुपये की संपत्ति सहज में ही कब्जे में की जा रही है। उन्हें इस कार्य में कई राजनैतिक संस्थाओं से सहायता मिलती है। लेखक को एक बार एक वकील ने निजामुद्दीन के क्षेत्र में मुसलमानों द्वारा ऐसे अवैध कब्जे दिखाए।

**सैनिकीकरण**

संपूर्ण भारत को हथियाने के लिये मुस्लिम समाज हथियारबन्द हो रहा हैं। भारत भर में हजारों मदरसें भारत सरकार के पैसे से चलाये जा रहे हैं। नवयुवकों में भावना भरी जाती है कि वे भारत में इस्लामी राज्य स्थापित करने के लिये हथियारों का प्रशिक्षण लें। पंजाब और कश्मीर में फैले उग्रवाद से उन के हौसले बढ़ चुके हैं। केरल में इस्लामी सेवक संघ तथा अन्य मुस्लिम युवा संगठन बन चुके हैं जिनके पास घातक हथियार हैं। तमिलनाडु में ऐसे ही मुस्लिम संगठनों ने कई उग्रवादी काण्ड किये हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मद्रास स्थित प्रान्तीय कार्यालय को बम–विस्फोट से उड़ा दिया जहां संघ के कई अधिकारी ढेर हो गये। हिन्दु मुन्नानि के प्रमुख नेताओं को गोली से मार डाला, यहां तक कि मदुराई के भारतप्रसिद्ध मीनाक्षी मन्दिर तक को विस्फोट से उड़ाने की कोशिश की गई।

आसाम तथा पूर्वोत्तर भारत के अन्य प्रान्तों में मुस्लिम सशस्त्र सेनाएं खड़ी की जा रही हैं। वहां से जो सूचनाएं प्राप्त हो रही हैं उनसे तो ऐसा ज्ञात होता है कि यदि हिन्दू शीघ्र नहीं चेते तो कश्मीर की भांति वहां ऐसा नरसंहार देखने को मिलेगा कि सारा देश कांप उठेगा। उत्तर प्रदेश से आये दिन समाचार मिलते हैं कि वहां के मुस्लिम युवक किस प्रकार पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई. से मिलकर उग्रवादी अड्डे बना रहे हैं। कभी राजधानी में विस्फोट कर रहे हैं, कभी रेलें उड़ा रहे हैं तो कभी बसों को मार्ग में लूटने की वारदात कर रहे हैं। मेरठ, मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद आदि जनपदों में व्यापक रूप से उनके कार्यक्रम उत्तरोत्तर प्रगति पर हैं। वे मुस्लिमों के सैनिकीकरण में पूरी तरह जुटे हुए हैं।''

**भीतरघात**

भारत को हथियाने के लिये वे सेना तथा अर्द्धसैनिक बलों में अधिकाधिक प्रवेश कर रहे हैं। पिछले दिनों समाचार छपा कि नौसेना में कश्मीर के मुसलमानों को भरती करने की योजना सरकार ने बनाई है। बी.एस.एफ. में भी उन्हें भरती किया गया है। भारत का राजतन्त्र उन के हाथों में आए इस दृष्टि से भारत सरकार ने कई विश्वविद्यालयों को आदेश दिये हुए हैं कि आई.ए.एस. तथा आई. पी.एस. में मुसलमान अधिक संख्या में आ सकें इस कारण उन के लिये Coaching Classे लगाएं।

यह कार्यक्रम कई वर्षों से चल रहा है। अतः सरकारी सेवाओं तथा सेनाओं में भी ऊंचे पदों पर उनकी संख्या बढ़ती जा रही है।

एक ओर देश के शासन और प्रशासन में अपनी पैठ बना लेने के साथ–साथ मदरसों के द्वारा युवकों को भीतरघात (Sabotage) के लिये तैयार किया जा रहा है। भारत में 15 करोड़ की जनसंख्या वाला यह समाज भारत के अनेक राष्ट्रविरोधी तत्वों से मिलकर और सीमापार के मुस्लिम देशों से मिलकर दोतरफा वार करने की तैयारी में हैं। पाकिस्तान की गुप्तचर एजेंसी ने भारत में जो एक व्यापक संजाल (नेटवर्क) तैयार कर लिया है उसमें सर्वाधिक सहायता उन्हें भारत के इस 15 करोड़ के समाज से ही मिलती है। भारत की राजधानी तक में जो सैंकड़ो अड्डे आई.एस.आई. ने बना लिये हैं वह सब भारतीय मुस्लिम समाज की सहायता से ही संभव हो पाया है। जामा मस्जिद क्षेत्र में तो उन्हें सर्वाधिक संरक्षण प्राप्त होता है। भारत के लाखों युवक–युवतियां मजहब के जनून में आई.एस.आई. के लिये स्वप्रेरणा से काम करने को उत्सुक रहते हैं। इस 15 करोड़ की समाज के प्रायः सभी लोगों के निकट संबंधी पाकिस्तान में बसे हैं। भारत के केन्द्रीय मंत्रियों, राज्यपालों के निकट संबंधी पाकिस्तान में ऊचें पदों पर हैं। केन्द्रीय मंत्री रहे श्री नूरूलहसन के रामपुर नवाब घराने के दो सालों में से एक भारतीय सेना का अधिकारी तथा दूसरा पाकिस्तान सेना में मेजर जनरल साहिबजादा याकूब खान है जो बाद में पाकिस्तान का विदेशमंत्री रहा है। ऐसे कितने ही उदाहरण हैं जिनकी जानकारी यदि जनता को मिले तो सब चकित रह जायें कि कितनी खतरनाक स्थिति में भारत की सुरक्षा सिसक रही है और धर्मनिरपेक्षता की अफीम खा कर जनता मौज मस्ती कर रही है।

भीतरघात की तैयारी के लिये भारत सरकार भी उन की भरपूर सहायता करती है। नहीं तो क्या कारण है कि हजारों हाजियों को भारतीय कोष से ही करोड़ों रुपये दे दिये जायें, जबकि हज के बहाने से कितने ही अरब देश में जाकर अन्तर्राष्ट्रीय षड़यन्त्रों में लगे होते हैं और क्यों, मुस्लिम शिक्षा केंद्रों के लिये सरकारी खजाने से दिल खोलकर धन लुटाया जाये जबकि वहां उग्रवाद ही तो सिखाया जाता है।

भारत में व्यापक भीतरघात के लिये पंजाब, आसाम, मणिपुर, त्रिपुरा तथा अन्य प्रदेशों के भारतविरोधी विद्रोहियों से भी हाथ मिलाया जाता है। उन्हें पाकिस्तान से सहायता दिलवा कर भारत को हथियाने के अपने उद्देश्य की पूर्ति की तैयारी की जा रही है।

**Blackmail**

मुस्लिम समाज Political Blackmail में बड़ा चतुर है। इसी कारण कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, जनता दल, बहुजन समाज पार्टी आदि कई राष्ट्रीय दलों को मुस्लिम समर्थन का लालच देकर उनसे लाभान्वित होने का प्रयास किया जाता है। जिन क्षेत्रों में मुस्लिम बहुसंख्या में हैं वहां से मुस्लिम लीग या मुस्लिम मजालिस जीतती है किन्तु अन्य क्षेत्रों में, जहां वे अल्पमत में हैं, दूसरी संस्थाओं के टिकट से जीत कर आने की सोचते हैं। कांग्रेस, जनता दल या सपा के प्रभाव– क्षेत्रों से वे टिकट प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। **इसी कारण भारत भर में मात्र 10 मुस्लिमबहुल संसदीय क्षेत्र होने पर भी 27,28 मुसलमान संसद में पहुंच जाते हैं। दस वर्ष पूर्व तो 47,48 मुस्लिम सदस्य लोकसभा में पहुंचने लग गये थे। किन्तु पिछले दस वर्ष में जो हिन्दू जागरण की लहर सी आई उसके कारण उनकी संख्या घट गई।** फिर भी प्रशासन में अपना प्रभाव बनाने में तो वे सफल ही हैं, नहीं तो कैसे तस्लीमुद्दीन जैसे गुण्डों को देश का गृहराज्यमंत्री बना दिया जाता जिन पर अनेक आपराधिक केस बने हुए हैं। श्री देवगौड़ा प्रधानमंत्री बने तो आपराधिक रिकार्ड वाले इब्राहिम केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में आ गया और ऐसे व्यवहार करने लगा जैसे सुपर प्रधानमंत्री हो। इलाहाबाद के समीप हंडिया में प्रधानमंत्री देवगौड़ा जी ने 1000 करोड़ रुपये मुसलमानों को लाभान्वित करने के लिये मौलाना आजाद के नाम से चलाई जा रही संस्था को देने की घोषणा की और मुसलमानों से अनुरोध किया कि वे उत्तर प्रदेश में श्री मुलायम सिंह का समर्थन करें। इससे बढ़कर राजनीतिक ब्लैकमेल का उदाहरण और क्या हो सकता है। जबकि भारत की सुरक्षा के लिये धन के आवंटन में कमी की हुई है। दूसरी ओर 1000 करोड़ ऐसे ही लुटा देना ताकि मुसलमान उन्हें समर्थन दें। देश

के रक्षामंत्री यदि 1000 करोड़ रुपये देश की सुरक्षा के लिये खर्च करवाते तो सारा देश उनका कृतज्ञ होता, किन्तु सुरक्षा की ओर दुर्लक्ष करके मुसलमानों को इतना धन देना तो भारत की सुरक्षा को दोनों ओर से कमजोर करना है।

राज्यपालों के पदों की संख्या में भी जो मुस्लिम समाज की अनुपात से अधिक उपस्थिति दिखाई देती है, वह भी इसी का परिणाम है कि देश में एक ऐसा वायुमण्डल बना दिया गया है कि मुस्लिम–तुष्टीकरण ही राष्ट्रधर्म बन गया है। एक भुलावा, एक छलावा देश को दिया जा रहा है। अपनी चतुराई के कारण ही वे बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र, आसाम, पांडिचेरी जैसे प्रदेशों में मुख्यमंत्री पद प्राप्त करने में सफल हो सके।

भारत को हथियाने की उनकी चतु:सूत्री योजना है।

1. Encroachmenज भूमियों पर अवैध कब्जे।
2. Militancy मुस्लिम सैनिकीकरण और शस्त्र–संग्रह।
3. Sabotage भीतरघात तथा पाकिस्तान के लिये पंचमांगी कार्य।
4. Political Blackmail राजनीतिक धौंस।

इन कार्यों द्वारा वे भारत को दारुल इस्लाम बनाने पर तुले हैं।

## मंगोलिया में भारतीय संस्कृति

**डा. कैलाशचन्द्र**

भारत में मुगल वंश के मुस्लिम राज्य के अधीन हिन्दू जाति को मुगलों के नृशंस अत्याचारों का शिकार बनना पड़ा। बाबर से लेकर बहादुरशाह जफर तक मुगल बादशाहों का अत्याचारी शासन रहा उसके कारण भारतवासियों में प्रायः यह धारण व्याप्त हो चुकी है कि मंगोलिया देश मुस्लिम देश है और मंगोल सम्राट् जैसे चंगेज खान तथा हलाकु मुस्लिम मजहब के अनुयायी थे। किन्तु वास्तविकता यह नहीं है। न तो मंगोलिया मुस्लिम देश है ओर न ही मंगोल साम्राज्य का संस्थापक चंगेज खान (छिकगस खान) मुसलमान था। यदि छिगिस खान ओर हलाकू का इतिहास पढ़ा जाये तो पता चलेगा कि 13 वीं शताब्दी में छिगिस खान और हलाकू की सेनाओं ने अरब, ईरान, अफगानिस्तान तथा तुर्किस्तान में फैले मुस्लिम आधिपत्य को झंझोड़ कर रख दिया। मुस्लिम राज्यों को तहस नहस किया गया यहां तक कि खलीफा को हाथी के पैरों तले कुचलवाया दिया गया। छिगिस खान ने जिसे भारत में चंगेज खान के नाम से जाना जाता है मंगोल जातियों को संगठित करके एक बहुत बडे साम्राज्य की नींव डाली। यह साम्राज्य चीन, रूस, पूर्वी यूरोप तथा मध्य एशिया तक फैला हुआ था। इतिहासकारों ने मंगोल को शमन (श्रमण) मत का अनुयायी होना लिखा है। मंगोल इतिहास में लिखा है कि छठी शताब्दी में भारत से 2 आर्चाय ''नरेन्द्र यशसँ'' तथा ''शाक्य वंश'' मंगोलिया आये। वे अपने साथ बौद्ध सूत्र ग्रन्थ तथा मूर्तियां लाये। छठी शताब्दी में ही बौद्धमत का प्रचार आरम्भ हो गया और निरन्तर होता रहा। भारत से धर्माचार्य वहां जाते रहे और मंगोल धर्मपरायण जिज्ञासु तीर्थ यात्रा करने, संस्कृत का अध्ययन करने और धर्म का गूढ़ ज्ञान प्राप्त करने भारत आते रहे। 17वीं शती तक यह क्रम चलता रहा। मंगोलवासी अपने को भगवान बुद्ध के प्रिय शिष्य मौद्गल्यायन की संतान मानते हैं। मूलरूप में जो मंगोल देश था अब वह 3 भागों में बंटा हुआ है। मंगोलिया का एक भाग चीन के अधीन है। जिसे आन्तरिक मंगोलिया कहते हैं। मुख्य भाग जो अब स्वतन्त्र है, बाह्य मंगोलिया कहलाता है। ओर कुछ भाग रूस के अधीन है जिसे साईबीरिया प्रदेश का भाग बना दिया गया है। इसे बुयार्त गण राज्य कहते हैं। मंगोलिया की राजधानी **उलान बातर** है जिसका शब्दार्थ है लाल बहादूर। मंगोलिया का राष्ट्रध्वज **स्वयंभू** (सोयंबू उच्चारण करते हैं) कहलाता है। स्वयं भू संस्कृत का शब्द है। बहुत से मंगोल लोग संस्कृत नाम रखते हैं। वहां भारतीय पंचाग तथा आयुर्वेद का प्रचलन है। मासों के नाम तथा सप्ताह के दिनों के नाम भी भारत से ही हैं। जैसे रविवार को आदिया (आदित्यवार) सोमवार सोमिया मंगल के लिये संस्कृत का अंगारक शब्द है। बुद्धवार=बुद्ध, बृहस्पतिवार=ब्रिहस्पत, शुक्रवार=सूकर, शनिवार के लिये सांचिर बोलते हैं।

मंगोलीया के एक भूतपूर्व राष्ट्रपति का नाम शुंभू था। मंगोल देश का जो वैज्ञानिक सर्वप्रथम अन्तरिक्ष में गया, उसका नाम गोरक्ष था। कुछ के नाम कीर्ति, कुषली, कुमुद, कुबेर सुमेर, जय जिमित्र, वज्रमपाणि आदि हैं। महिलाओं के नाम इन्द्री, रत्ना, अमृता आदि हैं।

चीन में मंगोलवंश के प्रथम सम्राट कुब्लेखान हुए। उन्होनें तिब्बत से महायान बौद्धमत के प्रमुख आर्चाय फाग्सपा (अर्थात आर्य) को पीकिग में बुलाकर उनसे दीक्षा ग्रहण की। आर्चाय फाग्सपा को राजगुरु की पदवी दी गयी। उन्होनें चीन में विहार बनवाये। चीन के बू=वाई शान नामक पर्वत पर मंजू श्रीदेवी का विशाल मंदिर बनवाया। आर्चाय फग्सपा को जो बहुमूल्य भेटें सम्राट से प्राप्त हुई उनका कुछ भाग बोध गया और महाबोधी भेजा गया।

कुब्लेखान ने चीन की विष्वविख्यात महाभित्ती के पश्चिमी द्वार पर उष्णीश विजयाधारणी नामक संस्कृत मंत्र लिखवायाः–

**ओं नमो भगवत्यै आर्य समन्त विमलोष्णीषविजयायै।**

यह मंत्र सबसे ऊपर संस्कृत में फिर तिब्बती में और फिर मंगोल और चीनी लिपियों में लिखा गया।

मंगोल देश के विहारों में स्थान–स्थान पर संस्कृत मंत्र लिखे रहते हैं। वे संस्कृत लिखने के लिये लाञ्छा लिपि का प्रयोग करते हैं। भारत में बंगाल के पाल वंश में सस्कृत मंत्र लिखने के

लिए जो सुन्दर अक्षर प्रयोग किये जिन्हें रंजना लिपि कहा जाता था, उसी रंजना लिपि को लाञ्छा के रूप में मंगोलिया में प्रयोग किया जाता है। संस्कृत अक्षर सिखाने के लिये जो पुस्तक है उसे **आलि, कालि, बीजहारम्** कहते हैं। आलि अर्थात् अ, क इत्यादि स्वर व्यंजन। क्योंकि संस्कृत के अक्षर बीजमंत्र के रुप में भी प्रयोग में लाये जाते हैं। इस कारण अक्षर माला को बीजहारम् की संज्ञा दी गई। आलि कालि बीजहारम् कितना सुन्दर शब्द है जिससे संस्कृत अक्षरो के लिए श्रद्धा द्योतित होती है।

लेखक को सन् 1967 के जून मास में मंगोल देश की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम मास्को होकर प्रथम रूस के अन्तर्गत जो मंगोल क्षेत्र है वहां गये यह क्षेत्र बुर्यात कहलाता है जो साइबेरिया का भाग है। जिसे हम भारतवासी अंग्रेजी प्रभाव के कारण साइबेरिया कहते हैं, उसे मंगोल लोग शिर्बिर बोलते हैं। उस प्रदेश का शिर्बिर नाम भारतीय आचार्यों द्वारा ही दिया गया है। क्योंकि मंगोल लोग टैंटों के शिविरों में ही रहा करते थे न कि भवनों में, इस कारण वह प्रदेश शिबिर कहलाया। लेखक ने ऐसे टैंटों की पूरी बस्ती देखी है। प्रत्येक टैंट गेर कहलाता है। गेर शब्द घर शब्द का अपभ्रंश है। **मंगोल लोगों ने मेरा तथा मेरे साथ भारत से आये अन्य संस्कृत विद्वानों का जो स्वागत किया वह सदा अविस्मरीणीय रहेगा।** भगवान बुद्ध के देश, पुण्यभूमि भारत से आर्चाय आये हैं यह भारत से आये आचार्य मंगोल देश में पवित्र गंगाजल तथा पवित्र गंगा की रेती भी लाये हैं, यह वार्ता वहां की मंगोल जनता में फैल गयी। सर्वत्र हमारे लिये पूज्य भाव था। माताएँ अपने शिशुओं को हमसे आशीर्वाद दिलवाने के लिये हमारे पास लातीं। जहां हम जाते वहां की जनता हमारे दर्शनों के लिये ऊमड़ पड़ती। हमारे स्वागत में दिये गये रात्रि भोज में वहां के धर्मगुरु पंडित खाम्पो लामा ने बुर्यात प्रदेश के अनेक मंदिर विहारों के लिये गंगाजल तथा गंगा की रेती को अलग–अलग पात्रों में बांटा। उन विहारों के प्रतिनिधि लामा बड़े आदर और श्रद्धा के साथ यह वस्तुएँ लेकर गये। इस अवसर पर हमारा विशेष सम्मान किया गया।

साइबेरिया के अनेक बौद्ध विहारों और मन्दिरों में हमारा दल दर्शनार्थ गया। मंगोलिया के प्रत्येक विहार में एक पुस्तकालय होता है जहां बौद्ध साहित्य रखा हुआ है। यह ग्रन्थ तिब्बती भाषा ओर मंगोल भाषा में है। कुछ संस्कृत ग्रंथ भी हैं। इन पुस्तकालयों में आपको जो साहित्य मिलेगा वह संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद हैं। प्रायः सभी ग्रन्थों का आरम्भ देवता के नमस्कार अथवा गुरु के लिये प्रमाण से होता है। जैसे ओं नमो मुजजुघोषाय अथवा, ओं गुरवे नमः इत्यादि। संस्कृत ग्रन्थों के लिये मंगोल लोगों का पूजा भाव देखकर सुखद आश्चर्य हुआ।

विहारों के द्वार पर संस्कृत मंत्र ही लिखे होते हैं। जैसे ''ओं नमों भगवत्यै आर्य तरायै।'' स्थान–स्थान पर स्वास्तिका के चिन्ह शोभायमान हैं और भी भारतीय धार्मिक चिन्ह विद्यमान हैं जैसे अष्ट मंगल, शंख, कलश या श्रीवत्स आदि।

एक मंदिर में अद्‌भुत घटना घटी। एक मंगोल युवती चढ़ावे का थाल सजा कर मंदिर में आई और सीधे मेरी ओर आकर जो चढावा देवता के लिये चढ़ाया जाता है वह मुझे समर्पित कर दिया। मेरी समझ में नहीं आया क्या करूं मैने स्वागताध्यक्ष प्रोफेसर बालदेन जावेफ को कहा मैं तो वैश्य हूं मुझे ऐसा चढ़ावा लेने का स्वभाव नहीं है। आप इसे मंदिर के पुजारी को दे दें। किन्तु प्रो. बालदेन जावेफ ने आग्रह किया 'आप इसे स्वीकार कर लें नहीं तो इस युवती का दिल टूट जायेगा।' मैने वह विवश होकर स्वीकार किया। ऐसे ही एक और घटना है जो मैं अपने धर्म बन्धुओं को बताना चाहता हूं। अपने कार्यक्रम के दौरान हम लेनिन ग्राड में एक एकादमी देखने गये। अकादमी के अध्यक्ष डा. काल्यानौफ, संस्कृत के विद्वान थे। वे उन दिनों महाभारत का रूसी में अनुवाद कर रहे थे। डा. काल्यानौफ ने केवल संस्कृत भाषा में ही वार्तालाप करने का आग्रह किया। उनसे घण्टाभर संस्कृत में बातचीत होती रही। वह धाराप्रवाह संस्कृत बोलते थे। एक रूसी विद्वान के मुख से इस प्रकार संस्कृत सुनकर हमारे आनन्द का पारापार न रहा। उन्होंने भारत शब्द की व्याख्या भा–रत, इस प्रकार की। भा अर्थात् प्रकाश, ज्योति पुंज। उनका आशय यह था कि संसार के बहुत लोग भारत को ज्योतिपुंज के रुप में, जो संसार को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करे, ऐसा मानते हैं ओर ऐसा ही भारत को देखना चाहते हैं। उन्होंने कहा–'**संस्कृत विना भारतम्**

**अभारतम् इव' अर्थात् संस्कृत के बिना भारत अभारत ही है। संस्कृत यदि भारत से समाप्त हो गई तो भारत की आत्मा, गरिमा और महिमा सब समाप्त हो जायेगी।**

हमारी यात्रा का अगला पड़ाव था मंगोलिया की राजधानी उलान बातर। उलान बतार जाने के लिये हमें इर्कुत्स नामक विमान क्षेत्र से विमान पर चढ़ना था। मंगोल देश के प्रधानमन्त्री का विशेष विमान हमारे लिये भेजा गया था। उलान बतार पहुंचने पर हमारे स्वागत के लिए शासन तथा विहार के प्रमुख प्रतिनिधि वहां मौजूद थे। गंगाजल का पात्र देखकर तो वे लोग बहुत अधिक आनन्दित हुए। कुछ के मुख से निकला गांगम् उइसुन (गंगाजल)। वे हमें उलान बातर के सबसे मंहगे होटल में ले गए।

मंगोलिया में सैंकडों छोटे–बड़े विहार हैं। प्रत्येक विहार में अनेक लामा निवास करते हैं तथा अध्ययन–अध्यापन व धर्मप्रचार का कार्य करते हैं। गांडुड़., प्रमुख विहारों में से एक है। यह आज भी दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। गांडुड़. का अर्थ है तुषित विहार। विहार के द्वार पर विहार का संस्कृत नाम ''तुषितःमहायानद्वीपः'' मोटे अक्षरों में लिखा गया है। यह चारों ओर से शंख, चक्र व आदि चित्रों से अलंकृत है। विहार के सुवर्णमण्डित शिखर दूर से ही मानो मौन निमंत्रण दे रहे हैं। प्रवेश–द्वार पर दो सिंह बने हैं जो विहार के रक्षक के रुप में सुशोभित हैं। प्रांगण में प्रवेश करते ही मुख्यद्वार पर धर्मचक्र और दोनों ओर दो शान्तमुख मृग बने हैं। ऐसा ही मृगदाव का चित्र भारत में सारनाथ में दृष्टि गोचर होता है। चारों ओर की भित्तियों पर अनेक सुन्दर चित्र हैं। भगवान बुद्ध की अनेक भावमुद्राओं तथा आचार्यों के चित्र। छतों की अत्यन्त सुन्दर चित्रकारी आपको आश्चर्यचकित कर देगी।

प्रांगण में कई भवन हैं। प्रथम कोष्ठ पूजाभवन है। यहां अनेक लामा पूजा में तन्मय दीख पड़ते हैं। मूर्तियों पर सुन्दर वस्त्र चढ़ाने की परम्परा है। प्राचीन काल में ये वस्त्र काशी से बनकर आते थे, अतः इन्हें काशिका कहा जाता है। भारत के कुछ क्षेत्रों में आज भी इस प्रकार का डेढ़ या दो गज कपड़ा सम्मानस्वरुप देने की प्रथा है। किन्तु ये सूती होते हैं तथा उन पर भारतीय मांगलिक चिन्ह बने होते हैं जैसे श्रीवत्स, स्वास्तिक आदि।

विहार का दूसरा भवन ''वज्रधर भवन'' कहलाता है। यहां वज्रधर की धातु की बनी अत्यन्त सुन्दर मूर्ति प्रतिष्ठित है। इसके निर्माता ज्ञानवज्र है। एक अन्य अवलोकितेश्वर की नेपाल में बनी मूर्ति तिब्बत के प्रथम बौद्ध राजा स्त्रोन् चड्गपों के समय की है। एक ओर अलमारियों में पुस्तकें हैं। इनमें भगवान बुद्ध के प्रवचनों का संकलन तथा 108 भागों में कज्जूर सजा है। एक ओर भारतीय आचार्य अश्मागुलि का सत्रहवीं शताब्दी का दण्ड पड़ा है। भवन के बाहर लाच्छा लिपि में संस्कृत लिखी हैः–

**ओं नमों भगवते। भैषज्यगुरुवैदूर्यप्रभा राजाय तथागत। अर्हते**
**सर्म्यबुद्धाय। तद्यथा। ओं भैषज्ये महाभैषज्ये भैषज्य। राजसमुद्रते स्वाहा।**

तीसरा भवन–चन्दनजीवी भवन है। चन्दनजीवी का अर्थ है चन्दन के प्रभु। छत पर धर्मचक्र बना हैं यहां चन्दनजीवी की विशाल मूर्ति बनी है। इसके पीछे एक रोचक कथा है–मगध देश से भगवान बुद्ध चले गये। भक्त राजा ने भगवान की मूर्ति बनाने का संकल्प किया। श्रेष्ठतम कलाकार इस मूर्ति को बनाने में संलग्न हो गये। चन्दन की विशाल मूर्ति बनी। भगवान ने अपने हाथों से उसमें प्राणप्रतिष्ठा की। संसार में पहली बार इतनी सूक्ष्म मूर्ति का निर्माण हुआ। इस की प्रतिकृतियां चीन के पेकिंग स्थित प्रसाद और रूस के ''बुर्यात'' गणराज्य के ''उलान उदे'' में मिलती हैं। कहा जाता है कि प्रथम युद्ध से पूर्व 1911 तक पोलैंड में ऐसी मूर्तियां थीं। चन्दनजीवी भवन की छत पर पद्मनाभियों में लिखे संस्कृत बीजमंत्र दिखाई देते हैं। चन्दनजीवी की मूर्ति के चारों ओर अनेक अवतारों की मूर्तियां हैं। एक मूर्ति के सम्मुख लाल वस्त्र पर कढ़ा हुआ ''ओं मणिपद्मे हूं'' है। बाई ओर पुस्तकालय का भवन है। इसका नाम ''पुस्तकनिधि देवालय'' है। सामने की ओर मूर्तियां हैं। पाठक पहले भगवान को प्रणाम रिघृतदीपक और धूप जलाता है।

मंगोल देश में हिन्दू संस्कृति का प्रसार इतना अधिक और व्यापक रहा है कि मंगोल जाति के जन–जन के मन में भारतीय महापुरूषों कर आदर, भारत के विपुल संस्कृत साहित्य के प्रति प्रेम,

भारतीय शास्त्रों के प्रति श्रद्धा और भारत की भूमि के प्रति पूजाभाव विद्यमान है। किसी भी विहार में आ जाएँ तो लामाओं को महाकाल का स्तोत्र पाठ करते सुनेंगे। केसी भी शिविर में प्रवेश करें तो भारत से गई कथाएँ, राजाभोज की कहानियाँ, मंगोल देश में संस्कृत मंत्र, प्रायः देव नागरी के अंलकृत रूप में लिखे मिलेंगे।

वहां आपको विक्रमादित्य की कथाएँ और श्रीकृष्ण के आख्यान सुनते–सुनाते परिवार मिलेंगे। मंगोल देश के इस शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ विद्वान श्री रिंछीन कहा करते थे कि मंगोल देश के गडरिये भी पाणिनी के सूत्रों पर चर्चा करते हैं। श्री रिंछीन ने मंगोलिया में भारतीय संस्कृति की व्यापकता पर कई लेख–लिखे हैं। श्री रिंछिन की पुत्री रत्ना का विवाह हंगरी के प्राध्यापक श्री ''कारा'' से हुआ। प्रो.कारा भी भारतीय संस्कृति पर ही अनुसंधान करते हैं। जब उनकी पहली संतान पुत्री का जन्म हुआ तो उन्होंने प्रो.रिंछिन से पुत्री का नाम रखने का आग्रह किया। प्रो.रिंछिन ने कहा जिस प्रकार प्रो.कारा और रत्ना का विवाह अन्तरराष्ट्रीय है उसी प्रकार पुत्री का नाम भी अन्तरराष्ट्रीय भाषा का होना चाहिये। वह भाषा है संस्कृत और नाम रखा ''अमृता''। वास्तक में मंगोलिया ही नहीं और भी अनेक देशों में संस्कृत को पुण्य तथा धर्मभाषा के साथ–साथ एक अन्तराष्ट्रीय भाषा के रूप में भी देखा जाता रहा है। इसी कारण चीन के प्रसिद्ध विद्वान भारत यात्री ह्वेन सांग भारत यात्रा से लौट कर अपने देश से नालन्दा के आचार्यों से संस्कृत में पत्र व्यवहार करते रहे। एक और चीनी विद्वान भारत यात्र इत्सिंग ने चीनी विद्वानों की सुविधा के लिये 8वीं शताब्दी में संस्कृत चीनी शब्द कोश की रचना की। वे सुमाण के दक्षिण में स्थित संस्कृत अध्ययन करके भारत में आये थे। जावा सुमात्रा में सभी प्राचीन शिक्षा लेख संस्कृत में ही मिलते हैं। कम्बोडिया में छठी से चोदहवीं शताब्दी तक 800 वर्ष संस्कृत राजभाषा के महनीय पर पर आसीन रही। जापान कोरिया ने अपनी–अपनी भाषा के लिये संस्कृत के आधार पर नई लिपियां बर्ना। तिब्बत का समस्त वाड.मय बंगाल के पाल वंश के समय प्रचलित संस्कृत की लिपी में ही उपलब्ध है। मध्य एशिया के क्षेत्रों में ईसा की छठी शताब्दी तक संस्कृत की ब्राह्मी और गुप्त लिपि प्रचलित होने के प्रमाण मिलते हैं।

लद्दाख के श्री कुशक बकुला पिछले 3 वर्षों से मंगोलिया में भारत के राजदूत हैं। श्री कुशक बकुला को भगवान बुद्ध के 16 अर्हतों में से एक का अवतार माना जाता है। इस कारण बौद्ध मंगोल जनता के लिये वे पूज्य और श्रद्धेय हैं। मंगोल देशवासी जो इन दिनों रूस के शिकंजे से मुक्त होकर पूर्ण स्वतंत्रता की सांस ले रहे हैं, साम्यवाद के युग में ध्वस्त किए गए मंदिर–विहारों की पुनःप्रतिष्ठा करने में अगे हैं। कुशक बकुला जी के सान्निध्य से अत्याधिक उत्साह और तत्परता से धर्म की खण्डित हुई परम्पराओं को पुनः जीवित करने में लगे हैं। नये–नये विहारों का निर्माण किया जा रहा है। रूसी आधिपत्य में मंगोल भाषा के लिये रूसी लिपि का चलन हो गया था, किन्तु अब पुनः वहां की राष्ट्रीय मंगोल लिपि का प्रयोग बढ़ाया जा रहा है।

कुशक बकुला मंगोलिया के जिस किसी क्षेत्र में जाते हैं वहां के धर्मप्राण लोग उनका अभिवादन करते हैं, उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये लोगों की भीड़ जमा हो जाती है। कुशक बकंला जी को जो भी भेटें मिलती हैं वह वहां के भक्तजनों में ही बांट देते हैं। सैकड़ौ–हजारों भेड़–बकरियों भी भेंट में दी जाती हैं, उन्हें कुशक बुकला जी यह कहकर लौटा देते हैं कि इसका पालन आदि वे ही करें। किन्तु उनको काटकर खाने के लिये मना कर देते हैं। कुशक बुकला जी के कारण मंगोलिया में भारत के प्रति प्रेम श्रद्धा के साथ–साथ हिन्दू धर्म के प्रति वहां के लोगों की रुचि भी बढ़ रही है। विद्यार्थी संस्कृत का अध्ययन करने की प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। अच्छा होता यदि भारत सरकार ऐसे सभी देशों में जहां भारतीय धर्म और संस्कृति का प्रचार–प्रसार है, वहां श्री बकुला जैसे विद्वान महानुभावों को अपना राजदूत बनाती। यदि ऐसा किया जाता तो थाईलैण्ड, कम्पूचिया, लाओस, इन्डोनेशिया, कोरिया, जापान और चीन सभी देशों में भारत के प्रति विशेष आदर और प्रेम जागृत होता। हमारी ओर उनकी पूण्यभूमि भारत महाशक्ति बन चुका होता। ब्रिटिश राष्ट्र मंण्डल एक अंग होकर गुलाम देशों की भांति जीने की बजाय भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रमण्डल में भारत शीर्षस्थ स्थान ग्रहण करता जहां संस्कृत का आदर, भगगवान राम और भगवान बुद्ध के प्रति श्रद्धा और मानव कल्याण का संदेश देने वाली भारती फलती–फूलती।

## नेपाल कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) की असलियत

नेपाल में पिछले 55, 60 वर्षों से कम्यूनिस्ट पार्टी काम कर रही है। इस पार्टी में कई बार विभाजन हुए। सन् 1995 के लगभग नेपाल कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) अलग पार्टी के रूप में अस्तित्व में आई। इसके प्रमुख नेता चन्द्र प्रकाश गजरेल, मोहन वैद्य, बाबू राम भट्टराई, हिसीला एमी, पुष्प कमल दहाल (प्रचण्ड) आदि ईसाई धर्मावलम्बी थे। इनके नेतृत्व में साम्यवादी विचार के नारे तो लगाए जाते थे किन्तु इनके द्वारा हिन्दू धर्म पर विशेष रूप से आक्रमण किया जाता था। जबकि पिछले सारे इतिहास में नेपाल की अन्य किसी भी कम्यूनिस्ट पार्टी ने हिन्दूविरोधी कार्य नहीं किये थे। माओवादी स्थान–स्थान पर यह नारा लिखते है 'हिन्दूवाद मुर्दाबाद ब्राह्मणवाद मुर्दाबाद'

माओवादियों द्वारा हिन्दु धर्म के सभी पक्षों पर आक्रमण किया गया। संस्कृत पाठशालाओं में बम विस्फोट किये गये, उन्हे जबरदस्ती बन्द करा दिया गया। काठमाण्डू स्थित बाल्मीकीय विद्यापीठ के अधीन चल रहे संस्कृत विश्वविद्यालय में बम–विस्फोट किया गया और छात्रावास के छात्रों को मार–मार कर भगा दिया। नेपाल के सरकारी स्कूलों में भी जहां संस्कृत शिक्षा अनिवार्य थी, संस्कष्त बन्द कर दी गई। कुछ स्थानों पर संस्कृत विद्यालयों के प्राचार्यों की पिटाई की गई, कई मन्दिरों पर आक्रमण कर पुजारियों को पीटा गया, मन्दिरों के धन (कोष) और अनाज के भण्डारों को लूटा गया। पुजारियों से मारपीट कर धन वसूला गया। यहां तक कि कहीं तो मन्दिर पर ही अपना अधिकार जमा लिया।

कई स्थानों पर भागवत कथा तथा दूसरे धार्मिक समारोहों को बन्द कराया गया। कथाकारों को, आयोजकों को मारा–पीटा गया, वहां एकत्रित जन–समूह के जनेऊ तोड़े गये, उनकी चोटी (शिखा) काटी गई। कहीं–कहीं तो गौमांस तक खिलाया गया। कहीं पुजारी को पीट–पीट कर उसके हाथ में बाईबल थमा दी गई। नेपाल के प्रख्यात कथाकार और वरिष्ट हिन्दू नेता नारायण पौखरेल की हत्या कर दी गई। ऐसे ही और भी हिन्दू नेताओं को मारा गया।

पिछले वर्ष नेपाल के मन्त्रिमण्डल में माओवादियों के पांच मंत्रियों में से दो ईसाई धर्मावलम्बी थे। (1.हिसिला एमी, 2. खडग बहादूर बी.क.) और संसद सदस्यों में 20 के लगभग ईसाई थे, जो कि जनता से निर्वाचित नहीं बल्कि माओवादी नेतृत्व के द्वारा मनोनीत थे। किन्तु किसी भी अन्य दल के द्वारा कोई ईसाई मन्त्री मनोनीत नहीं किया गया न ही अन्य दलों में कोई ईसाई सांसद था। अन्य कम्यूनिस्ट दलों ने नेपाल में कभी हिन्दू धार्मिक कार्यों पर या संस्कृत पाठशालाओं पर आक्रमण नहीं किया।

प्रचण्ड का जो जीवन चरित्र नेपाली में छपा है उसमें लिखा है कि प्रचण्ड की मां के निधन पर हिन्दू रीति से अन्त्येष्टि किये जाने का प्रचण्ड ने विरोध किया। इतना ही नहीं प्रचण्ड ने मां को दफनाने का आग्रह किया। जब उनके पिता ने प्रचण्ड की बात नहीं मानी तो वह मां की अन्त्येष्टि छोड़कर चला गया। कई दिन तक चले शोक में भी सम्मिलित नहीं हुआ।

नेपाल में किसी की मृत्यु पर हिन्दू प्रथा के अनुसार अन्त्येष्टि कार्यक्रमों पर कई बार माओवादियों ने आक्रमण करके कार्यक्रम को रोका।

28,29,30 जनवरी 2007 को दिल्ली के पहाडगंज क्षेत्र में नेपाल कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी) का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में अमरीका का एक पीटर नामक व्यक्ति प्रमुख भूमिका निभा रहा था जिसे कामरेड पीटर के नाम से पुकारा जाता था। यह पीटर RIM का अध्यक्ष है RIM (Revolutionary International Movement) एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है जिस के द्वारा नेपाल के अतिरिक्त भारत, भूटान, बांग्ला देश में Communist Party (Maoist) के नाम से अलगावादी सशस्त्र–विद्रोही आन्दोलन चलाये जा रहे हैं।

उपरोक्त सम्मेलन में भारत के माओवादी, नक्सली, तथा पीपल्स वार ग्रुप ने भी भाग लिया। उपरोक्त सम्मेलन के अन्त में मिस्टर पीटर ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में माओवादी पार्टी के प्रमुखों की नियुक्ति की।

नेपाल में एक अनौपचारिक क्षेत्र सेवा केन्द्र 'इन्सेक' द्वारा मानवाधिकार वर्ष पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं जिनमें प्रत्येक वर्ष में हुए मानवाधिकार के उल्लंघनों और माओवादियों द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन है। इन पुस्तकों से कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहें हैं।

1. संकुवासभा जिला खादवारी नगरपालिका की कैलाशेश्वर मन्दिर की माता इन्द्र कुमारी श्रेष्ठ और उनके पति 49 वर्षीय लाल बहादुर श्रेष्ठ को संवत् 2060 असोज 25 को माओवादियों ने पिटाई की और माता के केशों को काट कर ले गये।

2. उदयपुर जिला भटर ग्राम विकास समिति (गाविसा) 2 में सुरक्षा कार्यवाही में मरने वाले, विष्णु कारकी की हिन्दू रीति–रिवाज के अनुसार अन्त्येष्टि क्रिया करते समय माओवादियों ने आकर जबरदस्ती कार्यक्रम को खत्म करवा दिया और हिन्दू रीति से अंत्येष्टि क्रिया नहीं करने दी।

3. जाजरकोट जिला गा.बि.स. 4 खालचोर स्थित प्रत्येक वर्ष मनाई जाने वाली श्रेष्ठ पुराण धार्मिक पर्व को संवत् 2060 आषाढ़ 1 तारीख से माओवादियों ने प्रतिबन्ध लगाएऔर खोगेनकोट गाबिस 5 और रम्दा 1 तांता में प्रतिवर्ष मनाई जाती भादौ पुराण पर भी प्रतिबंध लगा दिया।

4. आछाम जिला विनायक ग.बि.स. स्थित विनायक के कालो सिम्लो मुष्ठो देवता के मन्दिर के शिवालय को संवत् 2060 ज्येष्ठ मास में माओवादियों ने मूर्ति को तोड़फोड़ करके मन्दिर के अन्दर पेशाब कर दिया।

5. रामेछाप जिला नागदह में 7 आसोज संवत् 2058 के दिन माओवादियों ने अपने कार्यकर्ताओं को इकट्ठा करके गौमांस का भोजन कराया।

6. जाजरकोट जिला मजकोट ग.बि.स. 7 को रत्न बहादुर वस्नेतका के घर में बनाये गये पौराणिक मष्टा देवता के मन्दिर की माओवादियों ने तोड़फोड़ की।

7. आछाम जिला वैद्यनाथ ग.बि.स. 5 वेद विद्याश्रम के 7 विद्यार्थियों को 2058 असोज 4 तारीख को माओवादियों के भ्रातष संगठन 'अनेरास्वीय क्रान्तिकारी' दल ने धमकी देकर जबरदस्ती विद्यार्थियों की चोटी और जनेऊ कटवाकर नदी में फेंक दिया। तत्पश्चात विद्याश्रम बंद करा दिया।

8. धादिंग जिला मैदी ग.बि.स.–7 स्थित संस्कष्त प्रधानाध्यापक भवानी शंकर त्रिपाठी को 2062 मंगसर को 2062 मंगसर 4 तारीख को माओवादियों ने 'गुरुकुल शिक्षा हमारे लिए विरोधी शिक्षा है' का नारा देकर विद्यार्थियों को गुरुकुल शिक्षा लेने से रोका।

9. गोरवा जिला मनकाना ग.बि.स. मनोकामना मन्दिर में दर्शन करने के लिए आए भक्तजनों की सुरक्षा के लिए जो प्रहरी हवलदार इन्द्रबहादुर रानाभार और प्रहरी जवान शेषकान्त सुवेदी चेउन को माओवादियों ने गोली मारकर घालय कर दिया।

10.रुकुम जिला घेतमा ग.बि.स. 6 के 48 वर्षीय टीकाराम उपाध्याय जो 2061 मंगसर 22 तारीख को भगवान सत्यनारायण की पूजा करने के लिये जा रहे थे की अचानक रास्ते में माओवादियों ने आकर टीकाराम उपाध्याय (ब्राह्मण) की छाती में पोस्टर लगाया जिसमें 'ब्राह्मणवाद मुर्दाबाद, हिन्दुवाद मुर्दाबाद' के नारे लिखे हुए थे, और उसे सारे गांव में घुमाया।

11. हुम्ला जिला के सदरमुकाम सिमिकोट में प्राचीन काल से प्रचलित चाडपर्व और मन्दिर के पूजापाठ की विधि को पूरी तरह से माओवादियों ने बंद करवा दिया।

12. दांग जिला के तारानाथ योगी को 2058 फाल्गुन की 20 तारीख को अपने पिताजी की अंत्येष्टि के लिए क्रियाकर्म पर बैठ हुए की माओवादियों ने हत्या कर दी। पाल्पा के खे कुमार थापा को 2059असाढ़ 1 तारीख को अपनी माताजी की अंत्येश्टि के लिए बैठे हुए की माओवादियों ने हत्या कर दी।

13. कालीकोट जिले, चिलखाना ग.बि.स.–5 के खामा शाहीक की मृत्यु के उपरांत अंत्येष्टि के लिए जा रहे लोगो को माओवादियों ने मार भगाया और खामा शाहीक की लाशा के ऊपर डले कपडों को फाड दिया।

14. सिन्धुपालचोक और रसुवा जिले के माओवादी कमाण्डर भरत थापा ने पालचोक में अवस्थित जय बागयेष्वरी माता मन्दिर के पुजारी गोविन्द भारती को पूजा करने से रोका और उससे 3 लाख 50 हजार रुपये छीन लिये। पैसे छीनने के बाद भी उनसे लगातार और पैसे की मांग करने लगे और धमकी देने लगे कि अगर आपने पैसे नहीं दिये तो आपकी हत्या कर दी जाएंगी। उसके बाद पुजारी मंदिर छोड़कर अपनी जान बचाने के लिए भाग गया। इसके बाद माओवादियों के कमाण्डर भरत थापा और मोत बहादुर अनेक लोगों से धमकी देकर करोड़ो रुपये वसूलकर विदेश भाग गये।

## जम्मू वासियों का संघर्ष भारत की अखण्डता के लिये हैं

श्री अमरनाथ श्राईन बोर्ड को दी गई जमीन वापिस लेने का अर्थ है कि जम्मू कश्मीर राज्य में गैर मुसलमानों के नागरिक अधिकारों को कुचलना और पूर्ण इस्लामी राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करना एवं शनैः शनैः पाकिस्तान प्रस्तों का ही राज्य स्थापित होने देना। जम्मू–कश्मीर का भारत में विलय 27 अक्तूबर 1947 को ही हो गया था किन्तु जवाहरलाल नेहरू जी ने जनमत संग्रह की अनुचित शर्त डालकर उस विलय को ही लंगडा कर दिया। नेहरू जी के आग्रह से ही संविधान में धारा 370 डालकर केन्द्र की स्थिति और कमजोर कर दी गई। जो क्षेत्र पाकिस्तान ने हथिया लिये थे, उन्हें भारतीय सेना आक्रमणकारियों से खाली नही करा सकी क्योंकि प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरुजी ने एकतरफा युद्ध विराम की घोषणा करके आगे बढ़ती हुई विजयी भारतीय सेना के पांव रोक दिये गये और फिर नेहरू जी ने कश्मीर का प्रश्न यू.एन.ओ. में ले जाकर कर तो पाकिस्तानी कब्जे में आए इस भारतीय क्षेत्र को विवादास्पद बना कर सदा के लिये पाकिस्तान के कब्जें में छोड़ दिया। जम्मू कश्मीर का भाग्य विधाता शेख अब्दुल्ला को बनाने से तो देशद्रोहियों की फसल और परवान चढ़ने लगी।

ऐसी स्थिति में जम्मूवासियों ने पूर्ण विलय के लिये विकट आन्दोलन किया तो नेहरू जी की ऐसर नीति के विरोध में मंत्री पद छोड़कर आए भारतीय जनसंघ के नेता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अन्य कई दलों को साथ लेकर भारत भर में विराट आन्दोलन आरम्भ कर दिया। सत्याग्रह आरम्भ हुआ, जम्मू की ओर कूच करने वाले हजारों सत्याग्रहीयों को केन्द्र सरकार ने जम्मू–कश्मीर सीमा पार करने से पहले ही गिरफ्तार करके जेलों में ठूंस दिया। भगवान जाने शेख अब्दुल्ला से मिलकर क्या षडयन्त्र रचा गया कि उन दिनों के प्रखर राष्ट्रभक्त नेता डॉ. मुखर्जी को केन्द्र सरकार ने अन्य सत्याग्रहीयों की भांति सीमा पर न रोक कर उन्हें जम्मू कश्मीर के अन्दर प्रवेश करने दिया ताकि वे आसानी से शेख अब्दुल्ला के चुंगल में फंस जायें और फिर जो होना था वह ही हुआ। एक दिन समाचार आया कि डॉ मुखर्जी कश्मीरी दैत्य के जबड़े में दम तोड़ गये। भारत माता का यह सपूत राष्ट्र की बलिवेदी पर शहीद हो गया।कृउसे सदा के लिये मौत की नींद सुला दिया गया।

धर्म निरपेक्षता की दुहाई देने वाली केन्द्र सरकार की नाक के नीचे धर्मान्ध एवं घोर सांप्रदायिक कश्मीरी जेहादियों ने साढ़े तीन लाख हिन्दू कश्मीरियों को मार–मार कर घाटी से बाहर फेंक दिया। केन्द्र की छद्म धर्मनिरपेक्षता और आगे बढ़ी। राज्य के हिन्दुओं से सौतेलों का बर्ताव किया जाता है। हिन्दू बहुल जम्मू क्षेत्र की जनसंख्या 60 लाख है जबकि कश्मीर घाटी की जनसंख्या 58 लाख, फिर भी जम्मू से केवल 2 सांसद लिये जाते है जबकि कश्मीर से 3 सांसद। अधिक जनसंख्या वाले जम्मू से केवल 37 विधायक और कष्मीर घाटी से 46 विधायक। कश्मीर में बजट का 70 प्रतिशत किन्तु जम्मू के लिये मात्र 30 प्रतिशत ही खर्च किया जाता है। क्या यह धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं?

जम्मूवासी देश की अखण्डता के लिये बलिदान दे रहे है किन्तु दुःख है कि सारा देश शांत बैठा है। यदि भारत के कोटि–कोटि राष्ट्रभक्त उठें और अपनी आवाज खडी करें तो किसी की क्या मजाल कि पाकपरस्त जेहादी अपना ऐसा घिनौना खेल खेल सकें। आज देश को सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता हैं।

श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड जम्मू–कश्मीर के हिन्दुओं की ही संस्था है। भारत ही नहीं दुनिया भर के हिन्दू भगवान अमरनाथजी के दर्शन हेतू वहां जाते है। बर्फीले तूफानों का भी सामना करना पड़ जाता है। ऐसे में उन की सुविधा के लिये कुछ करने की बजाय कश्मीरी जेहादी उन्हें जान से मारने के प्रयास करते रहते हैं। कश्मीर सरकार ने श्राईन बोर्ड को जो भूमि आवंटित की थी उसे वापिस लेना कश्मीरी हिन्दुओं के अधिकारों को कुचल कर भारतविरोधी तत्वों का मनोबल बढ़ाना है। यह घोर सांप्रदायिक और राष्ट्रविरोधी कष्त्य है। केन्द्र सरकार की मन्शा पर प्रश्न चिन्ह लगता है।

इस कृत्य से श्रीमती सोनिया गांधी के नेतृत्व में चलने वाली मनमोहन सरकार की हिन्दू विरोधी मानसिकता ही प्रकट होती है।

# पत्रावली

---

## पुजारी की हत्या पर चुप्पी क्यों?

चुनावी दंगल की लड़ाई में एक मुस्लिम साम्यवादी हाशमी की हत्या पर सब को दुःख हुआ। देश भर में इसे जघन्य अपराध कहकर निन्दा हुई। यहां तक कि पाकिस्तान तथा ब्रिटेन के मुसलमानों ने भी रोष प्रकट किया। हरियाणा के मुख्यमंत्री ने तुरन्त एक लाख रुपये हाशमी के परिवार को देने की घोषणा भी कर दी।

एक ओर हाशमी की हत्या पर इतना बावेला हुआ किन्तु दूसरी ओर इन्हीं दिनों कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में एक मन्दिर की रक्षा के लिये नियुक्त एक मुस्लिम गार्ड ने ही मजहबी जनून में भर मन्दिर के पुजारी को बाहर घसीट कर मुसलमान बनने पर विवश किया। उसके न मानने पर उसे इतना पीटा गया कि पुजारी श्री केशवनाथ के प्राण निकल गये। पड़ोस की हिन्दू महिला ने कुछ बोलने की कोशिश की तो उसे ऐसा डराया कि नीचे गिर पड़ी, और बेहोश हो गई।

हिन्दू मन्दिर के पुजारी को मारना हिन्दू धर्म पर आक्रमण है। हिन्दुओं के सम्मान का मर्दन करना है। इतनी बड़ी घटना हो गई फिर भी किसी के सिर में जूं तक भी नहीं रेंगी। किसी ने धन तो क्या सहानूभूति के दो शब्द भी नहीं कहे। लाखों हिन्दू मन्दिर हैं, पुजारी हैं, किसी की ओर से विरोध नहीं! देश में ब्राह्मण सभाएं हैं, सनातनधर्म सभाएं, आर्यसमाज भी है, किन्तु कहीं किसी ओर से पुजारी जी की हत्या की निन्दा तक नहीं। क्या हिन्दू मनुष्य नहीं पशु हैं, जो कोई भी मारा जाए और किसी को बुरा न लगे। कब हम हिन्दुओं को भी दूसरे धर्मावलम्बियों के बराबर जीने का अधिकार होगा।

(12—1—89)

## बोड़ो राज्य की माँग

1. फरवरी 87 को तत्कालीन गृहमंत्री बूटा सिंह ने अखिल बोड़ो छात्रसंघ को एक पृथक राज्य की माँग करने के लिए उकसाया था। यह सनसनीखेज आरोप एक गिरफ्तार बोड़ो ने लगाया।
2. पुलिस के द्वारा पूछताछ के दौरान उसने बताया कि श्री बूटा सिंह ने बोड़ो छात्रसंघ से कहा था कि वह सिर्फ पृथक राज्य की स्थापना की माँग करें और अन्य माँगों को छोड़ दें ताकि केन्द्र आन्दोलन में हस्तक्षेप कर सके। केन्द्रीय गृहमंत्री ने कहा था कि गैर राजनीतिक मांगे छोड़े जाने के बाद ही केन्द्र हस्तक्षेप कर सकता है।
3. बोड़ो छात्र संघ के प्रतिनिधिमंडल की एक बैठक के दौरान श्री बूटा सिंह ने बोड़ो नेताओं से सिर्फ पृथक राज्य की माँग पर जोर देने को कहा क्योंकि भारत सरकार ने नये केन्द्रशासित क्षेत्रों की स्थापना न करने का फैसला किया है। केन्द्रीय गृहमंत्री ने बैठक के दौरान यह भी कहा कि असम सरकार विवश होकर पृथक राज्य की माँग को केन्द्र के पास भेजेगी।

4. उल्लेखनीय है कि गत 24 दिसम्बर को बसवाड़ी में बोड़ो छात्रसंघ का एक सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन में बोड़ो छात्रसंघ ने अपनी 92 माँगों में से 89 मांगें छोड़ने का फैसला किया। सम्मेलन में छात्रसंघ की सिर्फ तीन मांगे हैं :–

(i) ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे पर बोड़ोलैण्ड नामक पृथक् राज्य की स्थापना।

(ii) दक्षिणी किनारे की मैदानी जनजातियों के लिए जिला परिषद का गठन।

(iii)संविधान में छठी अनुसूची में करबीआंग लोगों के बोड़ो कचारी में शामिल करना।

5. असम गण परिषद सरकार ने इस रहस्योद्‌घाटन को काफी गंभीरता से लिया है। राज्य सरकार शीघ्र ही इस मामले को प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जानकारी में लायेगी।

6. पंजाब केसरी ने 24 फरवरी को केन्द्र सरकार पर यह आरोप लगाया है कि असम गण परिषद सरकार को गिराने के लिये वह बोड़ो आन्दोलन को बढ़ावा दे रही है।

7. आतंकवादियों को भूटान में स्थित प्रशिक्षण कैम्पों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। सरकार के पास इस का प्रमाण है कि इन उग्रवादियों द्वारा जिन हथियारों व बमों का इस्तेमाल किया जा रहा है वे उन्हें गोरखा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा से मिले हैं।

8. कोकराझार और उदालगढ़ी के कुछ मुट्ठीभर लोग ही बोड़ोलैण्ड की माँग कर रहे हैं।

9. बोड़ो उग्रवादियों को गोरखा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा से प्रेरित होने के बारे में संकेत उस समय मिले जबकि गत वर्ष 3 फरवरी को गोरखा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा के नेता सुभाष घीसिंग अपनी पत्नी तथा अपने तीन अन्य वरिष्ठ सहयोगी नेताओं के साथ गुवाहाटी के एक होटल में के.सी.तमांग के छद्‌मनाम से ठहरे थे। उन्होंने असम की कई बार रहस्यमय यात्रांए कीं।

10. श्री घीसिंग की यात्रा के बाद बोड़ो छात्र यूनियन के नेता श्री उपेन्द्र नाथ ब्रह्मा ने स्पष्ट रूप से घोषणा की थी कि उनके छात्र संगठन के श्री घीसिंग के गोरखा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा के साथ सम्बन्ध हैं। ब्रह्मा श्री घीसिंग से मिलने के लिये गत वर्ष सितम्बर में दार्जिलिंग भी गये थे।

11. आल बोड़ो स्टूडेन्ट्स यूनियन ने अपना आन्दोलन गोरखा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा की राजनीति को अपनाकर हिंसक और तेज कर दिया है।

12. बोड़ो आतंवादियों की गोरखा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा के एक वर्ग से तथा त्रिपुरा के भूतपूर्व विद्रोही ट्राइबल नेशनल वालंटियर्स से आधुनिक हथियार मिले हैं। बोड़ो उग्रवादियों को स्टेनगन जैसा हथियार सिर्फ 400 (चार सौ) रुपये में मिलता है।

13. आल बोड़ो स्टूडेन्ट्स यूनियन के प्रचार–कार्य के इन्चार्ज निकोडिमस हजारी द्वारा बोड़ो रैजिमेंट का गठन करने की घोषणा की गई है।

14. बोड़ो छात्र संगठन की पीठ दिल्ली दरबार द्वारा थपथपाई जा रही है। कहा जाता है कि बोड़ो छात्र यूनियन के कुछ नेताओं ने पिछले दिनों रहस्यमय ढंग से दिल्ली की यात्रा की थी, जिसने उनकी राजेश पायलट और आस्कर फर्नांडीस के साथ गुप्त मुलाकातों की व्यवस्था की थी, आन्दोलनकारियों को ठोस सहायता देने का भी आश्वासन दिया था।

15. राज्य सरकार को यह जानकारी मिली है कि इंका बोड़ो आन्दोलनकारियों को अपनी एजेन्सियों के मार्फत धन दे रही है।

16. बोडो आन्दोलनकारियों की मांग को स्वीकार किया जाना, जहाँ उनकी सूबे की मांग है, यदि उसके लिए–हिंसा का मार्ग अपनाया जाये या विदेशी मदद ली जाये, तो उसे देश को तोड़ने के अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता।

(15–01–89)

## गुंडागर्दी की सीमा

बिहार में गुडांगर्दी सभी सीमाएं पार कर चुकी है। जब गुडांगर्दी को राजनैतिक संरक्षण मिल जाये तो उस पर नियन्त्रण कौन करे। लालू जी ने मुस्लिम–यादव भाई–भाई की 'युती', का नारा देकर अपराधियों, गुंडों तथा जेहादियों के हौसले इतने बढ़ा दिये हैं कि वहां लोग आतंक के साये में जी रहे हैं। मार खाते हैं, किन्तु चूं भी नहीं कर सकते। पीसे जाते हैं तो भी डर के मारे बोल नहीं सकते। हत्यारे एवं अपराधी राजनीति में बढ़ते जा रहे हैं। लड़कियों को उठाया जाता है किन्तु मां–बाप डर के मारे शिकायत भी नहीं कर पाते।

नब्बे के दशक में किषनगंज जिले के तस्लीमुद्दीन का नाम चमका था जिन्होनें बंगलादेशी घुसपैठियों के बल पर इतना आतंक मचा दिया था कि बहू–बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं रह गई थी। बड़े–बड़े अधिकारी भी डर के मारे तस्लीमुद्दीन साहेब का हुक्म बजा लाने को विवश हो गये थे। तस्लीमुद्दीन पर लालू साहेब इतने मेहरबान हुए कि उन्हें केन्द्र में गृहराज्यमन्त्री ही बनवा दिया था। फिर उनके सुपुत्र अपने जौहर दिखाने लगे थे।

एक और नाम चमका था शहाबुद्दीन साहेब का। उन्होंने छापा मारने आये पुलिसबल को ही गोलियों का निशाना बना डाला था। अब सुल्तान मियां का नाम रोशन हुआ है। सुल्तान मियां ने एक विवाहिता महिला 'कंचन उपाध्याय' को ब्यूटी पार्लर से उठा लिया और मस्जिद में जाकर निकाह भी पढ़ लिया। कंचन की मां सूचीता रोती है। वह किसी प्रकार से कंचन के बच्चे को बचा कर भागने में सफल हो गयी। डर के मारे कोई सामने नहीं आता क्योंकि सुल्तान मियां के सिर पर कुछ मुस्लिम सांसदों और विधायकों का हाथ है। पुलिस भी कंचन को बचाने के लिये कुछ नहीं कर पा रही क्योंकि बिहार की राजनीति ऐसी हो चुकी है कि यदि उन्हें अपनी नौकरी प्रिय है तो राजनेताओं के मार्ग में आना कठिन है।

## सख्त कार्यवाही आवश्यक

किसी भी राष्ट्र के लिए देश की सुरक्षा का प्रश्न सर्वाधिक महत्व का हुआ करता है, किन्तु हमारी सरकार ने अपने आन्तरिक झगड़ों में उलझे रह कर कभी यह देखने की चेष्टा नहीं की कि पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध एक अघोषित
युद्ध छेड़ रखा है। दुःख की बात यह है कि यह युद्ध भारत की धरती पर लड़ा जा रहा है और भारत में ही पले, भारत का अन्न खाकर बड़े हुए, भारत के स्कूलों में जिन्होंने शिक्षा ग्रहण की ऐसे–हजारों युवक पाकिस्तानी हथियारों से लैस होकर पाकिस्तानी कमाण्डरों के निर्देशों पर चलते हुए भारत में विद्रोह की आग भड़का रहे हैं, देशभक्त लोगों को गोली का निशाना बना रहे हैं, पुलिस थानों तथा सैनिक चौकियों पर बमों एवं राकेटों से प्रहार कर रहे हैं, पर हमारी सरकार अभी पाकिस्तान से प्रार्थना कर रही है कि वह युद्ध बन्द कर दे। विश्व के देशों में प्रमाण लिए घूम रही है कि पाकिस्तानी हाथ हमारे देश के भीतर गड़बड़ कर रहा है। परन्तु जो तत्व पाकिस्तानी हाथ बनकर पाकिस्तान की लड़ाई लड़ रहे हैं, उन पाकिस्तानी हाथों को काट फेंकने का विचार तक भी यह सरकार नहीं करती?

कश्मीर घाटी में लाखों हिन्दुओं को इस पाकिस्तानी हाथ ने बाहर निकाल फेंका है–दर–दर भटकने को या अपनी सरकार की नपुंसकता पर आंसू बहाने को। इसके अतिरिक्त जो सैंकड़ों हिन्दू नर–नारियां कश्मीर के दूर–दराज ग्रामों में मारे गये उनका तो किसी ने हिसाब नहीं किया। उन हिन्दू ललनाओं पर हो रहे बलात्कारों तथा उनको बड़ी नीचतापूर्वक मार देने की घटनाएं रोंगटे खड़े कर देती है।

कश्मीर के भूतपूर्व राज्यपाल ने जब इस पाकिस्तानी हाथ का भण्डाफोड़ करना चाहा, और डा. फारूख तथा उनके छः मंत्रियों (जो कश्मीर में गड़बड़ करवाते रहे) की रिपोर्ट केन्द्र में भेजी तो

बेचारे जगमोहन को अपने पद से ही हाथ धोना पड़ गया। आवश्यकता है कि कश्मीर के उन नेताओं के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाए जो परोक्ष रूप में पाकिस्तान अथवा दूसरी बाहरी शक्तियों से मिलकर कश्मीर में विद्रोह भड़का रहे हैं या विद्रोही तत्वों की किसी प्रकार सहायता कर रहे हैं—फिर चाहे वे डॉ. फारूख अब्दुला और उनके मन्त्रिमण्डल के साथी ही क्यों न हों।

देश की सुरक्षा सरकार का पुनीत कर्तव्य और प्रथम दायित्व है। देश की सुरक्षा से समझौता नहीं किया जा सकता।

(10—08—90)

## कश्मीर उग्रवाद की भीषण आग में

कश्मीर उग्रवाद की भीषण आग में झुलस रहा है। हजारों युवकों ने पाकिस्तान से सैनिक प्रशिक्षण लेकर, तथा हथियार लेकर, भारत के विरुद्ध जंग छेड़ रखी है। वे पुलिस तथा अर्धसैनिक बलों पर राकेटों से आक्रमण कर रहे हैं, देशभक्त लोगों को मार रहे हैं। देश के नेता इस देश—द्रोह का कारण बेरोजगारी कह कर उग्रवादियों को नौकरियां दे रहे हैं। इन उग्रवादियों को मुख्य धारा में लाने के बहाने से उन्हें लाखों का ऋण तथा 20 से 30 हजार रुपये तक मुफ्त अनुदान देने की बात हो रही हैं। पंजाब के भी एक लाख युवकों को सरकारी नौकरियां दी जायेंगी। परन्तु मैं पूछता हूं कि पंजाब में बेरोजगारी यदि होती तो बिहार तथा उत्तर प्रदेश की 30 लाख लेबर पंजाब में काम करने क्यों आतीं? वास्तव में वहां बिहारी लेबर ही खेतों, फैक्ट्रियों में काम कर रही हैं, रिक्शा चलाना तथा अन्य प्रकार की मजदूरी कर रहे हैं।

यदि बेरोजगारी के कारण ही देश के नौजवान उग्रवादी बन कर देश के विरूद्ध जंग छेड़ते हैं तो यह काम बिहार, उड़ीसा में होना चाहिए, जहां बेरोजगारी अत्यधिक है। यदि बेरोजगार ही उग्रवादी बनते हैं, तो कश्मीर की पुलिस के जवान तथा अफसर क्यों उग्रवादियों से मिले हुए हैं, पंजाब में कितने ही पुलिस अफसर उग्रवादी होने के कारण पकड़े गये, ऐसा क्यों?

मेरे विचार से भारत सरकार स्वयं उग्रवाद को बढ़ावा दे रही है। यदि अपराधियों, देशद्रोहियों, विद्रोहियों को दण्ड न मिले तो उनके हौसले बढ़ते ही हैं और यदि उन्हें हत्याएं करने, देशविरोधी कार्य करने के कारण धन मिले, नौकरियां मिलें तब तो उनके दूसरे साथी भी उग्रवादी बनने को लालायित होंगे।

पंजाब में उग्रवाद बढ़ा तो श्री बूटा सिंह को देश का गृहमंत्री बना डाला, फिर जब कश्मीर में भारत के प्रति विद्रोह भड़का तो उन्हीं कश्मीरियों के नेता मुफ्ती मोहम्मद सईद को गृहमंत्री बना डाला, और अब उग्रवाद पैदा करने वाले क्षेत्रों के ही युवकों को सरकारी नौकरियां तथा लाख—लाख रुपये के ऋण देने की घोषणा की गयी है! क्या इससे देश की रक्षा होगी या विध्वंस?

(30—08—90)

## तुष्टीकरण का माध्यम—दूरदर्शन

आजकल दूरदर्शन के प्रसारण प्रायः राष्ट्र की मुख्य धारा से कोसों दूर होते हैं। एक विशिष्ट वर्ग के तुष्टीकरण के लिए ही अधिकांश कार्यक्रम दिखाये जाते हैं। भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद और महाकवि निराला—जिनकी एक—एक पंक्ति में राष्ट्रीय स्वाभिमान छलकता था—दूरदर्शन की दृष्टि से बहुत परे हैं। बस गालिब और उसके साथ फारसी, अरबी का गल्बा दूरदर्शन पर छाया रहता है।

भारत में मुस्लिम शासकों के सीरियल भी चलते रहते हैं। अभी हाल ही में रामपुर के नवाबों पर सीरियल था। उनकी प्रशंसा के पुल बांधे गए, जबकि सब जानते हैं कि पाकिस्तान के बड़े नेता साहेबजादा याकूब खान, जो पाकिस्तान में विदेशमंत्री रहे और भारत को खाक में मिलाने के ही स्वप्न देखते हैं, रामपुर के खानदान के ही चिराग हैं। रामपुर के नवाबों के पुस्तकालय का जिक्र किया गया, यह नहीं कहा गया कि यह पुस्तकालय भारतीय नहीं बल्कि पाकिस्तानी अधिक दीखता है।

तुष्टीकरण की यह नीति दूरदर्शन में सर्वत्र दिखाई पड़ती है। जो भी नाटक दिखाए जाते हैं उनमें हिन्दू महात्माओं को धोखेबाज, तिलकधारी तथा मन्दिर में पूजा करने वालों को बेईमान, धोती पहनने वालों को गरीबों का खून चूसने वाला दिखाते हैं। जबकि मुस्लिम पात्र समाजसेवी, लोगों का भला चाहने वाला, उदारचरित्र–युक्त दिखाया जाता है।

दूरदर्शन द्वारा हिन्दू समाज की एकता तोड़ने के भी उपाय किए जाते हैं। वर्ग–विद्वेष भड़काने वाले कार्यक्रमों की भरमार होती है। कहीं पिछड़े वर्ग पर सवर्णों द्वारा अत्याचार, तो कहीं किसी ठाकुर जमींदार द्वारा मजदूरों और खेती जोतने वाले छोटे किसानों पर अमानुषिक जुल्मों की कहानी।

हजार वर्षों से भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा किए गए क्रूर नरसंहारों को यदि दूरदर्शन पर दिखाया जाये–गौरी, गजनी, खिलजी और मुगलों की अत्याचारी सेनाओं से लोहा लेने वाले भारतीय वीरों के इतिहास यदि दिखायें, अंग्रेजी दासता के फंदे से भारतमाता को मुक्त कराने के लिए प्राणों को न्यौछावर करने वाले क्रान्तिकारियों तथा अंग्रेजियत और अंग्रेजों के चंगुल से देशवासियों को छुटकारा दिलाने के निमित्त जीवन भर तपस्या करने वाले मनीषियों के कर्तृत्व को यदि दूदर्शन पर लाया जाये, और विश्व के अनेक देशों में फैली भारतीय संस्कृति की झलक यदि दूरदर्शन से प्रसारित हुआ करे–तो पिछड़े राष्ट्रों की श्रेणी में गिरा पड़ा हमारा देश फिर से प्राचीन गरिमा को प्राप्त कर उन्नति के शिखर छूने लगे। किन्तु जिन लोगों ने आजकल दूददर्शन को अपने हाथों का खिलौना बना रखा है, उनके स्थान पर देशभक्ति की दृष्टि रखने वाले कलाकारों और अधिकारियों को जब तक स्थान नहीं मिलता–दूरदर्शन में किसी सुधार की आशा करना व्यर्थ है।

(14–9–90)

## भगोड़े नहीं, सर्वस्व–त्यागी

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी की कड़ी आलोचना करते हुए समाजवादी पार्टी के श्री शतरुद्र प्रकाश ने अपना पूरा रौद्र रूप प्रकट किया। कई अशोभनीय विशेषणों का भी प्रयोग किया। शतरुद्र जी ने आडवाणी जी को शराबी–कबाबी, नासमझ, कायर तथा पाकिस्तान का भगोड़ा कहा। शतरुद्र जी किसी को नासमझ और कायर मानते हैं, यह उनकी अपनी समझ है, किन्तु 1947 में पाकिस्तान से जो हिन्दू यहां आए उन्हें भगोड़ा कहना बड़ा अनुचित लगता है। देश के कांग्रेसी नेताओं ने मुसलमानों की पाकिस्तान की मांग के आगे घुटने टेक दिए और सत्ता हथियाने की जल्दबाजी में मातृभूमि के एक तिहाई भाग को मुस्लिम राज्य के रूप में दे दिया। यह सब उन क्षेत्रों के हिन्दुओं की इच्छा के विरुद्ध किया। वहां के हिन्दुओं की कीमत पर ही स्वराज्य प्राप्त किया गया। उनको पाकिस्तानी भेड़ियों के आगे फेंक दिया गया। जो हिन्दू अनादि काल से लाहौर, रावलपिण्डी, कराची और पेशावर में रहते थे, जिन हिन्दुओं ने हजार वर्षों तक विदेशी आक्रमणकारियों से मातृभूमि की रक्षा के लिए युद्ध किए, जिन्होंने विदेशी, विधर्मी, आक्रमणकारियों की संस्कृति तथा धर्म नहीं अपनाया–चाहे उन्हें कितनी यातनाएं सहनी पड़ीं, उन्हीं हिन्दुओं को उनके अपने नेताओं ने ही घर से बेघर कर दिया।

पाकिस्तान बनने पर वहां के हिन्दुओं के सामने दो विकल्प थे। यदि वे भारतीय बने रहना चाहते–भारतमां की गोदी में रहना चाहते, तो उन्हें सर्वस्व छोड़कर भारत आना था या अपने घर–बार सम्पति संभाले रहने के लिए पाकिस्तानी बनना था। पाकिस्तान में वे मुस्लिम धर्म स्वीकार करके सम्मान का जीवन जी सकते थे। कुछ थोड़े से लोगों को ऐसा करना भी पड़ा, वे मुस्लिम बन गए। उनके बच्चे पाकिस्तानी सेना में भरती होकर भारत के विरुद्ध लड़े। परन्तु जो हिन्दू नहीं चाहते थे कि उनकी अपनी सन्तान कभी भारत की छाती पर गोले बरसाये और पाकिस्तानी बन जाए, वे अनेक कठिनाइयों के उपरान्त भी अपने खेत–खलिहान, घर–दुकानें छोड़कर भारत में चले आये। हजारों हिन्दू इस प्रक्रिया में मारे भी गए। ऐसी स्थिति में उन्हें भगोड़ा कहना भारतीय राष्ट्रवाद का अपमान करना है, समाज में वर्ग–विद्वेष पैदा करना है। हमारे नेताओं को समझ लेना चाहिए और अपने प्रतिद्वन्दी के विरूद्ध बोलते हुए संयत भाषा का प्रयोग करना चाहिए। मेरे विचार में पाकिस्तान और बंगलादेश से आने वाले भाई भगोंड़े नहीं, बल्कि भगोड़े तो हमारे वे नेता हैं जो पाकिस्तान के जनक जिन्ना साहब की गीदड़ भभकियों से ड़रकर मुकाबले से भाग गये, मातृभूमि के टुकड़े करना स्वीकार कर लिया, भारत के ही भू–भाग को शत्रु देश बना डाला।

(15–9–90)

## यह कैसी रोक?

स्वास्थ्यमंत्री गद्दी पर बैठते ही घोषणा करते हैं कि वे जनसंख्या–वृद्धि पर रोक लगाने के लिए अधिक शक्ति लगायेंगे। उन्होंने कहा कि देश की समस्याओं का मूल कारण जनसंख्या–वृद्धि ही है। सीमित परिवार से उस परिवार को भी लाभ होता है, किन्तु जिस वर्ग में बड़े परिवारों की बीमारी सर्वाधिक है–ऐसे मुस्लिम समुदाय को तो परिवार–नियोजन के लिए प्रेरित किया नहीं जाता, बल्कि उनका संख्या–बल बढ़ाने के ही उपाय सरकार करती है!

1. मुस्लिम वर्ग को चार विवाह करने की अनुमति देकर सरकार उनके लिए
   बीस–बीस, पच्चीस–पच्चीस बच्चों वाले परिवार का मार्ग प्रशस्त करती है।
2. बंगलादेश से लाखों मुस्लिम घुसपैठिये भारत में आकर बस जाते हैं, किन्तु भारत सरकार उन्हें निकालने के स्थान पर, उल्टे उन्हें सुविधाएं देती है। केवल आसाम में ही 40 लाख बंगलादेशी घुसपैठिये हैं, किन्तु उनके विरुद्ध आसाम गण संग्राम परिषद द्वारा चलाए गए आन्दोलन को केन्द्र सरकार ने सख्ती से कुचल दिया! पश्चिमी बंगाल में भी 40 लाख घुसपैठिये रह रहे हैं। यहां तक कि भारत की राजधानी दिल्ली में आए 3 लाख बंगलादेशी मुसलमानों को भारत में घुसपैठ करने का दण्ड देने की बजाए उनके राशनकार्ड बनवा दिए गए हैं, उन्हें मतदाता सूची में सम्मिलित किया गया और उन्हें 26–26 गज भूमि भी प्रत्येक परिवार के लिए देकर प्रोत्साहित किया गया। अफगानिस्तान से आए मुस्लिम भी भारत में बिना रोकटोक के रह रहे हैं।

यदि वास्तव में भारत सरकार देश की जनसंख्या बढ़ने देने के विरुद्ध होती तो पहले से अत्यधिक बढ़ती हुई मुस्लिम जनसंख्या को घुसपैठ द्वारा और बढ़ावा कभी न देती। इसीलिए हिन्दू समाज अब समझने लगा है कि परिवार–नियोजन तो, हिन्दुओं का प्रतिशत कम करके, उन्हें शक्तिहीन बनाने का ही उपाय है। नये स्वास्थ्यमंत्री भी हिन्दू जनसंख्या कम करने के उद्देश्य से ही परिवार–नियोजन पर अत्यधिक बल दे रहे हैं। यदि उनके मन में सच्चाई होती तो वे करोड़ों मुस्लिम घुसपैठियों को बाहर निकालने की बात क्यों नहीं करते, और मुसलमानों के लिए भी समान नागरिक संहिता द्वारा उन्हें एक विवाह तक क्यों सीमित नहीं करते? वास्तविक स्थिति तो यह है कि जिन हिन्दुओं को किसी कारण दूसरा विवाह करने की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें मुस्लिम मजहब ग्रहण करना पड़ता है। नहीं तो जेल की हवा खानी पड़ती है। स्वास्थ्यमंत्री अब और अधिक देर तक जनता को धोखे में नही रख सकते।

(20–09–90)

# सच्ची स्वाधीनता कब आएगी?

भारत को स्वाधीन हुए 50 वर्ष भी नहीं हुए थे कि भारत के निवर्तमान स्थलसेनाध्यक्ष जनरल शर्मा ने ''भारतीय सेना के 250 वर्ष'' नामक पुस्तक का विमोचन किया! 50 वर्ष पूर्व तो भारत अंग्रेजों के अधीन था। उस समय भारत की सेना, भारत की स्वाधीनता और भारत के सम्मान की रक्षा के लिए नहीं, बल्कि अंग्रेजी साम्राज्य को भारत तथा अन्य देशों पर जमाए रखने के लिए ही, अपने जौहर दिखाती थी।''भारतीय सेना के 250 वर्ष'' नामक पुस्तक में ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जब इस सेना की रैजिमैंटों ने अंग्रेज अफसरों के अधीन भारतीय राज्यों को नष्ट किया और भारतीय वीरों को यमलोक पहुंचाया, भारत के क्षेत्रों को अंग्रेजों का गुलाम बनाने में कीर्तिमान स्थापित किए, ''विक्टोरिया क्रास'' जैसे ऊँचे पुरस्कार प्राप्त किए, नाना साहब तथा तांतिया टोपे से लड़े, रानी झांसी को हराया, जगदीशपुर के 80 वर्षीय राणा कुवंर सिंह जैसे देशभक्त वीरों का सफाया किया, भारतमाता की गोदी के हजारों–हजार शूरवीर लाडलों को फांसी पर चढ़ाया। कैसी विडम्बना है कि जिन वीरों के बलिदानों से भारत स्वतंत्र हुआ, उन्हीं को गोली का निशाना बनाने वाली सेना के खूनी, देशद्रोही इतिहास को आज स्वतन्त्र भारत अपना शानदार इतिहास मान रहा है!

नये सेनाध्यक्ष श्री रोद्रिग्ज़ अपना पदभार संभालते ही इण्डिया गेट पर माथा टेकने गये, जहां उन सैंकड़ों जवानों के नाम लिखे हुए हैं जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजी साम्राज्य की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए। वहां एक ज्योति जल रही है जिसे 'जय जवान ज्योति' कहा जाता है। साथ ही भारत की तीनों सेनाओं–थल सेना, नौ सेना, और वायु सेना के–ध्वज भी फहरा रहे हैं। इन ध्वजों में नौ सेना का ध्वज पूर्ण रूप से अंग्रेजी साम्राज्य का चिन्ह है जिसके एक कोने में तिरंगा अंकित है। हमारी नौ सेना का ध्वज सेंटजार्ज का क्रास है जो अंग्रेजी साम्राज्य का प्रतीक है तथा अंग्रेजों के ध्वज यूनियन जैक का आधार है। वैसे भी क्रास तो ईसाई चिन्ह है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र, भारत के ध्वज में ईसाई चिन्ह, वह भी विदेशी राष्ट्र का, नितान्त आपत्तिजनक है। जब–जब भारत के सेनाध्यक्ष इण्डिया गेट पर, जो कि अंग्रेजों की विजय के उपलक्ष्य में बनाया गया था, जाते हैं और नतमस्तक होते हैं तथा नौ सेना का ध्वज भी होता है जिसमें भारतीय चिन्ह न होकर ब्रिटिश ईसाई चिन्ह सेंटजार्ज का क्रास अंकित है मन में एक टीस उठती है कि भारत की स्वतन्त्रता तथा सार्वभौम सत्ता का उपहास हो रहा है। न इंडिया गेट आजादी का स्मारक है, न नेवी का झंडा भारतीय राष्ट्रीयता का द्योतक है। बल्कि दोनों अंग्रेजों की दासता के प्रतीक हैं।

स्वतन्त्रता–संग्राम के दिनों में भारतीय वीर ''वन्दे मातरम्'' गाते हुए फांसी पर झूल जाया करते थे। किन्तु जब देश स्वतन्त्र हुआ तो ''वन्दे मातरम्'' के स्थान पर श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा सन् 1911 में अंग्रेज सम्राट के स्वागत में लिखे गीत ''जन–गण–मन अधिनायक'' को ही राष्ट्रगीत बना डाला! इस गीत में हम भारतमाता को प्रणाम नहीं करते, बल्कि भारतमाता किसी अधिनायक की जय–जय का गान करती हैं!

सर्वप्रथम 27–12–1911 को कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में जार्ज पंचम के स्वागत में श्री ठाकुर द्वारा जन–गण–मन गीत गाया गया था। 28–11–1911 को कलकत्ता के अंग्रेजी दैनिक इंग्लिशमैन ने लिखा–''अधिवेशन की कार्यवाही श्री रवीन्द्र नाथ टैगौर द्वारा सम्राट के सम्मान में लिखित गीत द्वारा आरम्भ की गई। 29–12–1911 को कलकत्ता के ही स्टेट्समैन ने लिखा–''बंगाली बाबू रवीन्द्रनाथ टैगौर'' ने सम्राट के स्वागत के लिए लिखे गीत का गायन किया।

राष्ट्र–सम्मान के प्रति उपेक्षा की कड़ी में ही राष्ट्रभाषा के स्थान पर भारत में अंग्रेजी का वर्चस्व बना हुआ है। कितनी लज्जा की बात है कि भारत के उच्चतम न्यायालय में अंग्रेजी राज कर रही है, और भारतीय भाषाओं का प्रवेश तक भी वर्जित है। अभी तक हमारे न्यायाधीश तथा अधिवक्ता अंग्रेजों की परम्परा का काला गाउन पहनते हैं जो भारतीयता के विपरीत है। सारा देश अंग्रेजीयत का बोझ ढो रहा है। सम्पूर्ण राष्ट्र में राष्ट्रीय भाषाएं घटिया स्थान प्राप्त कर रही हैं।

पता नहीं—कब भारत मानसिक गुलामी से मुक्त होकर सच्चे अर्थों में स्वाधीनता प्राप्त करेगा? राष्ट्रीय सम्मान पर आघात करने वाली बातें कब समाप्त होंगी?

(30—9—90)

## देशभक्ति को देशनिकाला

भारत की राजधानी दिल्ली में केन्द्रीय सरकार की नाक के ठीक नीचे कश्मीरी आतंकवादियों के शरण—स्थल बने हुए हैं। जिम्मेदार लोग चिल्ला—चिल्ला कर बता रहे हैं कि दिल्ली की जिस जामा मस्जिद को वी.पी.सिंह ने पचास लाख रुपये दिये उस जामा मस्जिद के तहखानों में 100 से अधिक कश्मीरी मुजाहिद पल रहे हैं। केन्द्र द्वारा दिये गये 50 लाख रुपयों से जामा मस्जिद के नीचे लाल किले तक एक पुरानी बन्द पड़ी सुरंग कश्मीरी आतंकवादियों के उपयोग के लिए खोदी जा रही है। इस कार्य के लिए शाही इमाम अब्दुला बुखारी साहेब के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जा रही।

वास्तव में भारत सरकार पर इमाम साहब का बहुत प्रभाव है। इमाम साहब के कारण भारत के गृहमंत्री पद पर मुफ्ती मोहम्मद सईद को बिठा दिया गया, जो कि मुस्लिम कट्टरवाद के लिये विख्यात हैं। कश्मीर का बच्चा—बच्चा मुफ्ती की फिरकापरस्ती से परिचित है। मुफ्ती साहब ने कश्मीर के अनन्तनाग शहर का नाम इस्लामाबाद कर दिया। 1986 की फरवरी में मुफ्ती साहब के द्वारा कश्मीर घाटी में सांप्रदायिक दंगे भड़काये गये। जिन में 63 से अधिक मन्दिर ध्वस्त कर दिये गये, हिन्दुओं की दुकानों और घरों को लूटा गया फिर उन्हें आग लगा दी गई। घाटी के हिन्दू भय से कांपने लगे। अपनी बहू—बेटियों की इज्जत बचानी भी उनके लिए कठिन हो गई।

कैसी हालत हो गई है कि देशद्रोह को पुरस्कृत किया जाने लगा है और देशभक्ति की उपेक्षा। हम सीमाओं की रक्षा क्या करेंगे जब घर में ही शत्रु की घुसपैठ का सफाया नहीं करते। क्या हमारे नेता सैक्यूलरिज्म की वेदी पर राष्ट्र की बलि चढ़ा देना चाहते हैं।

(8—10—90)

## विष—वृक्ष के ये माली

बाबरी मस्जिद कमेटी के नेता श्री आजम खान मुस्लिम कट्टरवादी आग उगलने में मशहूर हैं। अपने मजहबी जुनून में उन्होंने भारतमाता को ''डायन'' तक कह डाला। इसी कारण उन पर अभियोग भी चला। किन्तु श्री मुलायम सिंह द्वारा उन्हें उत्तर प्रदेश के मंत्रिमंडल में लिये जाने के उपरान्त तो भारत के मजहबी जुनून और विद्रोह फैलाने वाले तत्वों को भी भरपूर प्रोत्साहन मिलने लगा। इसी कारण अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के ऐसे कट्टरपंथी छात्र, जिनकी निष्ठा भारत के लिये नहीं बल्कि सीमा पार के देश के लिये है, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी को भारत—विरोधी षड़यन्त्रों का अड्डा बना रहे हैं। यूनिवर्सिटी में भारतविरोधी और हिन्दूविरोधी नारों से दीवारें भरी पड़ी हैं। नारो के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

1. हँस के लिया है पाकिस्तान लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान, भाई को देंगे खालिस्तान।
2. हिन्दू! हिन्दुस्तान छोड़ो, हिन्दुस्तान हमारा है।
3. जब आयेंगे अली—अली, भाग उठेंगे बजरंग बली।
4. उठा शमशीर ऐ मुसलमान तुझे अब किस का इन्तजार है।
5. प्रिपेयर फॉर जिहाद।
6. वक्त की यही पुकार, उठाओ बाबर की तलवार।

अगली कड़ी भारत की बरबादी।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में पाकिस्तानी विषवृक्ष पनप रहा है। इस विषवृक्ष को पालने और बढ़ाने के लिये भारत सरकार भरपूर धन दे रही है। भारत के कई अन्य विश्वविद्यालयों से बहुत

अधिक धन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को दिया जाता है और आजम खान जैसों को मन्त्री पद देकर पुरस्कृत किया जाता है। यदि भारत के लोग ऐसे ही पड़े सोते रहे तो न जाने और क्या–क्या सहना पड़ेगा।

(12–10–90)

## टीपू सुल्तान की असलियत

दूरदर्शन पर टीपू सुल्तान सीरियल के द्वारा टीपू सुल्तान की असलियत को छुपाया जा रहा है। टीपू सुल्तान द्वारा हिन्दू समाज पर किए गए घिनौने अत्याचारों, सहस्रों निरीह, निर्दोष, असहाय हिन्दू महिलाओं पर क्रूर बलात्कारों तथा लाखों निःशस्त्र शान्तिप्रिय हिन्दुओं को तलवार की नोक पर मुसलमान बनाए जाने के जघन्य कुकृत्यों को जनता की दृष्टि से ओझल किया जा रहा है। टीपू सुल्तान को शूरवीर की संज्ञा देकर उसकी प्रशंसा की जाती है, किन्तु निःशस्त्र, ग्रामीण प्रजा पर मजहब के नाम पर जुल्म ढाने वाला शूरवीर नहीं क्रूर और अत्याचारी होता है। टीपू सुल्तान ने कर्नाटक और मालाबार के हिन्दू समाज पर वही अत्याचार किए जो तैमूरलंग या नादिरशाह ने किए थे। शूरवीर अपने मुकाबले के शक्तिशाली योद्धा से लोहा लेता है। वह निरपराध, बलहीन, शान्तिप्रिय जनता का लहू नहीं बहाता। टीपू सुल्तान ने नलगुण्डा तथा कित्तूर के छोटे–छोटे ब्राह्मण राजाओं पर विशाल सेना लेकर आक्रमण कर दिया। नलगुण्डा के छोटे से नगर को ध्वस्त कर हिन्दू जनता का संहार किया तथा मकानों में आग लगा दी। महल में जाकर राजा ''भावे'' को बेड़ियों में जकड़ा गया। फिर टीपू स्वयं हिन्दू रानियों तथा दूसरी महिलाओं पर टूट पड़ा, उनसे बलात्कार कर उनको अकथनीय कष्ट दिए। क्या ऐसे अत्याचारी को शूरवीर कहा जा सकता है?

अपने पिता द्वारा धोखे से हड़प किए गए मैसूर के हिन्दू राज्य की गद्दी पर बैठते ही टीपू ने हिन्दुओं के विरुद्ध जिहाद की घोषणा कर दी। अपनी सेना को यह आदेश दे दिया कि वे हिन्दुओं, विशेषकर ब्राह्मणों पर अत्याचार करें और उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनायें। शायद इतिहास में वह पहला गाजी है जिसने 24 घंटे के अन्दर पचास हजार से अधिक हिन्दुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया।

कुछ दिन बाद टीपू सुल्तान ने मालाबार पर आक्रमण करके एक ही धक्के में एक लाख हिन्दुओं को मुसलमान बना डाला। टीपू सुल्तान के अमानुषिक अत्याचारों के कारण धारवाड़ से लेकर ट्रावनकोर तक लाखों–लाख हिन्दू भय से कापंने लगे। सैंकड़ों हिन्दू महिलाओं ने टीपू सुल्तान के अत्याचारों की ताब न लाकर आत्महत्या कर ली। सैंकड़ों महिलांए हिन्दुत्व की आन और सम्मान की खातिर तुंगभद्रा और कृष्णा नदी में कूद गयीं ताकि टीपू सुल्तान की मुस्लिम सेना के क्रूर हाथों में न पड़ जायें।

जिस टीपू सुल्तान को शूरवीर की उपाधि से विभूषित किया जाता है, जब उसका पाला मराठा सेनाओं से पड़ा तो वह शेर कहलानेवाला नर–पिशाच गीदड़ बन गया। मराठों से अपनी जान बचाने के लिए श्रृंगेरी के जगद्गुरु शंकराचार्य के चरणों में लोट गया। मराठों के क्रोध से बचने के लिए मन्दिरों को दान देना आरम्भ किया तथा डर के मारे कांची में जाकर हिन्दू देवताओं की रथयात्रा में सम्मिलित हुआ। 1799 में टीपू के मारे जाने के पश्चात् ही उसके द्वारा ध्वस्त किये हिन्दू राज्य फिर से स्वाधीन हो सके। टीपू द्वारा फ्रांस के नेपोलियन बोनापार्ट को लिखे पत्र की चर्चा की जाती है। किन्तु टीपू ने तुर्की के मुस्लिम सुल्तान को जो पत्र लिखे भारत के काफिरों को समाप्त करने के लिये उसकी जानकारी भी तो लोगों को होनी चाहिए। काफिरों को मार कर मजहब की जो सेवा टीपू ने की थी, उसके उपलक्ष्य में तुर्की के तुस्लिम सुल्तान ने टीपू को अपार धन–राशि से पुरस्कृत किया था। टीपू सुल्तान का पक्ष लेने वाले लोगों से अनुरोध है कि टीपू सुल्तान की स्तुति लिखने से पहले वे सरदेसाई द्वारा लिखित 'न्यू हिस्ट्री ऑफ दि मराठाज'' फारसी में लिखी 'हुक्मनामा ए टीपू सुल्तान' तथा ष्मबतमज क्वबनउमदजे वि ज्पचन ैनसजंदष पुस्तकें भी पढ़ लें।

(18–10–90)

## सर्वोच्च न्यायालय में हिन्दी–निषेध

संविधान–निर्माताओं ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाये जाने का निर्णय किया था। किन्तु स्वतन्त्रता–प्राप्ति के 60 वर्ष पश्चात् भी भारत के उच्चतम न्यायालय में भारत की राष्ट्रभाषा के व्यवहार पर रोक लगी हुई है। कोई न्यायाधीश राष्ट्रभाषा का प्रयोग नहीं कर सकता, न ही किसी अधिवक्ता को हिन्दी के प्रयोग की अनुमति है। प्राचीन काल से महान् संस्कृति और विशाल साहित्य की धरोहर का अभिमान रखने वाले भारतवर्ष में अपनी राष्ट्रभाषा में व्यवहार की अनुमति भारत के उच्चतम न्यायालय में न हो, यह भारत का राष्ट्रीय अपमान है। अंग्रेजों की गुलामी का यह कलंक धो डालने के लिए भारतमाता के सपूतों को संघर्ष करना चाहिए। राष्ट्र के प्रति हमारी उदासीनता और उपेक्षा–वृत्ति के कारण ही हमारे देश में अनेक समस्याएं तथा अशान्ति उत्पन्न हो गई है और देशद्रोह सिर उठा रहा है। जबकि देशभक्ति पैरों तले कुचली जा रही है।

राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा के बल पर संसार के अनेक देश उन्नति के शिखर पर पहुंच गये, किन्तु हमारे देश में विदेशी भाषा को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाये रखने के कारण देश की 90 प्रतिशत से अधिक जनता पशुओं की भांति बेजुबान व गूंगी बना दी गई है। उनका राष्ट्र–विकास में कोई योगदान नहीं हो पाता। ऐसा नहीं है कि हिन्दी में न्यायालय में कार्य हो नहीं सकता। जब लखनऊ, पटना, जयपुर के उच्च न्यायालयों में हिन्दी में काम चलता है तो दिल्ली के उच्च न्यायालयों में और उच्चतम न्यायालय में राष्ट्रभाषा में क्यों काम नहीं चलाया जा सकता? वास्तव में भारत की न्यायपालिका को अंग्रेजी की गुलामी में दबाए रखने की हठधर्मी ने राष्ट्रभाषा और न्याय दोनों का गला घोंटा है। राष्ट्र को उन्नत बनाने की इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचाई है। वादी एवं प्रतिवादी अपना–अपना पक्ष विदेशी भाषा में प्रस्तुत नहीं कर पाते। वकील भी प्रायः ठीक–ठीक और प्रभावी रूप में तर्क नहीं दे पाते। फिर भी न जाने अपनी भाषा से परहेज क्यों?

यदि सरकार दिल्ली के उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय में राष्ट्रभाषा पर लगी रोक को तुरन्त नहीं हटाती तो देश के देशभक्त नर–नारियों को संघर्ष करना पड़ेगा। राष्ट्रभाषा पर लगी पाबन्दी को हटाये बिना देश की स्वतन्त्रता अधूरी है। पूर्ण स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे प्राप्त करना हमारा कर्तव्य है।

(25–10–90)

## हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं ईसाइयों को क्यों?

हरिजनों से ईसाई बने लोगों के लिये भी हरिजनों को दी जाने वाली सुविधाओं की मांग को लेकर ईसाई पादरियों ने आन्दोलन चला रखा है। यदि उनकी यह मांग मान ली जाती है तो हरिजन भाइयों को ईसाई बनाने के काम में ईसाई पादरियों को बहुत लाभ होगा। अधिक मात्रा में लोग ईसाई बनने लगेंगे, भारत के ईसाईकरण के सपनों को जल्दी साकार कर पायेंगे।

भारत के संविधान–निर्माताओं ने हिन्दू समाज के हरिजन वर्ग ॅबीमकनसमक ब्ेंजमे को कुछ विशेष सुविधाएं तथा अधिकार कुछ वर्षों के लिये इस कारण दिये थे कि हरिजन वर्ग शताब्दियों से अस्पृश्य माने जाते रहे और हिन्दू समाज में इनको बराबरी का दर्जा नहीं मिलता रहा, परन्तु ईसाई समाज अथवा अन्य किसी गैर हिन्दू समाज में छूआ–छूत नहीं है। कोई भी हरिजन जब ईसाई धर्म स्वीकार कर लेता है तो वह हरिजन नहीं रहता। भारत के संविधान के अनुसार शैड्यूल्ड कास्ट्स में ईसाई वर्ग के लोग सम्मिलित नहीं हैं। ईसाई बन जाने के उपरान्त भी हरिजनों वाली सुविधायें दिये जाने के इस प्रावधान का उद्देश्य ही समाप्त हो जायेगा।

यदि ईसाइयों की मांग मान ली गई तो हरिजन समाज को हानि होगी, क्योंकि उन को मिलने वाली सुविधाओं को ईसाई भी बांट लेंगे। यह भी खतरा है कि हरिजनों को मिलने वाली सुविधाओं का 80 प्रतिशत भाग ईसाइयों के हाथ में चला जाये, जैसा कि आदिवासियों को मिलने वाली सुविधाओं का 80 प्रतिशत से अधिक भाग ईसाई बन चुके लोगों के हाथ में जा रहा है। कारण यह है कि ईसाई वर्ग बहुत संगठित है। उनके बड़े–बड़े कार्यालय हैं जिनमें ऊंचे वेतन प्राप्त बहुत पढ़े–लिखे लोग कार्यरत हैं। किन्तु दूसरे आदिवासी असंगठित और कम शिक्षित हैं इसलिए अपने अधिकारों से वंचित रह जाते हैं। भारत की जनसंख्या में हिन्दू 85 प्रतिशत के लगभग हैं। जो धन आदिवासी तथा हरिजनों के लिये व्यय होता है वह प्रायः हिन्दुओं से ही कर के रूप में प्राप्त होता है। ईसाइयों को भी हरिजनों वाली सुविधाएं देने से तो हिन्दुओं का धन ईसाइयों के हाथ अनायास ही चला जायेगा। भारत के एक करोड़ साठ लाख ईसाइयों में आधे हरिजन वर्ग से धर्मान्तरित किये गये मिजोरम के हैं। आधे प्रायः आदिवासी "बीमकनसमक ज्तपइमे है। आदिवासियों को मिलने वाली सुविधाएं तथा विशेषाधिकार इन ईसाइयों को भी प्राप्त हैं। यदि हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं और विशेष अधिकार इन ईसाइयों को, जो पहले हरिजन थे, दे दिये जाये जो भारत में समस्त ईसाई समाज तो विशेषाधिकार रखने वाला समाज बन जायेगा और हिन्दू समाज अपने ही देश मे द्वितीय श्रेणी का नागरिक बन कर रह जायेगा।

भारत में जो आदिवासी क्षेत्र ईसाई–बहुल हो गये वहां ईसाई राज्य बन गये। जैसे नागालैंड और मिजोरम वास्तव में भारत की धरती पर विदेशी मिशनरियों के अधीन पोप के राज्य हैं। वे अपने आप को अब भारतीय ही नहीं मानते, बल्कि वहां भारत के विरुद्ध एक बड़ी शक्ति खड़ी हो रही है। भारत–विरोधी सशस्त्र संगठन बन गये हैं जो आसाम के अन्य क्षेत्रों में विद्रोह भड़का रहे हैं, बोडो या उल्फा उग्रवादियों को हथियार और प्रशिक्षण देते हैं, उन्हें गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। भारत सरकार द्वारा इन दोनों राज्यों को अन्य राज्यों की अपेक्षा बहुत अधिक धनराशि दी जाती रही। इन दोनों राज्यों को कश्मीर की भान्ति, बल्कि और भी अधिक, विशेषाधिकार प्राप्त हैं। ये सारे अधिकार, सुविधाएं तथा धन भारत–विरोधी गतिविधियों में ही लग रहे हैं जो कि बन्द होने चाहियें। भारत में पहले ही ईसाई जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। यदि यह प्रक्रिया अधिक तेज हो गयी तो हिन्दू समाज सर्वनाश की ओर ही अग्रसर होगा। अतः हरिजनों को मिलने वाली सुविधाएं ईसाइयों को नहीं मिलनी चाहियें, क्योंकिः–

1. संविधान–निर्माताओं ने सोच समझकर केवल हिन्दू समाज के ही पिछड़े वर्ग एस.सी. को सुविधाएं दीं। ईसाइयों को ये सुविधाएं अवैधानिक हैं, संविधान की भावना के विरुद्ध है।
2. ईसाइयों में अस्पृश्यता नहीं है और ईसाई बनने के उपरान्त कोई भी व्यक्ति हरिजन (एस.सी.) नहीं रहता।
3. हरिजनों को मिलने वाले धन तथा सुविधाओं को ईसाई बांटना चाहते है। इससे हरिजन समाज को हानि होगी। हरिजनों के प्रति अन्याय होगा।
4. ईसाइयों को हरिजनों (एस.सी.) वाली विशेष सुविधाएं और अधिकार प्राप्त हो जाने से ईसाई समाज Privileged Class तथा हिन्दू समाज Unprivileged Class यानी द्वितीय श्रेणी के नागरिक, अपने ही देश भारत में, बन जायेंगे।
5. हिन्दू समाज का धन ईसाइयों की जेब में चला जायेगा।

(30–10–90)

## विदेशी पादरियों का भारत में षड्यन्त्र

अंग्रेजों के राज्य में ईसाई पादरियों ने लाखों भोले–भाले पिछड़े वर्ग के हिन्दुओं को ईसाई बनाया था। अंग्रेजों को भारत पर अपना शासन सुदृढ़ करने के लिए हिन्दुओं का धर्म–परिवर्तन कराना हितकर था। किन्तु भारत स्वतन्त्र होने पर भी भारत सरकार ने ईसाई पादरियों को वैसे ही बनाये रखा। उन्हें पहले जैसी सुविधाएं भी दी गई। इसी कारण धीरे–धीरे ईसाइयों ने असम के

नागा क्षेत्र में नागा जाति के भारतीयों को ईसाई बनाकर भारत–विरोधी बना डाला। जो नागा लोग भारतभक्त थे और अपने को भीम के पुत्र घटोत्कच के वंशज मानते थे, अनेक देवी–देवताओं की पूजा करते थे, वे भारतभक्त नागा ही ईसाई बनने के पश्चात् विदेशी पादरियों द्वारा भड़काये जाने पर भारत के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने लगे। यही स्थिति मिजोरम में भी बन गई।

अब नागालैंड और मिजोरम पूर्ण रूप से ईसाई राज्य बन चुके हैं। बल्कि धर्म के ऐसे सुदृढ़ दुर्ग बन गए हैं कि वहाँ से असम के कई क्षेत्रों में अलगाववाद भड़काने के लिए षड़यन्त्र चलाए जाते हैं। वास्तिविक स्थिति यह है कि नागालैंड और मिजोरम कहने मात्र के लिए भारतीय राज्य हैं। वास्तव में तो दोनों यूरोपीय ईसार्द चर्च का ही साम्राज्य है, जिसके पीछे यूरोप की बड़ी शक्तियां कार्य कर रही हैं। इन शक्तियों के प्रभाव का लाभ उठाकर बंगलादेश और बर्मा के क्षेत्रों के ईसाई प्रेरित उग्रवादी संगठनों को प्रशिक्षण एवं हथियार प्राप्त कराये जाते हैं। मणिपुर, त्रिपुरा के विद्रोही गुटों को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित किया जाता है, शस्त्रों का प्रशिक्षण दिलवाया जाता है। इन्हीं केन्द्रों से बोड़ो उग्रवादियों को और उल्फा विद्रोहियों को भी प्रशिक्षण आदि दिया जाता है।

नागालैण्ड में एक शक्तिशाली सैनिक संगठन बनाया जा चुका है, जिसका नाम है ''नेशनल सोशलिस्ट कौंसिल आफ नागालैण्ड'' (National Socialist Council of Nagaland) वास्तव में यह चर्च की सेना है जिसे अत्याधुनिक शस्त्रास्त्रों से लैस किया गया है। पिछले वर्ष इस सैनिक संगठन ने असम की सीमा में घुसकर एक हिन्दू ग्राम पर आक्रमण किया था। असम के उल्फा विद्रोहियों को शस्त्र इसी संगठन ने दिए।

यह संस्था भारत भर में विद्रोह की आग फैला रही है। झारखण्ड के 21 जिलों के बहुत बड़े क्षेत्र को भी ईसाई राज्य बनाने के प्रयत्न पिछले 40 वर्षों से चल रहे हैं।

दुर्भाग्य से भारत की केन्द्र–सरकार ने विदेशी पादरियों द्वारा किए जा रहे इन भारत–विरोधी कार्यों को समाप्त करने का कभी प्रयास नहीं किया। अतः यह बहुत आवश्यक है कि हिन्दू समाज के हजारों युवक–युवतियां अपने देश हिन्दुस्थान और हिन्दू समाज की रक्षा के लिए अपना जीवन लगायें।

(2–11–90)

# अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी बन्द करो

अनेकानेक दंगों में अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी की जो भूमिका रही, उसे देखते हुए जनता अब सरकार से मांग करने लगी है कि देश में चल रहे इस पाकिस्तानी विषवृक्ष को और अधिक बनाए रखना देश की अखण्डता के लिए गम्भीर खतरा पैदा कर देगा। भारत का विभाजन कर पाकिस्तान बनवाने में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का पूरा–पूरा योगदान रहा। इस विश्वविद्यालय ने भारत–विरोधी और हिन्दू–विरोधी भावनाओं को मुस्लिम समाज में पनपाया, पाकिस्तानी आन्दोलन के लिए कार्यकर्ता और नेता दिए।

पाकिस्तान बनने के उपरान्त भी इस यूनिवर्सिटी के छात्र पाकिस्तानी फौज में भरती किए जाते रहे हैं। सन् 1948 में गुप्तचर विभाग ने ऐसे पाकिस्तानी विज्ञापन तथा परिपत्र प्राप्त किए जिनमें अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के छात्रों को पाकिस्तान की सेना में भरती के लिए आमन्त्रित किया गया था। इस घटना का उल्लेख लौहपुरुष सरदार पटेल के प्रकाशित पत्रों में भी मिलता है। उस समय सरदार पटेल ने उ.प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. गोविन्द बल्लभ पंत को यह निर्देश भी दिया था कि अलीगढ़ यूनिवर्सिटी को बन्द कर दिया जाए, किन्तु मौलाना आजाद तथा पं. नेहरू के प्रभाव से इसे बचा लिया गया। अब तो यह यूनिवर्सिटी मानों पाकपरस्त तत्वों का एक किला ही बन गई है। जहां से मजहबी उन्माद से भरे छात्रों के सशस्त्र गैंग निकल कर आसपास के मोहल्लों और ग्रामों पर आक्रमण करते हैं। प्रशासन के आग्रह करने पर भी वहां के कुलपति ने इन छात्रों को होस्टल

खाली करके चले जाने के लिए नहीं कहा, बल्कि छात्रों के आक्रमणों को रोकने के लिए की जाने वाली पुलिस कार्यवाही में ही बाधा डाली।

इस विश्वविद्यालय के अस्पताल में हिन्दू संप्रदाय के रोगियों तथा उनकी देख–रेख के लिए आए हुए लोगों पर जो बीती, वह भी, किसी से छुपी हुई बात नहीं है। फिर भी ऐसी साम्प्रदायिक संस्था को भारत सरकार अपार धन दे रही है। भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों से कहीं अधिक पैसा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को दिया जा रहा है, जिसके कारण हिन्दू समाज में अत्यधिक बेचैनी है। क्योंकि प्रायः हिन्दुओं से टैक्स के रूप में लिए हुए धन को ही हिन्दू समाज के हत्यारों को दिया जा रहा है। अतः हिन्दू चिल्लाने लगे हैं कि उनका अपना धन उनके ही विनाश के लिए प्रयुक्त क्यों हो? यह विचित्र सैक्यूलरवाद है। अब हिन्दू इस सैक्यूलरवाद से तंग आ गये हैं।

(14–1–91)

## हमारी भावानात्मक माता संस्कृत

संस्कृत भारतीय संस्कृति की आत्मा है, समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। आसेतु–हिमाचल सभी भारतीय अपने इस सुविशाल वाङ्मय पर गौरव अनुभव करते हैं, और संस्कृत वाङ्मय के कारण विश्वभर में भारतमां को आदर मिलता रहा है। युगों से वास्तव में भारतमां की वाणी संस्कृत ही रही है, इसी कारण संस्कृत को भारती एवं सुरभारती नामों से पुकारा जाता रहा है। जैसे संस्कृत के प्राचीन शब्दकोश ''अमरमोश'' में दिया हैः ''ब्राह्मी तु भारती भाषा्, गीर्वाग् वाणी, सरस्वती'' अर्थात संस्कृत को ही आदर से ब्राह्मी, भारती भाषा, सुरभारती, गीर्वाग् वाणी (अर्थात देववाणी) और सरस्वती इन नामों से पुकारा जाता रहा है।

प्राचीन युग में भारतीय व्यापारी, विद्वान, राजकुमार और संन्यासी जहां भी गए, जिस किसी देश में पहुंचे, वहां–वहां संस्कृत भी पहुंची। इतना ही नहीं, उन–उन देशों में संस्कृत (सुभारती) के कारण लोगों में सभ्यता, संस्कृति, कला, साहित्य तथा उदात्त धार्मिक एवं दार्शनिक धाराओं का अभ्युदय हुआ। इसी कारण तो आज तक भी चीन, जापान, कोरिया, थाईलैंड, कम्बुज, इंडोनेशिया, तिब्बत, मंगोलिया आदि सभी देशों में संस्कृत को पूज्य स्थान प्राप्त है। इन सभी देशों में साहित्य का आधार ही संस्कृत है।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक सम्पूर्ण भारत में युगों से संस्कृत के संस्कार प्राप्त करते हुए हमारे पुरखों ने जो संस्कृति उपजाई, उसी संस्कृति ने हमारे मन–मस्तिष्क को बनाया है। उसी संस्कृति की उपज हम सब भारतवासी हैं, उसी संस्कृति में ही हमारी भारतीयता निहित है।

अतः संस्कृत हमारी माता है और हम संस्कृत के पुत्र हैं। ''माता निर्माता भवति''–यही तो माता की परिभाषा है। इसी कारण बड़े–बड़े विचारकों एवं विद्वानों ने संस्कृत को भारत की राष्ट्रभाषा और मातृभाषा माना। किन्तु पिछले 50वर्षों में संस्कृत की जो उपेक्षा संस्कृत के अपने पुत्रों के हाथों हुई, उससे जहां संस्कृत की हानि हुई, वहीं भारत में भारतीयता की भावना को भी क्षति पहुंची। राष्ट्रीय सम्मान क्षीण हुआ, भारत में राष्ट्रीय एकता को आघात पहुंचा, चारों ओर अशांति, उपद्रव और भारत विरोधी आन्दोलन जन्म लेने लगे।

करोड़ों भारतवासी संस्कृत के लिए हृदय से आदर और ममत्व का भाव रखते हैं, किन्तु दुर्भाग्यवश यह सत्य सरकारी आंकड़ों में प्रकट नहीं हो पाता। भारत में संस्कृत को महत्व मिले, इसके लिए आवश्यक है कि सरकार के समक्ष आंकड़ों में भी संस्कृतवालों की संख्या सामने आये। कुछ दिनों में जनगणना के समय हमें अपनी मातृभाषा लिखानी होगी। क्या अच्छा हो यदि हम अपनी भावनात्मक माता संस्कृत को अपनी मातृभाषा लिखाएं और राष्ट्रीय एकता में योग प्रदान करें।

(17–1–91)

## केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद की संस्कृतघाती नीतियों पर रोक लगाएं

दिल्ली में स्थित ''केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद'' (सी.बी.एस.ई.) लगातार स्कूलों के पाठ्यक्रम में संस्कृत विषय को निकालने का प्रयत्न कर रही हैं। वैसे भी मौखिक रूप से वे संस्कृत के विरुद्ध दुष्प्रचार करते रहे हैं।

पिछले वर्ष इस ने माध्यमिक स्तर पर त्रिाााषा सूत्र में से संस्कृत को निकालने के लिए संस्कृत विषय को पाठ्यक्रम से हटा दिया था। हिन्दी या दूसरी प्रान्तीय भाषाओं के अन्तर्गत 20 अंकों की संस्कृत कोई पढ़ना चाहे तो पढ़ सकता था। इस संस्कृत–विरोधी आदेश को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गई और उच्चतम न्यायालय से स्थगन आदेश प्राप्त किया गया। फिर भी पिछले आदेश के स्थगन की सूचना किसी स्कूल को नहीं भिजवाई गई।

हाल ही में जारी नये पाठ्यक्रम के निर्देश के तहत वर्ष 90–91 तथा वर्ष 92–93 सत्र के लिए 11–12वीं कक्षाओं के निर्धारित इलैक्टिव विषयों से संस्कृत को बाहर निकाल फैंका है। जिसकी आदेश संख्या सी.बी.एस.ई. 7/64 पत्र संख्या 9/1990–91, दिनांक 26–11–90 है।

संस्कृत की पढ़ाई को हानि पहुंचाने के लिए एक और उपाय यह किया गया है कि जबकि वार्षिक परीक्षा 3 मास दूर है तो 12वीं कक्षा के लिए निर्धारित संस्कृत पाठ्य पुस्तक को अचानक बन्द करके किसी और पुस्तक को निर्धारित कर दिया है जो कि बाजार में ठीक से उपलब्ध नहीं है। केन्द्रीय सरकार तथा सभी देशभक्त जनता से अनुरोध है कि देशहित के प्रतिकूल इन कार्यकलापों पर रोक लगाएं। (12–3–91)

## राष्ट्रभाषा ही उत्कट राष्ट्रभक्ति का संबल

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रभाषा उस देश की भावनात्मक एकता की सबसे बड़ी कड़ी हुआ करती है। अपनी राष्ट्रभाषा का स्वाभिमान उस देश में राष्ट्रोत्थान की चेतना का संचार करता है, देश में राष्ट्रभक्ति की लहर को जन्म देता है। स्वयं ब्रिटेन में विदेशी आधिपत्य एवं प्रभाव के कारण अंग्रेजी का राष्ट्रीय जीवन में कोई स्थान नहीं था। लेटिन भाषा और फ्रेंच का ही बोलबाला था। किन्तु शेक्सपीयर और जॉनसन जैसे देशभक्त लेखकों के कारण, जिन्होंने ब्रिटेन की जनता की भाषा अंग्रेजी को साहित्य और शासकीय कामकाज में लोकप्रिय बनाने के आन्दोलन का सूत्रपात किया, दरिद्र समझी जाने वाली अंग्रेजी भाषा को राजकीय कामकाज में स्थान मिलने लगा। न्यायालयों में अंग्रेजी के व्यवहार की अनुमति मिली। राष्ट्रभाषा के उदय से राष्ट्रभक्ति का जो उद्रेक हुआ उससे इंग्लैंड ऊँचे राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा हो गया।

छोटा सा देश इज्राईल आज मध्य एशिया में जो एक महाशक्ति के रूप में मस्तक उन्नत किये खड़ा है उसकी सफलता का मूलभूत रहस्य भी उनकी राष्ट्रभाषा हिब्रू के लिए इज्राईल के लोगों का उत्कट प्रेम ही हैं। 1948 में जब इज्राईल को स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता मिली तो वहाँ बहुत कम लोग राष्ट्रभाषा का ज्ञान रखते थे, क्योंकि अनेक अलग–अलग भाषा–भाषी देशों से आकर यहूदी लोग इज्राईल में बसे थे। हिब्रू को तो मृत भाषा ही माना जाता था। अंग्रेजी, जर्मन, पोलिश, फ्रेंच भाषा–भाषियों का बहुमत था तो भी इज्राईल के देशभक्त नेताओं ने दृढ़ संकल्प लिया कि समूचे राष्ट्र को यहूदियों की प्राचीन भाषा हिब्रू का ज्ञान करायेंगे। केवल हिब्रू में ही राजकीय कामकाज चलाने की प्रतिज्ञा की। यहां तक कि सेना में भी हिब्रू पढ़ाने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। राष्ट्रभाषा के प्रति अगाध प्रेम और श्रद्धा, उत्कट राष्ट्रभक्ति के रूप में प्रस्फुटित हुई। संसार ने देखा कि छोटे से नवोदित राष्ट्र इज्राईल ने अपने से सौ गुना जनसंख्या वाले अरब देशों के भरपूर आक्रमणों से अपनी मातृभूमि की रक्षा की।

किन्तु भारत है कि अपनी सम्पन्न राष्ट्रभाषा हिन्दी को, जिसके पीछे संसार की सर्वोत्कृष्ट भाषा संस्कृत की महान धरोहर है, निरादृत और पददलित करने पर तुला हुआ है। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया था, किन्तु भारत की केन्द्रीय सरकार ने हिन्दी को कभी राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त नहीं होने दिया। सरकारी कामकाज में केवल अंग्रेजी बनाए रखने की जिद्द बनी रही। कई उच्च न्यायालयों तथा भारत के उच्च्तम न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग निषिद्ध है। सरकार द्वारा अंग्रेजी को ही सम्मान दिया जाता है। दूरदर्शन द्वारा अंग्रेजी का ही प्रचार होता है।

राष्ट्रभाषा का एक संस्कार होता है। जहां राष्ट्रभाषा से राष्ट्रीयता के संस्कार मिलते हैं वहां विदेशी भाषा से राष्ट्रीयता के संस्कार नष्ट होते हैं। यही कारण है कि एक अरब से भी अधिक की जनसंख्या वाला भारत जैसा प्राचीन राष्ट्र, जिसने अनेक देशों को सभ्यता और संस्कृति प्रदान की, उन्हें ज्ञान और धर्म के प्रकाश से आलोकित किया, जो देश कभी विश्वगुरु कहलाता था, आज पिछड़े राष्ट्र की श्रेणी में खड़ा अपमानित हो रहा है। जब तक देश में स्वाभिमान को दुत्कारा जायेगा, राष्ट्रभाषा का निरादर होगा, देश उन्नति नहीं कर सकता। संसार के छोटे–छोटे देश भी अपनी राष्ट्रभाषा का आदर करते हैं, किन्तु एक भारत ही है जहां राष्ट्रभाषा के द्वेषी कुछ नेताओं का वर्चस्व सरकार पर अभी तक बना हुआ है, जो अब समाप्त किया जाना चाहिए। हम राष्ट्रभाषा अपनाएं तो एशिया के जिन देशों में संस्कृत शब्दावली प्रचलित है, उनकी भाषाओं को बल मिलेगा भारतीय शब्दावली का प्रचलन और बढ़ेगा और हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का पद स्वतः प्राप्त करेगी।

(20–3–91)

## कौन सुनेगा करुण पुकार?

भारत में लगातार देशद्रोही बढ़ते जा रहे हैं। चालीस के दशक में मुस्लिम लीग ने भारत के मुसलमानों के लिए अलग पाकिस्तान की मांग खड़ी की। सन् 1946 में जिन्ना साहब ने मुस्लिम समाज से सीधी कार्यवाही करने और शस्त्र उठाने का आह्वान किया, अर्थात् जहां हो सके हिन्दुओं पर आक्रमण करने की

प्रेरणा दी, जिसके कारण भारत भर में दंगे भड़क उठे। बंगाल में मुस्लिम लीग का शासन था। वहां कलकत्ता और नोआखली आदि क्षेत्रों में भीषण नर–संहार किया गया। पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में और रावलपिंडी तथा हरिपुर हजारा के क्षेत्रों में भी हिन्दुओं का सफाया किया गया। सन् 1947 में मुसलमानों को देश का एक तिहाई भू–भाग देकर समझा गया कि साम्प्रदायिक दंगों का कारण अब खत्म हो गया। अब शेष बचे भारत में सुख–शान्ति रहेगी, परन्तु क्या पता था कि असम के नागा, मिजो तथा दूसरे पहाड़ी क्षेत्रों में विदेशी पादरी भोली–भाली जनता में ईसाई प्रचार द्वारा भारत विरोधी भावनाएं भर रहे हैं। वहां विदेशी पादरी तो प्रचार कर सकते थे, किन्तु भारतीय हिन्दू संन्यासियों एवं धर्म–प्रचारकों को उन क्षेत्रों में जाने तक की अनुमति नहीं थी। परिणामतः उन क्षेत्रों में विद्रोह के बीज बोए जाते रहे और सरकार उन पादरियों की सहायता करती रही। उनके द्वारा लगाए विष–वृक्ष की भी रक्षा करती रही। जिसका परिणाम भारत की ही धरती पर भारत–विरोध के राज्य बनने में निकला। अब हालत यहां तक हो गई कि नागालैंड का राज्यपाल भी एक पादरी एम. एम. थॉमस को ही बना दिया गया ताकि उनकी योजनाओं को बल मिल सके। इसी कारण नागालैंड की भारत–विरोधी शक्तियां कहीं बोडो विद्रोह तो कहीं उल्फा विद्रोह भड़का रही हैं। इन विद्रोहियों को बड़े–बड़े हथियार दिये जा रहे हैं और सैनिक प्रशिक्षण भी। वे पाकिस्तान और बंगलादेश की सहायता भी भरपूर ले रहे हैं। भारत को ध्वस्त करने का यह कार्य चल रहा है, किन्तु सारा देश सोया पड़ा है, कहीं कोई आवाज नहीं। देश के ही धन और शक्ति का शत्रा उपयोग कर रहे हैं।

दूसरी ओर पाकिस्तान ले लेने के उपरान्त भी मुस्लिमलीगी विचारधारा अलग–अलग नामों से भारत के अनेक क्षेत्रों में नये–नये पाकिस्तानी अड्डे बनाने में सफल हो रही है। कश्मीर घाटी से हिन्दुओं को बाहर खदेड़ दिया गया। आसाम व पश्चिम बंगाल के कई जिलों में भी कश्मीर वाली स्थिति बनती जा रही है। केरल में वर्षों से मुस्लिम लीग शासन में भागीदार बनी है। पाकिस्तानी लॉबी और चर्च, भारत में अलगाववादी आन्दोलन को हवा दे रहे हैं। पंजाब लहूलुहान हो गया, आसाम खण्ड–खण्ड हो रहा है, भारत विघटन की ओर जा रहा है क्योंकि भारत मां के पुत्र–भारतीय धर्म और संस्कृति के पुजारी–हिन्दू सोये पड़े हैं। अपनी पुण्यभूमि भारतमाता की करुण पुकार कौन सुनेगा?

(22–3–91)

## रामभक्तिः परम योजक तत्त्व

आज भारत में चारों ओर अशान्ति, भ्रष्टाचार और आतंकवाद का बोलबाला है। इसीलिए झारखण्ड, बोडोलैंड जैसे कितने ही अलगाववादी आन्दोलन देश के कोने–कोने में सिर उठा रहे हैं। राष्ट्रभक्ति कम होती जा रही है और देश को तोड़ने की विदेशी योजनाएं बल पकड़ रही हैं। ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि भारत–भक्ति का प्रचार हो, भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा, भारत के महापुरूषों के प्रति आस्था, भारत के प्राचीन वैभव के प्रति आत्मीयता और भारत की भाषा एवं साहित्य से लगाव पैदा किया जाये। भारत के उन ऋषियों एवं आचार्यों के प्रति सम्मान बढ़े, जिनके द्वारा देश–देशान्तरों तक भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ और भारत विश्वगुरु कहलाया।

रामजन्मभूमि आन्दोलन इस दिशा में ठोस मोड़ सिद्ध हुआ है। क्योंकि भगवान राम भारतीय संस्कृति के आधार हैं। रामभक्ति बढ़ने से स्वतः ही भारत–भक्ति ही हृदय में समा जाती है। भारत के बाहर भी इण्डोनेशिया, बाली द्वीप, थाईलैंड, कम्बोडिया, जहां–जहां भी रामायण का प्रचार है वहां के लोगों में भारत के प्रति श्रद्धा व प्रेम है। यही दशा मॉरिशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम, फिजी एवं गुआना जैसे देशों में पाई जाती है। इन देशों में 150 वर्ष पहले जो भारतीय जाकर बस गये थे उनमें जो रामभक्त थे वे ही भारत देश के प्रति निष्ठा एवं आत्मीयता रखते हैं, किन्तु जिनके हृदय से रामभक्ति निकल गयी वे भारत के प्रति श्रद्धा का भाव नहीं रखते बल्कि वे तो पाकिस्तान, लीबिया अथवा अन्य देशों की ओर देखते हैं।

भारत के भीतर भी विदेशी पादरियों ने जिन नागा, मिजो वर्ग के लोगों में भारतीय संस्कृति के प्रति आदर, श्रद्धा निकाल दी वे चाहे फिजो के अनुयायी हों या ललडेंगा के, सभी भारत के प्रति विद्रोह करके, इंग्लैंड, अमेरिका की ओर देखते हैं। उन्हीं क्षेत्रों के जिन नगा, चकमा, खासी आदि लोगों में विदेशी पादरी प्रचार करने में सफल नहीं हुए वे अभी तक भारतीय एकता–अखण्डता की ही कामना करते हैं। यही स्थिति बिहार, मध्यप्रदेश के वनवासी क्षेत्रों की है जहां रामभक्त जनता भारत की उन्नति चाहती है, किन्तु भारतीय संस्कृति से विमुख हो चुके लोग प्रायः विदेशी षडयन्त्रों के अलगाववादी और आतंकवादी आन्दोलनों में सहायक हो रहे हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम ने वनवासी क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति और रामभक्ति के प्रचार से राष्ट्रवाद की बड़ी सेवा की है, नहीं तो अब तक इन क्षेत्रों में भी पंजाब और कश्मीर वाली स्थिति बनी होती। वनवासी कल्याण आश्रम को चाहिए कि वे शान्ति और प्रेम से भारत भर के करोड़ों लोगों तक अपना भारत–भक्ति का संदेश फैलाते रहें ताकि क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों के लिये देश के हितों को भी बेच देने की होड़ खत्म हो जाए और विशुद्ध राष्ट्रवाद का पावन प्रवाह इस पवित्र भारतवर्ष की धरा पर प्रवाहित होकर जन–जन के हृदय को आप्लावित कर दे। हिन्दू संस्कृति ही भारत–भक्ति सिखाती है। यह भारत का प्राण है, भारत की आत्मा है।

(23–3–91)

## आंखें खोलो

भारत भर में हिन्दू 82 प्रतिशत होते हुए भी सभी मोर्चों पर मार खा रहे हैं। कश्मीर भारत–विरोधी तत्वों के अधिकार में आता रहा। वहां भारत–भक्तों को कुत्तों की तरह मार–मारकर बाहर निकाल दिया गया। शेष बचे हिन्दू भी पलायन की योजना ही बना रहे हैं क्योंकि–सारा देश सोया पड़ा है, नेतृत्व अंधा है, निष्क्रिय है, समस्या को ठीक रीति से समझ नहीं रहा। परिणामस्वरूप पाकिस्तानी योजना निरन्तर सफल हो रही है। भारत हार रहा है।

भारत की संसद में 90 प्रतिशत से अधिक हिन्दू हैं, परन्तु वे भी कुछ नहीं कर रहे क्योंकि–भारत भर में कश्मीर बचाने के लिए कोई चीख–पुकार नहीं, कोई आवाज नहीं। सारा समाज कुम्भकर्ण की नींद सो रहा है। कोई राजनैतिक दल भी पूरी तरह इन प्रश्नों को नहीं उठा रहा। नहीं तो, क्या कारण है कि इतना विशाल सैनिक बल होते हुए भी उन्हें पाकिस्तानी हथियारों से खून की होली खेलने दी जाती है।

जब तक इन क्षेत्रों में ऐसे वर्ग को नहीं बसाया जाता जो सदा भारतमाता की जय के नारे ही लगाते हैं, जो कभी पाकिस्तान के लिए नहीं सोचते, तब तक कश्मीर को नहीं बचाया जा सकता। किन्तु यहां तो उलटा ही कार्य हो रहा है। पाकिस्तानी हथियारों से लैस तत्व भारत–भक्त हिन्दू जनता को बाहर खदेड़ देते हैं, किन्तु सरकार इन खदेड़े गये, भारत–भक्तों की सुध तक नहीं लेती, बल्कि पाक–परस्त तत्वों से समझौता करती है, उनको प्रसन्न करने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करती है, उन्हें नौकरियां दी जाती हैं, एवं एक–एक लाख के ऋण तथा दस–पन्द्रह हजार के अनुदान भी। यह कैसी राष्ट्ररक्षा है? कैसी सरकार है? समय आ गया है कि हर भारत–भक्त आंखें खोले और भारतमां की इस विपत्ति के समय अपना कर्तव्य पहचाने। नहीं, तो भारत को सर्वनाश से नहीं बचाया जा सकता।

(25–3–91)

## भारतीय विदेश नीति की दिशा कैसी हो?

विदेश नीति का उद्देश्य राष्ट्र की आर्थिक शक्ति को बढ़ाना और सामरिक शक्ति को दृढ़ करना होता है। अनेक देशों से मैत्री–सम्बन्ध स्थापित करके वैश्विक घटनाक्रम को अपने राष्ट्र की दृष्टि से प्रभावित करते हुए अपना प्रभाव–क्षेत्र बढ़ाना और शत्रु राष्ट्रों के प्रभाव को कम करना तथा उन्हें मित्रहीन करना होता है। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता–प्राप्ति के उपरान्त भारत की शासक बनी कांग्रेस ने ऐसी विदेश नीति अपनाई जिससे भारत का अहित अधिक हुआ। भारत की विदेश नीति अरब मुस्लिम देशों के हितों के पोषण में ही लगी रही जिससे भारत के अन्दर और बाहर पान–इस्लामावाद को बढ़ावा मिला। एशिया के वे देश, जो भारतीय संस्कृति का प्राधान्य होने से भारत के सहज मित्र थे, भारत के प्रति श्रद्धा–भाव रखते थे, भारत सरकार द्वारा पूर्ण उपेक्षित रहे, धर्मनिरपेक्षता के मोह में कांग्रेस सरकार ने इन देशों के साथ सांस्कृतिक आधार पर सहयोग करना कभी उचित नहीं समझा। ये देश हैं थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस, इन्डोनेशिया, बर्मा, श्रीलंका, जापान, कोरिया, चीन और मंगोलिया। हिन्दूप्रधान देश की विदेश नीति ऐसी होनी चाहिये जिससे भारत के सांस्कृतिक बंधु देशों से भारत के प्रगाढ़ संबंध बढ़ें। भारत का व्यापार तथा प्रौद्योगिकी का आदान–प्रदान इन देशों से बढ़े ताकि भारत तथा ऊपर लिखे देश आर्थिक शक्ति बढ़ाते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी परस्पर सहयोग से विश्व–पटल पर अपना वर्चस्व बढ़ा सकें। जैसे मुस्लिम देशों की अपनी शक्ति है वैसे ही भारतीय संस्कृति को मानने वालों की भी एक बड़ी शक्ति बननी चाहिये।

भारत से बाहर अनेक देशों में भारतीय मूल के बन्धु वर्षों से रहे हैं। उन देशों में रहते हुए पर्याप्त उन्नति की है। कुछ देशों में तो वह बहुसंख्या में हैं–मॉरिशस, गुआना, सूरिनाम, त्रिनिदाद, कीनिया जैसे देशों में भी पर्याप्त संख्या में भारतीय और फिजी हैं किन्तु कांग्रेस सरकार ने सदा इन

प्रवासी भारतीयों की उपेक्षा ही की। सरकार ने यह कभी नहीं समझा कि यदि भारत उनकी सहायता करता तो मॉरिशस के अतिरिक्त भी कुछ देशों में भारतीयों का शासन हो जाता और कुछ देशों में जहां भारतीयों को प्रताड़ित किया गया, उन्हें देश छोड़कर जाना पड़ा वहां भी उन्हें सुरक्षा और सम्मान मिलता। प्रवासी भारतीय भारत की बहुत बड़ी शक्ति बन सकते हैं। अतः भारत को इस दिशा में सकारात्मक पग उठाना चाहिये।

हमारी विदेश नीति की एक मांग यह भी हैं कि भारत में मुस्लिम आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिये जो पेट्रो डालर भारत में आते हैं और जो देश के क्षेत्र विदेशी पादरियों के प्रचार के द्वारा शत्रुता के गढ़ बन गये हैं नागालैण्ड, मिजोरम आदि क्षेत्र बढ़ते जा रहे हैं, भारतीय कूटनीति ऐसे भारतविरोधी प्रयासों को निरस्त करने में समर्थ हो। यदि भारत सरकार ने ठीक दिशा में कार्य किया होता तो बंगलादेश में लाखों चकमा बन्धुओं की सहायता करके उन्हें सशक्त सैनिक शक्ति के रूप में खड़ा किया जा सकता था। बंगलादेश में रहने वाले करोड़ों हिन्दुओं को भी भारत का कूटनीतिक समर्थन यदि प्राप्त होता तो भारत के लिये बहुत अच्छी परिस्थिति होती तथा उन हिन्दू बन्धुओं की भी रक्षा हो पाती।

(30—4—91)

# ये हैं असली साम्प्रदायिक

भारत की समस्त बीमारियों की रामबाण औषधि राष्ट्रवाद ही है। उत्कट राष्ट्रवाद। इसी से साम्प्रदायिकता रूपी दैत्य को भी ठिकाने लगाया जा सकेगा, दीन—हीन दरिद्र बने भारत को शस्य—श्यामल और सम्पन्न एवं वैभवशाली बनाया जा सकेगा, शक्तिहीन पिछड़े हुए इस देश को संसार की प्रथम शक्ति के रूप में खड़ा किया जा सकेगा, परन्तु आज तो यह दशा है कि भारत के विश्वविद्यालयों की शिक्षा से युवकों में हर भारतीय वस्तु के प्रति घृणा तथा योरोपीय संस्कृति—सभ्यता से प्रेम पैदा होता है। भारतमाता को गुलामी की जंजीरों में जकड़ने वाले अंग्रेजों की भाषा का आदर, किन्तु भारतीय भाषाओं के प्रति अनादर पैदा होता है। जब तक राष्ट्रीय मानचिन्हों के लिए प्रेम और श्रद्धा उत्पन्न नहीं की जाती, तब तक राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता।

राष्ट्रीयता है क्या? भारत के महापुरुषों को, राम को, कृष्ण को यदि कोई पूजा की दृष्टि से देखता है, भारत की नदियों को पवित्र मानता है, गंगा, यमुना, सरयू, कृष्णा, कावेरी के भजन गाता है, भारत के प्राचीनतम साहित्य वेद, उपनिषदों, रामायण, महाभारत के प्रति श्रद्धा रखता है और भारत की महान भाषा संस्कृत को पुण्यभाषा मानता है, तो चाहे कोई इसे हिन्दू साम्प्रदायिकता ही कहे तो भी विशुद्ध राष्ट्रभक्ति तो यही है। भारत से लगाव, भारत के महापुरुषों के प्रति आदर, भारतीय साहित्य से प्रेम, भारतीय भाषा से ममत्व, महाकवि कालिदास की भांति भारत के पर्वतों को देवतुल्य मानना और भारत—भू को अपने अमृत—रस से शस्यश्यामला बनाने वाली नदियों को माता मानना यह हिन्दुत्व है, यही राष्ट्रीयता भी है और राष्ट्रभक्ति भी यही है। वास्तव में राष्ट्रीयत्व को ही हिन्दुत्व कहते हैं। हिन्दुत्व से राष्ट्रीयता पुष्ट होती है। साम्प्रदायिकता तो राष्ट्र के हितों की अवहेलना करके छोटे—मोटे मत—मतान्तरों और समुदायों को आगे बढ़ाने का नाम है।

यदि ईसाई समाज राष्ट्रभाषा के नाम पर अंग्रेजी या पुर्तगाली को वरीयता दे या भारत पर अंग्रेजों के ईसाई राज्य की कामना करे, तो वह साम्प्रदायिकता और भी अधिक घातक होगी। इसी प्रकार भारतीय महापुरुषों राम, कृष्ण, भगवान बुद्ध, शंकराचार्य को न अपना कर अरब या ईरान के महापुरुषों को अपनाना, उत्कृष्ट प्राचीन भारतीय साहित्य से घृणा करना, गंगा जैसी पावन नदियों के प्रति अश्रद्धा व्यक्त करना, भारत की भाषा या लिपि तक को भी अपनी न मानना इसे राष्ट्रीयता कैसे कहा जा सकता हैं? फिर यदि ऐसे लोग भारत की बजाय पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाएं, पाकिस्तानियों के लिए अपनी आंखें बिछाएं और भारत को पुण्यभूमि मानने वालों को साम्प्रदायिक कहकर बदनाम करें तो भारत की एकता के नहीं बल्कि विखण्डन के ही बीज बोते हैं। ऐसे लोगों को प्रसन्न करना ही जो राष्ट्रधर्म मान बैठे हैं, वे सैक्यूलरिज़्म (धर्मनिरपेक्षता) के दावेदार ही भारत में भारत—भक्ति के पुण्य प्रवाह को रोक रहे हैं, साम्प्रदायिकता के विषवृक्ष को

सींच रहे हैं। देश के कुछ समुदायों के लिए अलग कानून तथा आरक्षण की बातें करके उन समूहों में अलगाववाद को बढ़ावा दे रहे हैं, समाज को खण्डित कर रहे हैं, एवं राष्ट्र को कमजोर बना रहे हैं।

(1–5–91)

## कानून सब के लिए एक सा हो

1991 की जनगणना के जो आंकड़े प्रकाशित हुए हैं उनके अनुसार जहां मुस्लिम जनसंख्या मे बढ़ोतरी की दर 36 प्रतिशत चल रही है वहां हिन्दू जनसंख्या में बढ़ोतरी केवल 22 प्रतिशत ही है। पाकिस्तान बनने के पश्चात् भारत में मुस्लिम जनसंख्या का प्रतिशत लगातार बढ़ता जा रहा है और उसके अनुसार ही राजनीति एवं प्रशासन में मुस्लिम प्रभाव परिलक्षित होता है। हिन्दू अभी यह भूले नहीं हैं कि जनसंख्या कम हो जाने के कारण ही सिन्ध, बिलोचिस्तान और पश्चिम पंजाब में पाकिस्तान के नाम से मुस्लिम राज्य स्थापित हैं और लाखों हिन्दुओं को लुट–पिटकर वहां से अपना घरबार छोड़कर भागना पड़ा। यही स्थिति पूर्वी बंगाल के हिन्दुओं की भी हुई, किन्तु 1947 में भारत के मुसलमानों के लिए होमलैंड के रूप में पाकिस्तान बन जाने के पश्चात् भी शेष बचे भारत में मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि की जो प्रक्रिया चल रही है उसके कारण हिन्दू समाज में असंतोष और रोष बढ़ता जा रहा है, क्योंकि जहां एक ओर सरकार परिवार नियोजन का धुआंधर प्रचार करके भारत की जनसंख्या कम करने का प्रयत्न कर रही है वहीं दूसरी ओर यह साफ दिखाई देता है कि सरकार मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि के लिए प्रयत्नशील है।

मुस्लिम समाज में परिवार नियोजन का प्रचार तो क्या करना था उल्टा मुस्लिम जनसंख्या को अत्यधिक बढ़ाने वाले कानून अर्थात मुसलमानों को चार शादियां करने की अनुमति सरकार ने दे डाली। इतना ही नहीं, बंगलादेश और पाकिस्तान से घुसपैठ करके लाखों मुसलमान आसाम और बंगाल में बस चुके हैं। भारत की राजधानी दिल्ली में तीन लाख से ऊपर बंगलादेशी मुसलमानों को दण्ड देने की बजाय सरकार ने उनके रहने के लिए घर और अन्य सुविधाएं दी हैं। बंगलादेशी घुसपैठियों को आसाम से निकालने के लिए जो एक बहुत बड़ा आन्दोलन चला था उसे भारत सरकार ने बुरी तरह से कुचल दिया और भविष्य में होने वाली घुसपैठ के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। इस स्थिति को देखते हुए यह लगता है कि परिवार–नियोजन का प्रचार तो भारत में केवल हिन्दुओं की जनसंख्या को कम करने का उपाय है। अरब देशों की विपुल धनराशि के द्वारा सम्पूर्ण भारत में जगह–जगह मदरसे तथा दूसरे ऐसे केन्द्र खोले गये हैं जहां हिन्दुओं के सामूहिक धर्मपरिवर्तन के लिए प्रचारक तैयार किये जाते हैं। मीनाक्षीपुरम् में सामूहिक धर्म–परिवर्तन इसका ही परिणाम था, परन्तु मीनाक्षीपुरम् जैसे सैंकड़ों स्थानों में यह कार्यवाही हो रही है जिसकी ओर से सरकार आंखें मीचे बैठी है। मुस्लिम जनसंख्या लगातार बढ़ने के कारण ही जगह–जगह पाकिस्तानी लॉबी तथा पाकिस्तानी षडयन्त्र पनपने लगे हैं, पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे सुनाई देते हैं। स्थान–स्थान पर दंगे भड़काये जाते हैं। पाकिस्तानी हथियारों के भण्डार उ.प्र., बिहार, केरल तक हजारों स्थानों पर विद्यमान हैं। भारत की सीमा पर जगह–जगह पाकिस्तानी विचारधारा के लोगों के अड्डे बन चुके हैं। राजस्थान में बाड़मेर, गुजरात में कच्छ ऐसे ही ज्वलन्त उदाहरण हैं जहां नशीली वस्तुओं तथा हथियारों की तस्करी खुले रूप में होती हैं। कश्मीर में हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार करके उनको वहां से निकाला जाना भी उसी प्रक्रिया का फल है। यदि अब भी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को खत्म करके सभी भारतवासियों के लिए एक जैसे कानून और एक जैसा व्यवहार नहीं किया गया तो वह दिन दूर नहीं जब भारत में और नये पाकिस्तान बनेंगे।

(2–5–91)

## रोमांचक, अवर्णनीय अत्याचार

गजरौला में ईसाई स्कूल की दो ननों के साथ कथित बलात्कार को लेकर भारत भर के ईसाई समाज ने रोष एवं आक्रोश प्रकट किया। इस घटना को ऐसा रूप दिया गया मानों ईसाई समाज पर भारत में अत्याचार हो रहा है। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री तथा केन्द्र से जार्ज फर्नांडीज़ वहां पहुंचे। सरकार ने अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा का वचन दिया तथा ईसाई संस्था को 3 लाख रुपये का अनुदान भी दिया।

किन्तु कश्मीर में अनेक स्थानों पर पाकिस्तानी नारे लगाने वाले एक विशिष्ट समुदाय द्वारा वहां के हिन्दू नर–नारियों पर जो भीषण अत्याचार किये जा रहे हैं, उसके विरुद्ध न सरकार ही बोलती है और न ही भारत भर के हिन्दू समाज ने संपूर्ण भारत में कोई आन्दोलन किया। केन्द्र सरकार तो यह कह कर लोगों को धोखा दे रही है कि कश्मीर की घटनाएं साम्प्रदायिकता से प्रेरित नहीं हैं, अर्थात् मजहबी जनून के कारण कश्मीरी मुसलमान विद्रोह नहीं कर रहे। मुफ्ती मोहम्मद साहेब ने कई बार वक्तव्य दिया कि कश्मीर में हिन्दू–मुसलमान का कोई झगड़ा नहीं है। किन्तु वास्तविकता तो इसके बिल्कुल विपरीत है, जैसे–

26 अप्रैल 90 को ग्राम कंडीखास तहसील हल्दवाड़ा के महंत ब्रजनाथ गोस्वामी का मुख सीकर वृक्ष पर उल्टा लटका कर फांसी दी गई। इस गांव में 3 हिन्दुओं को मार डाला, किन्तु शिकायत करने पर भी पुलिस ने कुछ नहीं किया, बल्कि वहां बसे सभी हिन्दुओं को गांव छोड़कर चले जाने को ही कहा। भरीपुरा क्षेत्र के पं. प्रेमनाथ प्रेमी के सम्मुख ही उनके परिवार की एक महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया, फिर इस महिला को आरे से चीर डाला। इस क्षेत्र की अनेक महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार करके उनके स्तन काटने, आंखें निकालने और गर्म लोहे से शरीर के अंगों को जलाने, हाथ–पैर काट देने की घटनाएं हुईं।

30 अप्रैल 90 को विख्यात लेखक और कवि पं. सर्वानन्द कौल तथा उनके पुत्र की आंखें निकाल ली गईं। फिर जख्मों पर मिर्चें डाली गई। उनके मस्तक को, जहां तिलक लगा था, एक गर्म लोहे के सूए से बींधा गया।

आस्ट्रेलिया में प्राध्यापक श्री बी.एल.गंजू कश्मीर आए तो उन्हें अनेक यातनाएं देकर पानी में डुबो दिया। उनकी पत्नी, जो अध्यापिका है, से कई दिनों तक सामूहिक बलात्कार करके स्तन काट डाले। उनके शरीर पर जलती सिगरेटें लगाकर तड़फाया गया। फिर उन्हें पानी में डुबो दिया। कई लोगों के कान, जिव्हा, बाहु और टांगें काटी गई हैं। ऐसी सैंकड़ों घटनाएं हो रही है, फिर भी संपूर्ण भारत का हिन्दू समाज रोष और आक्रोश प्रकट नहीं कर रहा। यदि हिन्दू समाज हिन्दुओं पर हो रहे इन पाशविक अत्याचारों के विरूद्ध संपूर्ण भारत में आक्रोश प्रकट करने लगे, तो भारत में स्थान–स्थान पर चल रहा आतंकवाद और देशद्रोही षड्यन्त्र सब बन्द हो जाए, देश में शान्ति तथा व्यवस्था हो जाए, और मजहबी जनून की क्रूरता से हिन्दुओं की रक्षा भी हो जाए।

(16–08–91)

### विदेशी ईसाई मिशनरियां

भारत में अंग्रेज व्यापार करने आये, किन्तु भारत की आन्तरिक दुर्बलता का लाभ उठा कर छोटे–छोटे क्षेत्रों में अपना राज्य स्थापित कर लिया। भारत में अनेक छोटे–बड़े राज्य थे। उनकी लड़ाइयों का लाभ उठाकर अपनी सेना खड़ी कर ली। सेना में अफसर अंग्रेज होते थे, सिपाही भारत के ही लोग होते थे। विदेशी ईसाई पादरी भी भारतीयों को ईसाई बनाने के कार्य में जुट गये। इस प्रकार धर्मान्तरित भारतीय ईसाइयों की संख्या बढ़ने लगी। वे किसी भी संघर्ष में अंग्रेजी राज्य के प्रति निष्ठावान् रहते थे। विदेशी पादरियों ने स्कूल खोल कर शिक्षा के क्षेत्र में अपना विस्तार कर लिया। लोग अंग्रेजी पढ़ने लगे। अंग्रेजी राज्य में अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोगों को ही ऊंचे

पद प्राप्त होते थे। इस प्रकार ऊंचे पदों पर केवल अंग्रेजी पढ़े भारतीय ही होते थे। अतः समाज में अंग्रेजी का आदर बहुत बढ़ गया। किन्तु दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता के पश्चात् भी मिशनरी स्कूल बढ़ते गये, अंग्रेजी का प्रसार भी होता गया। तत्कालीन भारत के कुछ नेता अंग्रेजी शिक्षा की उपज थे, वे अंग्रेजीवादी थे, उन्होंने स्वतन्त्र भारत में भी राष्ट्रभाषा को अपना उचित स्थान नहीं लेने दिया। साथ ही विदेशी पादरियों को प्रचार से नहीं रोका गया, जिसके परिणामस्वरूप जहां एक ओर ईसाई राज्य स्थापित करने में वे सफल हो गये दूसरी ओर अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ाने का भी पूरा अवसर उन्हें मिलता गया। हमारी शिक्षा–प्रणाली भी वही गुलामी के समय की अंग्रेजों द्वारा चलाई हुई वैसे की वैसी रही जिस में राष्ट्रभाव जगाने की कमी थी। नागालैंड, मिजोरम तथा मेघालय के तीन ईसाई राज्य उग्रवाद के केन्द्र बन चुके हैं। राष्ट्रभाषा को उचित स्थान कभी मिलेगा इसकी आशा क्षीण हो रही है। राष्ट्र में वर्ग–विद्वेश भड़काया जाता है। 'आर्य लोग बाहर से आये' जैसी अनर्गल बातें सिखाई जाती हैं। यह सब विदेशी मिशनरियों का कमाल है। यदि विदेशी मिशनरियों के राष्ट्र–विरोधी कार्यों पर रोक न लगाई गई और शिक्षा को भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रभक्ति से न जोड़ा गया तो देश को विनाश से नहीं बचाया जा सकता।

(17.01.2001)

अफगानिस्तान में सारे संसार की आँखों के सामने विनाश की लीला हो रही है। बौद्ध मूर्तियों को तोड़ा जा रहा है। तोपों और रॉकेट लाँचरों का प्रयोग कर, विश्व की अनुपम धरोहर को नष्ट कर तालिबान सरकार ने यह सिद्ध कर दिया है कि जेहादी संसार की किसी शक्ति, किसी संगठन के समक्ष झुकने को तैयार नहीं हैं। वे संयुक्त राष्ट्र संघ की अवहेलना करने का दुःसाहस कर सकते हैं, भारत की अनुनय–विनय सुनने का उनके पास समय नहीं। उनकी सेना अपना कार्य पूरे मनोयोग और तत्परता से कर रही है और सारा हिन्दू–बौद्ध संसार, कलाप्रेमी और कलाकार भयाक्रान्त हो अपने दुःख के आवेग को हृदय में समेटे बैठे हैं।

मानव जाति के उत्थान के लिए बनाये गये ये बौद्ध विहार संसार को ष्शान्ति का पाठ पढ़ाते थे, परन्तु नवीं शताब्दी से मुस्लिम आक्रमणों में नष्ट हो कर खण्डहरों में बदल गये थे। कुषाण काल में बने यहाँ के विश्वविद्यालय नष्ट हो चुके थे, हजारों विद्यार्थियों को मार दिया गया था। बौद्ध लोगों ने भयभीत होकर इस्लाम स्वीकार कर लिया था, टूटी–फूटी मूर्तियां यूरोप–अमेरिका आदि के संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रही थीं। बामियान में खड़ी इन भव्य मूर्तियों की अब पूजा नहीं होती थी। ये तो बस शताब्दियों से मूक दर्शक बनी हुई थीं। इतिहासकार विनाश को इतिहास का भाग मान चुके थे। सिल्करूट पर पड़ने वाला गान्धार का क्षेत्र कभी सारे एशिया के लिए विकास का मार्ग बन गया था। रोम, ग्रीस, ईरान, चीन, रूस, मध्य एशिया और भारत के विद्वानों, विचारकों, कलाकारों, शिल्पकारों की संगम–स्थली हो गया था यह क्षेत्र। यहाँ धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, इतिहास, राजनीति, ज्योतिष जैसे ज्ञान के अनेक क्षेत्रों में विभिन्न विषयों पर आदान–प्रदान किया जाता था। यहाँ से एक ऐसी संस्कृति का प्रसार हुआ जो आज भी चीन–जापान आदि की धरोहर है।

तालिबान सरकार ने जो करना था वह कर चुकी, अब देखना यह है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से या यूरोप, अमेरिका, चीन, जापान, सारे बौद्ध देश और भारत उन्हें क्या दण्ड देते हैं। विनाश का यह प्रारम्भ भविष्य की ओर इंगित कर रहा है। यदि इसे न रोका गया तो परिणाम भयंकर होंगे। समय की माँग है कि पाकिस्तान, सऊदी अरब और यू.ए.ई., जो आतंकवादियों का भरण–पोषण करते हैं उन्हें सख्ती से रोका जाये। इन्हीं तीन देशों ने तालिबान सरकार को मान्यता देकर उनका दुःसाहस बढ़ाया था।

(04 / 03 / 2001)

## उग्रवादियों की सुरक्षा

संसार में शायद पहली बार ऐसा हुआ कि किसी गांव की छोटी सी मस्जिद में छुपे दो–तीन उग्रवादी–जिन्होंने 20 घंटे सुरक्षा बलों पर गोलियां चला कर 2 या 3 सैनिकों को गोलियों से भून डाला और जब उनके पास गोली–बारूद समाप्त होने लगा और उन्हें समर्पण करने पर विवश होना पड़ा तो सरकार उन्हें सुरक्षित भाग जाने (सेफ पैसेज) की अनुमति दे और सुरक्षा बलों को आदेश दे दे कि बच कर भागते हुए उग्रवादियों को मारने या पकड़ने का प्रयास न करें। पता नहीं कितने निर्दोष नागरिकों का इन उग्रवादियों ने खून बहाया होगा और कितने भारतीय सैनिक जवानों को मौत के घाट उतारा होगा। यह भी नहीं सोचा गया कि ये उग्रवादी और कितने भारतीयों की जान लेंगे और सैनिकों के खून से होली खेलेंगे।

हमारी सरकार को उग्रवादियों की रक्षा के प्रति जो लगाव है यदि उसका आधा भी भारतीय वीर सैनिकों की उन माताओं के प्रति हो जिनकी गोद सूनी कर दी जाती है, उन वीर ललनाओं के प्रति हो जो भारत की विजय की कामना करती हुईं अपने विजयी पतियों की वापसी की बाट देख रही होती हैं।

एक इज़्राईल है कि यदि उनके सैनिकों को उग्रवादी गोली का निशाना बना दें तो सारा इज़्राईल हिल जाता है। जब तक दस गुणा बदला न ले लें वे चैन से नहीं बैठते। तभी तो आज छोटा सा इज़्राईल मिनी सुपर पावर बन सका है।

सरकार ने राष्ट्ररक्षा के प्रति उदासीनता की सभी सीमाएं पार कर दी हैं। लोग इन्हें देशद्रोही कहने लगे हैं। यदि ऐसा नहीं तो क्यों जम्मू–कश्मीर की सुरक्षा के लिये बनी यूनाईटिड कमांड का प्रमुख डॉ. फारूख अबदुल्ला को बना रखा है जिसकी अनुमति के बिना सुरक्षा बल कोई कार्यवाही नहीं कर सकते। पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ। बल्कि जब–जब कश्मीर में हिंसा बढ़ी तो शांति स्थापित करने के लिये सर्वप्रथम फारूख सरकार को ही अपदस्थ करके राष्ट्रपति राज स्थापित किया जाता रहा था ताकि सुरक्षा बल बिना व्यवधान के कार्यवाही कर सकें। किन्तु इस सरकार ने तो फारूख सरकार को हटाना तो क्या, उन्हें ही सुरक्षा बलों का प्रमुख बना डाला और केन्द्र में फारूख के बेटे उमर को मंत्री बना कर उसकी शक्ति और बढ़ा डाली।

अब सुरक्षित बच निकलने के पश्चात् ये उग्रवादी अपने समाज में हीरो समझे जायेंगे। सैंकड़ों युवकों को भर्ती करके कई गुना उत्साह के साथ आधुनिकतम हथियारों से लैस होकर हमारे सुरक्षा बलों पर आक्रमण करेंगे और भारत–भक्त नागरिकों की हत्याएं करेंगे।

(02/06/2001)

## पाकिस्तान के हाथों में न खेलें

खालिस्तान के स्वयंभू राष्ट्रपति सरदार जगजीत सिंह चौहान 25–30 वर्षों से पाकिस्तान, ब्रिटेन, कनाडा आदि देशों में रहते हुए भारत में उग्रवाद भड़काते रहे। 1971 के भारत–पाक युद्ध के समय पाकिस्तान की शह पर उन्होने सिख सैनिकों को भारत के लिये न लड़ने की सलाह दी थी। उनके द्वारा उग्रवाद भड़काया गया उसमें 50 हजार से अधिक हिन्दू–सिख मारे गये। हजारों अपंग हो गये। हजारों घर उजड़ गये। लाखों को अपार हानि उठानी पड़ी। इस सब का लाभ पाकिस्तान उठाता रहा। वास्तव में पाकिस्तानियों को सिखों से कोई विशेष प्यार या सहानुभूति है, ऐसा नहीं है। वे तो हिन्दू–सिख झगड़े फैलाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। इतिहास साक्षी है कि सिखों पर मुस्लिम शासकों द्वारा ऐसे–ऐसे अत्याचार किये गये कि आज भी उन्हें सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते है। पांचवे गुरु श्री अर्जुन देव महाराज का लाहौर में बलिदान, नवम गुरु श्री तेग बहादुर जी तथा उनके साथियों का दिल्ली में हुआ बलिदान और दशम गुरु श्री गोविन्द सिंह के दो पुत्रों को इस्लाम स्वीकार न करने के कारण दीवारों में चुनवाया जाना ऐसी घटनाएं हैं कि प्रत्येक भारतीय के हृदय में उनका गहरा घाव आज तक विद्यमान है। अहमदशाह अब्दाली द्वारा जो घल्लू घारा किया गया, जिसमें सिक्खों का कत्लेआम करके वंशनाश का कुत्सित प्रयास किया गया,

अमृतसर के श्री हरिमन्दिर साहब तथा दरबार साहब को भूमिसात् करके पवित्र सरोवर को अपवित्र किया जाना और मस्सा रंगड़ द्वारा सिखों को अनेक यातनाएं दिया जाना भारत के इतिहास के काले पन्ने हैं, फिर भी पाकिस्तान बड़ी चालाकी से भारत में फूट के बीज बोकर इसे कमजोर करना चाहता है। खालसा की तलवार अनेक युद्धों में उन्होंने देखी है इसी कारण वे भ्रम फैला कर उस तलवार के वार से बचना चाहते हैं। सरदार जगजीत सिंह चौहान उनके बहकावे में आकर भारत को भी और सिक्खी को भी कमजोर कर रहे हैं। पहले सदा पंजाब एवं सीमाप्रान्त के बहुत से हिन्दू अपने एक पुत्र को सिख बनाया करते थे। सिन्ध के सभी हिन्दू गुरू ग्रन्थ साहेब को ही मानते थे और सिख गुरुओं की पूजा करते थे, किन्तु अस्सी के दशक में पाकिस्तान के षड्यन्त्रों के कारण जो उग्रवाद भड़काया गया, उसके कारण पंजाब, सीमाप्रान्त और सिन्ध के बहुत से हिन्दुओं की भावनाओं में परिवर्तन आया। हिन्दुओं द्वारा अपने लड़कों को सिख बनाने की परम्परा को आघात पहुंचा। राष्ट्र–रक्षा में अद्वितीय वीरता के लिये सिख क्रान्तिकारियों तथा सेना के अधिकारियों ने जो प्रसिद्धि और यश प्राप्त किया था, सारे भारत में जिस के लिये सिखों का आदर रहा, उसे सरदार जगजीत सिंह चौहान खराब न करें। इसी में सब का भला है। पाकिस्तान पर विश्वास करके तो धोखा ही प्राप्त होगा।

(04/07/2001)

## दलाई लामा भारत विरोधी तत्वों के हाथों में न खेलें

5 अगस्त को चैन्नई में कुछ लोगो ने ''अखिल भारतीय रचनात्मक समाज'' नाम से जो सम्मेलन किया उस का एकमात्र उद्देश्य कश्मीर में चल रहे भारतविरोधी अलगाववाद के अभियान के लिये दक्षिण भारत के मुस्लिम तथा कुछ अन्य धर्मनिरपेक्ष कहलाने वाले तत्वों का समर्थन जुटाना था। चैन्नई में हुए इस समारोह में कश्मीर के उग्रवादी गुटों के नेता हुर्रियत कॉन्फ्रैंस के प्रमुख लोगों को विशषे रूप से बुलाया गया था ताकि वे सम्मेलन में लोगों को अपने पक्ष से प्रभावित कर सकें। इस के लिये इन लोगों ने श्री दलाई लामा जी को बुलाकर उनसे भी ऐसा वक्तव्य दिला दिया जो पूर्णरूप से कश्मीरी उग्रवादियों तथा पाकिस्तान के पक्ष में जाता है। उन्होंने जोर दिया कि कश्मीर समस्या के संदर्भ में कश्मीर के लोगों को सम्मिलित किया जाये। यही मांग मुशर्रफ साहब और उग्रवादी गुटों की है। दलाई लामा जी ने कश्मीरियों को स्वशासन का अधिकार देने की बात भी कह डाली और यह भी न सोचा कि 'स्वशासन' से प्राप्त अधिकारों का प्रयोग लद्दाख के बौद्धों और जम्मू प्रान्त के हिन्दुओं के संहार और निष्कासन में ही होगा।

अब यह कोई छुपी हुई बात नहीं है कि श्री दलाई लामा अमेरिका के प्रभाव में हैं। पहले भी वे ऐसे वक्तव्य दे चुके हैं, जो कि अमरीकी नीति के अनुकूल किन्तु भारत के प्रतिकूल थे। यह तो समझ में आता है कि भारत भर के मुस्लिमलीगी, सैयद शहाबुद्दीन के साथी या शाही इमाम के पिछलग्गू कश्मीर के मुस्लिम अलगाववाद के प्रति अनुकूल वायुमण्डल पैदा करने का प्रयास करें। मुस्लिम उग्रवाद के विरूद्ध जनभावना को दुर्बल एवं ढीला करने का यत्न करें, ऐसे कार्यक्रम करें और वक्तव्य दिलवाएं जिनसे भारत सरकार उग्रवाद को दबाने में हतोत्साहित हो जाये, ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम करें जिनमें कोई पाकिस्तानी कवि या कवयित्री आकर लोगों का मन मोह ले और लोग भारत–पाक मैत्री के सपनों में खो जायें और राष्ट्र–रक्षा के लिये शत्रुओं को निपटाने की न सोचें। किन्तु यह समझ में नहीं आता कि पूज्य दलाईलामा, जिन्हें हिन्दू अत्यधिक श्रद्धा से देखते हैं, भारतविरोधी तत्वों के हाथों में खेलें और हिन्दुओं के हितों के विपरीत प्रचार करें।

इतिहास साक्षी है कि सम्पूर्ण मध्य एशिया के देश जो आज इस्लामी देश कहलाते हैं, पहले बौद्ध ही थे। समरकन्द, काशगढ़ संस्कृत शिक्षा के केन्द्र थे, खोतान ओर कूचा से बौद्ध धर्म चीन में फैला, बल्ख और बुखारा में बड़े–बड़े विहार थे जहां के आचार्य विश्वविख्यात हुआ करते थे। सन् 800 के लगभग ताशकन्द अरब आक्रमणों का शिकार हुआ और उसके पश्चात् मज़हबी जनून की विनाशलीला उज्बैक, किर्गिज़, फरगना और अफगानिस्तान की बौद्ध परम्परा को लील गई। लाखों

आचार्य एवं भिक्षु मारे गये। हजारों मंदिर और विहार भूमिसात् कर दिये गये और अब बामियान में बौद्ध मत का गौरव, वहां खड़ी विशाल बौद्ध मूर्तियां भी तोड़कर बौद्ध धर्म को नष्ट कर इस्लाम की विजय का प्रदर्शन किया गया।

पूज्य दलाईलामा जरा सोचें कि चैन्नई में उनके द्वारा दिये गये वक्तव्य से क्या उन्हीं शक्तियों को बल नहीं मिला जिन्होनें बौद्ध धर्म का विध्वंस किया। दलाईलामा भारत के अतिथि हैं। हमारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक आस्थाएं समान ही नहीं, एक ही हैं। दलाईलामा हिन्दुओं की भावनाओं को आहत न करें तथा भारत के राष्ट्रीय हितों को हानि न पहुंचायें।

(06 / 08 / 2001)

## तीन क्षेत्र बनाये जाएं

अमरीका पर हुए इस्लामी आतंकवादी आक्रमण के पश्चात् उग्रवादियों का मनोबल आकाश को छू रहा है। पाकिस्तान में इस्लामी कटट्रपंथी जलूस निकाल रहे हैं। कश्मीर में जेहाद के नारे लग रहे हैं। अफगानी जेहाद की कस्में खा रहे हैं। भारत के अनेक भागों में सिमी तथा दूसरे इस्लामी ग्रुप ओसामा बिन लादेन की जय–जयकार कर रहें हैं। हमारे नेता भी चिन्तित हैं कि अब आतंकी कार्यों में ओर तेजी आयेगी। सब से अधिक डर जम्मू प्रान्त के क्षेत्रों में है क्योंकि कश्मीर घाटी से तो हिन्दुओं को मारा और निकाला जा रहा है। अब जम्मू प्रान्त के डोडा, पुन्छ आदि जिलों से हिन्दुओं को मारा और निकाला जा रहा है। ऐसा नहीं कि जम्मू के डोगरे आतंकवादियों का मुकाबला नहीं कर सकते। किन्तु फारूख सरकार के नियंत्रण में वे बेबस तथा लाचार हैं। शासन तन्त्र में कश्मीर घाटी के ही लोगों का वर्चस्व होने के कारण लद्दाख और जम्मू प्रान्त लाचार अपनी जिन्दगी की घड़ियां गिन रहे हैं। वे चाहते हैं कि जम्मू तथा लद्दाख को अलग–अलग राज्य बना दिया जाये ताकि जम्मू राज्य के डोगरे और लद्दाखी बौद्ध बन्धु आने वाले नाश से अपने को बचा सकें और उग्रवाद को वहीं रोक कर आगे न बढ़ने दें। जम्मू–कश्मीर के तीन प्रान्त, कश्मीरघाटी, जम्मू तथा लद्दाख के सम्पूर्ण क्षेत्र में कश्मीर घाटी तो 15 प्रतिशत से भी कम है। जे.के. का 85 प्रतिशत क्षेत्र तो जम्मू और लद्दाख की भूमि है जिसकी रक्षा का एकमात्र उपाय यह है कि उन्हें कश्मीर घाटी के कट्टरवादी–अलगाववादी लोगों के नियंत्रण से निकाल कर भारत में पूर्ण रूप से विलीन होने दिया जाये। जम्मू के डोगरे वीर हैं, भारतभक्त हैं, न्यायप्रिय हैं। इसी प्रकार लद्दाख की जनता है। वे केन्द्र से गुहार करते हैं कि उन्हें अलग राज्य का दर्जा देकर विनाश से बचा लें ताकि वे अपने भारत देश की सेवा कर सकें। किन्तु केन्द्र जहां अभी तीन नये राज्य बना चुका है, 5 लाख जनसंख्या के मिजोरम को, जो आरम्भ से ही भारत–विरोध का अड्डा रहा है तथा अन्य छोटे छोटे राज्यों को तो चला रहा है, किन्तु भारत की रक्षा और आतंकी गतिविधियों की रोकथाम में सहायक योजना अर्थात् जम्मू और लद्दाख को घाटी से अलग राज्य बनाना नहीं स्वीकार कर रहा। यदि भारत की जनता मांग करे तो भारत के जम्मू और लद्दाख क्षेत्रों की रक्षा हो पाये और इस्लामी उग्रवाद को 15 प्रतिशत से भी कम क्षेत्र कश्मीर घाटी तक नियन्त्रित किया जा सके। जम्मू तथा लद्दाख के लोग धारा 370 नहीं चाहते, वे तो पूर्णतया भारत में मिल कर उग्रवाद कर मुकाबला करना चाहते हैं।

(20 / 09 / 2001)

## इतना तो करो

1, अक्तूबर सोमवार को श्रीनगर में जम्मू–कश्मीर विधानसभा के गेट पर हुए उग्रवादी आक्रमण से प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी से लेकर डॉ. फारूख तक सभी बड़े नेता सिहर उठे क्योंकि यह आक्रमण पिछले आक्रमणों से कुछ भिन्न था। चाहे लोग पहले भी मरते थे और काफी बड़ी संख्या में भी मरते थे, किन्तु इस बार राज्य के प्रतीक विधानसभा भवन पर ही आक्रमण हो गया और मरने

वालों में अधिक मुस्लिम ही हैं। उग्रवादियों के इस काण्ड के पश्चात् प्रधानमन्त्री ने अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश को भावुक पत्र लिखा कि हमारे सब्र की भी कोई सीमा है अर्थात् हम अभी तक सब्र से ही बैठे हैं। पत्र में ऐसी भनक है कि उग्रवादियों से हमारी रक्षा अमेरिका करे–यानि हम उग्रवादियों से भी अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो रहे हैं। डा. फारूख अब्दुल्ला, जिन्होंने अपने जीवन में अनेक रंग बदले हैं, विधान सभा में रो पड़े। यह अलग बात है कि वे अन्दर से कुछ और बाहर से कुछ और हैं। इसीलिये लोग उनके रोने को नाटक ही समझ रहे हैं। युवावस्था में लंदन में रहते उनके भातरविरोधी आन्दोलन, जे.के.एल.एफ. से उनकी घनिश्ठता, भिंडरवाला से उनके संबन्ध, खालिस्तानी उग्रवादियों के लिये प्रशिक्षण–शिविरों की व्यवस्था करवाने के उन पर आरोप, हजारों कट्टरपंथियों और अलगाववादियों को सरकारी सेवाओं में नियुक्त करके अलगाववादी एवं उग्रवादी आन्दोलनों की सहायता, कश्मीर को भारत से अलग करने के लिये स्वायत्तता की मांग और 1953 से पूर्व की स्थिति फिर से प्राप्त करने का आग्रह, ये सब कारनामे डॉ. फारूख की देशभक्ति को सन्देहास्पद बनाते हैं। पूर्व में जब–जब उग्रवाद बढ़ा तो फारूख सरकार को बरखास्त करके ही काबू पाया जा सका।

जनता की मांग है कि श्री जगमोहन जैसे प्रशासक को कश्मीर का राज्यपाल और श्री के.पी.एस. गिल को सुरक्षा बलों का प्रमुख बनाया जाये ताकि पाक–प्रेरित उग्रवाद को वहीं दफना दिया जाये। नहीं तो जैसे कश्मीर घाटी में चुन–चुन कर हिन्दू मारे गये या पलायन पर विवश कर दिये गये वैसे ही अब जम्मू क्षेत्र के डोडा, किश्तवाड़ और भद्रवाह के क्षेत्रों से हिन्दुओं का सफाया चालू हो गया है। यदि सरकार जम्मू और लद्दाख के क्षेत्रों को कश्मीर घाटी से अलग कर नये राज्य बना दे तो जम्मू और लद्दाख के लोगों की अपनी–अपनी सरकारें होंगी जो उग्रवाद का बीज–नाश कर देंगी। छोटी सी कश्मीर घाटी के उग्रवादियों को फिर आसानी से संभाला जा सकेगा। फारूख अब्दुल्ला की सरकार के अधीन जम्मू और लद्दाख का भविष्य खतरे में है।

(04.10.2001)

## व्यावहारिक बनो

आज दुनिया भर में इस्लामी आतंकवाद के विरुद्ध जनमत बन रहा है, किन्तु भारत को अपने देश में चल रहे आतंकवाद से स्वयं ही निपटना होगा। वैसे भी यह हमारे राष्ट्रीय सम्मान के विरुद्ध है कि हम अपने देश में व्याप्त इस्लामी आतंकवाद को समाप्त करने के लिये अमेरिका की ओर देखें और स्वयं जो करना चाहिये उसे करने से कतरायें। सभी जानते हैं कि इस्लामी कट्टरवाद ही आतंकवाद बढ़ाता है। इस्लामी कट्टरवाद से भारत के पाकपरस्त तत्वों को बल मिलता है। वे इस्लाम की खातिर कष्मीरी उग्रवादियों के प्रति भी सहानुभूति रखने लगते हैं। कश्मीरी उग्रवादी पाकिस्तान का खेल ही तो खेल रहे हैं, वे पाकिस्तान की लड़ाई ही लड़ रहे हैं। इसी प्रकार भारत के मुस्लिम युवकों में जिहाद का जनून भर कर जो सिमी जैसे संगठन बने हैं वे पाकिस्तान की ही लड़ाई लड़ने के लिये तैयार हो रहे हैं। एक प्रकार से यह पाकिस्तान की ही सेना है जो यद्यपि भारत में फल–फुसकर बड़े हुए है, किन्तु उनकी भावना और निष्ठा पाकिस्तान के लिये ही है। नीति के कारण वे स्पष्ट रूप से अपना उद्देश्य प्रकट नहीं करते। तेरह–चौदह करोड़ जनसंख्या का पाकिस्तान आज सौ करोड़ जनसंख्या के भारत को चुनौती दे रहा है। उस की हिम्मत का कारण भारत की वह जनता है जिनके हृदय में पाकिस्तान बसता है। यही पाकिस्तान की शक्ति है। इन्हीं के सहारे कश्मीर ही नहीं, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, केरल आदि अनेक प्रदेशों मे आई. एस.आई. के अड्डे बन चुके हैं। हथियार एकत्रित किये जा रहे हैं, पाकिस्तान की सहायता से हथियारों का प्रशिक्षण प्राप्त किया जा रहा है। हिजबुल मुजाहिदीन तथा दूसरे आतंकी गिरोहों से सक्रिय संपर्क स्थापित किया जाता है। मानो गृहयुद्ध की ही तैयारी हो रही हो। भारत में ऐसे लोगों की संख्या लाखों नहीं करोड़ों में है जिनके निकट रिश्तेदार पाकिस्तान में हैं। इन सब का लाभ पाकपरस्त आतंकी संगठनों को होता है। भारत में जन्मे किन्तु पाकिस्तान के हित में भारत के ही

शत्रु बनने वालों की कमी नहीं है। पाकिस्तान के पूर्व अधिनायक परवेज मुशर्रफ स्वयं दिल्ली में जन्मे थे, किन्तु वे तो दिल्ली को बमों से ध्वस्त कर देना चाहते हैं।

भारत सरकार मदरसों को विपुल धन देती रही है किन्तु इससे इस्लामी उग्रवाद ही बढ़ा है। अल्पसंख्यक आयोग बनाना, हज के लिये सरकारी धन देना क्या कट्टरता को बढ़ावा नहीं है? जम्मू–कश्मीर, नागालैण्ड और मिजोरम को अन्य राज्यों की अपेक्षा केन्द्र द्वारा कई गुणा अधिक धन आवंटित किये जाने का कारण भी अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण ही है। यह भारत के हितों के विरुद्ध है। यदि सरकार सचमुच में पाकपरक उग्रवाद से भारत की रक्षा करना चाहती है तो पाकिस्तान और बंग्लादेश से आये करोड़ों घुसपैठियों को क्यों पाल रही है? जबकि इन घुसपैठियों द्वारा भारत में पाकिस्तानी तत्वों को ही बल मिल रहा है। भारत–पाक बस सेवा एवं समझौता एक्सप्रैस जैसी रेल सेवा से भी पाकी तत्वों को ही लाभ होता है। सीमा पार से जो पाकिस्तानी आते हैं वे उग्रवाद बढ़ाते हैं। और भारत से पाकपरस्त लोग वहां जा कर षड्यन्त्र रचते हैं और शस्त्र लाते हैं। समय की मांग है कि सरकार उपरोक्त बातों की ओर ध्यान दे ताकि भारत में उभर रहे पाकपरस्तों के आतंकवाद का दमन किया जा सके।

(08 / 10 / 2001)

## ये एकांगी रिपोर्टें

भारत में इलैक्ट्रोनिक मीडिया का स्तर काफी बढ़ चुका है। स्टार टी.वी., ज़ी टी.वी., आजतक तथा अन्य कई चैनल खोजपूर्ण समाचार तथा फीचर दे रहे हैं। किन्तु कई बार उनके साक्षात्कार एकांगी भी हो जाते हैं और स्थिति की वास्तविकता तो मारी जाती है और गलत रूप जनता के सामने आता है। जैसे पिछले दिनों भारत ने लाहौर जाने वाली बस सेवा और समझौता एक्सप्रैस की रेल सेवा बन्द की तो हमारे चैनलों ने इन सेवाओं का लाभ उठाने वाले यात्रियों की तकलीफ को उजागर किया। उनके विचार प्रस्तुत किये गये कि इन सेवाओं के बन्द हो जाने से लोगों को हानि होगी, किन्तु दूसरा पक्ष लोगों के सामने नहीं आया कि किस प्रकार इन सेवाओं के द्वारा तस्करी का कार्य चलाया जाता रहा। पाकी जासूसों का भारत में प्रवेश होता रहा। आई.एस.आई. भारत में अपने अड्डे बनाती रही। अलकायदा, जैश–ए–मोहम्द जैसे संगठन भारत के मुस्लिम युवकों को आतंकवादी कार्यों के लिये भरती करते रहे और सिमी जैसे आतंकी संगठन उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र तथा अन्य प्रदेशों में सशस्त्र सेनाएं बनाने में पाकिस्तानी सहायता प्राप्त करते रहे।

एक बात जो सामने आई वह थी कि पाकिस्तान की लाखों लड़कियों की शादियां भारत के लड़कों से की जाती है। जिससे उनकी जनसंख्या भारत में बढ़ती है। उनकी रिश्तेदारी भारत में होने के कारण उन्हें भारत की यात्रा करने कर बहाना मिल जाता है और कौन जाने कितने पाकी एजेंट इस प्रकार भारत में प्रवेश पा कर विध्वंसक कार्यों में लग जाते थे।

टीवी चैनलो की एकांगी रिर्पोट का एक उदाहरण आज ही देखने को मिला जब 'आज तक' के श्री पुण्य प्रसून वाजपेयी द्वारा हुर्रियत कान्फ्रैंस के अब्दुल गनी लोन के साथ लिया गया इन्टरव्यू दिखाया गया। इस इंटरव्यू में श्री लोन ने अपना पक्ष रखा कि किस प्रकार भारत, पाकिस्तान के झगड़े में वे ही मारे जाते है और वे जो कश्मीरी है उनकी बात सुनी ही नहीं जाती। किन्तु श्री लोन से यह नहीं पूछा गया कि क्या हिन्दू कश्मीरी पंडित असली कश्मीरी नहीं थे जो उन्हें मार–मार कर निकाल बाहर किया। जम्मू के हिन्दुओं को जो हुर्रियत कान्फ्रैंस के चेले कश्मीरी उग्रवादी प्रतिदिन मारते हैं, उन्हें पलायन करने पर विवश करके जम्मू को मुस्लिम–बहुल बनाने के उपाय कर रहे हैं, क्या यही उनकी आजादी की लड़ाई है या यह मुस्लिम जेहाद है जो येन–केन–प्रकारेण मुस्लिम आधिपत्य स्थापित करना चाहता है। यह कश्मीरियत की लड़ाई नहीं बल्कि इस्लामी उग्रवाद है। हमारा तो यही निवेदन है कि प्रिंट मीडिया ओर इलैक्ट्रोनिक मीडिया में हमारे विद्वान पत्रकार समस्या के छिपे पक्ष भी सामने लाने का प्रयत्न करें।

(16 / 01 / 2002)

## अपने पुरखों से कटे ये जेहादी

यह हमारी अति धर्म–निरपेक्षता या खोखले सैक्यूलरवाद का ही परिणाम है कि पाकिस्तानी जिहादी हमारे घर में आकर हमें मारने का दुस्साहस कर रहे हैं। भारत सरकार चिल्ला–चिल्ला कर कहती है कि देखो दुनिया वालो! पाकिस्तानी भारत में घुस कर कभी लालकिले पर तो कभी संसद पर आक्रमण करते हैं, दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता में आतंक फैला रहे हैं, किन्तु कभी हमने सोचा कि हमारे लिये यह कितनी शर्म की बात है कि शत्रु हमारे घर में घुस कर ही हमें मारता है और हम बदला तो क्या लेना, अपने देश में घुसे हत्यारों को भी ऐसा सबक नहीं सिखा पाते कि वे सदा के लिये तौबा कर लें। हमने अपने ही द्वारा बुने तुष्टीकरण के मकड़जाल में अपने आप को फँसा रखा है। ऐसी शान्तिप्रियता और सहिष्णुता का क्या लाभ जो शान्तिप्रिय, निर्दोष और निहत्थे भारतीयों को शत्रु द्वारा मारे जाते देखे और चुप रहे, ''हमने शान्ति बनाये रखी है'' बस यही डींग हाँकते फिरें। दुनिया हमारी इस उदारता को कायरता ही मानती है। वह हमें एक पिलपिला देश, एक सॉफ्ट स्टेट समझती है। हम चाहे कुछ भी समझें, इससे हमारी कीर्ति नहीं बढ़ती बल्कि हमारा उपहास और अपमान ही होता है कि सौ करोड़ लोगों का इतना बड़ा देश मात्र थोड़े से पाकिस्तानियों से इस प्रकार त्रस्त रहे और मार खाता रहे।

वास्तव में हमने पाकिस्तान को कभी समझा ही नहीं। भारत के प्रति शत्रुता का नाम ही पाकिस्तान है। अपने जन्म से भी पहले से ही पाकिस्तान भारत पर आक्रामक रहा है। 1946 में मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा डायरैक्ट एक्शन की घोषणा पाकिस्तान का भारत पर आक्रमण नहीं था क्या? 1921 में खिलाफत आन्दोलन के समय मोपलों द्वारा मालाबार के हिन्दुओं का संहार क्या भारत पर आक्रमण नहीं था? कष्मीर घाटी के हिन्दुओं को मार–मार कर बाहर निकाल फेंका जाना क्या पाकिस्तानी उद्देष्यों की पूर्ति नहीं है? 13 सौ वर्ष पूर्व सिंध पर आक्रमण करने वाले मोहम्मद बिन कासिम को पाकिस्तानी अपना पुरखा मानते हैं न कि अरबों का मुकाबला करने वाले सिंध के राजा दाहिर को। वे पेशावर, मुलतान आदि में नरसंहार करने वाले गजनी के महमूद को अपना पुरखा मानते हैं न कि उसके आक्रमण से लोगों के जान–माल की रक्षा करने वाले लाहौर के राजा अनंगपाल को। मोहम्मद गौरी के आक्रमण के समय जिन खोखर जाति के लोगों ने गौरी के दाँत खट्टे किये थे आज उन्ही खोखर वीरों की सन्तान, जो पाकिस्तान में हैं, गौरी को अपना पुरखा मानती हैं। वे मध्य एशिया से आये बाबर को मानते हैं। रावलपिंडी और मुल्तान के निवासियों पर अनेक जुल्म ढाने वाले तैमूर पर गर्व करते हैं, जबकि वे स्वंय उन जुल्म सहने वालों की ही संतान हैं, जिनको कभी जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था। पाकिस्तान वालों को अब तक्षशिला के गौरवशाली इतिहास कुफ्र लगने लगे हैं। वे लाहौर, मुल्तान एवं रावलपिंडी के अपने पुराने इतिहास के कट चुके हैं और बाहर के मुस्लिम आक्रमणकारियों से अपना रिश्ता जोड़ा हुआ है। पाकिस्तान भारत और भारतीयता का शत्रु बन चुका है। पाकिस्तान का आधार मजहब है न कि उसका प्राचीन इतिहास। संपूर्ण भारत से कुफ्र को खत्म कर अखंड पाकिस्तान बनाना ही उसका अंतिम लक्ष्य है। इस बात को समझ कर हमें अपनी नीति बनानी होगी।

(02/02/2002)

## यह खतरनाक विधेयक

जम्मू–कश्मीर में डॉ.फारूख द्वारा जो पुनर्वास विधेयक (रिसैटलमैंट एक्ट) पारित किया गया उसे राज्यपाल ने स्वीकृति नहीं दी थी क्योंकि इस विधेयक द्वारा 1947 से 1948 तक जो लोग जम्मू–कश्मीर से पाकिस्तान चले गये थे उन्हें फिर आकर बसने की अनुमति होगी। उन्हें उनकी पुरानी संपत्तियों पर फिर से अधिकार प्राप्त हो जायेगा। वे कश्मीर के नागरिक बनते ही भारतीय नागरिक भी स्वतः बन जायेंगे और भारत की राजनीति में भी भाग ले सकेंगे जबकि वे और उनकी सन्तानें पाकिस्तानी के रूप में पिछले 55 वर्षों से वहां रह रही हैं। पाकिस्तान के स्कूलों या मदरसों में वे पढ़े और बड़े हुए। बहुत से लोग वहां की सेना में छोटे–बड़े पदों पर आसीन रहे। भारत के

विरूद्ध युद्धों में भाग लेते रहे। पता नहीं उनमें से कितने जैशे मोहम्मद और हिज्बुल मुजाहिद्दीन के सदस्य हों। उन सबको आकर जम्मू–कश्मीर में बसने का अधिकार देना भारत की सुरक्षा को खतरे में डालना है। सीमा से जो उग्रवादियों की घुसपैठ पाकिस्तान कराता है, जिसे रोकने के लिये हमारे सेना के जवानों को कई बार अपने प्राणों से भी हाथ धोना पड़ता रहा है, अब उस घुसपैठ को डॉ. फारूख द्वारा सीधा निमन्त्रण दिया जा रहा है। अच्छा होता यदि राष्ट्रपति इस विधेयक को अस्वीकार कर देते, किन्तु उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में रेफ्रैंस (निर्णय) के लिये भेज दिया जो बड़ा खतरनाक खेल है क्योंकि उच्चतम न्यायालय ने तो कानूनी पक्ष ही देखना है कि जम्मू–कश्मीर की विधान सभा ऐसा विधेयक पारित करने का अधिकार रखती है या नहीं। किन्तु राष्ट्रपति ने देश के हितों तथा देश के लिये होने वाले खतरों को ध्यान में रख कर निर्णय लेना होता है। उच्चतम न्यायालय ने अभी इस विधेयक पर स्टे दिया है, किन्तु अन्तिम निर्णय कुछ भी हो सकता है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए केन्द्र सरकार को तुरन्त आवश्यक उपाय करने चाहियें।

पिछले कुछ वर्षों से जम्मू प्रान्त में मुस्लिम जनसंख्या बढ़ाने के प्रयास चल रहे हैं। कश्मीरी उग्रवादी भी आये–दिन हत्याएं करके हिन्दुओं को पलायन के लिए विवश कर रहे हैं। यदि पुनर्वास विधेयक पारित हो जाता है तो पाकिस्तान– अधिकृत क्षेत्रों से जो लोग वापस आयेंगे वे जम्मू प्रान्त में ही बसेंगे। क्योंकि पी.ओ.के. का मीरपुर, कोटली से लेकर मुजफराबाद तक का सारा क्षेत्र पहले भी जम्मू प्रान्त का ही भाग था। अक्तूबर 1947 में पाकिस्तानी कबाईली इस क्षेत्र में आ गये और भारतीय क्षेत्र के जो लोग पाकिस्तान के प्रति निष्ठावान थे, वे पाकिस्तान चले गये। अब फारूख सरकार पाकिस्तान चले गये लोगों को तो वापिस फिर से बसाने और सुविधायें देने पर तुली है जबकि वहां से उजड़ कर आये हिन्दुओं की कोई सुध नहीं ले रही।

(04 / 02 / 2002)

## सत्ता की दौड़ में ये धार्मिक वर्ग

जैसे भारत के अनेक राजनैतिक दल सत्ता में आकर देश की बागडोर अपने हाथ में लाने के लिये प्रयत्नशील हैं वैसे ही अनेक धार्मिक वर्ग भी भारत की सत्ता पर अपना वर्चस्व जमाने में सचेष्ट हैं। जैसे अनेक ईसाई संस्थाएं धर्म–परिवर्तन के द्वारा शक्ति बढ़ाकर देश में छोटे–बड़े ईसाई क्षेत्र बना रही हैं। नागालैण्ड, मिजोरम तथा मेघालय ये तीन राज्य तो पूर्णरूपेण ईसाई राज्य बन ही चुके हैं, आगे आसाम
के कुछ और क्षेत्रों को अलग कर और ईसाई राज्य बनाने की योजना चल रही है और कुछ अन्य राज्यों में ईसाई मुख्यमंत्री बनाने के प्रयास होते हैं जैसे छत्तीसगढ़ में श्रीमती सोनिया द्वारा श्री अजीत जोगी को मुख्यमंत्री बनाया गया। इससे पहले उड़ीसा में ईसाई धर्मावलम्बी श्री गिरधर गोमांग को उन्होंने मुख्यमंत्री पद दिया था। इसी प्रकार गोआ में कई बार ईसाई मुख्यमंत्री बने। केरल में कांग्रेस ने श्री एन्टनी को मुख्यमंत्री बनाया। केन्द्र में श्री के.आर.नारायणन को राष्ट्रपति पद पर आसीन होने से ईसाई जगत में प्रसन्नता रही और श्रीमती सोनिया जी भारत की प्रधानमंत्री बनें इस बात के लिये भारत भर के ईसाई ही नहीं अपितु दुनिया भर के ईसाई देश बड़े लालायित हैं।

मुस्लिम समाज भी यदि भारत की सत्ता हथियाने का प्रयत्न करता है तो बड़ी स्वाभाविक बात है। मुस्लिम जनसंख्या का प्रतिशत भारत में इतना कम है कि वे किसी राजनैतिक दल द्वारा सत्ता प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लिये वे अपनी जनसंख्या बढ़ाने में लगे हैं। पिछले 50 वर्षों में वे अपनी जनसंख्या 7 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 प्रतिशत के लगभग करने में सफल हुए हैं। कई ऐसे क्षेत्र भी बना लिये हैं जहां उनका प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया है। उनकी सबसे बड़ी सफलता इस बात में है कि एक ऐसा वायुमंडल देश में बना दिया है कि सभी दल मुस्लिम वोटों के लिये उतावले दिखाई दे रहे हैं। सभी उनको रिझाने में लगे हुए हैं। कोई उन्हें आरक्षण देने की बात करता है तो कोई उर्दू को बढ़ावा देने का वचन देता है। कश्मीर में चले इस्लामी आतंकवाद के प्रति नरमी बरतने और अरब देशों का पक्ष लेने, यहां तक कि पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद भड़काए जाने की अनदेखी कर उनसे मधुर संबन्ध रखने की बात करते हैं। जैसे श्री मुलायम सिंह ने

पाकिस्तान को 2000 करोड़ रूपये की सहायता करने की मांग की थी। वक्फ बोर्डों, मदरसों की सहायता करना, इफतार की दावतें देना, हज के लिये करोड़ों रुपये व्यय करना तो मानो राष्ट्रीय कर्मकाण्ड ही बन चुका है। मुस्लिम समाज में कुछ ऐसे भी हैं जो सोचते हैं कि वे लड़कर ही भारत को फतह कर लेंगे। सिमी जैसे जेहादी संगठन बना कर हथियार इकट्ठे करने में लगे हैं।

(15/02/2002)

गोधरा काण्ड की प्रतिक्रिया में हुए गुजरात के हिन्दू–मुस्लिम दंगों ने पूरे राष्ट्र के बुद्धिजीवी, लेखक, पत्रकार व तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेताओं आदि ने दंगों के विरोध में प्रतिक्रिया करते हुए आडवाणी व मोदी का त्यागपत्र मांग लिया। और तो और रक्षामंत्री जार्ज ने तो दंगाग्रस्त क्षेत्रों व गांवों में सामूहिक दण्ड देकर आपराधिक मुकदमा चलाये जाने तक का सुझाव दे डाला। यहां तक कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग ने भी 'वसुधैव कुटुबकम्' की दुहाई देकर राष्ट्रीय चरित्र निभाने की अपील कर डाली। परन्तु कश्मीर में हिन्दुओं के घरों को आग लगाकर नष्ट किया जाता रहा, उनको मार–मार कर, काट कर, भून कर खाया गया, उनके शवों को पट्रोल या तेल डाल कर जला दिया गया (जुलाई 1999), उनकी बहन–बेटियों की इज्जत लूटी गई, उनको अपने–अपने घरबार छोड़ने को विवश किया गया। न जाने कितने प्रकार से हिन्दुओं का नरसंहार व प्रताड़ित करने वाला यह कभी न रुकने वाला सिलसिला कश्मीर घाटी में लगभग पिछले 20 वर्षों से चल रहा है, तब सारे बुद्धिजीवी, लेखक, पत्रकार, राजनेता आंखें बन्द करके सोये रहे क्यों? तब कोई अल्पसंख्यक आयोग राष्ट्रीय चरित्र की दुहाई नहीं देता था, न ही कोई मानवाधिकार आयोग परामर्श देने का साहस कर पाता था।–क्यों?

क्या केवल हिन्दू प्रताड़ित होता रहे यही राष्ट्रीय सोच बन रही है? तभी तो इलैक्ट्रॉनिक मीडिया भी इसी सोच के वशीभूत गुजरात के दंगों को बढ़ा–चढ़ा कर दिखा रही है। सभी दूरदर्शन चैनलों पर आपस में होड़ सी लगी हुई है। मानो कोई राजनैतिक दल हिन्दू–विरोध व तथाकथित धर्मनिरपेक्ष (मुस्लिम) प्रेम में किसी से पीछे न रह जाये। आज हिन्दू–मुस्लिम दंगों पर आधारित आतंकवाद का जनक पाकिस्तान कश्मीर से फैल कर सारे राष्ट्र को इस आग में झोंकना चाहता है। मदरसों व आई.एस.आई. पूरे देश में फैले अनगिनत अड्डों द्वारा हमारे राष्ट्र को एक जाल में जकड़ने की कुचेष्टा कर रही है। मुस्लिम मानसिकता को जेहाद का वास्ता देकर उकसाकर हिन्दुओं पर अत्याचार को बढ़ावा दिया जा रहा है आवश्यकता कि हमें साम्प्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता, तुष्टीकरण व अल्पसंख्यकवाद आदि लुभावने शब्दों के मुखौटों से बाहर निकल कर दंगों (आतंकवाद) की जड़ों को ढूंढें और उन्हें सींचने के स्थान पर उखाड़ कर नष्ट करने का प्रयास करें। तभी राष्ट्र व राष्ट्रीय चरित्र की रक्षा संभव होगी।

(08/03/2002)

## क्या भारत अखंड रह पायेगा?

भारत में फिर से 1947 की सी स्थिति बनती जा रही है। उन दिनों भारत भर का मुस्लिम समाज मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में भारत के मुसलमानों के लिये अलग होमलैंड की मांग करने लगा था। मुसलमानों का अलग देश पाकिस्तान बनाने के लिये पंजाब से लेकर बंगाल, आसाम तक जलसे, जुलूस, नारे, रैलियां चल रहीं थी, दंगे भड़क रहे थे। डायेरेक्ट एक्शन की धमकियां दी जा रही थीं, कलकत्ता और नवाखली में खून बहाया जा रहा था, पंजाब जल रहा था। आखिर हिन्दू–मुस्लिम के आधार पर पाकिस्तान बन ही गया। देश के बंटवारे के साथ–साथ पुलिस और सेना को भी हिन्दू–मुस्लिम आधार पर बांटा गया। केन्द्रीय सेवाओं का भी धर्म के आधार पर बंटवारा हो गया। पाकिस्तान मुस्लिम देश घोषित हो गया। हिन्दु निकाले गये। जो बचे उनकी स्थिति दूसरी श्रेणी के नागरिकों से भी बुरी थी। किन्तु नेहरू जैसे गांधीवादी नेताओं ने शेष बचे भारत को हिन्दू देश नहीं माना बल्कि यहां मुस्लिम जनसंख्या बढ़ाने के उपाय किये। मुसलमानों को पाकिस्तान जाने से रोका गया। उन्हें अल्पसंख्यक के नाम पर हिन्दुओं से भी अधिक अधिकार दिये

गये। कश्मीर का भारत में पूर्ण विलय नहीं होने दिया। जम्मू–कश्मीर के जो भाग पाकिस्तान ने हथिया लिये उन्हें वापिस ले रही भारतीय सेना को रोक दिया गया। और ऐसा कानून बनाया गया कि हिन्दू एक विवाह कर सकें और मुस्लिम चार विवाह कर अधिक बच्चे उत्पन्न कर सकें। इस कानून के कारण हिन्दू समाज धीरे धीरे घटता हुआ विनाश की ओर बढ़ रहा है क्योंकि मुस्लिम प्रतिशत बढ़–बढ़ कर जब 50 प्रतिशत हो जायेगा तो भारत भी पाकिस्तान की भांति मुस्लिम देश होगा। शायद इतनी प्रतिक्षा भी न करनी पड़े। 1947 में 23 प्रतिशत मुसलमानों ने अलग पाकिस्तान प्राप्त कर लिया था तो फिर और नये पाकिस्तान की मांग भी हो सकती है।

मुस्लिम आबादी अधिक तेजी से बढ़ाने के लिये बंग्लादेशियों की घुसपैठ निरंतर बढ़ रही है। जिसे रोकने का सरकार का कोई विचार नहीं लगता। मुसलमानों को चार विवाह की छूट का कानून हिन्दू समाज के लिये मष्त्युदंड है। इस कानून से भारत के हिन्दुओं का मरण सुनिष्चित कर दिया गया है।

(18.03.2002)

## एकांगी दृष्टिकोण क्यों?

अयोध्या की यात्रा करके साबरमती एक्सप्रेस से वापिस आ रहे गुजरात के अहमदाबाद आदि स्थानों के हिन्दुओं की 4 बोगियों को गोधरा के 2000 मुसलमानों की भीड़ ने आग लगा कर भून डाला, जिससे सारे गुजरात में त्राहि–त्राहि मच गई। चारों ओर शोक और क्षोभ छा गया। जली हुई लाशें जब वहां पहुंचीं तो हिन्दू जनता क्रोध से पागल हो उठी। पिछले 20 वर्षों से मुस्लिम आतंक की मार सहता सारा हिन्दू समाज सिहर उठा। कश्मीर के हिन्दुओं की जो दुर्दशा हो रही है, सारे भारत में पाकिस्तानी हथियारों से लैस होकर आतंकवादी दिल्ली, मुम्बई, उत्तरप्रदेश जहां–तहां हत्याएं कर रहे हैं रेलें उड़ाई जाती हैं। देश के आयुध–भंडारों में आग लगाई जाती है और अब तीर्थयात्रा से आ रहे लोगों को जिन्दा जलाया जाना चालू हो गया––इस मनोभूमि के कारण सारे गुजरात में दंगे भड़क उठे। वैसे तो अस्सी के दशक से ही गुजरात में व्यापक दंगे होते आ रहे हैं परन्तु आजकल वहां भाजपा की सरकार है ऐसे में भाजपा के विरोधियों को अवसर मिल गया और वे हाथ धो कर मोदी सरकार के पीछे पड़ गये। कांग्रेस तथा कम्युनिस्टों को भी गुजरात सरकार को बदनाम करने का अवसर मिल गया। अंग्रेजी प्रेस के सैक्यूलर प्रेसकर्मी एकपक्षीय तथा अतिरंजित समाचार अपने पत्रों में छाप कर विदेशों में भारत की छवि खराब करने लगे। पाकिस्तान तथा भारत में स्थित पाकिस्तानी लॉबी को इसका पूरा फायदा मिला।

भारतवासी हैरान हैं कि कष्मीर में जब हिन्दुओं को घोर यातनाएं दी जा रही थीं तब राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग कहां सोया हुआ था। नागालैंड में चर्च–प्रेरित आतंकवाद इतना बढ़ा कि दस हजार से अधिक सुरक्षाकर्मियों को बलि का बकरा बना दिया गया। वहां की भारत–भक्त जनता का तो जैसे सफाया ही कर दिया गया। वहां की सरकार के कुकृत्यों के विरूद्ध राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग क्यों कोई कार्यवाही नहीं करता? ऐसे राष्ट्रविरोधी तत्वों के विरूद्ध वह क्यों चुप बैठा रहता है। मिजोरम में बौद्ध चकमा जाति तथा हिन्दू रियांग जाति के पचास हजार से अधिक भारत–भक्तों का सफाया करने वाले मिस्टर लालडेंगा जैसे देशद्रोही के अनुयायियों की सरकार के विरूद्ध न तो राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, न ही अल्पसंख्यक आयोग, न ही प्रेस गिल्ड के स्वयंभू अगुवा जार्ज वर्गीज़ मुंह खोलने की हिम्मत करते हैं।

पाकिस्तानी तत्वों के आतंकवाद से देश की रक्षा करने की बजाय हमारे अंग्रेजी पढ़े और अंग्रेजीयत का चश्मा लगाये तथाकथित बुद्धिजीवी, आतंकवाद के विरूद्ध खड़ी गुजरात की जनता और वहां की सरकार के पीछे पड़ गये हैं। वे यह भी नहीं देख पा रहे कि कौन भारत–हितैशी है और कौन पाकिस्तान–प्रेमी। अंग्रेजी प्रेस को क्या हो गया है कि राश्ट्रीय हितों की इतनी अनदेखी कर रहा है।

(02 / 04 / 2002)

## देखते हुए भी मूक क्यों?

6 अप्रैल के समाचारपत्रों तथा चैनल में आया कि कश्मीरी मुस्लिम युवाओं को बड़ी संख्या में भारतीय सेना में भरती किया जा रहा है। आज जबकि कश्मीर में इस्लामी कट्टरपंथियों का प्रचार इतना प्रबल है कि लाखों लोग लष्करे तैयबा, हिज्बुल मुजाहिदीन, जैशे मोहम्मद, जे.के.एल.एफ. जैसे उग्रवादी गैंग बना चुके हैं, पाकिस्तान जा कर हथियारों का प्रशिक्षण लेते हैं, सुरक्षा बलों तक पर आक्रमण करते हैं, किन्तु भारतीय सेना के रहते वे भारत को क्षति पहुंचाने के उद्देश्य में पूरे सफल नहीं हो पा रहे। अतः वे भारतीय सुरक्षाबलों में घुस कर भीतर से भी विध्वंस कर सकने की फिराक में हैं। ऐसे में क्या रक्षा मन्त्रालय उन्हें अवसर प्रदान नहीं कर रहा है कि वे भारतीय सेना में घुस कर भीतरघात कर सकें।

हमारे रक्षामंत्री श्री जार्ज फर्नांडिस ने दो वर्ष पूर्व ही नागालैण्ड, मिजोरम आदि पूर्वोत्तर भारत के राज्यों से बड़ी संख्या में युवकों को सेना में भरती किया था। इस प्रकार भारतीय सेना में नागा टुकड़ियां भी बनाई जा चुकी हैं। अभी कुछ दिन पूर्व ही स्टार टीवी ने समाचार दिया कि सिलिगुड़ी में सेना की भरती के लिये लगाये गये कैम्प में ऐसे लोग भर्ती होने में सफल हो गये जिनके परिचयपत्र झूठे और जाली थे। जिससे पता चलता है कि देशद्रोही तत्त्व सेना में घुसकर भीतर से विध्वंस की तैयारी कर रहे हैं। समाचारपत्रों में यह भी छपा था कि सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग, कूच बिहार आदि क्षेत्रों का जो गलियारा आसाम को भारत से जोड़ता है, उसमें मदरसों का जाल फैलाया गया है और आतंकवादी तत्वों को सक्रिय किया जा रहा है।

सेना के बड़े अफसरों का मनोबल तोड़े जाने की बातें भी सामने आ रही हैं। 4 अप्रैल के कुछ समाचारपत्रों में छपा कि श्री फर्नांडिस की उपस्थिति में डॉ. फारूख अबदुल्ला ने 15 वीं कोर के कमांडर श्री वीजी. पाटनकर को बुरी तरह फटकारा। इससे पूर्व पिछले दिनों दो लैफ्टिनैंट जनरलों की छुट्टी कर दी गई। आर्मी चीफ तक को भी डांटा जा चुका है। नौसेना प्रमुख श्री भागवत को अपमानित करके उनके स्थान पर जार्ज साहब के मित्र किन्तु आरोपों से घिरे श्री सुशील कुमार को नेवी का चीफ नियुक्त किया गया था।

लोग सोचने पर विवश हैं कि जार्ज फर्नांडीस आखिर चाहते क्या हैं? उनके कश्मीरी उग्रवादियों से संबन्ध होने के समाचार तो 1990 से ही प्राप्त होते रहे हैं। म्यांमार के ईसाई उग्रवादी नागा और आराकान नेशनल आर्मी जैसे दुर्दांत आतंकवादियों से घनिष्ठ संबन्ध हैं, जब कि सब जानते हैं कि म्यांमार के ये विद्रोही भारत में नागा विद्रोह को सब प्रकार से सहायता करते रहे हैं। फिर भी म्यांमार के क्रिश्चियन विद्रोही संगठनों को जार्ज साहब ने अपनी कोठी में ही स्थान दे रखा है। यह जानकारी साल भर पूर्व 'जी' टीवी पर भी दिखाई गई थी।

आश्चर्य है कि हथियारों की खरीद में घोटालों के लगातार समाचार आते रहने और देशद्रोही सन्देहास्पद तत्वों को सेना में भरने को भी जनता देखते हुए भी मूक कैसे बनी बैठी है। जब हम अपने वेतन बढ़वाने के लिये आन्दोलन करते हैं, या अन्य करणों से आवाज उठाते हैं तो देश की सुरक्षा को खतरे में डाले जाने के विरुद्ध क्यों नहीं बोलते। देश के प्रबुद्ध नागरिक जब आवाज उठायेंगे तो प्रधानमंत्री को उचित कार्यवाही करने के लिये प्रेरणा और बल मिलेगा।

(09.04.2002)

## ये मिशनरी, यह शिक्षा

भारत में ईसाई मिशनरियों ने पिछले डेढ़—दो सौ वर्षों में भारत में अपना वर्चस्व बढ़ाने के तथा भारत को अन्दर से निर्बल करने के जो सफल प्रयास किये है उनकी ओर भारत के नेताओं तथा मनीषियों का सम्यक् ध्यान जाना चाहिये।

मिशनरियों ने स्कूल खोले और शिक्षा को अपने हाथ में लेने, भारत में शिक्षा को अपनी दिशा देने, भारतीयों में राष्ट्रीय संस्कार मिटाने, अंग्रेजी का प्रचलन बढ़ाने तथा भारतीयों को अपने धर्म में लाने या उन्हें अनुकूल रखने का बहुत बड़ा कार्य किया। अब भारतीय भाषाओं का भविष्य अंधकारमय हो चुका लगता है। राष्ट्रभक्ति की प्रखरता कम हो चुकी है। हम भारतीय यूरोप की संस्कृति को अपना आदर्श समझने लगे हैं।

जमायते–इस्लामी जैसी मुस्लिम संस्थाओं ने जैसे मदरसों की शिक्षा के माध्यम से जेहादी युवकों की फसल उगाई, उसी प्रकार विदेशी मिशनरियों ने भी नागालैण्ड़, मिजोरम जैसे पूर्वोत्तर के क्षेत्रों में ईसाई उग्रवादियों को पैदा कर दिया। पता नहीं कैसे उन्हें ऊँचे दर्जे के शस्त्रास्त्र उपलब्ध करवाते हैं कि अनेक बार वे भारतीय सुरक्षाबलों पर भी भारी पड़ते हैं। पूर्वोत्तर में दस हजार से अधिक सुरक्षाकर्मी मारे जा चुके हैं। इस के अतिरिक्त भारत के अनेक क्षेत्रों में विद्रोह फैलाया जा रहा है। कहीं तमिल लिब्रेशन फोर्स, कहीं त्रिपुरा लिब्रेशन आर्मी कई ऐसे नामों से कि किसी को सन्देह भी न हो सके कि इनके पीछे विदेशी चर्च का हाथ है।

भारत को जागष्त होना होगा। गुप्तचर तन्त्र को सशक्त बना कर अन्दर ही अन्दर चल रहे षडयन्त्रों को निरस्त करना होगा। नहीं तो उन्हीं के लोग राजननीति में भी उच्च पदों पर पहुंच कर अधिक हानि कर जायेंगे।

(20.09.2002)

## घुसपैठियों को निकालो

शिवसेना प्रमुख बालासाहेब ठाकरे ने चारों ओर इस्लामी आतंकवादी आक्रमणों से अपनी रक्षा करने के लिये हिन्दुओं को चेताया है। भारत में इस्लामी जेहादियों ने गृहयुद्ध की सी स्थिति पैदा कर दी है, किन्तु इसके लिये हम स्वयं जिम्मेदार हैं। एक ओर जेहादी शिक्षा के केन्द्र लाखों मदरसों को सरकार मुक्त रूप से आर्थिक सहायता देती है जब कि यह धन टैक्सों द्वारा हिन्दुओं से ही प्राप्त होता है। दूसरी ओर बांग्लादेश से आये मुस्लिम घुसपैठियों को पाल रही है, जो हर प्रकार की भारत–विरोधी गतिविधियों में लिप्त हैं। भारत भर के मुसलमानों के लिये होमलैंड के रूप में 1947 में पाकिस्तान बना था। इसलिये पाकिस्तान वाले क्षेत्रों, सिंध, बलोचिस्तान, सीमा–प्रान्त और पश्चिमी पंजाब के हिन्दुओं को शेष बचे भारत में आना पड़ा था। भारत के मुसलमानों का देश पाकिस्तान बना तो शेष बचा भारत हिन्दू देश बन गया। हिन्दू–मुसलमान के आधार पर भारत का बंटवारा होने से शेष भारत की हिन्दुओं के नाम रजिस्ट्री हो गई थी। किन्तु गान्धीवादी और नेहरूवादी नेताओं की जिद से हिन्दुओं का देश भारत हिन्दूदेश नहीं बनने दिया गया, उल्टा मुस्लिम तुष्टीकरण ही इतना अधिक बढ़ा कि फिर से भारत में 1947 वाली स्थिति पैदा होने लगी है। पंजाब, सिन्ध बलोचिस्तान आदि से हिन्दुओं का भारत में आकर बसना स्वाभाविक ही था। पूर्वी पाकिस्तान से भी लाखों हिन्दू–**श**रणार्थियों को आना पड़ा, किन्तु लाहौर, पेशावर या कराची के मुसलमान यदि आकर भारत में बसने लगें तो यह कैसे सहन हो सकता है। इसी प्रकार बंग्लादेश से हिन्दू शरणार्थियों का आना स्वाभाविक है, किन्तु वहां से यदि बंगला मुसलमान आकर भारत में बसे तो इसे भारत कभी स्वीकार नहीं कर सकता। यह भारत की सुरक्षा के लिये ही खतरा है। पाकिस्तान या बांग्लादेश से आकर भारत में बसे मुस्लिम घुसपैठियों को बाहर निकालना भारत–भक्तों का प्रथम कर्त्तव्य है।

(16 / 10 / 2002)

सुप्रीम कोर्ट ने छण्ब्म्त्ज की इतिहास की पुस्तकों में किए गये संशोधनों को सहर्ष मंजूरी दी क्योंकि अन्वेशण के बाद पाया गया कि आजादी के 55 वर्षों के बाद भी देश में पढ़ाई जाने वाली

इतिहास की पुस्तकें भ्रामक तथ्यों से भरपूर थीं। यह एक विडंबना ही है कि हमारे देश के विभिन्न राज्यों में पढ़ाया जाने वाला इतिहास भिन्न है। मसलन उत्तर प्रदेश में मुगल बादशाह औरंगजेब को हिन्दूधर्म–विरोधी एवं पक्का कट्टरपंथी मुसलमान शासक बताया गया है जो अन्य धर्म के अनुयायियों पर जजिया (कर) लगाता था। जबकि इसी औरंगजेब का चित्रण दिल्ली राज्य में एक निहायत धर्मशील मानवतावादी शासक के रूप में हुआ है। इसी प्रकार पश्चिम बंगाल में गुरु तेगबहादुर का चित्रण पंजाब में लूटमार करने वाले के रूप में है जबकि उत्तर भारत में (उत्तर प्रदेश, पंजाब) में वे पूजनीय हैं। अगर इसी तरह की भयंकर ऐतिहासिक त्रुटियों से परिपूर्ण पुस्तकों को देश के बालकों को पढ़ाया गया तो यह भावी पीढ़ी को दिग्भ्रमित करने का कार्य होगा।

जिस देश के नागरिक अपने इतिहास के महान् पुरुषों के विषय में सही जानकारी नहीं रखेंगे उनका नैतिक चरित्र ही गिर जाएगा जो आज सर्वत्र दिखाई दे रहा है। भाजपा–शासित राज्यों के अतिरिक्त अन्य राज्यों की तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकारों ने सुप्रीम कोर्ट के अनुकूल फैसले के बाद भी छण्ब्ण्म्ण्त्ण्ज्ण की इतिहास की पुस्तकों को अपने राज्यों में लगाने से मना कर दिया है।

आश्चर्य के साथ–साथ दुःख भी होता है कि आज के राजनेता देश की राजनीति की धारा को ऐसे मार्ग पर बहा रहे हैं जहाँ देश के भावी नागरिक स्वयं की अस्मिता एवं सम्मान तलाश करते ही रह जाएंगे।

(25/10/2002)

## राष्ट्रीय धन लग रहा है राष्ट्रद्रोह में

भारत के सभी क्षेत्र आतंकियों की चपेट में आ चुके हैं। गृहमन्त्री चाहे कितनी भी क्रॉस बॉर्डर या सीमापार से आ रहे आतंकवाद की बात करें, किन्तु वास्तविकता यही है कि भारत में जन्मे भारत के अन्न और जल से पले, भारत में ही शिक्षा प्राप्त कर चुके ऐसे लाखों लोग हैं जो मजहबी जनून में पागल हो, जिहाद के लिये पाकिस्तानी आई.एस.आई. के लिये भारत के विरूद्ध काम कर रहे हैं। पाकिस्तान उन्हें हर प्रकार की सहायता दे रहा है। उनके लिये प्रशिक्षण शिविर चलाये जा रहे हैं। उन्हें घातक हथियारों की ट्रेनिंग दी जाती है। रिमोट कंट्रोल से विस्फोट करना सिखाते हैं। पाकिस्तान से ए.के. 47 राईफलों, तथा विस्फोटक भारत में भेजे जाते हैं।

पहले कश्मीर के मुस्लिम लड़कों को जेहादी बनाया। अब वे समूचे भारत के मुस्लिमों को जेहाद के लिये तैयार कर रहे हैं। ओसामा बिन लादेन के भाषणों के कैसेट भारत के चप्पे–चप्पे में सुनाए जाते हैं। इसी प्रकार जैशे–मोहम्मद के संस्थापक अजहर मसूद के भाषणों का प्रचार भी किया जा रहा है। किन्तु सब से अधिक चिन्ता की बात तो यह है कि भारत सरकार भी करोड़ों रूपये खर्च कर रही हैं जिससे उग्रवाद ही पनपता है। केन्द्र द्वारा मदरसों को अकूत धन दिया जाता है। राज्य सरकारें भी यही कर रही हैं। हज के लिये जो लोग अरब देश में जाते हैं उन्हें आई.एस.आई. द्वारा जेहाद के लिये तैयार किया जाता है। हज यात्रा के लिये भी भारत सरकार दिल खोल कर धन देती है। राष्ट्रीय धन राष्ट्रद्रोह में लग रहा है, वह भी धर्म–निरपेक्षता के नाम पर मजहबी कामों के लिये। ऐसी स्थिति में देश की रक्षा कैसे संभव है।

(20.12.2002)

## दुश्मन घर में ही

आडवाणी जी देश के बड़े नेता हैं उपप्रधानमंत्री एवं गृहमन्त्री हैं। उन्होंने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान कहा कि भारत में सारा आतंकवाद पाकिस्तान से आ रहा है भारत के भीतर कोई आतंकी नहीं है, किन्तु क्या सचमुच यही बात है? क्या भारत में आतंकी संगठन नहीं हैं? तो फिर 'सिमी' पर क्यों प्रतिबंध लगाना पड़ा। सिमी का नाम ै;जनकमदजेष ेसंउपब डवअउमदज व ि्दकपंद्ध 'भारत के मुस्लिम विद्यार्थियों का आन्दोलन' ही उनका उद्देश्य स्पष्ट कर देता है। सिमी के सदस्य उत्तर प्रदेश,

महाराष्ट्र में अनेक आतंकी गतिविधियों में पकड़े जाते रहे हैं। सिमी की शाखाएं भारत के कई प्रदेशों में फैली हैं। गुजरात में सिमी के सदस्य कई आतंकी काण्डों में लिप्त पाये गये हैं।

इसके अतिरिक्त जम्मू—कश्मीर में दो दर्जन आतंकी संगठन सक्रिय हैं। अनुमानतः 20,000 से 30,000 तक की संख्या में कष्मीरी लड़के किसी न किसी संगठन के अधीन उग्रवादी वारदातें कर रहे हैं। तमिलनाडु में भी कई उग्रवादी तनजीमें हैं। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के चेन्नैई स्थित कार्यालय को जो विस्फोटों से उड़ाया गया था जिसमें संघ के 11 प्रचारक मारे गये थे, उस सिलसिले में चैन्नेई के लोग ही पकड़े गये। केरल में 'इस्लामी स्वयंसेवक संघ' ;ध्ैैण्द्ध मुसलमानों का एक खौफनाक आतंकी संगठन है। इसी प्रकार पूर्वोत्तर भारत में भी खतरनाक मुस्लिम गुट विद्यमान हैं। परन्तु आडवाणी जी तो सदा पाकिस्तान से आने वाले उग्रवादियों की बात ही करते हैं। इस से सरकार घर के भीतर आतंकवादियों को खतम करने के अपने दायित्व से बचना चाहती है। सच्चाई तो यह है कि यदि भारत के भीतर के आतंकवादियों और गद्दारों का सफाया कर दिया जाये तो पाकिस्तान के उग्रवादी भी कोई घुसपैठ नहीं कर पायेंगे। पाकिस्तानी तो भारत में बसे अपने दोस्तों की सहायता से ही मारकाट कर पाते हैं।

(13/06/2003)

## जनता भी दोषी

भारत सरकार जहां एक ओर उग्रवाद से लड़ने के लिये रूस, इंग्लैड, इजराईल आदि अनेक देशों से समझौते कर रही है वहीं दूसरी ओर कश्मीर—स्थित उग्रवादियों से एकतरफा युद्ध विराम कर रही है। अमरीका से गुहार करती रही है कि पाकिस्तान को उग्रवादी देश घोषित करे, किन्तु स्वयं पाकिस्तान को 'मोस्ट फेवर्ड नेशन' अर्थात् सर्वाधिक प्रिय देश का दर्जा दिया हुआ है। पाकिस्तान से वार्ता करने के लिये हुर्रियत जैसे उग्रवादियों की मध्यस्थता पर भरोसा करती है। भारत की जनता हैरान और परेशान है। आज भारत का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जो पाक—प्रेरित उग्रवाद से अछूता हो। यहां तक कि फिल्म इण्डस्ट्री में भी उनका ही बोलबाला है। वे किसी को भी मौत के घाट उतार सकते हैं। उनके इशारे पर ही फिल्में बनती हैं। अभिनेता या अभिनेत्री कौन हो, वे ही निश्चित करते हैं। कहानी क्या हो यह भी वे ही देखते हैं। अनेक ऐसी फिल्में आती रहीं जिनमें तस्करी या अवैध धन्धा करने वालों को तिलकधारी व हिन्दू धर्म में आस्थावान् दिखाया गया। धर्माचार्यों को लम्पट या बुरे कर्म करने वाला दिखाया गया। जिससे समाज में हिन्दू धर्म के प्रति अनास्था एवं घृणा पैदा हो जाये।

बड़े—बड़े उद्योगपति एवं राजनेता तक अन्डरवर्ल्ड से दोस्ती के संबन्ध रखने पर विवश हो जाते हैं। भारत सरकार मानो पंगु सी बन चुकी है। यदि कभी प्रसाशन कोई कार्यवाही करे भी तो मानवधिकार आयोग अड़ंगे लगा देता है। इसी कारण पंजाब के ऐसे सौ से अधिक पुलिस अफसर जेलों की हवा खा रहे हैं या मुकदमों में पेशियां भुगत रहे हैं, जिन्होंने पंजाब को उग्रवाद की चपेट से बचाया।

पता नहीं सरकार क्यों ऐसे लोगों को बढ़ावा देती है जिनकी सहानुभूति पाकिस्तानी तत्वों से अधिक है। इसी कारण सीमाएं असुरक्षित होती जा रही हैं। सीमा पार से घुसपैठ बढ़ती जा रही है। मै समझता हूं कि इसमें भारत की देशभक्त जनता भी दोषी है जो चुपचाप सब कुछ होने दे रही है। यदि जनता ऐसे नेताओं को चुनावों में न जिताए जो पाकिस्तानी तत्वों के प्रति नरम हैं, तो सब कुछ ठीक हो जाये।

(14/09/2003)

## "बहुजन अहिताय"

## हिन्दू का माल, मुसलमान मालामाल

"देश के संसाधनों पर पहला अधिकार मुसलमानों का है" प्रधानमन्त्री की यह घोषणा स्वयं ही सिद्ध कर देती है कि वर्तमान कांग्रेसी सरकार हर प्रकार से हिन्दुओं का हक छीन कर मुसलमानों को शक्तिशाली बना देना चाहती है। इस सरकार द्वारा घोर हिन्दूविरोधी और मुस्लिम–भक्त व्यक्ति, जस्टिस सच्चर के नेतृत्व में एक आयोग गठित कर ऐसी निराधार और मनगढ़न्त रिपोर्ट तैयार करवायी गयी जिसमें मुसलमानों को अशिक्षित, बेरोजगार, गरीब और पिछड़ा दिखाया गया है। जबकि देश में गरीबी रेखा के नीचे, शिक्षा–संसाधनों से वंचित, सबसे अधिक पिछड़े और बेरोजगार लोगों में हिन्दू अधिक हैं, जिनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा।

मुसलमानों के उत्कर्ष के मार्ग खोजने के लिए मुस्लिम सांसदों की बैठकें बुलायी जा रही हैं और हिन्दू सांसद मूक दर्शक बने रहते हैं। प्रधानमन्त्री ने सरकार के सहयोगी दलों को आश्वासन दिया है कि मुसलमानों के विकास के लिए विस्तृत योजना बनायी जायेगी। इस हेतु उन्होंने अपना पन्द्रह सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया है जिसमें उनके जन्म से से लेकर सारे जीवन तक आर्थिक सहायता का संकल्प दिखायी देता है।

सरकार हिन्दुओं को परिवार–नियोजन की शिक्षा देती है और 8–8, 10–10 बच्चे पैदा करने वाली गर्भवती मुस्लिम महिलाओं के लिए 'आंगनवाड़ी केन्द्रों' कि माध्यम से विशेष स्वास्थ्य–सेवाएं प्रदान करती है। ऐसे गावों को विशेष रूप से चुना गया है जहां मुस्लिम बच्चों की संख्या अधिक है ताकि उनके विकास की विशेष योजनाएं चलायी जा सकें। 'सर्वशिक्षा अभियान' और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों के माध्यम से भी उन्हें ही अधिक से अधिक लाभ पहुंचाया जा रहा है। उनके लिए उर्दू अध्यापकों की नियुक्ति की गयी है।

सरकार यह जानती है कि मदरसों में कट्टरवाद की घुट्टी पिलायी जाती है। वहीं से आतंकवाद पनपता है, फिर भी आधुनिकीकरण के नाम पर उन्हें भरपूर आर्थिक सहायता दी जा रही हैं। मुस्लिम विद्यार्थियों को छात्रवृति के नाम पर करोड़ों रूपया बांटा जा रहा है।

उड़ीसा, बिहार जैसे विभिन्न प्रान्तों में हिन्दू गरीबी रेखा के नीचे हैं। परन्तु गरीबी से लड़ने वाली सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ मुसलमानों को ही पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। उन्हीं के लिए संसाधन जुटाये जा रहे हैं। उन्हें विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में निपुण बनाने के लिए आई.टी.आई. खोले जा रहे हैं। गरीब और पिछड़े आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले हिन्दुओं को इनका किसी प्रकार से लाभ नहीं मिल पा रहा है।

सरकार द्वारा बैंकों को आदेश दिया गया है कि ऋण देते समय मुसलमानों का विशेष ध्यान रखा जाये। सरकार जानती है कि अनेक बार सेना और पुलिस में मुसलमान देशद्रोही कार्यों में लिप्त पाये गये हैं फिर भी राज्य और केन्द्र, दोनों स्तरों पर आदेश दिया गया है कि इन सेवाओं में उनकी भर्ती का विशेष ध्यान रखा जाये। रेलवे, बैंक तथा अन्य सेवाओं में भी अधिक स्थान मुसलमानों को देने का सरकार ने निश्चय किया है। सरकारी तथा गैर–सरकारी दोनों प्रकार के कोचिंग सैन्टर्स से भी उन्ही की सहायता की जा रही है।

ग्रामीण अंचलों में रहने वाले गरीब मुसलमानों को 'इन्दिरा आवास योजना' के माध्यम से लाभान्वित किया जा रहा है। झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले मुसलमानों के लिए भी विशेष योजनाएं प्रस्तुत हैं। वित्त मंत्रालय ने तो सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित मुसलमानों के लिए एक विशेष निधि बनाने के लिए सुझाव भी दिया है।

आज हर हिन्दू का यह परम कर्तव्य ही नहीं बल्कि धर्म है कि वह सरकार की हिन्दू–विरोधी नीतियों पर रोक लगाने का हर संभव प्रयत्न करे। अब समय आ चुका है जब हिन्दुओं को आन्दोलन करना होगा, नहीं तो ऐसे ही वोटों के भूखे ये स्वार्थी नेता हिन्दुओं का गला घोंटते चले जायेंगे और मुसलमानों को शक्तिशाली बनाते रहेंगे, देशद्रोही शक्तियां पनपती रहेंगी, हिन्दू नवयुवकों का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा, देश के अनेक टुकड़े हो जायेंगे, सन् 47–48 का

इतिहास दोहराया जायेगा और देशभक्त देखते रह जायेंगे। अतः हिन्दुओं! संगठित हो, जागो, उठो और क्रान्ति का शंखनाद फूंको, निःसंदेह शक्ति तुम्हारे पास है।

(07/11/2007)

90 करोड़ का विराट हिन्दू समाज सोया पड़ा है। शत्रु हमारे ही घर में घुस कर हमें मार रहा है। डॉ0 हेडगेवार और वीर सावरकर के हिन्दू राष्ट्रवाद के सिद्धान्त छोड़ने का दण्ड ही जाति को भुगतना पड़ रहा है। नेता मुस्लिम तुष्टीकरण की घातक नीति में देश को सुला रहे है। भ्रष्टाचार के कारण सुरक्षा खतरे में है और लाखों लोग, जो हमारे संगठनों से जुड़े हुए अपना जीवन होम कर रहे हैं, उन्हें पता ही नहीं कि ऊपर क्या हो रहा है। संगठन–भक्ति, नेता–भक्ति के नाम से उन्हें अन्धेरे में रहना पड़ रहा है।

अभी हम भारत में 80 प्रतिशत हैं। यदि ''हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व'' के आधारभूत सिद्धान्त को अंगीकार कर राष्ट्र–रक्षा के लिये योजना बनाएं, हिन्दुत्व का आन्दोलन सारे भारत में चला दें तो एक ऐसी विराट् शक्ति भारत में उठेगी कि संसार भर में उस का तेज दिखाई देने लगेगा। एक छोटा सा राम मंदिर का आन्दोलन चलाया तो उसी से विरोधी काँपने लगे थे। संसार में हमारी राष्ट्रीय नींव सर्वाधिक दृढ़ है। युगों से हमारा राष्ट्रीय जीवन चला आ रहा है, जब कि सभी इस्लामी देशों का खण्डित राष्ट्रीय आधार है। ईरान, ईराक, इजिप्ट आदि देशों पर अरब आक्रमणों से उन के पुरखों के धर्म, संस्कृति का विध्वंस हुआ और अरब शत्रुओं का धर्म, संस्कृति उनकी राष्ट्रीय जीवनधारा बनी, जो कभी भी टूट सकती है। इसी प्रकार यूनान आदि देशों में क्रिश्चियन चर्च ने उनकी भाषा–संस्कृति नष्ट करके विदेशी महापुरूषों की धर्म–संस्कृति उन्हें दी। इन सभी देशों की राष्ट्रीयता की नींव कच्ची है। हिन्दू शक्ति जहाँ अपने राष्ट्र की रक्षा करेगी वहीं संसार में दानवी मूल्यों का भी दलन करेगी। हमारे ऋषि–मुनियों ने यदि इतना ऊँचा तत्वज्ञान दिया था तो अब भी हम वैसा ही कर सकते हैं। केवल दृष्टि देने की, संकल्प जगाने की आवश्यकता है।

(07/11/2007)

## इन मनसूबों से सावधान

भारत में ईसाई मिशनरियां अनेक प्रकार से लोगों को ईसाई बनाने पर लगी हुई हैं। कुछ वर्ष पूर्व जब पोप जॉन पॉल द्वितीय भारत आये थे तो उन्होनें खुल्लमखुल्ला घोषणा की थी कि वे अगली शताब्दी में संपूर्ण एशिया को ईसाई बना कर छोड़ेंगे। अर्थात् भारत की धरती पर ही भारतीयों को चेतावनी दे दी गई कि भारतीयों को अपना धर्म छोड़ना पड़ेगा और ईसाई धर्म अपनाना होगा। इसी लिये पोप महोदय ने अब कहा है कि भारत के कई राज्यों में जो धर्मान्तरण–विरोधी कानून बने हैं वे ठीक नहीं हैं। पोप महोदय भारत के धर्मान्तरण–विरोधी कानूनों का विरोध इसी लिये कर रहे हैं, क्योंकि ऐसे कानूनों से ईसाइयों के धर्मान्तरण के प्रयासों में बाधा पड़ती है।

पोप जॉन पॉल द्वितीय तथा उनके द्वारा भारत को ईसाई देश बनाने के लिये नियुक्त अनेक बिशप और पादरी नागालैण्ड और मिजोरम की भान्ति सारे भारत को जीत लेना चाहते हैं। भारतीयों को भी चाहिये कि वे पोप के मनसूबों को सफल न होने दें। भारतीय धर्म–संस्कृति, भाषा और भारतीय संस्कारों की रक्षा करने के लिये तन मन धन से आगे आएं और पोप साहेब के भारत–विजय के सपनों को चूर–चूर कर दें। (28/05/2008)

## ईर्ष्या द्वेष की यह आग

अपनी महत्वाकांक्षाएं पूरी न होने पर व्यक्ति ईर्ष्या एवं द्वेष की आग में कितनी दूर जा सकता है इसका उदाहरण गुजरात के पुराने स्वयंसेवक श्री शंकर सिंह बघेला है। कुछ वर्ष पहले गुजरात में भाजपा का बहुमत हो जाने पर स्वाभाविक रूप से बघेला भी मुख्यमन्त्री पद के इच्छुक थे, किन्तु

भाजपा नेतृत्व ने उनकी बजाय श्री केशुभाई पटेल को मुख्यमन्त्री बनाना अधिक उचित समझा। बस यहीं से आरंभ हो गयी असन्तोष एवं ईर्ष्या से पागल बने बघेला साहेब के विद्रोह की यात्रा। वे भाजपा एवं संघ परिवार के विरोध में कुछ भी करने को तैयार हो गये। कांग्रेस के हाथों में खेलने से भी उन्हें संकोच नहीं हुआ। चतुर कांग्रेस ने उन्हें प्रदेश का अध्यक्ष बनाकर इस पुराने भाजपाई से ही भाजपा विरोध करवाना हितकर समझा। जो विदेशी शक्तियां भारत को निर्बल करना तथा भारत में वर्ग–विद्वेष पैदा करके अपना उल्लू सीधा करना चाहती हैं उन्हें भी श्री बघेला में अपने काम का आदमी नजर आया। ऐसे ही अमेरिका के 'सेंटर फार स्ट्रटीजिक एण्ड इन्टरनेशनल स्टडीज़' ;ब्मदजमत वित प्दजमतदंजपवदंस ैजनकपमेद्ध ने पिछले दिनों श्री वघेला को अमरिका के मुख्य नगरों––न्यूयार्क, न्यूजर्सी, लासएंजलेस, शिकागो एवं वाशिंगटन आदि में बुलाकर वहां बसे भारतीयों में उनके भाषण करवाए। श्री बघेला ने अपने भाषणों में भाजपा, विश्व हिन्दू परिषद और नरेन्द्र मोदी के विरूद्ध जमकर जहर उगला। और तो और उन्होंने यह भी समझाने का प्रयास किया कि गोधरा में जो रेल के डिब्बे में आग लगा का रामसेवकों को जिन्दा जलाया गया था वह भी भाजपा ने ही चुनाव जीतने के लिये करवाया लगता है। उन्होनें नरेन्द्र मोदी को गुजरात का हिटलर बताया और कहा कि वास्तव में संघ परिवार ही सांप्रदायिक दंगे करवा रहा है। और अमेरिका में बसे भारतीयों को इनकी सहायता नहीं करनी चाहिये। कोई आश्चर्य नहीं कि पाकिस्तान भी उनकी यात्रा को सफल बनाने के लिये सहायक होता रहे। पता नहीं और कितने बघेला विदेशी मिशनरियों तथा अन्य भारत–विरोधी तत्वों के हाथों में खेल रहे होंगे ओर भारत को भीतर से कमजोर करने में सहायक हो रहे होंगे। (29/05/2008)

# परिशिष्ट

---

## साम्यवादी चीन में भारतीय सांस्कृतिक चेतना

**—विवेकशील**

छाइन नगर में 629 ई. की शरद ऋतु को एक रात ह्यून त्साङ् को दिव्य स्वप्न हुआ—विशाल सागर के मध्य स्वर्णनिर्मित पर्वतराज सुमेरु के दर्शन किये! अद्भुत सौंदर्य से आकर्षित हो ऊपर चढ़ने की इच्छा हुई, तो सागर पार करने के लिये नौका न थी। पैदल चलने लगे तो पहले ही पग के नीचे सागर के गर्भ से पाषाण—कमल प्रस्फुटित हुआ। अगला पग बढ़ाने पर पुनः ऐसा हुआ। इस प्रकार समुद्र पार करने पर पर्वत के नीचे पहुंच गये। चढ़ने लगे तो फिसल कर गिर पड़े। बार—बार ऐसा हो रहा था। सहसा वायु का तीव्र वेग आया और उन्हें उड़ा कर पर्वत के शिखर पर ले गया। वहां पहुंच कर उन्होंने सुमेरु की स्वर्णिम आभा का अलौकिक आनंद लिया।

प्रातः उठ कर ह्यून त्साङ् ने भारत—यात्रा का निश्चय किया। यातायात के कोई साधन न थे। मार्ग संकटों से भरा था। मित्रों व संबंधियों ने रोकने का बहुत प्रयत्न किया। किंतु जिस भारत की सांस्कृतिक कीर्ति एशिया के अनेक देशों में प्रसृत हुई, जिस भारतीय साहित्य के सौंदर्य ने संसार के मानस को चमत्कृत कर दिया, तथा जिसे चीन की भूमि पर ले जाने का सौभग्य ई—चिङ् जैसे महामनीषियों को मिला, उसी का आकर्षण था कि—इस पश्चिमी—स्वर्ग (चीनी में थ्येन—चु) की ओर ह्यून त्साङ् के पग रुक न सके।

ज्ञान की जिस गवेषणा में ह्यून त्साङ् भारत आये उसकी परिणति के दर्शन आज चीन की भूमि पर होते हैं—जहां एक सहस्र वर्ष तक संस्कृत ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद होता रहा। जहां विश्वप्रसिद्ध गोबी मरुस्थल में संसार की श्रेष्ठतम कलाकृतियों तुन ह्वाङ् की गुहाओं की संरचना हुई। मुझे उन तीर्थों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जहां चीनी कलाकारों की तूलिका की सौंदर्य—साधना और विद्वानों की साहित्य—सर्जना पिछले 1500 वर्षों में पुष्पित, पल्लवित हुई। चीनी बौद्ध संस्था के निमंत्रण पर प्रसिद्ध विद्वान एवं भू.पू. संसदसदस्य डॉ लोकेशचन्द्र, उनके पुत्र प्रणवचंद और लेखक बैंकाक (थाइलैंड) व हांगकांग होते हुए चीन पहुंचे तथा अगले ही दिन पेइचिङ (चीन की राजधानी जिसे हम बेइचिङ के नाम से जानते रहे हैं) के लिए चले।

**पेइचिङ के विशाल मन्दिर**

पेइचिङ प्राचीन समय से चीन की राजधानी रही है। अतः राजधानी का वैभव भी इस नगर में दिखाई देता है। सन् 1224 में मंगोल सम्राट चिङि गसखान ने (पेइचिङ को अपने) अधिकार में कर लिया। सन् 1280 में चिङि गसखान के वंशज कुबिलाई खान चीन के सम्राट हुए और इन्होंने युआन् वंश की नींव डाली जो कि सन् 1368 तक चला। राजधानी होने से पेइचिङ धर्म और संस्कृति का भी केन्द्र रहा है। समय—समय पर यहां मंदिरों का निर्माण और संस्कृत ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद होता रहा है। बीसवीं शती के आरंभ तक यहां बहुत मंदिर थे। किंतु अब कुछ ही शेष बचे हैं। जिनमें से युङ—हो—कुई विशालतम है। इसका निर्माण छिंग काल के सम्राट काङ्शी ने 1694 में राजप्रासाद के रूप में किया था। सम्राट छेन् लुङ के राज्य के नवें वर्ष 1744 ई. में इसे मंदिर का रूप दिया गया। युङ—हो—कुङ में 18 भवन हैं। मुख्य भवन व उसके दोनों ओर दो भवन। ऐसी छह पंक्तियों की श्रृंखला है। मुख्य भवन में मैत्रेय बुद्ध की ऊंची प्रतिमा है। इस मंदिर की विशालता का अनुमान प्रवेशद्वार को देख कर ही हो जाता था। कुछ दूर से देखने पर एक के पीछे एक भवनों की श्रृंखला अद्भुत, सुंदर और आकर्षक प्रतीत होती थी।

हमें बताया गया कि प्रातः के समय यहां श्रद्धालु भक्तजन आते हैं और धूप—अगरबत्ती जलाते हैं। परंतु उस समय कोई भक्त नहीं था, केवल कुछ विदेशी पर्यटक दिखाई दे रहे थे।

इसके अतिरिक्त दो अन्य मंदिर क्वान्—ची और फा—युआन् देखे। क्वान्—ची मंदिर चीन की बौद्ध संस्था का मुख्यालय है। यहां से संपूर्ण चीन के मंदिरों की सुरक्षा का प्रबंध होता है।

फा–युआन् मंदिर भी इतना ही विशाल है, यह थांग् काल (618–904 ई.) में बना और छिंग (1114–1232 ई.) एवं मिंग् (1368–1647 ई.) काल में इसका पुनरुद्धार हुआ। मिंग् काल के मंजुश्री और संमतभद्र बोधिसत्त्व सुरक्षित हैं। दोनों ओर 18 अर्हतों की मनुष्याकार लकड़ी की प्रतिमाएं हैं, पांचवी से सोलहवीं शती तक की भगवान बुद्ध की मूर्तियां हैं। इस मंदिर में नये भिक्षुओं का प्रशिक्षण होता है। आजकल 45 छात्र दीक्षा ले रहे हैं। अभी तक 50 के लगभग छात्र दीक्षित होकर विभिन्न मंदिरों में कार्य कर रहे हैं। 1982 में चार छात्र अध्ययन हेतु जापान गये। जहां छात्र प्रातः बौद्ध सूत्रों का पाठ करते हैं और सायंकाल में समाधि का अभ्यास करते हैं। ये लोग कुछ वर्ष तक पाली भाषा भी पढ़ते थे, अब केवल जापानी और अंग्रेजी दो ही विदेशी भाषाएं पढ़ते हैं।

पेइचिङ से कुछ दूर 9 गुहाओं में 16000 शिलाओं पर संस्कृत के मंत्र उत्कीर्ण हैं। यह कार्य 1000 वर्षों के सतत परिश्रम का परिणाम है। फा–युआन् विहार में इन शिलाओं की छापे भी उपलब्ध हैं।

यह देख कर कष्ट होता था कि मंदिर सूने पड़े हैं। कभी भक्तों की भीड़ रहती होगी। आज यहां मूर्तियां खड़ी हैं, भवन खड़े हैं, पर कोई पूजा करने वाला नहीं है। ये मूक खड़े कथा सुना रहे हैं अपने गौरवशाली इतिहास की–जब चारों ओर धर्म का राज्य था, जब यहां सैंकड़ों भिक्षु निवास किया करते थे और मंत्रों व धारणियों का पाठ होता था, आज बड़े–बड़े ढोल के समान वाद्ययंत्रों की ध्वनि भी शांत है।

**पांछेन लामा से भेंट**

पेइचिंङ मे हमारी भेंट पांछेन लामा से हुई। हमें चीन के संसद भवन में ले जाया गया। यहां पांछेन लामा हमारी प्रतीक्षा में थे। लगभग एक घंटा बात हुई, जिसका समाचार आकाशवाणी और दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ। पांछेन ने भारत आने की इच्छा प्रकट की और भारत के प्रति अगाध प्रेम और श्रद्धा प्रदर्शित की। उन्होंने बौद्ध पुस्तकों को प्रकाशित करने के हमारे प्रस्ताव को स्वीकार किया और कहा कि चीनी–बौद्ध संस्था अब इस कार्य में अग्रसर होगी।

चीन में हम जितने भी बड़े अधिकारियों से मिले वे सभी भारत से संबंध बढ़ाना चाहते थे। चीन के लोगों को भारतभूमि से अनन्य प्रेम है। वे भगवान बुद्ध के जन्मस्थान के दर्शन कर पुण्य–लाभ प्राप्त करना चाहते हैं।

**महाभित्ति पर संस्कृत शिलालेख**

चीन का इतिहास साक्षी है कि वे घोर परिश्रमी हैं। छिन वंश में बनी चीन की महाभित्ति इसका प्रमाण है। 6000 कि.मी. लंबी इस महाभित्ति का निर्माण कर चीन ने स्वंय को उत्तरी आक्रमणकारियों से सुरक्षित कर लिया, जिससे इनका प्रभाव पश्चिम की ओर पड़ने लगा। भारत को भी हूणों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। पेइचिंङ से 80 कि.मी. दूर चीन की महाभित्ति है। यहां इसका द्वार चू–घुङ–क्वान् है। इस पर चार लोकपाल हैं। इनके मध्य दो संस्कृत शिलालेख उष्णीषविजया धारणी और तथागतहृदय छह भाषाओं में उत्कीर्ण हैं। द्वार के ऊपर नाग–भक्षण करते गरुड़ बने हैं। इस द्वार का निर्माण चौदहवीं शती में हुआ। भारत से सहस्रों मील दूर संस्कृत मंत्र खुदे देख एक भारतीय को किस सुख की अनुभूति होगी–इसकी कल्पना असंभव है।

चीन जाने पर हमारा मुख्य आकर्षण था–तुन् ह्वांड की मोगाओक गुहाएं। हमारी इच्छा तो लुंड मन और युंङ कान गुहाएं देखने की भी थी, परंतु समय के सीमित होने से यह संभव नहीं था। पेइचिंङ से तुन छाङ् सात घंटे विमान से और 33 घंटे रेल तथा गाड़ियों से यात्रा कर के तीसरे दिन पहुंचे। मार्ग में लान चाओ रुके। यह नगर पीत नदी (ह्वाई हो) के तट पर बसा है। सारा मार्ग मरु था। विश्वप्रसिद्ध गोबी मरुस्थल को पारकर हम तुन ह्वाङ् पहुंचे। मार्ग बहुत धूल भरा था। चारों ओर रेत के पर्वत दिखाई दे रहे थे। चीनी लोगों ने अनंत परिश्रम से पूरे गोबी मरुस्थल मे पेड़–पौधे उगाये है। इसे हरिभित्ति (ग्रीन वान आफॅ चाइना) कहा जाता है। भारत को इसका अनुकरण करना चाहिए।

तुन ह्वाङ् की गुहाएं आज संसार की महानतम कलाकृति हैं। इनका निर्माण चौथी शती से उन्नीसवीं शती तक 1500 वर्षों में हुआ। रेत और छोटे–छोटे पत्थरों के पर्वत में गुहाएं काट कर

उन पर मिट्टी का लेप कर भित्तिचित्र बनाये गये हैं। 492 गुहाएं आज भी सुरक्षित हैं। मुख्य गुहा 16 संख्या वाली है। यह नौ भूमि ऊंची है और इसमें सुंङ् काल (930–1126 ई.) में बनी मैत्रेय की मूर्ति है। चारों ओर जातक कथाओं पर आधारित भित्तिचित्र हैं। मात्र 4 गुहाएं प्रतिवर्ष दर्शकों के लिए खोली जाती हैं। गुहाओं की सुरक्षा और दीर्घजीवन के लिए यह आवश्यक भी है। यहां दर्शकों की भीड़ रहती है। हमारे लिए गुहाएं देखने की विशेष अनुमति ली गयी थी, अतः हम लगभग 50 गुहाएं देख पाये। यद्यपि बहुत सी मूर्तियां सांस्कृतिक क्रांति में नष्ट कर दी गयी थीं, तथापि 2000 के लगभग मूर्तियां आज भी यहां विद्यमान हैं। आजकल गुहाओं की सुरक्षा का कार्य पर्याप्त तत्परता से किया जाता है। गुहाओं में चित्र लेना मना है।

जापान से तून् ह्वाङ पर पांच भागों में एक सचित्र पुस्तक प्रकाशित हुई है। अब चीन में भी बौद्ध पुस्तकों का प्रकाशन–कार्य होने लगा है। पेइचिंङ् की नैशनेलिटी लाइब्रेरी में तिब्बत से आयी पुस्तकें हैं। जहां 108 भागों में सुवर्णाक्षरों में लिखित कंजूर और 226 भागों में तंजूर (त्रिपिटक) भी हैं। यहीं पर नेपाल से ग्यारहवीं शती में तिब्बत आयी संस्कृत में सद्धर्मपुंडरीक सूत्र की पांडुलिपि हमने देखी। चीन ने उस पांडुपिलि को उसी आकार में प्रकाशित किया है। मूल्य 2000 अमरीकी डॉलर। जापान ने एक साथ 100 प्रतियां ली। भारतीय दूतावास अभी अभी एक प्रति लेने के विषय में विचार कर रहा था।

**चीनी आकाशवाणी पर भारतीय संगीत**

तुन हाङ् देखने के पश्चात् हम शिआन नगर आने के लिए ट्रेन की प्रतिक्षा में खड़े थे। यहां उल्लेखनीय है कि चीन में ट्रेन सदा समय पर चलती है और रेल सेवा बहुत उत्तम है। अभी ट्रेन आने में 10 मिनट शेष थे। रेलवे स्टेशन पर संगीत चल रहा था। अचानक भारतीय चित्रपट 'नूरी' का गीत चीन की आकाशवाणी से सुन कर हम अवाक् रह गये। ज्ञात हुआ कि चीन में तीन चैनल हैं। एक पर भारतीय संगीत प्रसारित होता है। इसके पश्चात् भी दो–तीन बार भारतीय संगीत चीन की आकाशवाणी और दूरदर्शन से सुनने को मिला। भारतीय संगीत से चीन की जनता को विशेष प्रेम है। हिन्दी चित्रपट भी यहां प्रचलित हैं। कुछ नये गीत ये लोग गुनगुनाते भी हैं। चीन में भारतीय संगीत की परंपरा बहुत प्राचीन है। 140 ईसा पूर्व चीनी राजदूत चाङ् त्वान भारत से महातुखारराग ले गये, इसके आधार पर उन्होंने अपनी सेना के 28 गीत बनाये।

चीन में कहीं–कहीं पर सांस्कृतिक क्रांति के समय नष्ट किये गये मंदिरों में सुधार–कार्य चल रहा है। यद्यपि यह कार्य कम मात्रा में है, तथापि इस बात का परिचायक है कि चीन में भी धर्म की कुछ स्थिति है। क्रान्चोउ नगर के षड्बोधिवृक्ष मंदिर में तो विशालाकार मूर्तियों का निर्माण भी हो रहा था। सुधार का कार्य तो प्रायः सभी मंदिरों में चल रहा था, परंतु शिपआन् नगर में एक नये विहार का निर्माण हो रहा था (जिसका उल्लेख आगे करेंगे)। शाङ्हाई नगर के एक मंदिर में हम सौ के लगभग भिक्षुओं के मुख से 'नमो अमिताभ' का पाठ सुन मंत्रमुग्ध हो गये। यहां भी नयी मूर्तियों का निर्माण हो रहा था।

रामायण केवल दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में ही प्रचालित नहीं रही, अपितु
चीन, तिब्बत, मंगोलिया आदि देशों में भी रामायण के अनुवाद हुए। शिआन नगर के नागपुष्पविहार (लुङ् ह्वा स्स) में 251 ईस्वी में खाङ् सङ् हुह्वी नामक विद्वान ने संस्कृत रामायण का चीनी भाषा में अनुवाद किया। 'षट्पारमितासंग्रह' में इस रामायण का संक्षेप उपलब्ध है।

**ह्यून त्साङ् की समाधि**

शिआन नगर (प्राचीन नाम छांगान) आरंभ से ही धर्म व संस्कृति का केन्द्र रहा है। यह चीन की पूर्वी, और लोयाङ् पश्चिमी राजधानी थी। चीन के तीनों प्रसिद्ध भारतयात्री फाह्यान, ह्यून त्साङ् और इचिंग शिआन् नगर के थे। ह्यून त्साङ् जब भारत से लौटे तो उन्होंने साथ लाये संस्कृत ग्रंथों को रखने हेतु बृहत् स्तूप का निर्माण किया, जो आज शिआन् नगर का प्रतीक है। यहां से कुछ दूर ह्यून त्साङ् की समाधि है। जिस पर राजा द्वारा ह्यून त्साङ् की प्रशस्ति में लिखा शिलालेख है। थाङ् वंश में अनेक भारतीय आचार्य यहां रह कर संस्कृत ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद करते रहे। प्रथम भारतीय आचार्य काश्यपमातंग और धर्मरक्ष, जो कि प्रथम शती में चीन गये थे, लोयाङ्

नगर में रह कर संस्कृत ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद करते रहे और उन्होंने 42 बौद्ध सूत्रों का चीनी में अनुवाद किया।

जापान के आचार्य कोबोदाईशी (774–835 ई.) नवीं शती में बौद्ध धर्म के अध्ययन हेतु जापान से चीन गये। इन्होंने शिआन् नगर में रहकर विद्योपार्जन किया व जापान लौटने पर शिङ्गोन् संप्रदाय का सूत्रपात किया। इन्होंने ही संस्कृत वर्णमाला के आधार पर जापान की लिपि हीरागाना और काजाकाना का निर्माण किया। जहां कोगोटाईशी रहे, वहां जापानियों ने एक शांत स्तूप का निर्माण किया है। कोबोदाईशी की 1150 वीं पुण्यतिथि पर यहाँ विशाल सम्मेलन आयोजित हो रहा है। जिसमें सहस्रों जापानी, चीनी व अन्य देशों के विद्वान व भिक्षु भाग लेंगे। इस हेतु जापान द्वारा यहाँ एक विहार का निर्माण को रहा है।

आज साम्यवादी चीन एक नये पथ की ओर अग्रसर है। औद्योगिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में वह पग बढ़ा रहा है। चीन का संबंध आज जापान से उद्योग और धर्म दोनों का है। ईसा की छठी शती में चीन से बौद्ध सूत्र जापान गये थे। आज 1400 वर्ष पश्चात् जापान चीन के लिए धर्म और संस्कृति का दूत बनकर आया है।

सांस्कृतिक क्रांति के समय चीन में मन्दिरों को बहुत नष्ट किया गया। परन्तु आज उन्हें इसका दुख है और वे शेष बचे मंदिरों की सुरक्षा तथा नये मंदिरों के निर्माण द्वारा पश्चात्ताप कर रहे हैं। भारत और चीन के संबंध बढ़ने चाहिएं। ये संबंध चीन में आ रही सांस्कृतिक चेतना को बल प्रदान करेंगे और चीन में एक बार फिर धर्म को वही उच्च स्थान प्राप्त होगा जो अतीत में लुप्त हो गया था। भारत–चीन–संबंध न केवल सांस्कृतिक दृष्टि से अपितु राजनीतिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

———————

# बर्बर बाबर

**चिरंजीव शास्त्री**
**डॉ. कैलाशचन्द्र**
**विवेकशील**

बाबर का जन्म 14 फरवरी 1483 को आमू नदी के उत्तरी भाग की एक छोटी सी रियासत फरगना के सरदार उमरशेख मिर्जा के घर हुआ था। फरगना का वही भू–भाग अब कोकन्द कहलाता है, जो रूसी तुर्किस्तान में है। बाबर के मन में अपने पिता के प्रति कितना आदरभाव था यह उसके शब्दों से ही प्रकट होता है–

'वह एक विजिगीषु योद्धा था, उस पर बुद्धि की कृपा कभी नहीं हुईय और वह अन्न और फलों की उस उपजाऊ घाटी में ही बने रहने में सन्तुष्ट था जिस घाटी में एक व्यक्ति अपने परिश्रम से चार लोगों का पेट भर सकता था।'

'वह काफी मोटा था। उसका कोट खूब तंग हुआ करता था। क्योंकि उसे खाते रहने की आदत थी, इसलिए वह कोट की रस्सियाँ कस कर बाँधे रखता था। परन्तु जैसे ही वह अँगड़ाई लेता, रस्सियाँ अक्सर टूट जाया करतीं।'

'जब शेख मिर्जा और भी मोटा हो गया तो वह पुराने किले अक्शी के महल में ही सीमित हो गया और अपने प्रिय कबूतरों के साथ समय बिताने लगा। उसका कबूतरखाना खड़ी चट्टान जैसी ढालुआं बाहरी दीवार पर बना हुआ था। एक दिन वहाँ खड़ा जब वह अपने प्यारे कबूतरों को दुलार, पुचकार और चुगा रहा था, दीवार उसके भार से चरमराने लगी और नीचे आ गिरी। उमर शेख अपने प्यारे कबूतरों और कबूतरखाने के साथ ही सिर के बल नीचे गिरा और दूसरे लोक को उड़ गया।'

**हार, मार, दुत्कार**

साढ़े 11 वर्ष की आयु में बाबर फरगना का सरदार बना। वह उस घाटी में ही बने रहने को तैयार नहीं था, अतः उसने समरकंद नगर पर आक्रमण कर उसे जीत लिया।

किन्तु उस की यह पहली विजय केवल तीन मास तक ही रही। उसे फरगना की अपनी गद्दी बचाने के लिए वापिस भागना पड़ा।

कुछ समय पश्चात उसने फिर समरकंद पर आक्रमण किया और कई मास के घेरे के पश्चात उस पर कब्जा कर लिया। स्वाभाविक रूप से उसके सैनिक उस नगर को लूटना चाहते थे, पर वह पहले ही इतना उजड़ा तथा तहस–नहस हो चुका था कि वे उसे लूटते ही क्या? लूट के लालच से उसके साथ जुटी सेना लूट का अवसर न मिलने पर उसका साथ छोड़ कर भागने लगी और समरकंद गंवा कर वह फिर घर की तरफ लौटा तो उसे पता चला कि फरगना भी उसके हाथ से निकल चुका था। उसके छोटे भाई ने उस पर कब्जा जमा लिया था।

भयंकर जाड़े के दिन उसे एक छोटे से किले खुजंद में बिताने पड़े। वह रोया और खूब रोया।

घाव, बीमारी, कंपाती ठंडी हवाएँ, केवल गुरिल्ला लड़ाई लड़ना सम्भव। बार–बार पराजय, बार–बार भागना, न भोजन, न जल, न टैंट, न घोड़े।

उसने अपना नाम बाबर (शेर) रख लिया था। वह कितना शेरदिल था इसका परिचय निम्नलिखित घटना से हो जायेगा–

उसने तीसरी बार समरकंद तो जीत तो लिया, पर इस बार उसका पाला एक ऐसे आदमी से पड़ा जो अगले दस साल तक उसे रुलाता रहा। वह था एक कबीले का नेता–शैबानी खान।

उसने समरकंद को निर्दयता से घेर लिया। खेतों की कटाई का मौसम था। पर कोई ताजे अन्न का एक दाना भी अपने घर न ला सका। लोगों को कुत्तों और गंधों के मांस पर गुजारा करना पड़ा। घोड़ों को शहतूत के पत्तों और पानी में भिगोई छालों को खिला–खिला कर जिन्दा रखा जा सका। बाबर के अनुयायी दीवारों से कूद–कूद कर उसका साथ छोड़–छोड़ कर भागने लगे।

वह शैबानी खान से सन्धि के लिये उसके आगे गिड़गिड़ाया, पर उसने एक शर्मनाक शर्त रखी—'अपनी बहन खानजादा की शादी मेरे साथ करो, तभी शान्ति और सन्धि हो सकेगी।'

बाबर को मानना पड़ा। बेगम खान को देनी पड़ी। तब कहीं वह सिर्फ दो सौ अनुयायियों के साथ समरकंद से बाहर आ सका—नंगे पाँव, कंधों पर झूलते चीथड़े, न धनुष—बाण, न भाले, न तलवार। चल पड़ा। किस दिशा में?—यह उसने लिखा नहीं।

बाबर के संस्मरण इस विषय में चुप हैं, क्योंकि शायद यह उसके जीवन का ऐसा लज्जाजनक कालखंड था जिसके विषय में लिखते हुए उसे स्वयं ही लज्जा आने लगी थी।

वह फिर से फरगना को गँवा चुका था। धेला पास नहीं, सर्वत्र अपमान ही अपमान।
घायल, त्रस्त, पस्त बाबर को फिर खुजंद में ही शरण लेनी पड़ी।

**ऐयाशी**

सन् 1504 में बाबर की किस्मत पलटी। काबुल का बादशाह बाबर का चाचा था। उसकी मृत्यु होते ही उसकी गद्दी के उत्तराधिकारियों में संघर्ष होने लगा। बाबर को यह स्वर्णावसर प्रतीत हुआ। वह ताबड़तोड़ काबुल पहुँचा और उस पर अधिकार कर लिया। आने वाले वर्षों में काबुल ही उसकी राजधानी रही। वर्षों इधर—उधर धक्के खाने, मारे—मारे फिरने के बाद उसे मानों एक केन्द्र मिल गया। उसने आज्ञाएँ प्रसारित कीं ''लोग मुझे 'पादशाह' (शाहों का शाह) के नाम से सम्बोधित करें।''

पादशाह कहलाने के बाद बाबर में अपने पिता और संरक्षकों के सभी चारित्रिक दुर्गुण विकसित होने लगे। उसका पिता अतीव शराबी तथा अफीमची था, जिसके हरम में अनगिनत बेगमें तथा रखैलें थीं। उसके पिता का एक अन्य सहयोगी अली मजीद बेद कूची बाबर के ही शब्दों में 'अत्यन्त कामी, क्रूर एवं पाखंडी' था।

पैतृक खून और अभिभावकों के संस्कारों का प्रभाव बाबर पर पड़ना ही था। इसलिये गुलबदन की लेखिका रूमर गोड्डेन के शब्दों में—'नवयुवा का प्रथम प्यार एक लड़के से हुआ था। वह था काबुल के कैम्प बाजार का एक छोकरा, जिसका नाम था—बाहुरी। यह प्रेम भावुक प्रेम था।

बाबर के अनुसार—'मैं उस सुन्दर चेहरे वाले लड़के को बहुत चाहने लगा था। सच तो यह है कि मैं उसके पीछे पागल हो गया।'

उस समय तक बाबर के तीन विवाह हो चुके थे। 6 वर्ष की आयु में 5 वर्ष की, समरकंद की, आयशा के साथ उसकी शादी हुई थी, किन्तु जब वे वास्तव में विवाह करने के लिए योग्य आयु में पहुँचे तो वे एक दूसरे को इतना नापंसद करने लग गये कि बाबर की माँ को उसे जबर्दस्ती आयशा के तम्बू में भेजना पड़ता। शायद उस नापसंदगी का कारण बाबर का उपर्युक्त अप्राकृतिक प्रेम भी रहा हो।

उस समय की मुस्लिम महिलाओं के आचरण के विपरित आयशा ने जल्दी ही बाबर को छोड़ दिया।

उसकी मां ने जोर देकर बाबर की दूसरी शादी जैनब सुल्ताना बेगम के साथ कराई। किन्तु यह विवाह भी सुखद नहीं रहा। थोड़े ही समय में चेचक से उसकी मृत्यु हो गयी।

बाबर का तीसरा विवाह हिरात में एक युवा राजकुमारी से हुआ। एक पुत्री 'मासूमा' के प्रसवकाल में उसका भी देहान्त हो गया।

आयशा की एक बच्ची का देहांत इससे पहले हो चुका था।

काबुल—विजय के पश्चात् दूसरे मुस्लिम शासकों की नकल में बाबर ने अपना हरम बनाया। वह हरम कितना विशाल था इस का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि बाबर को पता भी नहीं रहता था कि उसकी पत्नियों की संख्या कितनी है। उस हरम में मारे गये सरदारों, शत्रुओं की पत्नियाँ भी शामिल कर ली जाती थीं। इन में अनेक कुमारावस्था की तथा दासियाँ एवं नर्तकियाँ भी होतीं।

बाबर की सन्तानों की विशाल संख्या का होना तो स्वाभाविक ही था। 19 सन्तानें तो सर्वविदित हैं ही। बाबरनामा भाग 2 पृष्ठ 83 पर वह लिखता है कि अनगिनत स्त्रियों के हरम में ''इस वर्ष मेरे कई बच्चे हुए—''

अपनी ऐयाशी का वर्णन बाबर ने स्थान–स्थान पर खुल कर किया है, ''अपने पुत्र के जन्मदिवस पर एक नाव पर मैंने मद्यपान का आयोजन किया। दोपहर बाद की नमाज के समय तक हम स्प्रिट पीते रहे। जब उससे मन भर गया तो हमने माजून पीना शुरू किया। बाद में पार्टी असह्य तथा अप्रिय होने पर जल्दी ही समाप्त करनी पड़ी। एक नाव में शराब का दौर फिर चला। हम काफी देर तक शराब पीते रहे और जब पूरी तरह धुत्त हो गये तो घोड़ों पर बैठकर, हाथों में मशालें लेकर, नदी की ओर से सरपट अपने शिविरों की ओर भागे। उस समय हम घोड़े से कभी एक ओर फिसल जाते कभी दूसरी ओर। मैं शराब के नशे में बुरी तरह धुत्त था और मुझे घर आकर भरपूर उल्टियाँ हुई।''

## लुटेरा

बचपन से ही बाबर और उसके साथी क्रूरकर्मा, बर्बर और लुटेरे थे। अपनी किशोरावस्था में ही उसने समरकंद पर आक्रमण का वर्णन लिखा, ''उन्होंने (मेरे अनुचरों ने) उजबेकों का हर गली–कूचे में पीछा किया और पागल कुत्तों की भाँति लाठियों और पत्थरों से उन में से चार–पांच सौ को मार गिराया।''

शुरू–शुरू में बाबर एक लुटेरा मात्र ही था और लूट के लालच में ही उसकी सेना में लुटेरे भर्ती होते थे। कई बार लूट का माल आशा से कम मिलने पर उन्हें निराशा भी होती, ''हम कोहट पर टूट पड़े। दोपहर के समय उसे खूब लूटा। अनगिनत बैलों तथा भेड़ों को साथ लिया और अनेक अफगानों को कैदी बना लिया। उनके घरों से हमें खूब अन्न–भण्डार प्राप्त हुआ। हमारे लुटेरे दल सिन्ध नदी तक पहुँच गये। पर हमारी सेना को उतनी सम्पत्ति नहीं मिली जितनी की आशा हम लगाये बैठे थे।''

वापसी में फिर सारे रास्ते वे लूटते हुए चलते रहे, ''यह तय किया गया कि हम अफगानों तथा बंगश के प्रदेशों को लूटते–खसोटते नगज के रास्ते से वापिस जाएँ।''

कोहट ओर हंगू की घाटी के बीच अफगानों ने बाबर को रोकने की कोशिश की। पर उन्हें पराजित होना पड़ा।'' आदेश दिये गये कि जिन्दा पकड़े गये लोगों के सिर काट दिये जाएँ। हमारे अगले पड़ाव पर उनके सिरों की मीनार खड़ी हो गई थी।''

कीवी जाति पर की गई चढ़ाई में बाबर के लुटेरों ने बहुत सा कपड़ा लूटा। मारे गये अफगानों की खोपड़ियों का ढेर लगा दिया गया।

युद्ध में बन्दी लोगों को यन्त्रणा देने के भयंकर तरीके बाबर ने निकाले हुए थे। बाबरनामा भाग 2 के पृष्ठ 52 पर ऐसी ही एक विधि बताई गई है। अतक तथा तिकेह में दण्डित प्राणी का सिर लकड़ी के दो खण्डों के बीच स्थिर कर दिया जाता तथा उसे एक किनारे पर एक बहुत बड़ा भाग या बहुत बड़ा लकड़ी का लट्ठा रख कर ऊपर उठा लिया जाता है। इस भार को हटाने पर भारी किनारा एकदम नीचे गिर कर दण्डित प्राणी के सिर पर टकराता है।''

लूट में उसे कई बार इतनी सम्पत्ति प्राप्त हो जाती कि उसका वर्णन आश्चर्यचकित कर देने वाला लगता है–

''लूट में घोड़े, ऊँट–ऊँटनियाँ, रेशमी कपड़ों से लदे खच्चर, चमड़े के थैलों, तम्बुओं तथा मखमली चन्दोवों से भरी ऊँटनियाँ थीं। (हमने अपने) हर घर में यह हजारों मन सामग्री पिटारों में ठीक तरह से बन्द कर रख दी। हर भंडार में ढेर के ढेर ट्रंक, गट्ठर तथा दूसरा सामान, लबादों के थैले, तथा चांदी के सिक्कों से भरे बर्तन थे। इसी प्रकार अनगिनत भेड़ें थीं।

''धन को गिनने में अपने को असमर्थ पा कर हम तराजू से तोल कर इसे बाँटते थे। बेग लोग, अधिकारी तथा नौकर–चाकर सम्पूर्ण खरभारों को लेकर चलते थे और हम खूब धन, लूट का सामान और यश लेकर काबुल लौटते थे।''

लूट के माल के साथ–साथ स्थानीय निवासियों को दास बना कर ले जाना और फिर विभिन्न स्थानों के दास बाजारों में उन्हें बेचना उस समय के लुटेरों का सामान्य क्रम था। बाबरनामा के पृष्ठ 219 से ज्ञात होता है कि भारत पर होने वाले आक्रमणों का एक प्रमुख लाभ दासों की प्राप्ति भी था। निस्सहाय हिन्दू स्त्री, पुरुष, बालकों को घेर कर बुखारा, समरकंद, काबुल और गजनी

आदि यवन–बाजारों में बेचा ही नहीं जाता था अपितु उन्हें जबर्दस्ती मुसलमान बना कर, सेना में भर्ती कर उन्हीं की मातृभूमि पर आक्रमण करने के लिये वापिस लाया जाता था।

ये दास–व्यापारी बार–बार आक्रमण कर जितनी–जितनी मात्रा में इन दासों को ला–ला कर बेचते थे उतनी मात्रा में ये धनी होते जाते थे। अपने माल (दासों) का मूल्य बढ़ाने के लिये ये दास व्यापारी उन्हें शाही खानदान का बताकर, उनका शारीरिक बल दिखाकर उनका मूल्य बढ़ा देते थे। इस घृणित व्यापार में अधिक बिक्री के लिये वे सभी हथकण्डे अपनाते थे–जैसे कि पट्टे पर खरीदिए या उधार ले जाइए, आज खरीदिए और आसान किश्तों में धन–अदायगी कीजिए। सन्तुष्ट न होने पर माल वापिस, अच्छी वस्तु के बदले में, फिर बदल कर ले जाइए, आदि।

**क्रूरकर्मा**

बार–बार की लूटपाट से बाबर के पास धन की कमी नहीं रही थी। लूट के लालच में उसकी सेना में मुगल और तैमूरी लुटेरे भी दिनों–दिन जुड़ते जा रहे थे। काबुल में लम्बे समय तक रहकर उसने अपने राज्य को भी अच्छी तरह जमा लिया था। मुँह को खून लग जाने के कारण अब उस की राज्यलिप्सा और काफिरों को खत्म करने का जोश बढ़ता जा रहा था। कुरान के आदेशों का पालन करने के लिये बाबर ने भारत की ओर रुख किया। सन् 1519 के आरम्भ में उसका पहला आक्रमण हुआ। काबुल से चलकर बाबर छः पड़ाव डालने के पश्चात् काबुल नदी के दक्षिण के मदिनापुर के दुर्ग में पहुँचा। वहाँ उसने गढ़ क्षत्रिय नामक विशाल दुर्ग के विषय में सुना। साम, दाम, दण्ड, भेद सभी उपाय बरते, परन्तु वह इस दुर्ग को जीतने में सफल न हो सका।

दो पड़ाव और चलकर वह कोहट पहुँचा। उसे लूट कर जब उसे वापिस लौटना पड़ा तो रास्ते में कोहट तथा हंगू की घाटी के बीच उसने कत्लेआम मचा कर मारे गये लोगों के सिरों से मीनारें बनवाईं। (बाबरनामा पृ. 256) तभी उसे पता चला कि दख्त को यदि लूटा जाए तो वहाँ बहुमूल्य सामग्रियाँ मिल सकती हैं। धन–सम्पत्ति के लोभी बाबर ने उधर की ओर कूच कर दिया। रास्ते में इखवेल पर आक्रमण कर बहुत बड़े परिमाण में भेड़ तथा पशु पकड़ लाये गये।

रात को इखवेलों ने बाबर पर आक्रमण किया। बाबर के बहुत से साथी सैनिक सैन्य–शिविर से बाहर गांव में असहाय, लुटी हुई स्त्रियों के साथ बलात्कार में व्यस्त थे। बड़ी कठिनाई से बाबर इखवेलों को हरा पाया, एक बार तो उसके प्राण भी संकट में पड़ गये थे।

दूसरे दिन क्रूर बाबर ने अपनी सेना के ''उन व्यक्तियों की, जो शिविर में उपस्थित नहीं थे, नाक काट डाली थी।''

इसी वर्ष सितम्बर में भारत पर फिर आक्रमण किया गया। अफगान लोगों ने उसका कड़ा प्रतिरोध किया और बाबर को वापिस लौटना पड़ा। गुस्से में आकर बाबर ने खेतों में आग लगवा दी, बंदियों को सूली पर चढ़ा दिया और अफगानों को लौटते हुए भयंकर नरसंहार किया।

सन् 1520 में बाबर ने तीसरा आक्रमण किया। इस बार वह बेजार तक बढ़ आया। 'यहां मैने आज्ञा दी कि भूमि पर खोपड़ियों का स्तम्भ बना दिया जाए।''–बाबरनामा भाग 2 पृ. 23।

''खराज के निवासियों से मैंने अपनी सेना के लिए 400 गधों पर ढोई जा सकने वाली साम्रगी माँगी। वे नहीं दे पाये तो मैंने अपनी सेना पंजकोरा लूटने के लिए भेजी। इस सेना के वहाँ पहुँचने से पहले ही लोग शहर छोड़कर भाग गये थे।''

सिंधु नदी पार करने पर बाबर का सामना राठौर राजपूतों के वंशज जनजुओं से हुआ। इन सीमावर्ती गक्खरों ने बाबर को सिंधु नदी के पार धकेल दिया।

लौटते हुए बाबर जलालाबाद मार्ग पर काबुल से लगभग 10 मील दूर 'बुतखाक' में ठहरा। 'हमेशा की तरह बुतखाक में ठहरे।'

बुतखाक का अर्थ है बुतों को खाक करने का स्थान। यह वह स्थान था जहाँ महमूद गजनवी भारत से लूट कर लाई गई मूर्तियों से हीरे जवाहरात निकाल कर फिर उन्हें हर बार इसी स्थान पर चूर–चूर कर दिया करता था।

'हमेशा की तरह' से ध्वनित होता है कि भारत जाते हुए और भारत से लौटते हुए बाबर इस स्थान पर अपना पड़ाव अवश्य डालता था। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत पर आक्रमण के लिये जाते समय उसे इस स्थान के नाम और इतिहास से भारत के मन्दिरों की मूर्तियों को चूर्ण करने के संकल्प को बल मिलता होगा और वापसी में वहाँ से लूट कर लाई गई मूर्तियों को वह इसी स्थान पर चूर्ण करके महमूद गजनवी की परम्परा को निभाने के आत्मसन्तोष और गर्व का अनुभव करता होगा।

गक्खरों से खदेड़े जाने के पश्वात् अगले 4 वर्षों तक बाबर की हिम्मत भारत की ओर झाँकने की नहीं हुई। 4 वर्ष तक सैन्य–संग्रह करके 1524 में उसने फिर भारत पर आक्रमण किया। इब्राहिम लोदी का अफगाान सेनापति उस से हार गया और बाबर ने लाहौर नगर को लूटकर उसमें आग लगा दी। देवलपुर में कत्लेआम का आदेश दे दिया गया। किन्तु सरहिन्द से आगे बढ़ने की उसकी हिम्मत नहीं हुई और वह वापिस काबुल लौट गया।

बाबर के स्वभाव में दानवीय क्रूरता किस सीमा तक आ गई थी इसका वर्णन अहमद यादगार ने किया है–

''एक काजी ने बाबर से शिकायत की कि मोहन मुन्दाहिर नामक एक वीर हिन्दू ने, काजी द्वारी उसकी समूची सम्पत्ति हड़प लेने का बदला लेने के लिए, काजी की भू–सम्पत्ति पर हमला किया, जलाया, सब सम्पत्ति लूट ली और काजी के पुत्र का कत्ल कर दिया।

बाबर ने 3000 अरबों के साथ अली कुली हुमदानी को काजी के बेटे के साथ किए गए दुर्व्यवहार का बदला लेने के लिए भेजा। ''लगभग एक सहस्र मुन्दाहिर मार डाले गए और इतने ही स्त्री, पुरूष एवं बालक बन्दी बना लिये गए। कत्ल बड़ा भयानक था, कटे हुए सिरों की मीनार बनाई गई थी। मोहन को जीवित ही पकड़ लिया गया। जब बन्दी दिल्ली लाये गये तो सभी स्त्रियाँ (बलात्कार के लिये) मुगलों को दे दी गई। दोषी मुन्दाहिर को कमर तक भूमि में गाड़ दिया गया और तब तीरों से छेद–छेदकर उसका प्राणान्त कर दिया गया।''

हिन्दू मन्दिरों की मूर्तियों एवं हाथी आदि की कलाकृतियों की बाबर कितने बड़े परिणाम में तुड़वाता एवं कटवाता रहता था इसका प्रमाण बाबरनामा के इस उल्लेख में मिलता है–

''आगरा, सीकरी, बयाना, धौलपुर, ग्वालियर एवं कोल (अलीगढ़) में प्रतिदिन 1491 संनतरश पत्थर तोड़ने वाले नौकर काम करते थे।''

7 नबम्बर 1525 को बाबर ने भारत पर पाँचवाँ आक्रमण किया। 22 सितम्बर 1525 को सियालकोट पर अधिकार कर लिया गया। दिल्ली के शासक इब्राहिम लोदी द्वारा पंजाब में नियुक्त पंजाब के गर्वनर दौलतखां लोदी को बन्दी बना लिया गया। कमर में खुसी तलवारों को गले में लटका कर उसे बाबर के सामने साष्टांग लेटने को कहा गया। आनाकानी करने पर बाबर के दरबारियों ने उस की टांग पर लात जमायी जिससे वह एकदम नीचे गिर पड़ा।

8 जनवरी 1526 को उसने राजपूतों के दुर्ग मलोट में प्रवेश किया। यहाँ अनेक अमूल्य पुस्तकें थीं जिन्हे नष्ट–भ्रष्ट कर जला दिया गया। हिन्दू मात्र से घृणा, हिन्दू ज्ञान के प्रति बर्बर दृष्टिकोण बाबर की नस–नस में भरा था। फिर वह उन प्राचीन ऐतिहासिक ज्ञान–विज्ञान की निधियों को भला कैसे बनी रहने दे सकता था।

12 अप्रैल 1526 को बाबर पानीपत पहुँचा। 21 अप्रैल 1526 को हुए पानीपत के संग्राम में दिल्ली का शासक इब्राहिम लोदी मारा गया। उस के कटे हुए सिर को बड़ी धूमधाम से बाबर के शिविर में लाया गया और उस का सब ओर प्रदर्शन किया गया।

इब्राहिम लोदी के हरम की सुन्दरियों को बाबर ने अपने हरम में डाल दिया। उन स्त्रियों ने इब्राहिम लोदी की माँ की योजनानुसार बाबर को विष दे दिया। उस विष के प्रभाव से जैसे–तैसे मुक्त होने पर बाबर ने विष देने वाली स्त्रियों में से एक को हाथी के पांवों तले कुचलवा दिया, दूसरी को तोप के गोले से उड़वा दिया, तथा इब्राहिम लोदी की मां को काल–कोठरी में डाल दिया गया।

सोने की चिड़िया भारत को लूट–लूट कर किस प्रकार कंगाल बनाया गया इस का प्रमाण बाबर द्वारा लूट के माल के वितरण मिलता है–

''मैं खजाने को देखने एवं बाँटने लगा। मैंने इस खजाने से सत्तर लाख देने के अतिरिक्त एक महल को दिया जिसकी अपार सम्पत्ति का कोई लेखा–जोखा तथा विवरण नहीं है।

कुछ अमीरों को मैने दस लाख, कुछ को आठ लाख, सात लाख तथा छह लाख दिये। अफगानों, हजाराओं, अरबों, बलूचों तथा अन्यान्य को, जो मेरी सेना में थे, उनकी स्थिति के अनुसार मैंने उपहार दिये। जो व्यक्ति सेना में नहीं थे उन्हें भी इन कोषों से मैंने अनेक उपहार दिये। उदाहरणार्थ कामरान को 17 लाख, मोहम्मद जमान मिर्जा को 15 लाख, अस्करी मिर्जा तथा हिन्दाल, यानी प्रत्येक छोटे–बड़े रिश्तेदार तथा मित्रों को सोने, चाँदी, वस्त्र, आभूषण तथा बन्दी दासों (हिन्दुओं) के रूप में कुछ न कुछ उपहार मिला ही। अपने पुराने प्रदेश के बेगों तथा उनके सिपाहियों को बहुत उपहार भेजे गये। समरकन्द, खुरासान, काशगर तथा ईराक के अपने मित्रों तथा रिश्तेदारों को उपहार भेजे। खुरासान, समरकन्द, मक्का तथा मदीना के मुल्लाओं को भी भेंट भेजी गयी। अब उनके निवासियों को, प्रत्येक को, चाहे स्त्री हो या पुरुष, चाहे स्वतन्त्र हो चाहे दास, चाहे बड़ा हो चाहे छोटा, स्पर्धा के रूप में भेंट के तौर पर मैंने एक–एक शहरोखी (चाँदी का सिक्का) भेजा।''

**हिन्दू प्रतिरोध**

4 मई 1526 को बाबर आगरा पहुंचा। यहां का राजा विक्रम इब्राहिम लोदी का साथ देते हुए कत्ल कर दिया जा चुका था। किन्तु आगरे में बाबर को बड़ी कठिन स्थिति में अनेक, परेशानियों में, दिन गुजारने पड़े।

बाबरनामा के पृष्ठ 256 पर परस्पर भंयकर द्वेष तथा अपार घृणा दर्ज हैं। ''वहां के निवासी विभिन्न चौकियों पर किलेबंदी कर लेते थे तथा नगरशासक सुरक्षात्मक किलेबंदी करके न तो मेरी आज्ञा का पालन करते थे और न झुकते ही थे।''

पृष्ठ 247 पर उसने लिखा–''जब मैं आगरा गया, वहां के सभी निवासी डर कर भाग गये। मेरे आदमियों तथा घोड़ों के लिये न तो जल मिला न चारा। हम से शत्रुता तथा घृणा के कारण ग्रामीणों ने विद्रोह किया?, चोरी तथा डकैतियां अपना लीं। सडकों पर चलना असम्भव था। अनेक लोग धूप के कारण गिर पड़ते थे तथा वहीं दम तोड़ देते थे। मेरे अनेक बेग तथा श्रेष्ठ सामन्त मरने लगे और हिन्दुस्तान में रहने को मना करने लगे और यहां तक कि वापसी की तैयारी भी करने लगे। इन्हीं में से एक ख्वाजा कलां ने लिखा–

**''अगर में ठीक–ठाक ढंग से सिन्ध पार कर सका,**

**तो यदि मैं फिर हिन्द की इच्छा करूं तो लानत है।''**

शत्रुता तथा विद्रोह की इस स्थिति में बाबर अपने को अत्यन्त असुरक्षित अनुभव कर रहा था। उसे भय था कि कहीं वह पकड़ा न जाय अथवा अपने साथियों सहित भूखों न मर जाए। ऊपर से महान् हिन्दू योद्धा राणा सांगा अपनी विशाल सेना के साथ इस विदेशी आक्रमणकारी को भारत से खदड़ेने के लिये बढ़ा चला आ रहा था। राणा सांगा का नाम सुन–सुन कर उसके सैनिकों के छक्के छूट रहे थे।

**मुस्लिम–समर्थन**

इस आड़े समय में इस विदेशी आक्रमणकारी को इस देश में जमे–बसे मुस्लिम सरदारों और शासकों से ही सहारा और सहायता प्राप्त हुई। इन सरदारों को लगा कि राणा सांगा ने यदि बाबर को हरा दिया तो बाबर को तत्कालीन परिस्थितियों से हताशा और निराश होकर यदि भारत से भागना पड़ा तो इस देश में फिर से हिन्दू राज्य की स्थापना हो जाएगी, और दिल्ली–आगरा पुनः हिन्दुओं के अधिकार में आ जाएंगे।

अपने को शासकवंशी होने का दम्भ मन में बसाये हुए इन मुस्लिम शासकों को मध्य एशिया से आए इस आक्रान्ता को अपना सगा एवं मुस्लिम गौरव तथा स्वाभिमान का रक्षक मानने की भावना से भर दिया। वे बाबर पर पड़ने वाली तलवारों के वारों से उसे बचाने के लिए ढाल बन कर खड़े

हो गये! एक क्षण के लिये भी उनके मन में यह विचार नहीं आया कि–बाबर की सहायता कर के वे इस देश को विदेशी तातारवंशी के पांवों तले कुचलवाने का कारण बन रहे हैं, सहायक हो रहे हैं!

निजाम खां ने अपना बयाना का राज्य उसे सौंप दिया ताकि भूखों मरती बाबरी सेना को सहारा मिल सके, उस की रक्षा हो सके।

ग्वालियर पर अधिकार किये हुए तातारखां की सहायता से बाबर ने ग्वालियर को अपने अधीन कर लिया और मुहम्मद जैतून ने धौलपुर उसे समर्पित कर दिया।

इस्लाम के 'प्रकाश' से अपने को अलग रखने वालों को कुरान काफिर कहता है। उन काफिरों से घृणा, उनके नाश का भाव, उन्हें पादाक्रान्त रखने का संकल्प सामान्य मुस्लिमों अथवा शासकों का स्थायीभाव और चाव रहा है। इस भाव और चाव ने ही मुस्लिम शासकों को राणा सांगा की तुलना में बाबर को अधिक स्वीकार्य, अधिक आत्मीय एवं अधिक प्रेरणा–पुरुष बनाकर उसके लड़खड़ाते कदमों को सहारा देने के लिए प्रेरित किया, तो इसमें आश्चर्य क्या? बाबर तो निकला ही था दारुलहर्ब (गैर–मुस्लिम देशों) को दारुल इस्लाम (मुस्लिम देश) बनाने के लिये।

**पराजय और हताशा**

11 फरवरी 1527 को बाबर की सेना के अग्रिम दस्ते अब्दुल अजीज और मुल्ला अपाक के अधीन आगे बढ़े परन्तु पहली ही झड़प में राणा सांगा की अग्रिम टुकड़ी ने उन्हें ध्वस्त कर दिया।

कनवाहा के पास राणा सांगा और बाबर की सेना में जम कर युद्ध हुआ। राणा सांगा की सेना के आक्रमणों के आगे बाबर की सेना टिक न सकी और पीछे हट गई। बाबर की सेना हिन्दुस्थान छोड़ कर वापिस जाने को बेताब होने लगी।

**फिर वही देशद्रोह**

राणा सांगा की प्रगति से चिन्तित होकर बाबर ने फतेहपुर सीकरी के समीप की एक पहाड़ी पर अड्डा बनाया जहां फतेहपुर सीकरी के पानी की आपूर्ति के लिये एक झील बनी हुई थी। राणा सांगा ने फतेहपुर सीकरी की चारदिवारी के अन्दर अपनी सैन्य–रचना बनाई। बाबर ने झील के पानी को दूषित करना आरम्भ कर दिया। साथ ही राणा सांगा के पक्ष में लड़ रहे हिन्दू नरेशों में रायसेन के राजकुमार शैलादित्य के माध्यम से सन्धिवार्ता आरम्भ करने में सफलता प्राप्त कर ली। धीरे–धीरे शैलादित्य को लालच देकर अपनी ओर फोड़ लिया। कपटपूर्ण संधिवार्ता लम्बे समय तक चलाई जाती रही ताकि धोखेबाज बाबर अपनी सैनिक स्थिति सुदृढ़ कर सके।

16 मार्च 1527 का दिन। आगरा से कुछ मील दूर सीकरी के मैदान में एक ओर मुगल सेनायें तो दूसरी ओर राणा सांगा। राणा सांगा की सेना में 80,000 सैनिक थे तथा 1000 हाथी थे जबकि मुगलों की सेना में दो लाख सैनिक थे (जो कि अब तक के युद्धों में सार्वधिक संख्या है)। फिर भी मुगल सैनिकों का मनोबल छूटता जा रहा था क्योंकि उन्होंने राणा सांगा के अप्रतिम शौर्य के चर्चे सुन रखे थे। सुल्तान इब्राहिम के साथ हुए युद्ध में राणा के द्वारा दिखायी गयी अद्वितीय वीरता की कथा सब के मुख पर थी। इतिहासवेत्ता इस प्रकार से मुगल सेना के मनोबल टूटने के अनन्य कारण भी बताते हैं। प्रथमतः उसके सैनिक बहुत समय से घर से बाहर थे, तथा उससे कुछ दिन पूर्व काबुल से मुहम्मद सरीफ नाम का ज्योतिषी आया जिसने नक्षत्रों की गणना से घोषणा की कि इस युद्ध में बाबर की हार निश्चित है। किन्तु बाबर ने इस्लाम का सहारा लिया। उसने अपने सैनिकों को अल्लाह के नाम पर उत्तेजित किया और काफिरों (हिन्दुओं) का समूल उच्छेद करने के लिये प्रेरित किया।

दोनों सेनाओं में प्रातः से सायं तक जमकर युद्ध हुआ। ऐसा घमासान युद्ध भारत के इतिहास की सम्भवतः प्रथम घटना रही होगी। जीत या हार का पता नहीं चल रहा था। तभी बाबर ने अपनी टुकड़ी को पीछे से आक्रमण करने की आज्ञा दी। दूसरी ओर रायसीना के शासक देशद्रोही शिलादित्य की सेना मुगल सेना से आकर मिल गयी। इस प्रकार दोनों ओर से आक्रमण होने पर

राणा की सेना को पराजय का मुख देखना पड़ा। घायल, प्रवंचित राणा को ऐसे समय पर युद्ध क्षेत्र छोड़ना पड़ा जब उन्हें विजयश्री प्राप्त होने ही वाली थी।

**हिन्दू सिरों की मीनार**

हार और निराशा के इतने पास पहुंचकर प्राप्त इस आकस्मिक विजय से बाबर की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने पीछे हटती हिन्दू सेना का संहार करना चालू कर दिया। अपने शिविर के सामने बाबर ने राणा सांगा के वीर सरदारों के कटे हुए सिरों का मीनार चुनवाया और अल्लाह को सिजदा करके गाजी की उपाधि धारण की।

हिन्दू वीरों के लहू से सामने का मैदान भर गया। यहां तक कि बाबर को अपना तम्बू पीछे हटाना पड़ा। कटे हुए छटपटाते घोड़ों को देखकर उसकी प्रसन्नता और बढ़ती थी।

बाबर की पुत्री गुलबदन के शब्दों में–16 मार्च 1527 की प्रातः–''ईश्वर की कृपा से वह (बाबर) विजयी हुआ.... राजपूतों के मृत शरीरों के ढेर पड़े थे। अन्तिम अपमान के रूप में राजाओं के सिर काट कर मीनार बनाई गयी और बाबर गाजी कहलाया–ईश्वर के नाम का बदला लेने वाला।''

राणा सांगा के साथ युद्ध के पश्चात् बाबर ने चन्देरी पर आक्रमण किया। यहां राणा सांगा के प्रमुख सेनापति मेदिनी राय 5 सहस्र सैनिकों के साथ थे। बाबर सेना लेकर 20 जनवरी 1528 को चन्देरी पहुंचा। उस्ताद अली और मुस्तफा की तोपों से दुर्ग पर गोले फेंके गये। किन्तु बाबर स्वयं लिखता है कि दुर्ग इतना सशक्त था कि भित्तियों पर लगे गोले रबर की बॉल की भांति वापिस आ रहे थे। बहुत प्रयास करने पर भी दुर्ग की भित्तियां न टूटीं तो बाबर ने अपने सैनिकों को कई स्थानों से ऊपर चढ़ने की आज्ञा दी। दुर्ग में पर्याप्त सैनिकों तथा बन्दूकों के अभाव में बाबर के सैनिक किसी प्रकार सफल हो गये। जमकर युद्ध होता रहा। हिन्दू वीर अपनी जान की चिन्ता किये बिना ऐसी वीरता से लड़ रहे थे मानो उन्हें मृत्यु का जरा भी भय न हो। बाबर की सेना अनन्त थी तथा आधुनिकतम शास्त्रास्त्रों से युक्त थी। हिन्दू वीरों को एक–एक कर मरते देख पराजय निश्चित लग रही थी। इस समय हिन्दू रानियों ने शत्रु के हाथों में न पड़कर सामूहिक जौहर व्रत स्वीकार किया।

''मैंने 934 हिजरी में चन्देरी की ओर कूच किया–अल्लाह का फजल (कृपा) है– कुछ ही घड़ियों में राणा सांगा के बड़े भरोसे के सेवक मेदिनीराय के पांच–छः हजार काफिरों से शहर छीन लिया और उन्हें तलवार के घाट उतार कर दारुलहर्ब को दारुलइस्लाम बना दिया।'' बाबरनामा पृष्ठ 335 से।

## द्वितीय संस्करण पर

लम्बे समय से ऐसा विश्वास भी है और अनुभव भी कि हृदय की गहराई से, सच्ची प्रामाणिकता से, सम्पूर्ण संवेदना से जब–जब, जहां–जहां, जिस–जिस ने प्रखर हिन्दुत्व की, प्राणवान् राष्ट्रवाद की बात कही–लिखी है उस का राष्ट्रभक्तों ने सदैव स्वागत, अभिनंदन, वंदन ही किया है। वह शंखनाद, वह घोष–

**स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।**

सदा, सर्वत्र शत्रु–पक्ष के हृदयों को विदीर्ण और आत्मीय जनों, बन्धुजनों को पुलकित, प्रेरित और युद्ध के लिए कटिबद्ध ही करता रहा है।

डॉ. कैलाशचन्द्र के **'हिन्दुत्व के स्वर': सत्य के दर्पण में** आशा–अपेक्षा के अनुसार ही सामान्य जन से लेकर असामान्य हिन्दू–नेतृत्व में हृदय से सराहे गये। इसी का प्रमाण है इस पुस्तक का द्वितीय संशोधित, परिवर्धित संस्करण। बिना किसी प्रकाशन–संस्थान के सहयोग–सहायता के एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक हाथों–हाथ जाता यह ग्रंथ व्यक्ति के हृदय की वेदना के समष्टि की वेदना का रूप ले लेने की ही सहज, स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यह संवेदना, तीव्रतर, प्रखरतर हो कर सुप्त, मूर्छित, आत्मकेन्द्रित हिन्दू–मानस में स्पन्दित, प्रवाहित, गतिमान् हो कर उस में कुछ करने का, बहुत कुछ, सब कुछ करने का संकल्प यदि जगा सके, मात्र निष्क्रिय द्रष्टा बने रहने वाले हिन्दू जनों को नित नये सामर्थ्य का, अपने पर होने वाले प्रहारों के प्रतिकारों का स्रष्टा भी बना सके तो चतुर्दिक् संकटों से, निराशाओं से घिरे आज के धूमिल, विशृंखलित वर्तमान और अंधियारे भविष्य के बदले देदीप्यमान वर्तमान और भव्य भविष्यत् के दर्शन अतिशीघ्र करता हुआ यह राष्ट्र हम सब को दिख सकेगा।

इस निमित्त प्रत्येक पाठक का, प्रत्येक राष्ट्रधर्मी का यह आवश्यक उत्तरदायित्व बनता है कि वे इन विचारों को, इस पुस्तक से उपलब्ध जानकारियों को अपने तक ही सीमित न रख कर अपनों तक भी पहुंचाएं, अपने हृदय के उद्वेलन से उन के हृदयों को उद्वेलित कर हिन्दु–जागरण का एक विराट् आंदोलन हिन्दुजनों विशेषतः युवा पीढ़ी में, विद्यार्थी–जनों में खड़ा करने के कर्तव्य कर्म को साकार करने के उपकरण के रूप में इस पुस्तक के प्रचार–प्रसार के लिए सचेष्ट होने की कृपा करें।

**चिरंजीव शास्त्री**

# सांस्कृतिक गौरव संस्थान

**लक्ष्य**

सांस्कृतिक गौरव का लक्ष्य प्रत्येक नागरिक के मन और मस्तिष्क में अगले दशक तक एक शान्त क्रान्ति लाना है।

एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करना जहाँ हममें से लघुतम व्यक्ति भी यह सोचना आरम्भ करे कि वह कैसे, कहाँ और क्या राष्ट्र को दे सकता है किन्तु वह राष्ट्र से क्या छीन सकता है, ऐसा आत्माघाती चिन्तन और व्यवहार किसी दशा में न करे।

हमारे मौलिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता का विकास करना और उनकी पूर्ति के लिए एक–दूसरे को प्रेरणा प्रदान करना।

जीवन के प्रति रस, निष्पादन में उत्कृष्टता का निर्माण करना जिससे आत्मसम्मान की भावना बढ़े ओर सच्ची देश भक्ति का जोश उत्पन्न हो।

हमारे देश की वैभवशालिनी सांस्कृतिक निधि, सत्य–निष्ठा और संप्रभुता के संरक्षण के लिए रक्षा तन्त्र की एक सशक्त प्राचीर खड़ी करना।

राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाना ओर ऐसा वातावरण बनाना जिसमें प्रत्येक नागरिक, चाहे बड़ा हो या छोटा, अपनी पूरी क्षमता का अर्जन कर सके।

## मिशन की महती आवश्यकता क्यों है?

**भारत के संविधान के अनुच्छेद 51 (क) के ज्वलंत तत्व निम्नलिखित हैं :**

**– भारत की संप्रभुता, एकता ओर अखण्डता बनाए रखना और उसकी रक्षा करना।**

**– समृद्ध भारतीय सांस्कृतिक निधि को सम्मान देना और उसका संरक्षण।**

**भारतीय मूल्यों ओर सांस्कृतिक निधि के संरक्षण के बिना भौगोलिक भारत की रक्षा का कोई अर्थ नहीं है। भौगोलिक भारत के बिना समृद्ध भारतीय संस्कृति की रक्षा संभव नहीं होगी। दोनों की ओर एक साथ ध्यान देकर तत्काल कार्रवाई अपरिहार्य है।**

इस व्यायाम की महती आवश्यकता इस तथ्य में छिपी है कि अन्य संस्कृतियों (जेसे, ईसाइयत, इस्लाम या नास्तिकता) के अनेक भौगोलिक क्षेत्र हैं जहाँ वे फल–फूल सकती हैं। किन्तु भारतीय मूल्यों, सांस्कुतिक निधि और संस्कृति के लिए तो भारत ही एक मात्र भूमि है।
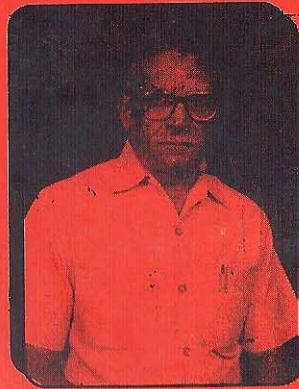
## कार्य योजना

सांस्कृतिक गौरव संस्थान के मिषन के उद्देश्यों के पूर्ति के लिए कार्य–योजना निम्नलिखित हैः

उन सब व्यक्तियों और समूहों की व्यापक और बहुमूल्य प्रतिभा का लाभ उठाना जिनमें मत–निर्माता बनने या मत निर्माता निकाय बनने की संभावनाएँ हैं, जो इस आंदोलन को नेतृत्व दे सकें और सम्पूर्ण देश में फैले हुए विभिन्न संप्रदायों, जातियों और उपजातियों और पंथों के सभी देश भक्तों को आकर्षित कर सकें।

विषयवार आँकड़ा–कोश बनाकर उसका विश्लेषण करना और कम्प्यूटर प्रणाली के एक जाल के माध्यम से सांस्कृतिक गौरव संस्थान की सभी शाखाओं के साथ आदान–प्रदान।

सम्पादक के नाम पत्र, स्थिति सूचक पत्र, पत्रक, समाचार पत्रिकाएँ पुस्तिकाएँ ओर पुस्तकें तैयार करना जिससे भारत के ओर विष्व के लोगों में एक तरफ तो भारत की संस्कृति और मूल्यों को दूषित करने वाले मुद्दों की ओर ध्यान दिलाया जा सके और दूसरी तरफ भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता के प्रति जागृति पैदा की जा सके।

डॉ० कैलाशचन्द्र

दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. करके आचार्य रघुवीर के संपर्क में आये और तभी से 'हिंदू संस्कृति का एशिया के देशों में प्रसार' विषय में गहरी रुचि लेने लगे। १९६७ में डॉ० लोकेशचन्द्र के नेतृत्व में एक शिष्ट मण्डल में आप ने रूस, मंगोलिया तथा साईबीरिया के बौद्ध क्षेत्रों की यात्रा की। १९७८ में Ph.D की उपाधि प्राप्त की। १९९१ में अमरीका गये जहां अनेक विश्वविद्यालयों में तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकारियों के क्लब में भाषण दिये। अमरीका में बसे हिन्दुओं में हिन्दुत्व के प्रचार के निमित्त डेढ़ वर्ष वहां रहे। डॉ० कैलाश ICHR में 'भारत मंगाल सांस्कृतिक सम्बन्धों का इतिहास' विषय पर अनुसन्धान के निमित्त दो वर्ष के लिये रहे।